बे बोल.

" ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्ष " ए मोक्षमार्गनुं दृष्टिबिंदु छे तथापि घणा जैनो तेना खरा रहस्यने नहि जाणतां एक तरफ वधु चलणतो बीजा तरफ न्युन एटलुंज नहि पण अपेक्षा समजवाना ज्ञाननी खामीए घणी वख्त हाथो हाथ जमणाने दबावे छे तेवी स्थिति जोवाय छे. आनुं कारण पूर्वाचार्योए द्रव्य गुण पर्याय आदीनुं जे सुक्ष्मज्ञान प्रकाश्युं छे ते ज्ञानने समय अनुसारनां मनुष्यो समजी शके तेवी उत्तम शैलीथी सरळ भाषामां ग्रंथो तैयार करी जनसमाज आगळ जोइता प्रमाणमां रजु नहि थवानुं छे.

अमारुं चोकस मानवुं छे के जैनधर्मनां सिद्धांतो प्रमाण अने युक्तिओथी एवां तो प्रबळ अने न्याययुक्त छे के जेम जेम ते तत्वो वधु फेलावो पामशे तेम तेम प्राचिन दृष्टि वधु खीली नीकळशे, अने जैनधर्मनुं क्षेत्र बहोळुं थशे.

आ माटे मात्र जैनोज नहि पण सर्वे लोकोना बोधार्थे जैनधर्मनां पुस्तको रचाववाथी अने सारी रीते वंचाववाथी अन्य लोको पण जैनतत्वनो लाभ मेळवशे केमके जैनधर्म मात्र जैनो माटेज नथी. गमे ते ज्ञाति होय पण तेनां सिद्धांतो अनुसार वर्त्तन राखनार जैन होइ शके छे. आवी भाव उपकारनी दृष्टि ध्यानमां राखी, काळने अनुसरी, तथाप्रकारनो प्रयत्न करी परमपूज्य गुरुवर्य श्रीमद् बुद्धिसागरजीए आवा तत्वमय ग्रंथो रच्या छे जे पैकीनो आ " परमात्मदर्शन " ग्रंथ छे.

आ ग्रंथ अमे उपर जणाव्युं तेवा प्रकारनी खामीने दुर करनार छे, एम कहीए तो अतिस्योक्ति नहि कहेवाय.

आ ग्रंथमां बीजा अनेक विषयो साथे ज्ञान अने क्रिया बंनेनी यथास्थित साबीती करी बताया छ केमके बंनेना संमेलन विना आत्मकल्याण दुर छे. षड्द्रव्य, षट्कारक, पंचसमवाय, नय निक्षेपा वीगेरेथी द्रव्य,क्षेत्र,काळ, भावने, अनुसरीने आ ग्रंथ लखायो

छे, जे अभ्यासीओने माटे आशिर्वादरुप छे. यत्के आत्माभीमुख ला जनार छे. आवो ग्रंथ वांचनार पोतेज कबूल करशे के गुरुवर्य श्रीमद् बुद्धिसागरजीए आ मकारना मयासे करी जैनसमाज उपर महान उपकार कीधोछे. तेओनो आ रीते जैनकोम उपरज उपकार थाय छे, एम नहि पण तेओना ग्रंथोनी लेखन, अने काव्य शैली, एवी तो मेम उपजावनारी छे के सर्वे दर्शनवाळाओ तेओश्री रचीत ग्रंथो हौंसथी वांचे छे एम अनुभव कही आपे छे. एटलुंज नहि पण तेओश्रीनां भजनपदो तो तेओश्री ज्यां ज्यां विचर्या छे, त्यां त्यां कोइपण रीतना तफावत विना हमेशना माटे गवातांज रहे छे. आथी अन्य दर्शनीओ पण जैनधर्मने जाणता अने मीति करता थया छे. आ शुं जनसमाज उपर जेवो तेवो उपकार छे ?

तेओश्री तरफना अंकुशना आधिने तेओश्री विषे हमारे जणावबुं जोइए छे ते जणावी शकता नथी, पण समाज तो कबूल करती जोवाय छे के, भेदाभेद अने मारामारोनी कोइपण चर्चामां न उतरतां पोते अने अन्य जीवा पोताना आत्मानुं कल्याण कइ रीते करी शके तेज मार्ग तरफ तेओश्रीनुं मयाण छे अने ते दिवसे दिवसे चढतुं अने वधतुं जाय छे.

तेओश्रीना ग्रंथो संबंधी वधु विवेचनमां नथी उतरो शकता कारण तेओश्रीनुं मानवुं एम छे के दुनियां दर्पणरुपे वस्तुने वस्तुरुपे केम नहि जोइ शके ? (बेशक गुणानुं रागनी दृष्टि तेमां मुख्य भाग भजवे छे.) तेथी अमो तेवा मकारनी तजवीजमां न उतरतां तेओश्रीनी कृतिना ग्रंथो जेम बने तेम समाज आगळ सारा स्वरुपमां (ओछी किंमते) रजु करवा एज कर्त्तव्य समजी आगळ वधीए छीए अने गुरु कृपाथी मंडळ पोताना नामे १ वर्षमां ११ पुस्तको बहार पाडी शक्युं छे.

आ रीते मंडळ आगळ वधवामां जे फतेह पाम्युं छे तेमां गुरुश्री उपरांत मंडळने पुस्तको मगट करवाने द्रव्यनी मदद करनारा गृहस्थोनो पण हिस्सोछे. जे अमो जणाववा चुकी जवुं योग्यधारतानथी.

अगाऊनां ग्रंथोना सहायकोना नामो तेते ग्रंथो साथे मुद्रित

प्रयत्न छे. जेओ उपरांत मजकुर "परमात्मदर्शन" ग्रंथने प्रगट करवामां नीचे मुजब सहाय मळी छे.

१५०) शेठ मोतीजी जेनाजी पुनावाळानी विधवा बाइ नाथुबाइ

७५) शेठ मोहनलाल ताराचंद. विजापुरवाळा.

५०) शेठ रायचंदभाइ रवचंद. साणंदवाळा.

५०) शेठ वाडीलाल मगनलाल. अमदावाद.

५१) शेठ अमृतलाल केशवलाल वाडी सद्गत भाइ अमृतलालना स्मरणार्थे तेमनी मातुश्री चंचळब्हेने अमदावाद.

५०) बाइ हरकोरब्हेन श्री अमदावाद.

३१) वकील मोहनलाल हेमचंद तेओना ची. भाइ सवाइना पुण्यार्थे. श्रीपादरा.

२५) शेठ हाथीभाइ मुलचंद. श्री माणसा.

३०) शेठ माधवलाल अमथालाल. श्री माणसा.

३१) शेठ मोहनलाल करमचंद अमदावाद.

आवी रीते सहाय करनाराओनो तथा बीजा मददगार गृहस्थोनो मंडळ आभार माने छे. अने तेओने पोताना द्रव्यनो आ रीते सदुपयोग करवा माटे धन्यवाद आपे छे.

मंडळनो उद्देश उपर जणाव्युं तेम जनसमाजमां तेओथी रचित पुस्तको बहु वंचाय ते माटे सस्ती किंमते प्रगट करवानो छे, ते पळावे जाय छे. ते समाज पण जोइ शकी छे के बीजी कोइपण संस्थाओ करतां मंडळ पुस्तकोनी घणीज ओछी किंमत राखे छे, ते पण बीजां पुस्तको प्रगट थवाने उपयोगार्थे तेमज थोडीपण किंमत आपी पुस्तक खरीदनां ते उपर बहु भाव रहे छे ते अर्थे.

मंडळ आशा राखे छे के गुरुवर्य पुस्तको तैयार करता रहे छे तेज प्रकारे प्रगट कराववाने सहायको वधता जशे.

छेवटमां ध्यान खेंचवाने रजा लइए छीए के मंडळ मारफते आ रीते पुस्तक प्रगट कराववाने जरुर विचारशो.

मुंबाइ चंपागली
वीर संवत २४३१
पोष सुदी १०. गुरु

ली.
श्री अध्यात्मज्ञान प्रसारक मंडळ.

छे, जे अभ्यासीओने माटे आशिर्वादरुप छे. वलके आत्माभीमुख लइ जनार छे. आखो ग्रंथ वांचनार पोतेज कबूल करशे के गुरुवर्य श्रीमद् बुद्धिसागरजीए आ प्रकारना प्रयासे करी जैनसमाज उपर महान उपकार कीधोछे. तेओनो आ रीते जैनकोम उपरज उपकार थाय छे, एम नहि पण तेओना ग्रंथोनी लेखन, अने काव्य शैली, एवी तो प्रेम उपजावनारी छे के सर्वे दर्शनवाळाओ तेओश्री रचीत ग्रंथो होंसथी वांचे छे एम अनुभव कही आपे छे. एटलुंज नहि पण तेओश्रीनां भजनपदो तो तेओश्री ज्यां ज्यां विचर्या छे, त्यां त्यां कोइपण रीतना तफावत विना हमेशना माटे गवातांज रहे छे. आथी अन्य दर्शनीओ पण जैनधर्मने जाणता अने प्रीति करता थया छे. आ शुं जनसमाज उपर जेवो तेवो उपकार छे ?

तेओश्री तरफना अंकुशना आधिने तेओश्री विषे हमारे जणाववुं जोइए छे ते जणावी शकता नथी, पण समाज तो कबूल करती जोवाय छे के, भेदाभेद अने मारामारीनी कोइपण चर्चामां न उतरतां पोते अने अन्य जीवो पोताना आत्मानुं कल्याण कइ रीते करी शके तेज मार्ग तरफ तेओश्रीनुं प्रयाण छे अने ते दिवसे दिवसे चडतुं अने वधतुं जाय छे.

तेओश्रीना ग्रंथो संबंधी वधु विवेचनमां नथी उतरी शकता कारण तेओश्रीनुं मानवुं एम छे के दुनियां दर्पणरुपे वस्तुने वस्तुरुपे केम नहि जोइ शके ? (बेशक गुणानुं रागनी दृष्टि तेमां मुख्य भाग भजवे छे.) तेथी अमो तेवा प्रकारनी तजवीजमां न उतरतां तेओश्रीनी कृतिना ग्रंथो जेम बने तेम समाज आगळ सारा स्वरुपमां (ओछी किंमते) रजु करवा एज कर्तव्य सारी आगळ वधीए छीए अने गुरु कृपाथी मंडळ पोताना नामे १ वर्षमां ११ पुस्तको बहार पाडी शक्युं छे.

आ रीते मंडळ आगळ वधवामां जे फतेह पाम्युं छे तेमां गुरुश्री उपरांत मंडळने पुस्तको प्रगट करवाने द्रव्यनी मदद करनारा गृहस्थोनोपण हिस्सोछे. जे अमो जणाववा चुकी जवुं योग्यधारतानथी.

अगाऊना ग्रंथोना सहायकोना नामो तेते ग्रंथो साथे मुद्रित

प्रसंग छे. जेथी उपरांत प्रमाणे “ परमात्मदर्शन ” ग्रंथने प्रग[ट]
करवामां नीचे मुजब मदद मळी छे.

१५०) शेठ मोतीजी जेताजी पुनावाळानी विधवा बाई नानुबाई
७८) शेठ मोहनलाल ताराचंद. विजापुरवाळा.
५०) शेठ रायचंदभाई रवचंद. माणसावाळा.
५०) शेठ वाडीलाल मगनलाल. अमदावाद.
५१) शेठ अमृतलाल केशवलाल वाडी सद्गत भाई अमृतलालना स्मरणार्थे तेमनां मातुश्री चंचळबहेने अमदावाद.
५०) बाई हरकोरबहेन श्री अमदावाद.
२१) वकील मोहनलाल हेमचंद तेओना धी. भाई सवाईना पुण्यार्थे. धीनादरा.
२५) शेठ हाथीभाई फुलचंद. श्री माणसा.
३०) शेठ माधवलाल अमथालाल. श्री माणसा.
२१) शेठ मोहनलाल करमचंद अमदावाद.

आवी रीते सहाय करनाराओनो तथा बीजा मददगार ग्रहस्थोनो मंडळ आभार माने छे. अने तेओने पोताना द्रव्यनो आ रीते सदुपयोग करवा माटे धन्यवाद आपे छे.

मंडळनो उद्देश उपर जणाव्युं तेम जनसमाजमां तेओथी रचित पुस्तको बधु वंचाय ते माटे सस्ती किंमते प्रगट करवानो छे, ते बजावे जाय छे. ते समान पण जोइ शकी छे के बीजी कोइपण संस्थाओ करतां मंडळ पुस्तकोनी घणीज ओछी किंमत राखे छे, ते पण बीजां पुस्तको प्रगट थवाने उपयोगार्थे तेमज थोडीपण किंमत आवी पुस्तक खरीदनारां ते उपर बहु भाव रहे छे ते अर्थे.

मंडळ आशा राखे छे के गुरुवर्य पुस्तको तैयार करता रहे छे तेम प्रकारे प्रगट करावनारने सहायको वधता जशे.

छेवटमां ध्यान खेंचवाने रजा लइए छीए के मंडळ मारफते आ रीते पुस्तक प्रगट करावनारे जरूर विचारवो.

मुंबई चंपागली
वीर संवत २४४१
पोष सुदि १०. गुरु

ली.
श्री अध्यात्मज्ञान प्रसारक मंडळ.

प्रस्तावना.

जगत्‌मां प्रत्येक मनुष्यो धर्मनुं आराधन करे छे. प्रत्येक मनुष्यो धर्मना माटे इच्छा राखे छे. प्रत्येक मनुष्योने अनंत सुख प्राप्त करवानी तीव्र जिज्ञासा वर्ते छे. जन्म, जरा, मरणना दुःखमांथी बचाव थाय ते माटे प्रत्येक मनुष्यो बुद्ध्यनुसार उपायो शोधे छे. अमर थवुं ते माटे अनेक प्रकारनी शोधो करे छे. आवी अमूल्य शोध करवानी कोने जिज्ञासा नहि होय ? अलबत्त सर्वने होय छे. आवी शोध माटे ज्ञानदृष्टिनी जरुर छे अने ते पण सर्वज्ञ दृष्टि होवी जोइए. आवी सर्वज्ञ दृष्टिवाळा तीर्थंकरो प्रथम थइ गया छे. आ क्षेत्रमां चरम तीर्थंकर त्रिशलातनय श्री महावीरस्वामी २४३६ वर्ष उपर थइ गया छे. तेमणे केवलज्ञानथी सर्व पदार्थो जाण्या तथा देख्या. मनुष्यो नित्य सुख प्राप्त करे तथा जन्म जरा अने मृत्युना दुःखमांथी छूटे ते माटे तेओश्रीए आत्मज्ञान बताव्युं छे. सर्व प्रकारना जीव अने अजीव पदार्थोनुं स्वरुप बताव्युं छे. ज्ञानदर्शन अने चारित्ररुप मोक्ष मार्ग बताव्यो छे. नात जातनो भेद राख्या विना आत्मतत्त्वनी शक्तियो खोलववाना उपायो बताव्या छे. साधु धर्म अने गृहस्थ धर्म एम बे प्रकारना धर्म बताव्या छे. अमर थवाने माटे आत्मधर्मनुं यथार्थ स्वरुप बताव्युं छे. समवसरणमां बेसी देशना देइ चतुर्विध संघनी स्थापना करी छे तेमना धरोए द्वादशांगीनी रचना करी, पश्चात् स्थविरोए उपांगनी ना करी. तेमनी पाटे जे जे आचार्यो थया. गीतार्थो थया. ोए प्रकरणो ग्रंथो आदिनी रचना करी. प्रत्येक आचार्योनो ख्य उद्देश जमानाने अनुसरी गमे ते भाषामां सहेलाइथी मनुष्यो तत्त्व मार्ग समजी शके तेवा ग्रंथो अने तेवा प्रकारनो उपदेश आ-

पवानो हतो, ते रीतिने अनुसरी उमास्वाति वाचक, सिद्धसेन दिवाकरसूरि, हरिभद्रसूरि, श्री हेमचंद्र आचार्य श्री अभयदेवसूरि, यशोविजय उपाध्याय, आदि धर्मधुरंधर आचार्योए. अनेक मनुष्योना उपकारार्थे. संस्कृत भाषामां तथा मागधी प्राकृतादि भाषामां उपदेश दीधो छे तथा तेवा ग्रंथो बनाव्या छे. पूर्वोक्त आचार्योना ग्रंथो सूत्रोनी पेठे माननीय पूजनीय गणाय छे. श्री हेमचंद्र पश्चात् लोकोनी स्थिति विद्या संबंधी घटवा लागी. लोको मागधी अने संस्कृतमां पण अल्प समजवा लाग्या. त्यारे आचार्योए जमानाने अनुसरी चालती गुर्जर भाषा आदिमां रासो वगेरे बनाववा लाग्या सं १६२७ नी सालमां सात क्षेत्रनो रास बन्यो छे. आ सात क्षेत्रनो गुर्जर भाषानो रास छपावी सिद्ध कर्युं छे के जैनोमांथी गुर्जर भाषा मुख्यताए प्रकाशी छे आ रास भजन संग्रह चोथा भागमां छपाव्यो छे. ते पहेलां पण गुर्जर भाषामां जैनाचार्योए काव्य लख्यां होय एम संभव थाय छे अने ते माटे शोध चालेछे. प्रथम तो गुर्जर भाषामां पद्य तरीके रचना करी उपदेश आप्यो पश्चात् गद्यमां पण ग्रंथ बनावी उपदेश देवा प्रारंभ कर्यो. श्रीवीरे प्ररूपेल तत्त्वोनो संस्कृत, प्राकृत, मागधी, गुजराती, हिंदुस्थानी वगेरे अनेक भाषामां हाल अवतार थएलो अनुभवाय छे. श्री वीरप्रभु मुक्तिमां गया तो पण गंगाना प्रवाहनी पेठे तेमनो पाछळ तेमनो उपदेशेलो तत्त्वमार्ग पुरुष परंपरा अखंड वहेवा लाग्यो. हाल पण ते प्रमाणे जोवामां आवे छे.

संस्कृत भाषामां तथा मागधी भाषामां हाल ग्रंथो बनाववामां आवे तो प्रायः दश हजारमां पांच माणस पण भाग्येज समजी शके. संस्कृत तथा मागधीमां बनावेला ग्रंथोने पण गुर्जर भाषामां समजाववामां आवे त्यारेज लोकोना समजवामां आवे त्यारे गुर्जर भाषामां ग्रंथो बनाववामां आवे तो घणा लोको समजी शके एम

अवशेष दुहा तथा चोपाइयो उपर अर्थ पुरशे तो धर्मलाभ माप्त करशे. समयना अभावे अवशेष दुहा आदि उपर विवेचन थयुं नथी. ते दुहाओ वगेरे सद्गुरुना पासे जे वांचशे ते विशेषतः अर्थ माप्त करी शकशे. जडवादियोनी सामे रक्षण तरीके आ ग्रन्थ उपयोगी थशे. आ ग्रन्थने माध्यस्थ दृष्टिथी वांचशे. ते सद्गुण रागथी तेनो यथार्थ तत्त्व रहस्य मेळवी शकशे.

आ ग्रंथ मूळ तरीके–श्री लोदरा गाममां आरंभ्यो हतो त्यांथी मेसाणे जई त्यां सं. १९६० नुं चोमासु कर्युं. त्यां अशाड सुदी ५ ना रोज आ ग्रंथ पूर्ण कर्यो. पश्चात् तेज चोमासामां विवेचन जेटलुं लखायुं छे तेटलुं अत्र दाखल कर्युं छेः बाकीना दुहानुं विवेचन, कोई भक्त शिष्य पूर्ण करशे.

आ ग्रन्थमां जे कंइ जिनाज्ञा विरुद्ध लखायुं होय ते संबंधी मिथ्यादुष्कृत हो. सज्जन दृष्टिथी जे कोइ आ ग्रन्थ वांचशे त्हेने अत्यंत लाभ माप्त थशे. ज्ञानिने आश्रवनां कारण ते संवररुपे परिणमेछे.अने अज्ञानिने संवरनां कारण ते आश्रवरूपे परिणमेछे तेम योग्य जीवने आ ग्रन्थ सम्यक्‌पणे परिणमशे. अने अयोग्य कुपात्र मत्सरी दुर्गुणग्राहीने आ ग्रन्थनुं वांचन, विपरीतपणे परिणमशे. तेमां तेनी दृष्टि तेज मुख्य कारणछे.

प्रत्येक भव्यजीवो आ ग्रन्थ वांची अध्यात्मस्वरूपमां रमणता करी परमात्म स्वरूप माप्त करो. परमार्थ मति सर्वनी रुचि थाओ. परमानंदने सर्व जीवो माप्त करो. सर्व जीवो मंगलमालामाप्त करो.

एजशुभाशीः ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

मुकाम-अमदावाद-झवेरीवाडो.

संवत १९६६ कार्तक वदी ८

लि. मुनि. बुद्धिसागर.

आंबली पोळनो उपाश्रय.

॥ अथ परमात्मदर्शन ॥

पंचशती प्रारभ्यते.

श्री संखेश्वरपार्श्वनाथाय नमः

मंगलम्.

गुरु स्तुति, दुहा.

सुरतरु जंगम तीर्थरूप, सद्गुरु साचा देव;
त्रिकरण योगे तेहनी, जावे कीजे सेव. १

श्री सद्गुरुनी स्तुति कराय छे. अनादि काळथी जीव अज्ञान (अविद्या) थी बहिर् वस्तुमां आत्मपणाथी बुद्धि धारण करी अनंतशः दुःखराशि भोक्ता थयो अने बहिरात्मभावे परवस्तुने पोतानी मानी स्वस्वरुप भूल्यो एवा मूढ आ जीवने शुद्ध स्वरूप ओळखावनार श्री गुरुमहाराज सत्य देवरूपे छे. मिथ्यात्व अने सम्यक्त्व स्वरूप समजावी शुद्ध मोक्षमार्ग योजक श्रीगुरुना समान बीजा देव नथी. मुक्ति रूप फल देवामां श्रीगुरु कल्पवृक्ष छे. अन्य कल्पवृक्षो पौद्गलिक सुखदाता छे. अने गुरुरूप कल्पवृक्ष तो अनंत आत्मिक शाश्वत सुख समर्पे छे. जो के उपादान कारणरूप गुरु महाराज नथी तो पण उपादान कारणनी शुद्धिकारक तथा सहायभूत निमित्त कारणरूप श्रीगुरुराज छे, ए कल्पवृक्षनी प्राप्ति महा पुण्योदये थाय छे. गुरु जंगम तीर्थ छे, अन्यत्र के ज्यां श्री तीर्थंकरादिनां कल्याणक थयां छे, ते तीर्थ स्थावर तरीके

छे, ते तीर्थोनी यात्रा सेवा भक्ति करवाथी सम्यक्त्व निर्मल थाय छे. किंतु ते स्थावर तीर्थनी श्रद्धा ओळखावकारक पृथ्वीतळ गमनकर्ता श्री सद्गुरु प्रत्यक्ष महाउपकारी छे. येनालंबनेनजीवो। भवांभोधितरतीति तीर्थः जेना आलंबने जीव संसार समुद्रने तरे छे ते तीर्थछे, श्री गुरु महाराजना आलंबने जीव संसार समुद्र तरे छे, माटे गुरु तेज तीर्थ छे, गुरुरूप तीर्थनी सेवाभक्ति झटिति प्रत्यक्ष फलदा छे. श्री गुरुनी वाणीरूप गंगामां जे स्नान करे छे ते पोते उपार्जनकृत कल्मषोने गमावे छे. चक्षुनी विद्यमानताए पण अन्य पदार्थोना निरीक्षणमां सूर्य चंद्र दीपकनी जरुर पडे छे. तेम भव्यात्माओने पोतानुं आत्मिक शुद्धस्वरुप अवलोकनार्थे गुरु सूर्य समान छे तेथी तेनी जरुर पडे छे, विशेष ए छे के, सूर्य अंतरनो प्रकाश करी शकतो नथी.अने गुरु महाराज अंतरना प्रकाशकारक छे. माटे आ सूर्य करतां पण विलक्षण अलौकिक गुरुरूप सूर्य छे, पूर्वोक्त सद्गुरुनी त्रिकरणयोगे अत्यंत भावे सेवा करवी, सेवा कीजीए ए कहेवाथी एम सूचव्युं के जेने मुक्ति पदनी इच्छा होय तेने सद्गुरुनो बहुमानथी विनय करवो. कारण के धर्मनुं मूळ विनय छे. अने विनय विना धर्मनी प्राप्ति थती नथी, अने धर्मनी प्राप्ति गुरु विना थाय नही माटे श्रद्धा भक्ति बहुमान पूर्वक गुरुराजनो विनय करवो.

सुरतरुनी उपमाथी समजवुं के–गुरु अनंत आत्मधर्मना दानी छे.

आत्मधर्मनुं दान ते भाव अभयदान छे. पंचधादान छे. १ अभयदान, २ सुपात्रदान, ३ अनुकंपादान, ४ उचितदान, ५ कीर्तिदान, ए पांचमां महाउपकारक अभयदान मुख्य छे, द्विधा अभयदानं द्रव्यतो भावतश्च. अभयदान बे प्रकारे छे. १ द्रव्य अभयदान. २ भाव अभयदान. एकेंद्रियादिथी ते पंचेन्द्रिय पर्यंत जी-

बीना प्राणोनुं रक्षण करवुं तेमनो कोइ घात करतुं होय तो बचाववा तेने द्रव्य अभयदान कहे छे, दरेक जीवने जीववुं प्रिय लागे छे. कोइने मरण शरण थवुं प्रिय लागतुं नथी. कयुं छे के. मरण समो नास्थि भयं: मरण समान कोइ भय नथी, माटे प्राणीओने कोइ मारतुं होय तो अनेकरीत्या तेमनुं रक्षण करवुं. जीवनी दयाथी जीव तीर्थंकरनामकर्म उपार्जन करे छे, नरस्वर्गादि सुखसंपत्तिनो भोक्ता थाय छे. एक राजानी अणमानीनी स्त्रीए चोरने फांसीनी शिक्षा थती अटकावी अने अन्य राणीओए लक्ष रुपैया खर्ची तेने मिष्टान्न जमाड्यां, किंतु चोरे अणमानीती स्त्रीनो अत्यंत उपकार मान्यो. अने तेणीए छोडाव्यो त्यारे सुखी थयो, श्री शान्तिनाथना जीवें पूर्व भवमां एक पारेवानो जीव बचाव्यो तेथी अत्यंत पुण्य उपार्जन कर्युं, तेम भव्यात्माओए प्रत्येक जीवोनी दया करवी, कोइ जीवनी हिंसा करवी नहीं, मिथ्यात्वे पाप बुद्धिरूप पिशाचिकाना प्रेर्या केटलाक जीवो मत्स्य अज पशुपंखीनां मांस भक्षण करे छे, मांस वेचे छे, मांस भक्षकनी अनुमोदना करे छे ते जीवो घोरकर्म ग्रही अति दारुण दुःखरूप अधोगतिभाक् थाय छे अने आ भवमां पण कर्मोदये दुःखनी झाळमां फसाय छे, माटे मन वचन कायाए करी जीवनी हिंसा वर्जवी.

२ भावअभयदान-भव्य जीवात्माओने तेना शुद्ध गुणोनुं दान आपवुं तेने भाव अभयदान कहे छे तद्द्विविधं=भाव अभयदान बे प्रकारे छे. १. स्वभाव अभयदान २. परजीवधर्म अभयदान. पोतानो आत्मा असंख्यातप्रदेशी छे अने ते प्रदेशो अरूपी छे, कोइ काळे पण उत्पन्न थया नथी माटे अज छे, वर्तमान, भूत अने भविष्यत् काळमां प्रदेशो जेवा छे तेवा ने तेवा रहे छे, माटे शाश्वता छे, ए असंख्यात आत्माना प्रदेशो पाछळ्या चल्या

नथी, गाळ्या गळता नथी, एक प्रदेशे आत्मा कहेवाय नहीं, बे प्रदेशे आत्मा कहेवाय नहीं, असंख्यात प्रदेशमयी आत्मा कहेवाय छे, जडरूप पुद्गलथकी आत्मानुं स्वरूप न्यारुंछे, अनंतज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, अनंत वीर्य, इत्यादि आत्माना अनंत गुणो छे, आत्माना एकेक प्रदेशमां अनंत धर्म रह्या छे, आत्मामां अनंत सुख अस्तिभावे रह्युंछे.

किंतु अनादि कालथी जीव पोतानास्वरुपनाअज्ञानथी परवस्तुमां अहंभाव धारण करी, मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योगथी पुद्गल स्कंधोने अष्टकर्मनी वर्गणा तरीके परिणमावी विचित्र शरीरोने धारण करे छे, जीवनी अनादिकाल मूळ वसति निगोद छे, निगोदना जीव बे प्रकारे छे. १ सूक्ष्मनिगोद २ बादरनिगोद. अनंत जीवो वच्चे एक शरीर होय छे अने चतुर्दश रज्वात्मक (चउदराज) लोकोने काजलनी कुंपलीनी पेरे व्यापीने रह्या छे, तेने सूक्ष्म निगोदीया जीव कहे छे.

ए सूक्ष्म निगोदीया जीवने मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, अने योग रह्या छे. सदाकाल ते दुःखना भोक्ता छे. त्रण प्रकारनां जे अज्ञान छे, तेमांथी एक पण अज्ञान टळ्युं नथी, तेनामां समजवानी कंइ पण शक्ति नथी. ए सूक्ष्म निगोदना जीवोमां केटलाक भव्य जीवो अने केटलाक अभव्यजीवो छे. साधारण वनस्पतिना जीवोने बादर निगोदीया जीव जाणवा, द्विप्रकार निगोदमां अनंतशः जन्म मृत्युनां चक्रोगे जीव भम्यो, त्यांथी भवितव्यतायोगे पृथिवी, जळ, ज्वलन, वायु, प्रत्येक वनस्पतिनां शरीरो धारण करी भवभ्रमण कर्युं, पण आत्मस्वरुपनो अवबोध थयो नहीं. दान ए शी वस्तु छे तेटलुं पण जाणवामां आव्युं नहीं अने ते कर्युं नहीं.

चित्र–हे महाराज श्री पार्श्वनाथ नामना त्रेवीशमा तीर्थंकरना प-रंपरागत शिष्यो छे अने ते देहथी जीव पृथक् कहे छे.

प्रदेशी–हे चित्र ! ते केवा प्रकारनी युक्तिओथी शरीरथी भिन्न जीवनी अस्तिता कथे छे ?

चित्र–हे नरपते ! एनी मने मालुम नथी तेमनी पासे गमन करी श्रवण करीए तो मालुम पडे.

राजाए कह्युं " चालो त्यारे तेमनी पासे, एम कही आचार्य पासे जइ स्थाणुनी पेठे विनयरहीत नास्तिक शिरोमणि बेठो.

प्रदेशी–तमो कइ कइ युक्तिओथी शरीरथी भिन्न आत्मा मानो छो?

केशी गणधर–हे राजन् ! ए प्रमाणे प्रश्न पुछवाने इच्छा राखे छे तो केम विनयनो भंग करे छे ?

प्रदेशी–शुं में असमंजस कर्युं ?

केशीसूरि–दूरस्थ एवा तें अमोने देखी मनमां एवुं चिंतव्युं के आ मूढो मूर्खाओनी आगळ शुं असत्य बकेछे तें मनमां विकल्प कर्यो ते सत्य के असत्य ए प्रमाणे सूरिनुं वचन सांभळी राजा चमत्कार पाम्यो.

प्रदेशी–पराभिप्रायने तमोए शाथी जाण्यो ?

सूरी–पांच ज्ञानमांथी मारा विषे चार ज्ञान छे. तत्र प्रथमं मतिज्ञानं इंद्रियप्रणोदनोद्भूतं,। द्वितीयं श्रुतज्ञानं तच्च श्रवणगृहीत पदवाक्यैरर्थावबोधरूपं। तृतीयं अवधिज्ञानं तच्चेन्द्रियकज्ञानव्यतिरिक्तमात्मनैव प्र-त्यक्षकृतं रूपि द्रव्यगोचरं। चतुर्थमनःपर्यायज्ञानं तच्च मनुष्यलोकवर्तिनां संज्ञिजीवानां ये मनः

चित्र–हे महाराज श्री पार्श्वनाथ नामना त्रेवीसमा तीर्थंकर
रंपरागत शिष्यो छे अने ते देहथी जीव पृथक् कहे छे
प्रदेशी–हे चित्र! ते केवा प्रकारनी युक्तिओथी शरीरथी
जीवनी अस्तिता कथे छे ?

चित्र–हे नरपते! एनी मने मालुम नथी तेमनी पासे गम
श्रवण करीए तो मालुम पडे.

राजाए कह्युं "चालो त्यारे तेमनी पासे, एम कही
पासे जइ स्थाणुनी पेठे विनयरहीत नास्तिक शिरोमणि बेठ

प्रदेशी–तमो कइ कइ युक्तिओथी शरीरथी भिन्न आत्मा मा

केशी गणधर–हे राजन्! ए प्रमाणे प्रश्न पुछवाने इच्छा
तो केम विनयनो भंग करे छे ?

प्रदेशी–शुं में असमंजस कर्युं ?

केशीसूरि–दूरस्थ एवा तें अमोने देखी मनमां एवुं चिंतव्युं
मूढो मूर्खाओनी आगळ शुं असत्य बकेछे तें मनमां
कर्यो ते सत्य के असत्य ए प्रमाणे सूरिनुं वचन
राजा चमत्कार पाम्यो.

प्रदेशी–पराभिप्रायने तमोए शाथी जाण्यो ?

सूरी–पांच ज्ञानमांथी मारा विषे चार ज्ञान छे. तत्र
मतिज्ञानं इंद्रियप्रणोदनोद्भूतं, । द्वितीयं श्रु
तच्च श्रवणगृहीत पदवाक्यैरर्थावबोधरूपं।
अवधिज्ञानं तच्चेन्द्रियकज्ञानव्यतिरिक्तमात्म
त्यक्षकृतं रूपि द्रव्यगोचरं । चतुर्थमनःपर्या
तच्च मनुष्यलोकवर्तिनां संज्ञिजीवानां ये

पर्यायान् विचित्रमनोऽवस्थाः ताश्चात्मनैव प्रत्यक्षीकृत्य ततोर्थापत्यातर्श्चिततज्ज्ञानं । एतानि चत्वारि ज्ञानानि मम संति तेन परमनोविकल्पितं अहंजानामि । यत्तु पंचमं केवलज्ञानं तत्र सर्वाण्येतानि चत्वारि ज्ञानानि लीयंते सूर्यप्रकाशादन्यताराप्रकाशवत् तत्र ज्ञानं मम नास्ति ॥

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अने मनः पर्यायज्ञान ए चार मने वर्त्ते छे. तेथी मनः पर्यवज्ञाने अन्य जनोना अभिप्रायने हुं जाणुं छुं.

प्रदेशी—पोताना मनमां विचार करवा लाग्यो के अहो आ महापुरुष छे, ज्ञानी छे, तेमनी साथे संभाषण लाभार्थे छे एम चिंती बेसवानी इच्छावाळा राजाए सूरिने कयुं, हे स्वामिन् तमारी आज्ञा होय तो हुं बेसुं. सूरिए कयुं, तमारी पृथ्वी छे जेम सुख थाय तेम करवुं.

राजा बेसी बोल्यो—देह अने जीवनुं भिन्नत्व तमो कथो छो ते घटतुं नथी. आत्माने सुख दुःखनी अवस्थाना भेदो माटे पुण्य पापनी कल्पना करवी अने पश्चात् पुण्य पाप भोगार्थ माते परलोक गत्यागतिनी कल्पना करवी ते प्रत्यक्ष प्रमाणथी विरुद्ध छे. कारण के-मारो पितामह अत्यंत पापी हतो, तेनो मारा उपर अत्यंत स्नेह हतो, जो ते कहेवा प्रमाणे नरकमां गयो होय तो तेणे अत्र आवी केम पापनो निषेध कर्यो नहीं ? कारण के त्यां अत्यंत दुःख मारे भोगववुं पडे माटे, हे पुत्र तुं पाप मा कर हुं तो पापार्जनथी दुःखी थयो छुं एवो

चित्र-हे महाराज श्री पार्श्वनाथ नामना त्रेवीशमा तीं
रंपरागत शिष्यो छे अने ते देहथी जीव पृथक् फो
प्रदेशी-हे चित्र ! ते केवा प्रकारनी युक्तिओथी शरी
जीवनी अस्तिता कथे छे ?

चित्र-हे नरपते ! एनी मने मालुम नथी तेमनी पासे
श्रवण करीए तो मालुम पडे.

राजाए कह्युं " चालो त्यारे तेमनी पासे, एम क
पासे जइ स्थाणुनी पेठे विनयरहीत नास्तिक शिरोमणि

प्रदेशी-तमो कइ कइ युक्तिओथी शरीरथी भिन्न आत्म

केशी गणधर-हे राजन् ! ए प्रमाणे प्रश्न पुछवाने इच
तो केम विनयनो भंग करे छे ?

प्रदेशी-शुं में असमंजस कर्यु ?

केशीसूरि-दूरस्थ एवा तें अमोने देखी मनमां एवुं चिं
मूढो मूर्खाओनी आगळ शुं असत्य वकेछे तें मन
कर्यो ते सत्य के असत्य ए प्रमाणे सूरिनुं वच
राजा चमत्कार पाम्यो.

प्रदेशी-पराभिप्रायने तमोए शाथी जाण्यो ?

सूरी-पांच ज्ञानमांथी मारा विषे चार ज्ञान छे.

मतिज्ञानं इंद्रियप्रणोदनोद्भूतं, । द्वितीयं
तच्च श्रवणगृहीत पदवाक्यैरर्थाववोधरूपं
अवधिज्ञानं तचेन्द्रियकज्ञानव्यतिरिक्तमा
त्यक्षकृतं रुपि द्रव्यगोचरं । चतुर्थमनः
तच्च मनुष्यलोकवर्तिनां संज्ञिजीवानां

पर्यायान् विचित्रमनोऽवस्थाः ताश्चात्मनैव प्रत्यक्षीकृत्य ततोऽपि तस्यातांश्चिंतितज्ञानं। एतानि चत्वारि ज्ञानानि मम संति तेन परमनोविकल्पितं अहंजानामि। यत्तु पंचमं केवलज्ञानं तत्र सर्वाण्येतानि चत्वारि ज्ञानानि लीयंते सूर्यप्रकाशदन्यताराप्रकाशवत् तत्र ज्ञानं मम नास्ति॥

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अने मनःपर्यवज्ञान ए चार मने वर्ते छे. तेथी मनःपर्यवज्ञाने अन्य जनोना अभिप्रायने हुं जाणुं छुं.

मेरुश्री—पोताना मनना विचार करता मान्यो के अहो आ महामुनि छे, ज्ञानी छे. तेमनी साथे संभाषण मात्रार्थे छे एम चिंती वेगवाली इच्छावाळा राजाए मुनिने कह्युं, हे स्वामिन् तमारी आज्ञा होय तो हुं वेचुं. मुनिए कह्युं, तमारी इच्छा छे जेम सुख थाय तेम करवुं.

राजा तेनी बोल्यो—देह अने जीवनुं भिन्नत्व तमो कयो छो ते घटतुं नथी. आत्माने सुख दुःखनी अवस्थाना भेदो माटे पुण्य पापनी कल्पना करवी अने पश्चात् पुण्य पाप भोगवार्थ माटे परलोक गत्यागतिनी कल्पना करवी ते प्रत्यक्ष प्रमाणथी विरुद्ध छे. कारण के-मारो पितामह अत्यंत पापी हतो. तेनो मारा उपर अत्यंत स्नेह हतो, जो ते कहेवा प्रमाणे नरके गयो होय तो तेने अत्र आवी केम पापनो निषेध कर्यो नहि? कारण के त्यां अत्यंत दुःख मारे भोगववुं पडे माटे, हे पुत्र तुं पाप मा कर हुं तो पापकर्मथी दुःखी थयो छुं एवो

चित्र–हे महाराज श्री पार्श्वनाथ नामना त्रेवीशमा तीर्थंकरना संतानिय शिष्यो छे अने ते देहथी जीव पृथक् कहे छे.

प्रदेशी–हे चित्र! ते केवा प्रकारनी युक्तिओथी शरीरथी जीवनी भिन्नता कहे छे?

चित्र–हे नरपते! पण मने मालुम नथी तेमनी पासे गमन श्रवण करीए तो मालुम पडे.

राजाए कह्युं "चालो त्यारे तेमनी पासे, एम कही आ
पासे जइ न्हानुनी पेठे विनयरहित नास्तिक शिरोमणि बेठो.

प्रदेशी–तमो कइ कइ युक्तिओथी शरीरथी भिन्न आत्मा मानो

केशी गणधर हे राजन्! ए प्रमाणे प्रश्न पुछवाने इच्छा रा
तो केम विनयनो भंग करे छे?

प्रदेशी–शुं में असंजम कर्युं?

केशीमुनि–उन्मत्त पणे ते अहींने बेठा मनमां एवुं चिंतव्युं
मूढो मूर्खा मोनी आगळ शुं असत्य बके छे ते मनमां चि
कर्यो ते सत्य के असत्य ए प्रमाणे मुनिनुं वचन सा
गया चमत्कार पाम्यो.

प्रदेशी–भगवानने तमोए शाथी जाण्यो?

मुनि–पांच ज्ञानमांथी मारा विषे चार ज्ञान छे. तत्र प्र
मतिज्ञानं इंद्रियमनोदमनोद्भूतं। द्वितीयं श्रुत
तच्च श्रवणगृहीत पदवाक्यैरर्थावबोधकरं। तृ
अवधिज्ञानं तदेन्द्रियकज्ञानव्यतिरिक्तमालंब
त्वरूपं रूपि द्रव्यगोचरं। चतुर्थमनःपर्याय
तच्च मनुष्यलोकवर्तिनां संज्ञिजीवानां ये

पर्यायान् विचित्रमनोऽवस्थाः ताध्रात्मनैव प्रत्यक्षीकृत्य ततोर्थापत्यातर्श्रितितज्ज्ञानं । एतानि चत्वारि ज्ञानानि मम संति तेन परमनोविकल्पितं अहंजानामि । यत्तु पंचमं केवलज्ञानं तत्र सर्वाण्येतानि चत्त्वारि ज्ञानानि लीयंते सूर्यप्रकाशादन्यतारामकाशवत् तत्र ज्ञानं मम नास्ति ॥

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अने मनः पर्यायज्ञान ए चार मने वर्ते छे. तेथी मनः पर्यवज्ञाने अन्य मनोना अभिमायने हुं जाणुं छुं.

प्रदेशी–पोताना मनमां विचार करवा लाग्यो के अहो आ महापुरुष छे, ज्ञानी छे, तेमनी साथे संभाषण लाभार्थे छे एम चिंती बेसवानी इच्छावाळा राजाए गुरुने कह्युं, हे स्वामिन् तमारी आज्ञा होय तो हुं बेसुं. गुरुए कह्युं, तमारी पृथ्वी छे जेम सुख थाय तेम करवुं.

राजा बेसी बोल्यो–देह अने जीवनुं भिन्नत्व तमो कहो छो ते घटतुं नथी. आत्माने सुख दुःखनी अवस्थाना भेदो माटे पुण्य पापनी कल्पना करवी अने पश्चात् पुण्य पाप भोगार्थ मति परलोक गत्यागतिनी कल्पना करवी ते प्रत्यक्ष प्रमाणथी विरुद्ध छे. कारण के-मारो पितामह अत्यंत पापी हतो, तेनो मारा उपर अत्यंत स्नेह हतो, जो ते कहेवा प्रमाणे नरकमां गयो होय तो तेणे अत्र आवी केम पापनो निषेध कर्यो नहीं ? कारण के त्यां अत्यंत दुःख मारे भोगववुं पडे माटे, हे पुत्र हुं पाप मा कर हुं तो पापार्जनथी दुःखी थयो छुं एवो

मित्र–हे महाराज श्री पार्श्वनाथ नामना त्रेवीसमा तीर्थंकर
संतानना शिष्य छे अने ते देहथी जीव पृथक् करे छे
प्रदेशी–हे मित्र ! ते केवा प्रकारना बुद्धिमानोथी शरीरथी
जीवनी भिन्नता कहे छे ?

मित्र–हे नरेश ! एनी मने मालुम नथी तेमनी पासे गय
भाषण करीए तो मालुम पडे.
राजाए कह्युं " चालो आपणे तेमनी पासे, एम कही
पासे जइ मनुष्यनी पेठे निरादरपणे नास्तिक विरोधपणे बे
प्रदेशी–अहो जड बुद्धिमानोथी शरीरथी जीव भिन्न मानवा मा
केशी महाराज हे राजन ! ए प्रमाणे मने पुछवाने इच्छा
तो केम विनयथी प्रश्न करो छो ?
प्रदेशी–हुं शुं अपमान करुं ?
केशीमहाराज–तुम्हे एवा ते अमने देखी मनमां एवुं चिंतव्युं
जडो मुंडमोनी आगळ हुं अमान्य बेठो छे ते मनमां
कर्यो ते माटे के अमारे ए प्रमाणे तमारुं वचन
राजा नमस्कार करवो.
प्रदेशी–मने महाराजने केटलां ज्ञान छे ?
केशी–पांच ज्ञानमांथी मारे चार ज्ञान छे. तत्र
मतिज्ञानं इंद्रियमनोनिमित्तं, । द्वितीयं श्रु
तच श्रुतग्रंथानुसारेण पदार्थस्वरूपबोधरूपं ।
अवधिज्ञानं मनइंद्रियज्ञानमनपेक्ष्य मर्यादितं
लक्षणं रूपि द्रव्यगोचरं । चतुर्थं मनःपर्याय
तच मनुष्यक्षेत्रवर्तिनां संज्ञिनां मनो

पर्यायान् विचित्रमनोऽवस्थाः ताश्चात्मनैव प्रत्यक्षीकृत्य ततोर्थापत्यातश्चिंतितज्ञानं । एतानि चत्वारि ज्ञानानि मम संति तेन परमनोविकल्पितं अहंजानामि । यत्तु पंचमं केवलज्ञानं तत्र सर्वाण्येतानि चत्त्वारि ज्ञानानि लीयंते सूर्यप्रकाशदन्यताराप्रकाशवत् तच्च ज्ञानं मम नास्ति ॥

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अने मनः पर्यायज्ञान ए चार मने वर्त्ते छे. तेथी मनः पर्यवज्ञाने अन्य जनोना अभिप्रायने हुं जाणुं छुं.

प्रदेशी–पोताना मनमां विचार करवा लाग्यो के अहो आ महापुरुष छे, ज्ञानी छे, तेमनी साथे संभाषण लाभार्थे छे एम चिंती वेसवानी इच्छावाळा राजाए सूरिने कयुं, हे स्वामिन् तमारी आज्ञा होय तो हुं वेसुं. सूरिए कयुं, तमारी पृथ्वी छे जेम सुख थाय तेम करवुं.

राजा वेसी बोल्यो–देह अने जीवनुं भिन्नत्व तमो कयो छो ते घटतुं नथी. आत्माने सुख दुःखनी अवस्थाना भेदो माटे पुण्य पापनी कल्पना करवी अने पश्चात् पुण्य पाप भोगार्थ प्रति परलोक गत्यागतिनी कल्पना करवी ते प्रत्यक्ष प्रमाणथी विरुद्ध छे. कारण के–मारो पितामह अत्यंत पापी हतो, तेनो मारा उपर अत्यंत स्नेह हतो, जो ते कहेवा प्रमाणे नरकमां गयो होय तो तेणे अत्र आवी केम पापनो निषेध कर्यो नहीं ? कारण के त्यां अत्यंत दुःख मारे भोगववुं पडे माटे, हे पुत्र तुं पाप मा कर हुं तो पापार्जनथी दुःखी थयो छुं एवो

जवाप नरकमांथी आवी मारा पिताए केम कह्यो ?
एवा व्यतिकरना अभावे हुं एम स्वीकारुं छुं के
ऐक्य छे, कोइनुं पण परलोकगमन नथी.

केशी गणधर—हे राजन्! जो कोइ पुरुष तारी राणी
अने ते तें जाण्युं तो तुं तेने कोइक दंड आपे वा ?

प्रदेशी—तेने हुं घणी विडंबनाओ करी मारुं.

केशी०—ते पुरुष जो एम कहे के मने क्षणवार मूको तो
कुटुंबने शिक्षा आपी आवुं के हुं अकृत्य करवाथ
दुःखी थयो छुं माटे तमारे कोइए अकृत्य करवुं न
तेनु वचन अंगीकार करे ?

प्र०—कदी तेनुं वचन मानी छोडुं नहीं.

केशी०—त्यारे ए प्रमाणे तमारा पितामह पण नरकमां
शके नहीं, ए प्रथम प्रश्नोत्तर.

प्रदेशी—मारा पितामह कदापि आवी शके नहीं तेथी मा
असत्य ठरती नथी; मारी पितामही तमारा शासन
गिणी हती ने धर्म कर्ममां सदा आसक्त हती तो
युक्तिए देवलोकमां गइ तेनो मारा उपर अत्यंत स्ने
तेणीए अत्रे आवीने केम प्रतिबोध कर्यो नहीं! अ
धर्म आचर, हुं धर्म प्रसादथी स्वर्गमां गइ छुं,
पितामहे तो पापना संचयथी नरक गति पामी ए
केम कयुं नहीं, तेने तो अहीं आवतां कोइ अटका
नथी, तो तेना व्यतिकरना अभावे मारी प्रतिज्ञा स
देहथी जीव भिन्न नथी. एतादृशी प्रतिज्ञा मम सत्
केशीगणधर—ज्यारे तें स्नान करी सुगंधिद्रव्यनुं शरीरे

विलय ना पामी होय तो जीव अन्यत्र जात, तो तेन
ळवानो मार्ग पण थएलो जणात, तेना जीवने नीक
मार्गना अभावे मारी प्रतिज्ञा सत्य छे.

केशी–हे राजन् कश्चिद् दुंदुभिवादक भूमीगृह (भोंयरा)
अने पश्चात् भोंयरानुं मुख बंध करे, जरा पण छिद्र
नहीं, त्यां दुंदुभि वगाडे तो तेनो शब्द बाहिरना
सांभळे के नहीं ?

प्रदेशी–बाहिरना लोकोथी शब्द संभळाय.

केशी–ए दुंदुभिना शब्दने निस्सरवानो क्यांय मार्ग जण

प्रदेशी–कोइ स्थाने जणातो नथी.

केशी–श्रोत्रथी ग्रहण थाय एवां शब्द पुद्गलोने निः
मार्ग जणातो नथी तो आकाशनी इव अरुपी आत्मा
मनद्वार कथंरीत्या पामी शकाय? गमे त्यां थइ आत्म
माटे नीकळी शके छे. ते स्थूलदृष्टिथी अवलोकाय न

तृतीय प्रश्नोत्तर.

प्रदेशी–हे भगवन्! आपनी बुद्धिनी युक्तिथी ए वात स
निश्चयसाध्य थती नथी. चोरना कलेवरमां कृमीयो
यया ते जीवो अछिद्रवाळी कुंभीना कया द्वारथी प्र
चोरने कंइ छिद्र नहोतां तेथी प्रतिज्ञा करुं छुं के वि
चोरनुं शरीर तद्रूपताने पाम्युं माटे मारी प्रतिज्ञा सत

केशी–हे राजन् भृशंवन्हितप्तायोगोलकमां वन्हि प्रवेश छे

प्रदेशी–अयोगोलकमां वन्हि प्रवेशे छे.

केशी–त्यां छिद्रना अभावे अयोगोलकमां वन्हि प्रवेशनी
छे तद्वत् जीव पण द्वार विना पेसतो छतो केम अ

थाय ? किंतु द्वार विना पण अरूपी आत्मानो प्रवेश थाय छे एम सरदहवुं जोइए. (इति चतुर्थ प्रश्नोत्तरं).

प्रदेशी–हे भगवन् तमारी युक्ति प्रमाणे तो समलक्षणयुक्त सर्व जीवो छे ते घटतुं नथी लक्षणनी साम्यताए सर्वमां सरखुं बल होवुं जोइए ? ने प्रत्यक्ष प्रमाण विरुद्ध छे ते कारण माटे बालके छोडेलो बाण नजीक पडे छे, अने तरुणे छोडेलो बाण दूर पडे छे. ए सर्व जीव देहनी एकरूपताए घटे छे, लघु शरीरे लघुबल, मोटा शरीरे बल पण महत् माटे सर्व जीवोमां लक्षण साम्यताए समबलत्व अयुक्त छे माटे मारी मतिग्रा सत्या समजवी.

केशी–कोइ बलवान् तरुण पुरुष प्रत्यंचा चडावी बाण फेंके ते ज्यां सुधी भूमि उलंघे. ते ज धनुष्य चडावी बालक बाण फेंके ते युवान पुरुषे फेंकेला बाणे जेटली भूमि उलंघन करी छे तेटली भूमि आ उलंघन करे के नहीं ?

[illegible]देशी–ते बाण आसन्न भूमीमां पडे पण पूर्वोक्त पुरुषे फेंकेलुं बाण तेना जेटली भूमी प्रवगाही शके नही ?

[illegible]शी–भला तेमां शो हेतु ?

[illegible]शी–साधन वैकल्य तेमां हेतु छे.

[illegible]ी–बालनुं शरीर निर्बल साधन छे धातुओना अपुष्टपणाथी, [illegible]ष्ट शरीर सबल साधन छे ते माटे सर्व जीवोमां लक्षणनी [illegible]ाम्यता अंगीकार कर. (इति पंचम प्रश्नोत्तरं).

[illegible]ी–जयोर जीवोमां समलक्षणपणुं कहुं ते असत् छे, कारण [illegible] युवान अने बालकनी शक्तिनी (पराक्रम) भिन्नता छे. [illegible]लकनी शक्ति अल्प छे, युवाननी विशेष छे. जो जीव एक

सरखो होय तो पराक्रम पण एक सरखुं होवुं जोइए, क्रममां भिन्नता छे माटे समलक्षणयुक्त जीवो कहेवाय अने ते विरोध प्राप्त थतां शरीरथी जीव भिन्न सिद्ध थतो न

केशीकुमार–एक पुष्ट अने मोटुं पंखी होय ते जेटला भ उद्वहन करे तेटलो भार दुर्बळ नाना पंखीथी उपडातो न त्यां शरीर शक्तिरूप साधननो अभाव हेतु छे. मोटा पंख शरीरशक्ति विशेष, नाना पंखीमां शरीरशक्ति अल्प ते तेना जेटलो भार उपाडी शकातो नथी. किंतु जीवो तो समलक्षणवंत छे, माटे समलक्षण जीवोनुं छे एम हे रा तुं जाण.

प्रदेशी–हे भगवन् में जीवता चोरने तुलामां जोख्यो, पश्चात् पाशथी मारी नाख्यो, मरेलाने पश्चात् तुलामां आरोही ज ख्यो तो पण प्रथम जेटला भारनो हतो तेटलोज रह्यो, प्रमाण पण हीन थयो नहीं, तेथी में विचार्युं के जो देह जीव भिन्न होय तो जीवनो अपगम थतां मृतक चोर शरी करी हीन थवुं जोइए पण थयुं नहीं, तेथी सिद्ध ठर्युं के–जी देहनी ऐक्यता छे.

केशी–चामडानी धमणमां वायु पुरीने जोखवी, अने पश्चात् वा काढी नांखी जोखवी, वायु पुरीने जोखेली धमण करत वायु काढी नांखी जोखेली धमणमां वारु भारनी न्यूनत थाय छे ?

प्रदेशी–हे भगवन् ना भारमां कंइ न्यूनता थती नथी.

केशी–जो त्यां भार वधतो नथी तेम घटतो नथी तो अमूर्त आ त्मानो देहमां शो भार होय ? के जेथी जीव नीकळ्या पश्चात्

चोरनुं शरीर मारमां पडे ? वायुरूपी छे, शरीरी छे, आत्मा अरूपी, अशरीरी छे, अन्यत्र गतिथी गमनवर्ती आत्मा सूक्ष्म शरीरी जाणवो. (इति पंचमं प्रश्नोत्तरं).

प्रदेशी-एक चोरने में कटके कटका करीने जोयो, तथापि मने धातुओनुं निरीक्षण कर्युं पण तृण पण अवलोक्युं पण क्यांय जीव देखायो नहीं, माटे जीव देहथी इतरथा सिद्ध ठरी.

केशी-हे राजन् काष्ठोपजीवि जनवत् तुं मूढ छे.

प्रदेशी-कोण ते काष्ठोपजीवि. दृष्टान्त.

केशी-जे काष्ठ छेदन विषयथी स्वआजीविका निर्वहे छे, ते काष्ठोपजीवि पुरुषो कुहाडी वगेरे उपकरणो लेइ तथा पखालवाना जल लेइ वनमां गया, त्यां तेओए एक पुरुषने कह्युं के अमे काष्ठार्थे आगळ जइशुं, तुं आ मूढ अरणिनुं काष्ठ अने आकडानुं काष्ठ बेमांथी अग्नि उत्पन्न करी रसोइ पकावजे, एम करी ते वनमां गया, पेलो पुरुष केटलोक वखत निद्राधीन थइ पश्चात् अरणीना काष्ठना खंडेखंड करी अग्नि जोयो पण देखायो नहीं, तेम आकडाना लाकडाना खंडोखंड करी जोयुं पण अग्नि दीठो नहीं, तेथी खिन्न थयो, चरम प्हरे ते पुरुषो आव्या, अने आने करेवा मागया के-रसोइ तइयार थइ छे ? त्यारे मूढ पुरुषे कह्युं के अग्नि विना शी रीते रसोइ करुं ? त्यारे तेओए कह्युं आ अरणि अने आकडाना लाकडामां अग्नि छे तेम कह्युं हतुं. तेनु केम? त्यारे तेने कह्युं के-बंने जातिना काष्ठना खंडोखंड करी जोयुं पण अग्नि दीठो नहीं, त्यारे तेओए जाण्युं के, आ महा मूर्ख छे, पश्चात् तेओए अरणिकाना काष्ठने नीचे मूकी, उपर मूढ़ छाणुं मूकी आकडाना काष्ठथी मथन करी अग्नि उत्पन्न

करी ते वडे रसोइ पकावी. सर्वेए खाधुं, पश्चात् सर्वे पोताने घेर गया, आ दृष्टांतनी पेठे हे राजन्! तुं पण मूर्ख छे.

प्रदेशी–तमो निपुण, बहुविद् छो तो सभा समक्ष तुं मूर्ख छे एम केम मने कह्युं? ए केहेवुं तमने अनुचित छे.

केशी–मनुष्य लोकमां हे राजन् केटली सभाओ छे?

प्रदेशी–राजसभा, गाथापति सभा, ब्राह्मण सभा, अने चोथी ऋषिसभा जाणवी.

केशी–ते सभाओमां अपराध करे तेने दंड शो आपवो?

प्रदेशी–राजसभा, गाथापति सभा, अने ब्राह्मण सभामां अपराध करनारने अनुक्रमे मोटी लघु शिक्षा करवामां आवे छे अने ऋषिसभामां अपराध करनारने वाणीवडे तर्जना कराय छे.

केशी–हे राजन्! तुं जाणतो छतो मने केम उपालंभ आपे छे कारण के तुं कुयुक्तिवडे वारंवार मारी प्रतिज्ञा सत्य छे एम कही वक्रपणुं धारण करे छे. माटे तुं अपराधी अमारो करेलो दंड युक्त छे (इति सप्तम प्रश्नोत्तरं).

"वृक्षनी शाखाओ कंपवा लागी ते देखीने सूरि कहे छे.

केशी–आ वृक्षनां पांदडां डाळीओ कोण हलावतुं हशे?

प्रदेशी–वायु हलावे छे, त्यां शो संदेह छे?

केशी–हे राजन् तुं वायु देखे छे?

प्रदेशी–ना किंतु वायु स्पर्श वडे प्रत्यक्ष देखाय छे पण चक्षुथी देखातो नथी.

[illegible]–वायु जेम त्वाच प्रत्यक्ष छे, तेम ज्ञान गुणवान् जीव मानस प्रत्यक्ष छे, एम निश्चय जाण.

प्रदेशी–कुंथुओमां अने हाथीमां शी रीते समपरिणामी जीव होय? शी रीते ते साचुं मानवुं. लघु स्थानमां लघु वस्तुनुं अवस्थान युक्त छे, मोटी वस्तुनुं मोटा स्थानमां अवस्थान युक्त छे

केशी–हे आयुष्मन्–प्रदीप प्रमाणे दृष्टांत जाण. दीपक मोटी शाळामां मूक्यो छतां तेटली सर्व शाळाने तेनो प्रकाश व्यापीने रहे छे, तेम कुंभमां मूक्यो छतां ते कुंभनो ज उद्योत करे छे, तेम आत्मा जेवडा शरीरने अंगीकार कर्यो होय छे तेटला शरीरने ज चेतना गुणवडे पोषण करे छे त्यां जरा पण फेरफार नथी. इति.

प्रदेशी–हे भगवन् आपे अनादि काळथी लागेली एवी मिथ्यादेव मारी आत्म शाळी आपना सद्ज्ञानरूप सूर्यथी मिथ्यात्व अंधकार दूर कर्युं. हे भगवन् मारो उद्धार करनार आप छो, इत्यादि स्तुति करी वंदना करी पोताना घेर गयो. बीजा दिवसे अत्यंत आडंबर सहित भाव अभयदानरूप समकित दाता गुरुने वंदन कर्युं. विशेष अधिकार रायपसेणी सूत्रमां छे. श्री महावीर प्रभुए श्रेणिकराजाने भाव अभयदान अर्प्युं. श्री नेमिनाथप्रभुए श्री कृष्णमहाराजने भाव अभयदान अर्प्युं. तेना जेवो अन्य कोई जगत्मां उपकार नथी. माटे सद्गुरु भाव कल्पवृक्ष होवाने सार्थक छे, गुरुवरनी उपमाथी दानगुण सर्वनो मेरु छे, अने तेथी धर्मोत्पत्ति छे, एम जाणवुं. गुरुभक्तिरूप जंगम तीर्थनी प्राप्ति दुर्लभ छे, ग्रामानुग्राम विचरता सद्गुरुनी प्राप्ति दुर्लभ छे, स्थावर तीर्थ पण प्रभु तीर्थंकरादिनुं स्मरण करावे छे. स्थावर तीर्थ उपर जेवी भाव भक्ति श्रद्धा होय छे तेवी श्रद्धा भाव भक्ति जो सद्गुरु

उपर थाय तो आत्मा शिघ्र परमात्मपद पामे, भाव तीर्थ पोतानो आत्मा समजवो, अनंत गुण तेमां भर्या छे, जो तेनी यात्रा कोइ मुमुक्षु धारे तो अवश्य मुक्ति पद पामे. आत्मारूप प्रभुना दर्शनार्थम् जतां प्रथम चतुर्दश पगथीयांरूप चौद गुण स्थानक उल्लंघतां क्षपक श्रेणिरूप दोरी झाली आगळ चढतां आत्मा गुणठाणे चारघातीयां कर्मना संक्षयथी आत्माना असंख्यातप्रदेशरूप महेलमां जवाय छे, अने तेमां विराजित परमात्मानां साक्षात् कैवल्यचक्षुथी दर्शन थाय छे, पश्चात् आत्मा परमात्मप्रभुनां दर्शन करे छे, त्यारे अलौकिक स्वरूवाळो बने छे, अने त्यांने त्यां रहे छे. पश्चात् अघातिक र्म क्षपणथी परमात्मस्वरूप बनी स्वयमेव प्रकाशे छे.

ावत् भावतीर्थनी यात्रा थइ नथी तावत् सांसारिक ्रमणप्रपंचमूलभूतरागद्वेषनी ग्रंथि छेदाती नथी माटे नी प्राप्तिनो हेतु स्थावरतीर्थ अने जंगमतीर्थ छे. जंगमती-ी सेवा भक्ति श्रद्धा, नमन, स्तुत्यादिद्वारा भावतीर्थ दर्शन ाय छे, यथा पोतानो आकार जेवो होय तेवो आदर्शमां ेवाथी भासे छे तथा जंगमतीर्थ स्वरूपगुरुमहाराजना ालंबनथी यादृक् आत्मानुं स्वरूप होय तादृक देखाय छे.

ात्मानो प्रकाश सूर्य तथा चंद्रथी थतो नथी, किंतु स्वीय ात्मानो प्रकाश सद्गुरुद्वारा थाय छे, परपुद्गळसंगी आ-ा परभावी थइ भवभ्रमणामां भूल्यो, मोह मायामां झूल्यो, ात्मानी अनंत ऋद्धि डूल्यो, पण गुरुनी यात्रा करतां पो-ानुं स्वरूप समजायुं, माटे गुरु समान अन्य तीर्थ स्वात्म ाेळकारक नथी, गुरु तेज परम जंगमतीर्थ छे, गुरुनी ा तेज गंगा नदी जाणवी, गुरुनी कृपादृष्टि तेज मारी

शुभ गति छे, ए प्रमाणे गुरु महाराज तीर्थरूप जाणवा, तीर्थ बे प्रकारनां छे १ लौकिक तीर्थ, २ लोकोत्तर तीर्थ. वळी लोकोत्तर तीर्थ त्रिधा छे, वळी तीर्थ बे भेदे छे, स्वतीर्थ अने परतीर्थ, वळी तीर्थ बे प्रकारनुं छे, द्रव्यतीर्थ अने भावतीर्थ. वळी शुद्ध अने अशुद्ध, ए बे प्रकारे तीर्थ छे. स्थावरतीर्थ करतां पण सद्गुरु विषे अधिक श्रद्धा भक्तिभाव जागशे, त्यारे नक्की समजवुं. के आत्मानुं कल्याण थशे, धर्मप्रद धर्मगुरुनी स्तुति पोताना आत्माने निर्मळ करे छे, गुरुनो राग, भवभ्रमण त्याग करावे छे, गुरुने तीर्थनी उपमा आपवानो हेतु ए छे के गुरुराज संसार समुद्रथी भव्य जीवने तारे छे, एवा धर्म गुरुराजनुं शरण मन वचन अने कायावडे पामो, गुरुराजने सत्य देवनी उपमा आपवामां आवे छे, गुरु रूप देव तो पुण्य अने पापफलना स्वरूपने जणावे छे, अने भव्यात्माओ उपर गुरु देव सदा काल कृपादृष्टि फेंके छे, अज्ञानरूप अंधकार कोइनाथी नाश पामे नहीं तेवा मिथ्यात्व अंधकारनो नाश गुरुमहाराज उपदेशद्वारा करे छे, गुरु तेज देव छे, श्री गौतम स्वामीना मनमां विद्यानो अहंकार हतो अने आत्मा छे के नहीं तेनी शंका हती, तेमनुं पण श्री महावीर गुरुए शंका टाळी चारित्र अर्पी हित कर्युं, देवताओ पण पंचमहाव्रत धारी ध्याननिष्ठ महामुनि गुरुने नमस्कार करी स्तवे छे, माटे गुरु तेज सापेक्षतः देव जाणवा, आत्मानी सिद्धि गुरुथी थाय छे सर्व शाश्वत सुखरूप मांगल्यप्रद गुरुराज छे, माटे आद्यमां स्तुतिरूप गुरुनुं मंगल कर्युं, आत्मा पोताने स्वयमेव जाणे छे ते दर्शन छे.

" दुहा. "

तेने तेहिज ओळखे, अवर म ज्ञाता कोय,
ज्ञाता तेहिज आतमा, नित्यपणे जग जोय. २

भावार्थ–आत्मा पोते पोताने ओळखे छे, आत्मा विना अन्य कोइ आत्मानो ज्ञाता नथी, सर्व पदार्थ ज्ञानवडे जे ज्ञाता छे, ते आत्मा जाणवो, आत्मानुं स्वरूप अन्यथा थतुं नथी, एज अद्भुत आश्चर्य छे. जगत् अवस्थितसर्व पदार्थो ज्ञानथी जणाय छे, अने स्वकीय शुद्ध स्वरूप पण ज्ञानथी जणाय छे, स्व परने ज्ञानमां विषयभूत करनार तेज आत्मा छे, आत्माथी भिन्न जड वस्तुमां ज्ञान गुण नथी, ज्ञान गुण शक्ति अलौकिक छे, निगोदीया जीवोने पण आत्माना आठ रुचक प्रदेश निर्मला छे, ज्ञान त्यां चेतन अने चेतन त्यां ज्ञान सदा रहुं छे, निमित्तना योगे आत्मा पोताने स्वयमेव अनायासे ज्ञानथी निहाळे छे, कोइ सिंहनुं बच्चुं नानुं थावयुं कोइ भरवाड पकडी लाव्यो. पेलुं सिंहनुं बच्चुं बकराना टोळा भेगुं रमवा फरवा लाग्युं, अने मनमां समजे छे के हुं पण बकरांना जेवुं छुं, मारी जाति अने बकरांनी जाति जुदी नथी, एम समजतुं हतुं, प्रतिदिन ते सिंहबाल मोटुं थवा लाग्युं, एक दिवस बकरां सहित वाडामां ते बच्चुं बेठुं हतुं त्यारे एक सिंह आव्यो, पेलुं सिंहनुं बच्चुं मनमां विचारवा लाग्युं के–अहो आ सामुं प्राणी देखाय छे ते विचित्र छे, तेनुं शरीर अने मारुं शरीर मळतुं आवे छे हुं जे टोळामां रहुं छुं तेना शरीरनां लक्षण अने मारा शरीरनां लक्षण भिन्न भिन्न छे, आ सामुं जे प्राणी देखाय छे तेना सरखो हुं छुं, एम ज्ञान थतां एकदम वाडामांथी बहार नीकळी गयो अने सिंह समुदायमां भळ्यो, तेम आत्मा पोतानुं

स्वरूप स्वयमेव आलंबन योगे पामी परमात्मस्वरूपमय बने छे कह्युं छे के—

अज कुल गति केसरी लहेरे, निज पद सिंह निहाळ;
तिम प्रभुभक्तें भवि लहेरे, आतमशक्ति संभाळ. अजित.

परमात्म स्वरूप ओळखी तेनुं ध्यान करतां पोतानो आत्मा पण परमात्म रूप भासे छे, परमात्मा अने मारामां भेदभाव नथी, मलीन सुवर्ण समान संसारी भव्यात्माओनी स्थिति छे, अने शुद्ध कंचन समान सिद्धात्मानी दशा छे, मलीनतानो अपगम ध्यानयोगे थतां परमात्मरूप बनी त्रिभुवन पदार्थ गुण पर्याय ज्ञाता बने छे, ज्ञातृत्वशक्ति आत्मामां रही छे, जडमां ज्ञातृत्वशक्ति नथी, जड पदार्थ ज्ञेय छे, जेटला ज्ञेय पदार्थ तेटलुं ज्ञान समजवुं, ज्ञेय पदार्थ अनंत छे, तेथी ज्ञान पण अनंत कहेवाय छे, अने ते प्रमाणे अनुभवमां आवे छे, ज्ञातृशक्तिनो आधार चेतन (आत्मा) छे, आत्मानो कदी नाश थतो नथी, माटे नित्य छे, यद्यपि अविद्याना योगे अनेक शरीरो धारण करे छे तो पण पोताना स्वरूपने त्यजतो नथी, अज्ञानी जीव एम जो कहेवा लागे के आत्मा नथी पण तेना वचनथीज सिद्ध थाय छे के आत्मानी अस्तिता छे तो ते जीव नास्तिक एम कहे छे, अविद्यानो नाश थतां अक्षर ध्यानरूप सहेजे आत्मस्वरूप भासे छे, आत्मा अनंत गुणनो धणी छे, सुख दुःखनी चेष्टा आत्मानी जणाय थाय छे, इष्टानिष्ट ज्ञाता आत्मा छे, जो ए आत्मतत्त्व सम्यक् रीत्या ओळखाय अने तेनुं ज्ञान थाय तो रत्नानी पेठे सर्व जगत् देखाय, आत्मामां जे चित्तवृत्ति रागथी विचरण करे छे ते पुरुषो आत्माने सहेजे ओळखे छे अने अखंड सुख भोक्ता बने छे.

" दुहा. "

समाय तुं तारा विषे, तारु ताहरी पास;
मारु मारु क्यां करे, धरतो परनी आश. ३

हे आत्मा तुं तारा स्वरूपमां समाय छे, तारी गति सर्वेना करतां न्यारी अने अनंत आनंद आपनारी छे. तुं कोइ अन्य पदार्थमां रहेतो नथी, प्रकाशथी तमः समूह यथा सर्वथा न्यारुं छे, तेम अनंत शक्तिधारक चेतनथी सांसारिक स्वरूप सर्वथा न्यारु छे. अवळी परिणतियोगे परवस्तुने पोतानी मानी ममताना पाशमां पडे छे पण सहजानंदी आत्मा विवेकथी तुं विचार के-स्वप्नमां भासेलुं जगत् जेम मिथ्या छे, तेम बाह्यवस्तु पण तारी नथी, चेतन तारी ऋद्धि ताराथी जरा मात्र भिन्न नथी, जेम मृगथी कस्तुरी भिन्न नथी तेनी दुंटीमां रहेली छे, तेम आत्मानी ऋद्धि पोतानामां भरी छे, परमात्मपद आत्मामां छे, आचार्यपणुं पण आत्मामां छे, तेम उपाध्याय, साधुपणुं पण आत्मामां छे, ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप वीर्य आदि गुणो पण आत्मामां रह्या छे, अनंत सुख पण आत्मामां छे, तो बहिरात्मभावे हे चेतन परनी आशाथी मूढ बनी मारु मारु एम शुं चिंतवे छे ? परवस्तु तारी कदी थवानी नथी. एम निश्चय जाण, तारी ऋद्धि ताराथी न्यारी नथी, खोले सो पावे. आ कोतर आत्मामां पेसती, अनादि कालथी चेतन मिथ्यात्वयोगे स्वस्वरूपना अनुपयोगे परवस्तुने पोतानी मानी जन्म जरा मरण उपाधि पाम्यो, किंतु हवे निर्णयपूर्वक जाणवामां आव्युं के-परवस्तु अचेतन जड विशिष्ट छे, हुं एनो नथी, ए मारु नथी, हुं मारा स्वरूपे समायो छुं, हुं जे जे वस्तुओ चक्षुथी देखुं छुं, घ्राणे सुंघुं छुं, जिव्हाए स्वादुं छुं, ते ते वस्तुओमां

हुं नथी माराथी सर्व पदार्थ जणाय छे, तो पण ते पदार्थोमां हुं नथी. सर्व पदार्थो प्रकाश्य छे, अने हुं प्रकाशक छुं, मारी जे वस्तु नथी तेनी ममता हुं केम राखुं ? पुद्गलनी ऍठ आ जीवे बहिरात्मभावे वा क्षुधावेदनीना उदये भक्षण करी पण ते पुद्गल अंते मारुं नथी, एम निश्चय करी स्वस्वभावे स्थिर रहेवुं एवं हितकांक्षा.

"दुहा."

देखी आतमस्वरूपने, जाण्यो पुद्गल खेल;
न्यारो तेथी आतमा, चिदानंद गुणरेल ॥ ४ ॥

भावार्थ-परोपकारनिमान् श्री सद्गुरुद्वारा ध्याननी एकाग्रताए आत्मस्वरूप भास्युं त्यारे आ सांसारिक प्रपंच सर्व पुद्गल खेल जाण्यो, ते खेलथी आत्मा न्यारो छे अहो शुं आश्चर्य, सर्व सांसारिक पदार्थो नाशवंत छे. अने आत्मा अविनाशी छे, आनंद, अने ज्ञाननो धारक आत्मा छे, आत्मस्वरूप बतावे छे.

पद.

चेते तो चेतावुं तनेरे, पामर प्राणी-ए राग.

आतम रूप देखुं आजेरे सकल सुख,
अचल अखंड योगी, अभोगी अशोगी भोगी;
स्वभावे ने नहीं रोगीरे-सकल सु० आत० १
देहमांहीं वसनारो, देहातीत मन धारो;
रूप रंग थकी न्यारो रे-सकल. आत० २
जाणे सुख दुःख सहु, चेतन छे जग बहु;
व्यापी घट घट बहुरे-सकल० आत० ३
नाम ठाम जेने नहीं, नहीं जाति भाति कहीं;
पोतानामां व्यापी रही रे-सकल० आत० ४

निरंजन निराकार, ज्ञानदृष्टि आरपार;
बुद्धिसागर सुखकार रे–सकल० आत० ५

परिपूर्णसुखरूप आत्मानुं स्वरूप–निर्विकार अखंड छे, तत्त्वभावक जीवोने कोइनी स्पृहा रहेती नथी. कोइ निंदा वा स्तुति करे तोपण हर्ष शोक रहित आत्मज्ञानी विचरे छे, द्वेषनी परिणति मंद पडे छे, समये समये आत्मिक सुख संतति पामे छे, तृष्णानुं मूळ छेदाय छे, परस्वभाव प्रवृत्ति स्वयमेव छे, अने आत्मस्वभावप्रवृत्तिद्वारा निवृत्ति सुखोद्भव थाय हमां वसतां देहातीत अवस्थानो भोगी आत्मा बने छे, काक- सम पौद्गलिक विषय सुख लागे छे, परनिंदातो आत्मज्ञा- गमती नथी, आत्मस्वरूपना ध्यानी पुरुषने जे सुख थाय अवाच्य छे, आनंदनो समुद्रज जाणे होयनी एवो अध्यात्म तो आत्मा बने छे, आत्मज्ञानीनी दशा प्राप्त थया विना क सुखनो अनुभव पमातो नथी, आत्मा परम पूज्य छे अं- योगी थइ परमात्मपदमय ध्यानथी थता अनहद सुख भोगी स्वयमेव स्वस्वरूपी थइ रहे छे.

"दुहा."

नथी दृष्टि फेंकुं ज्यां, त्यां सहु स्वरूपे स्थिर;
मित्र स्वप्नु भयुं, गइ अनादिकु पीर ॥५॥

भावार्थ–मन, वचन, कायानी एकाग्र आत्म स्वरूपे थतां विचित्र देखायुं, प्रथम ध्याननी पूर्वे सर्व जगत् हस्तिना क- ते चंचल उन्मत्त लागतुं हतुं, ते हवे ध्याननी एकाग्रताए थी स्थिर थतां सर्व जगत् पोताना स्वरूपे स्थिर देखायुं, न चंचल तो सर्व वस्तु चंचल अने मारुं मन स्थिर तो सर्व

वस्तु स्थिर थाय देखाय तेथी सार ग्रहवो के-मन जो आत्मामां रमे तो मोक्ष अने मनः परभावमां रमे तो भवभ्रमणता, एवो निश्चय थवो, आत्मज्ञान विशेष थतां स्थिरता सर्वत्र भासे छे, कहुं छे के-

भासे आतम ज्ञान धुरि, जग उन्मत्त समानः
आगे दृढ अभ्याससे, पत्थर तृण अनुमान ॥५॥

सारमां सार प्राप्य, आराध्य आत्मा छे, ध्यानथी आत्मामां रमतां शत्रु मित्र स्वप्नमी पेठे भासे छे, अर्थात् शत्रु मित्र आत्म ज्ञानीने कोइ नथी. अनादि कालनी लागेली कुटेव तो नाशी गइ अने शुद्ध चेतना प्रगट थइ. मिथ्यात्वपणुं टळ्युं, आत्मानुं शुद्ध स्व-रूप प्रगट थतां सहजानंद प्रगटे छे, आत्मज्ञानीओ एवी दशामां रमे छे, तेमने पुनः पुनः नमस्कार थाओ.

“ दुहा. ”

अहं बुद्धि परमां धरी, परमांही बंधाउं;
अहं बुद्धि जो आत्ममां, तो हुं क्यां रंगाउं.॥६॥

परवस्तुमां अहंपणानी बुद्धि धारण करी कर्मरूप परवस्तुमां बंधाउं छुं, पण जो आत्मामां अहंपणानी बुद्धि थइ पहोंचे आत्मा पोते हुंछुं अन्यमां हुं नथी, आवी बुद्धि थतां हुं आत्मा कोइथी क्यांय रंगातो नथी. अर्थात् कर्मे करी लेपातो नथी, जे महात्माओ आत्मामांज रुचि राखे छे ते आत्मानी ऋद्धि पामे छे, परमां चित्तवृत्ति राखवाथी अमुक दुष्ट अमुक लंपट अमुक वैरी इत्यादि बुद्धि थाय छे पण पोताना आत्मानी सत्तानुं चिंतवन करवाथी पोतानुं स्वरूप प्राप्त थाय छे.

" दुहा. "

काल अनादि परिणम्यो, आतम जडने संग;
अशुद्ध परिणामे करी, करतो नाटारंग. ॥७॥
पोताना अज्ञानथी, पाम्यो दुःख अनंत;
स्वपदज्ञानाप्ति ग्रही, थयो सिद्ध भगवंत, ॥८॥

भावार्थ–अनादि कालथी जीव कर्माष्टक ग्रही औदारिकादि शरीर ग्रही जड संगे दुग्धपयोवत् परिणम्यो छतो अने ते कर्मना योगे पोताना आत्माना थयेला अशुद्ध परिणामे करी चतुर्गति रूप संसारमां जन्म जरा मरणनां दुःख ग्रही नाटारंग करतो फर्या करे छे, आत्मानो शुद्ध परिणाम थतां भव प्रपंचनी बाजी नाश पामे छे, पोताना एटले आत्माना अज्ञानथी जीव अनंत दुःख पाम्यो. शरीरने आत्मा मानी बहिरात्मभावे रमतो फरतो पोतानुं स्वरूप भूल्यो, दुःखनो समुह पोताना अज्ञानथीज प्राप्त थाय छे. पण सद्गुरु समागमे आत्मस्वरूप जाण्युं तेमां रमणता करी कर्मनो नाश कर्यो. अने मोक्ष स्थाननी प्राप्ति करी सिद्ध भगवंत थयो ए सर्व आत्मज्ञाननुं फल छे.

" दुहा "

जेनाथी निज आतमा, समजायो सुखकंद;
त्रिकरण योगे भावथी, नमुं गुरु क्रमद्वंद्व. ॥ ९ ॥

सुखकंद अनंतगुणविशिष्टआत्मस्वरूप जे गुरुना बोधथी समजायुं ते सद्गुरु महाराजना चरण कमलद्वयने भावथी मन वचन अने कायाए करी नमस्कार करुछुं, आत्माने ओळखावनार गुरु छे, गुरु पण आत्मा छे अने श्रोता पण आत्मा छे, किंतु

ज्ञानदेव छे अने सेवक श्रोताजनना आत्मा
ने जणावनार गुरु छे, उपदेशक पर्वतीर्थ छे,
डुं तीर्थ जाणवुं, सुदर्शना चारित्रमां धारण
माने मराफळ जाणी उपदेश आप्यो छे,
वेहुवनमां मोटुं कोइ तीर्थ नथी. सद्गुरु मोटुं
मां श्रद्धा थतां सम्यक्त्वनी प्राप्ति थशे, हृदयमां
पन करी तेनुं एकाग्रचित्तथी भक्ति पूजन ध्यान
ने अलौकिक शांति थशे, अने दररोज एम ध्यान
साक्षात् सद्गुरु जाणे होयनी एम साक्षात् भासे
माहात्म्यथी अनुभव ज्ञाननो प्रकाश वधन थशे, अने
प नाश थतां मन प्रसन्न थशे, अने आत्मा सद्गु-

"दुहा."

भव दुःखनो, परिहारक नहि कोय ॥
नित्य वंदीए, जन्म सफलता होय ॥१०॥

भव दुःख अंतकारक सद्गुरु विना अन्य कोइ नथी,
विदिन वंदन करवाथी जन्मनी सार्थकता छे, घोर
दुष्मनो पण गुरुना उपदेशथी गुरुता पामी शारी-
: दुःख संहार करी पंचमीगतिने पाम्या छे, पामे
शे.

"दुहा."

साध्यापेक्षथी, जे पाळे आचार;
। मद जीतता, सफलो तस अवतार॥११॥

रागादिक त्यागी शमे, करशे आतम ध्यान;
सम्यग् ज्ञान क्रिया थकी, थाशे ते भगवान्.॥१२॥

भावार्थ–जे भव्यात्माओ पंच महाव्रतादिनो आचार साधन साध्यनी सापेक्ष बुद्धिथी पाळे छे, अने राग रोपने जीते छे, तेनो आचार सफळ छे, अने ते दुनियामां जन्म्यो सफळ छे, क्रोध, मान, माया, लोभ, निंदादिनो जय करी शमभावे जे मुमुक्षुओ आत्मध्यान करशे, अने सम्यग्ज्ञान अने सम्यग्क्रियानुं अवलंबन करशे ते पोते भगवान् थशे, कर्मबळना नाशथी आत्मा ते सिद्धात्मा थइ शके छे, किंतु अभव्यजीव मुक्तिपद पामी शकता नथी, कारणके अभव्यजीवोमां मुक्ति पामवानो स्वभाव नथी. अभव्य जीवोनुं उपादानकारण शुद्ध थइ शकतुं नथी, भव्यजीवोनुं उपादानकारण शुद्धसामग्री योगे थइ शके छे, संसारमां परिभ्रमण करवानुं मुख्यकारणराग अने द्वेषभावकर्म छे, नोकषायसहचारि भावकर्ममां छे, क्रोध, मान, माया, अने लोभनो राग द्वेषमां अंतर्भाव छे, सिद्ध थता जीवोने राग द्वेष अनादि सान्त भांगे छे, अभव्यजीवने रागद्वेष अनादि अनंत भांगे छे, रागअने द्वेषनो क्षय संवरथी सर्वथा थाय छे, बहिरात्मभावे राग द्वेषनो क्षय थतो नथी, ज्यारे अंतरात्मपणुं प्राप्त थाय छे, त्यारे राग द्वेषनो क्षय थइ शके छे. कह्युं छे के—

राग द्वेष के त्याग विन, मुक्तिको पद नांहि;
कोटि कोटि जप तप करे, सबे अकारज थाय॥१॥

रागद्वेषना क्षय विना मुक्तिपद प्राप्त थतुं नथी, राग द्वेषना त्याग विना कोटि कोटि जप तप करे तो पण लेखे थतुं नथी, प्रथम अंतरसंस्कर गुरुसमक्ष जाणवामां आवे, जडनुं यथातथ्य

स्वरूप जाणवामां आवे पश्चात् जड अने आत्मानी भिन्नता मालुम पडतां विवेक प्रगटे, विवेकथी आत्मतत्त्वआदेय स्वरूपमां ग्रहे, अने अजीवतत्त्व हेय जाणे पश्चात् आत्मा विचारे के-मारामां अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत क्षायिक चारित्र, अनंत वीर्य छे, हुं स्वतंत्र छुं, किंतु अनादिकालथी राग द्वेषना योगे परतंत्र छुं, राग द्वेष ए मारुं आत्मस्वरूप नथी, एम विचारतां सर्वत्र सर्व प्राणी उपर तथा वस्तुओ उपर समभाव प्रगटे, दुनीयानी सर्व वस्तुने समभावे निरखे, राग द्वेषनो क्षय समभावे आत्मध्याने सर्वथा थाय अने सम्यग्ज्ञान अने क्रियाथी मुक्तिपद मळे माटे जे मुनिवरो रागादिकनो त्याग करी वायुनी पेठे अप्रतिबद्धपणे विचरी स्वआत्मस्वरूपमां लीन रहेशे, ते क्षणिक आयुष्यनी सफलता करे छे.

“ दुहा. ”

जो किरिया जड बोलता, तरशुं अम संसार;
कर्मनाश किरिया थकी, सफलो अम आचार ॥१३॥
बहिर् क्रियामां राचता, अंतर्तत्त्व न भान;
भूल्या भवमां भटकता, क्रियाजडी अज्ञान. ॥१४॥

भावार्थ-कोइक क्रियाजडजीवो एम माने छे के-अमो क्रिया करवाथी संसार समुद्र तरीशुं, अमो जे क्रियाकांडनो आचार आदरीये छीए ते कर्म नाश करशे, माटे क्रिया सफल छे, जे जे क्रिया छे ते सफल छे, पण दोहन, पञगडिका, ते प्रमाणे पडि-लेहण (प्रतिलेखन) आदि क्रियाओ पण कर्म नाश करवाथी सफल छे, ए प्रमाणे साध्य आत्मतत्त्वना अजाणपणे अंतरक्रिया जे ध्यानादिकनुं स्वरूप नहीं जाणवाथी क्रियाजड पुरुषो भवमां

भटक्या, भटके छे, अने भटकशे, अने परमात्मपद केम पामी शके, साध्य सापेक्षताए क्रिया सफळ छे, एम एकांते बाह्यक्रियाथी जडात्माओ इष्टफळ जे मोक्ष ते पामी शकता नथी.

" दुहा. "

कोइ ज्ञानने मानता, ज्ञान सत्य जग सार;
विना ज्ञान क्यां मुक्तिफल, ज्ञाने भवजल पार॥१५॥
एकांते एम जे ग्रहे, करे कदाग्रह चित्त;
आतमतत्त्व पाम्या विना, होय न तत्त्व प्रतीत॥१६॥

केटलाक भव्यात्माओ ज्ञानने मुक्तिप्रद माने छे, आत्मतत्त्वना ज्ञान विना मुक्ति नथी, ज्ञानथी संसार समुद्र तरी शकायछे, आत्मतत्त्वना बोध विना जे भव्यो एकांते हृदयमां दृढ कदाग्रह धारण करी स्वेच्छाए प्रवर्ते छे, ते परमात्मपद पामी शकता नथी, आत्मतत्त्व पाम्या विना मोक्षनी प्राप्ति थती नथी.

" दुहा "

युवत्यंग निरख्या थकी, विषय तृप्तिं नहि थाय;
भोजनज्ञान थया थकी, भूख न भागे भाय ॥१७॥

भावार्थ—युवतिना अंगनुं निरीक्षण करवाथी विषयिपुरुषोने विषयनी तृप्ति थती नथी, तेमज वरफी, दूधपाक, मिष्टान्न भोजननुं जाणपणुं मात्र थवाथी, उदरपूर्ति थती नथी, माटे तेनी क्रिया कराय तो इष्ट फळनी सिद्धि थाय छे, माटे क्रियानी मुख्यताए फल सिद्धि छे.

ज्ञानवादी—हे क्रियावादी ! तमो क्रियाने फलदायक कहोछो ते युक्त नथी, क्रिया करवाथी संसारनी वृद्धि थाय छे, रांधवुं,

युद्ध करवुं, ए आदि क्रिया छे तो तेथी मुक्ति नथी, किंतु कर्मबंध छे, माटे क्रिया संसारवृद्धिहेतुरूप छे, माटे ज्ञान तेज सार छे, कर्मक्षय ज्ञानथी थाय छे.

क्रियावादी–क्रिया थकीज मोक्ष छे, क्रिया बे प्रकारनी छे, १ कर्मक्रिया. २ धर्मक्रिया. जे क्रियाथी संसारमां परिभ्रमण करवुं पडे अने आश्रवनुं ग्रहण थाय ते कर्मक्रिया जाणवी, तेनो तो त्याग करवो योग्य छे. पण जेनाथी जन्म जरा मृत्युनां दुःख नाश पामे एवी धर्म क्रियाओ कही छे, ते करवी जोइए, कारण के तेनाथी कर्मनो नाश थाय छे, किंतु ज्ञान थकी थतो नथी माटे क्रिया तेज मोक्ष मार्ग छे.

ज्ञानवादी–धर्मने माटे क्रियानी जरुर नथी, आत्मानी मुक्ति तो ज्ञानथी थाय छे, शरीरनी क्रिया, वचननी क्रिया शुं मोक्ष आपी शके ? ना नहीं. मननी क्रिया विकल्परूप मोक्ष आपी शकती नथी, किंतु आत्मानुं ज्ञान थवाथी मुक्ति प्राप्ति छे, ज्यां ज्यां क्रिया त्यां कर्मनो बंध समजवो, कारण के क्रिया जड छे तो तेथी उत्पन्न थनार फळ पण कर्म जडछे, तो मुक्ति क्यांथी मळे ? माटे ज्ञानथी मुक्तिनी सिद्धता छे.

क्रियावादी–क्रियाने जड कहो किंतु क्रियाथी जडनो नाश थाय छे, कारण के सजातियथी सजातियनो नाश थायछे, ईंटनो नाश मोगरथी थायछे, तेम कर्मछे ते जडछे तो तेनो नाश क्रियाथी थायछे माटे क्रियाथी नाश थतो तेम मोक्ष जाणवुं, ज्ञानथी कर्मनो नाश शी रीते थाय ? माटे कर्म नाशिका क्रिया जाणवी, मानसिक, वाचिक, कायिक क्रिया करवाथी कर्म नाश थायछे, माटे ते करवी जोइए अने क्रिया ज मोक्ष फळदाछे.

ज्ञानवादी–तमोए जड थकी जडनो नाश थयो एम कह्युं, ते युक्त नथी तमारा मत प्रमाणे तो एमज सिद्ध थायछे के पाप करवाथी पण कर्म नाश थाय, कारण के पाप पण जड छे अने कर्म पण जडछे माटे पापथी कर्मनो नाश थाय तो पश्चात् दया, सत्य, तप करवानी शी जरुर होवी जोइए ? अने जो एम होय तो पापी जीवोनी शीघ्र मुक्ति थवी जोइए अने धर्मी अने पापी एवो भेद भाव पण असत्य थाय किंतु शास्त्रमां वीतराग भगवंते तो एम कहुंछे के पाप कृत्यथी कदापि मुक्ति मळती नथी, माटे ज्ञानने सत्य मानो. अने तेनाथी मुक्ति थायछे.

क्रियावादी–हे ज्ञानवादी ! तुं मारुं कथन समजी शक्यो नहीं, प्रतिपक्षी जडथकी प्रतिपक्षी जडनो नाश थायछे, कर्मनुं प्रतिपक्षी पाप नथी .माटे पापथी कर्मनो नाश थतो नथी, पुण्य अने पाप ए बे परस्पर प्रतिपक्षीछे माटे पुण्यथी पापनो नाश थायछे. पुण्यनी क्रिया दुःखनाशक छे माटे धर्मनी क्रिया अवश्य करवी जोइए.

ज्ञानवादी–पुण्यनी क्रियाथी कंइ कर्मनो नाश थतो नथी, कारण के पुण्य पण कर्मस्वरूपछे, तो पुण्यथी कर्मनी वृद्धि थाय पण कर्मनो नाश तो थतो नथी, माटे ज्ञानथीज मुक्ति थायछे एम मानवुं जोइए.

क्रियावादी–भला ठीक पुण्यथकी कर्मनो नाश न थाय तोपण शातावेदनीयकर्म बंधाय अने तेथी उत्तम कुळमां जन्म थाय धन, पुत्रादि ऋद्धि प्राप्त थाय तेथी सुख मळे ते पण क्रियानुं फळ छे, अने तेथी अनुक्रमे कर्मनो नाश थाय माटे क्रियाकांडनी साफल्यताछे.

ज्ञानवादी–पुण्यथी शातावेदनीयकर्म बंधायछे अने तेनो भोग

भोगवश अवतार धारण करतां जन्म जरा मरणनां दुःख प्राप्त थायछे, अने अवतार धारण करतां पश्चात् ते भवमां वळी नवां कर्म बंधाय पण कर्म बंधनो पार आवे नहीं, ज्ञानथी कर्मनो नाश थायछे माटे तेनो स्वीकार करवो योग्यछे.

क्रियावादी–अमो क्रियाथी कर्मनो नाश मानीये छीए ते सयुक्त छे, उत्तम अवतार आव्या विना धर्मनां कार्य थइ शकतां नथी, पडिलेहण, प्रतिक्रमण, प्रभुपूजा, इत्यादि क्रियाओ पापनो नाश करे छे, अने नवीन कर्म प्रतिबंधकद्वारा आत्मा निर्मळ थतां मुक्तिनी प्राप्ति थायछे माटे क्रिया सफळछे.

ज्ञानवादी–धर्मनी क्रिया उत्तम कुळजन्म धनसंपत्ति आपनारीछे, पण तेथी कर्मनी वृद्धिछे. पडिलेहण, प्रतिक्रमण, प्रभुपूजा, पण कर्मनो नाश करी शकती नथी, जरा सूक्ष्मदृष्टिथी विचारो के–ज्ञान विना क्रिया करवाथी शुं फळ थइ शके? ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि, भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन ज्ञान अग्नि सर्व कर्म बाळीने भस्मीभूत करे छे, माटे हठ कदाग्रह त्यागी, ज्ञान मुक्तिप्रद मानवुं ते योग्यछे.

क्रियावादी–क्रिया विना ज्ञाननी उत्पत्ति थती नथी, ज्ञाननो अभ्यास ज्ञानने उत्पन्न करेछे, प्रथमथी कंइ ज्ञान होतुं नथी. विद्याभ्यास करतां करतां ज्ञाननो प्रकाश थायछे, सारमां समजवानुं के ज्ञानाभ्यासरूप क्रियाथी ज्ञान उत्पन्न थायछे तो क्रियाथी कर्मनो नाश थाय एमां कंइ शंका नथी, माटे क्रियाथी कर्मनाश मानवो योग्यछे.

ज्ञानवादी–ज्ञान विना सर्वत्र अंधारुं, जे कर्मनो नाश करवानोछे ते कर्मनुं स्वरूप जाण्या विना कर्मनो नाश शी रीते थाय? वैद्यने दैव नामना पुरुषे कह्युं के, तारो चक्ररोग नामनो शत्रु

छे ते तने मारवा धारेछे, हवे जो चैत्रने पराक्रमवेग
होय तो चैत्रनो घात करे, अन्यथा तेनो नाश करी
तेम दृष्टांतथी समजवानुं के-कर्मनो नाश करवो ते
थया विना बनतो नथी माटे ज्ञानथी कर्मनो नाश मा

क्रियावादी-फक्त वस्तुनु ज्ञान थवा मात्रथी फलनी
नथी, एक माणसने भोजन करवानुं ज्ञान थयुं पण
मुखमां प्रक्षेप करे चावे त्यारे तेनी उदरपूर्त्ति थाय
मटे, माटे क्रियाज फलप्रद छे. ज्ञान तो जाणवा
कोइ तारु (तरनार) जळमां तरवानुं जाणेछे
प्रवेश करी हाथ पग हलावे नहीं तो बुडी जाय
ज्ञान थतां कर्म नाशकारक क्रिया नहीं कराय तो
थतो नथी, परंतु क्रियाकरणथी कर्म नाश थायछे.

ज्ञानवादी-तमारुं कथन ठीकछे, किंतु ज्ञान विना वस्
तथ्य स्वरूप जाणी शकातुं नथी, तो पश्चात् ते अ
कातुं नथी, मोदक बनाववानुं जाणे अने ते भक्ष
अमुक फायदो थायछे ते जाणी शकाय तो त्यार
शकाय, जे वस्तुनुं ज्ञान नथी ते वस्तुनी क्रिया शी
शकाय ?-दृष्टांत तरीके जाणो के-कोइ मनुष्यने
व्ये कह्युं के शास्त्रमां आकाशगामिनी विद्या कहीछे,
थाय तो आकाशमां उडी शकाय, त्यारे पेला मनुष्ये
शोध करी आकाशगामिनी विद्या जाणी, त्यारे
करी आकाशमां गमन करवा लाग्यो. अत्र समजवा
काशगामिनी विद्यानुं ज्ञान थतां तेनी क्रिया थइ
ज्ञाननी मुख्यताछे, ज्ञान विना कोइ क्रिया थइ

क्रियावादी–हे ज्ञानवादी! तमो मूक हेतुथी विरुद्ध वदोछो, तमारे विचारवुं के–ज्यां ज्यां क्रियाछे त्यां अवश्य ज्ञान होयछे, ज्यां साकर त्यां साकरनो रस, ज्यां केरी त्यां तेनो रस अवश्य होयछे, तेम ज्यां क्रिया होयछे त्यां अवश्य ज्ञाननी अस्तिताछे, माटे ज्ञाने मानवा क्रिया करवी वखत पण गौणभावे ज्ञान होयछे, मुख्यरूपे क्रियाछे, अने क्रियाथी कर्मनो नाश थायछे माटे क्रिया तेज कर्मनाशकछे.

ज्ञानवादी–हे क्रियावादी ताहरुं वचन अयुक्तछे, ज्यां क्रिया होय त्यां ज्ञान होय एवी व्याप्ति नथी, फोनोग्राफ यन्त्रमां क्रिया बोलवानीछे, पण ज्ञान नथी, आगगाडी (अग्निरथ) मां गमननी क्रियाछे पण ज्ञान नथी, माटे ताहरुं कथन असत्यछे, वळी जेना माटे तुं क्रिया करवानुं कहेछे ते आत्मा तो अंते सिद्धनुं पामी अक्रिय थायछे, अने सिद्धमां क्रिया नथी, अक्रियछे, आत्माना परनी क्रिया नथी, तो ते क्रिया निष्फलछे, सिद्धमां ज्ञानछे. अने ते तो आत्मानो गुणछे माटे ज्ञानथी मुक्तिछे एम जाण.

क्रियावादी–क्रिया आत्मा करेछे, माटे आत्मानीछे, शरीर कंइ क्रिया करतुं नथी माटे क्रिया ममार्गीभूता कर्मक्षये जाणवी.

ज्ञानवादी–आत्मा कंइ फक्त एकली क्रियाने करतो नथी, शरीरधारी आत्मा क्रिया करेछे, अने ज्यारे शरीरनो त्याग करी सिद्धपद पामेछे त्यारे क्रियापणुं टळेछे, आत्मा संसारमां कर्मयोगे सुख दुःख योगे सर्व प्रकारनी क्रिया करी शकेछे, व्यवहार नये क्रियानो कर्ता आत्माछे, निश्चयनयथी जोतां क्रियाकारक आत्मा नथी माटे आत्मानी क्रिया कही शकाय नहीं.

क्रियावादी–अरे शास्त्रने वांची भलीभूत करी स्वपदेश शास्त्र

(ओळवाइ) जायछे, तेम क्रिया पण कर्मने बाळ
मेळे नाश पामेछे, माटे क्रियाथी मुक्तिछे.

ज्ञानवादी–हे प्रियतम, जरा विचारशो तो मालुम पड
याथी मुक्तिछे एवुं शाथी जाण्युं. उत्तरमां कहेवुं
ज्ञानथी, ज्ञान न होय तो क्रियाने जाणी शकाय
पछी शी रीते करी शकाय? तमोए कह्युं के क्रिया
छे आ वचन प्रलाप मात्रछे, देखो. प्रसन्नचंद्र रा
सूर्यना सामी दृष्टि राखी ध्यान करता हता त्यां
क्रिया करता नहोता, अने ज्ञान ध्यानथी केवलज्ञा
विचारो के त्यां कइ क्रिया करता हता, कंइ नहीं,
जाए आरीसा (आदर्श) भुवनमां भावना भावत
केवलज्ञान उत्पन्न कर्युं, मरुदेवा माताए हस्ति उप
भावतां केवलज्ञान उत्पन्न कर्युं त्यां कंइ क्रिया क
फक्त ज्ञानवडे कर्म खपावी केवलज्ञान पाम्या जीवो
माटे ज्ञानछे तेज सत्यछे.

क्रियावादी–हे ज्ञानवादी तमोए प्रसन्नचंद्र राजर्षिनुं द
ननी सिद्धिने अर्थे आप्युं, ते ज्ञानने सिद्ध नहीं क
याने सिद्ध करेछे, प्रथम समजवुं के ध्यानछे ते क्रि
ध्यानना चार प्रकारछे, आर्तध्यान, रौद्रध्यान,
शुक्लध्यान, ए चारमांथी प्रथमनां बे ध्यान दुर्गति
काउस्सग्गमां प्रसन्नचंद्र ऋषिए प्रथम दुर्ध्यान ध्य
गति उपार्जन करी पश्चात् पश्चात्ताप पामी ध
ध्यावतां कर्म खपावी केवलज्ञान पाम्या तेनुं कारण
अने शुक्लध्यानरूप क्रियाछे, बार भावनाओ पण ध
आवी, मरुदेवी माता अने भरतराजाए धर्मध्याना

केवलज्ञान पाम्युं, माटे ते पण क्रियाथीज, केवलज्ञान, मुक्ति आदि पामेछे. श्री विजयलक्ष्मीसूरीजीए पण कयुंछे के ध्यानक्रिया मनमां आणीजे, धर्म शुक्ल ध्यायीजेरे; इत्यादि, माटे क्रिया कर्म क्षय करीछे.

ज्ञानवादी–हे क्रियामां राचनार इजी तुं पोतानो मत छोडतो नथी, मारा वचन उपर लक्ष आप, ज्ञान विना ध्यान थइ शकतुं नथी जेनामां ज्ञान छे ते ध्यान करी शके छे, जुओ भरतराजा. जेनामां ज्ञाननो सर्वथा अभावछे त्यां ध्याननो अभावछे, जुओ, घट जडछे तेमां ज्ञान नथी, जो, ध्याननुं ज्ञान न होय तो ध्यान शी रीते शके ? प्रथम ज्ञान अने पश्चात् क्रिया, वळी समजजे के ज्ञान विना जरा पण क्रिया थइ शकती नथी, एक दिवसना जन्मेला बाळकने पण स्तन पान प्रवृत्तिमां संस्कार बुद्धि कारण छे, सुख दुःखने पण जणावनार ज्ञानजे, ज्ञान रुपराजानी क्रिया दासीछे, माटे ज्ञानना हुकम प्रमाणे क्रिया थइ शकेछे, ज्ञानरूप राजाना करतां क्रिया दासी मोटी कहेवाय नहीं. ज्ञान देखतुंछे, अने क्रिया आंधळी छे, ज्ञान विना चारित्र नथी, ज्ञान विना वैराग्य थतो नथी, ज्ञान विना देव गुरु धर्मने ओळखी शकाता नथी, अरे विचारो तो खरा, ज्ञानथीज आत्मा पण ओळखाय छे, पण क्रिया ओळखी शकती नथी. ज्ञानथी बीजाना मननी वात जाणी शकाय छे, कोइ अंध पुरुष वनमां फरतो फरे किंतु अंधपणाथी–ज्यारथी चालतां पण नहीं जाय, तेना सामो वाघ आवे तो एक दिशा तरफ जइ ने देखी शके नहीं, अने जो देखतो होय तो दुःखथी बचे माटे ज्ञान ते देखता पुरुष समान छे अने क्रिया आंधळा पुरुष समान छे.

कह्यु छे के-

ज्ञानी श्वासोश्वासमे, करे कर्मनो खेह;
पूर्वक्रोड वर्षा लगे, अज्ञाने करे तेह;
देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराध

इत्यादि विचारी जोतां ज्ञानथी कर्म नाश पामे छे
मकित पण ज्ञानथी उत्पन्न थाय छे, माटे ज्ञानना समान
ज्ञान बे मकारे छे, १ व्यवहार ज्ञान, २ निश्चय ज्ञा
व्याकरण,ज्योतिष्य, वैदक, नाटक सायन्स आदिनुं ज्ञान व
नछे, एनाथी आत्मानुं हित एकांते थइ शकतुं नथी. प
द्रव्य गुण पर्याय सात नय,सप्तभंगी, स्याद्वादरीत्या आत
उपयोगे जाणवुं ते निश्चय ज्ञान छे,आत्मानुं स्वरूप ध्यावुं,
निश्चयनयथी आत्मानुं स्वरूप जाणी आत्म स्वभावमां
नाम निश्चय ज्ञान छे, ए ज्ञाननी माप्तिथी कोटी भवनां कर्म
छे, माटे ते ज्ञान आदरणीय छे, ए ज्ञाननी माप्ति थतां
द्वेषनो क्षय थाय छे, जे ज्ञानथी आत्मा परमात्म पद पा
नी माप्ति पूर्व पुण्ययोगे थाय छे, तेनुं नाम सम्यग् ज्ञा
निश्चय ज्ञाननुं सद्‌हेतु श्री सद्‌गुरु महाराज छे, तथा
शास्त्र छे, एनुं अवलंबन करवुं. वीतराग शास्त्र कथित स
यानुं अवलंबन करवाथी कर्म क्षय थाय छे, क्रिया बे प्र
१ शुभ क्रिया २ अशुभ क्रिया, जे क्रियाथी पुण्य थाय
क्रिया, व्यवहार नयथी आदरवा योग्य छे, जे क्रिया
पापार्जन थाय छे ते अशुभ क्रिया जाणवी. वीतराग
म्यग् क्रिया शास्त्रमां मरूपी छे, ते सम्यग् क्रिया जाण
सद्‌गुरु-सम्यग् ज्ञानथी सम्यग् क्रिया जाणी शका

ज्ञान पूर्वक क्रिया मोक्षे छे, ज्ञान क्रिया विना पांगळुं छे, अने क्रिया आंधळी छे. ए बेनो संगम थतां मुक्ति पामी शकाय छे. श्री तीर्थंकर महाराजा पण ज्ञानना स्वामी छतां चारित्र अंगीकार करे छे, तपश्चर्या अंगीकार करे छे माटे क्रियानी जरूर छे, ज्ञान अने क्रियाथी मुक्ति छे, माटे शास्त्रमां कयुं छे के-ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः ए सिद्धान्त वाक्यानुसार प्रवृत्ति करवी. मोक्षाभिलाषी भव्यात्माओने द्रव्यानुयोग ज्ञान अत्यंत उपकारी छे, सम्यग् ज्ञानथी बलिहारी छे. ज्ञानरूप सूर्योदय थतां मिथ्यात्व अंधकारनो नाश थाय छे. जेम जेम आत्म स्वरूपनुं विशेष ज्ञान थतुं जाय छे, तेम तेम क्रोध, मान, माया, लोभनी मंदता थती जाय छे. ज्ञानदशा थया विना जीवनी मुक्ति थती नथी. आत्मज्ञानथी मुक्ति थाय छे.

शुष्कज्ञानीनां लक्षण कहे छे.

" दुहा. "

वाक् पटुताए विद्वता, जन मन रंजन हेत;
पोथी पुस्तक वांचतो, शाश्वत पद क्युं लेत ॥१८॥
अहं बुद्धि अभिमानथी, यावत् परमां थाय ॥
तावत् ज्ञानी को नहीं, पामे नहि शिव ठाय ॥१९॥

भावार्थ-मनुष्योनां मन खुशी करवाने माटे वाणीना वाचाळपणामां जेनी विद्वता समायी छे, एवो शुष्क ज्ञानी पोथी पुस्तक वांचतो छतो अने परने उपदेश आपतो छतो मुक्ति पद पामे नहीं, लोकोमां मारी विद्वत्ता दर्शावुं, लोको मारी प्रशंसा करे अने हुं जगत्मां प्रसिद्ध थाउं आ प्रकारनी इच्छाथी जे ज्ञानना पुस्तको भणे छे, व्याख्यान वांचे छे, तेवा पुरुषो मुक्तिपद पामी शकता नथी, आत्मभावे ज्ञान परिणमतां परमात्मपदमय आत्मा बने छे.

कह्युं छे के–

ज्ञानी श्वासोश्वासमे, करे कर्मनो खेह
पूर्वक्रोड वर्षां लगे, अज्ञाने करे तेह;
देश आराधक क्रिया कही, सर्व आ

इत्यादि विचारी जोतां ज्ञानथी कर्म नाश पा
मकित पण ज्ञानथी उत्पन्न थाय छे, माटे ज्ञानना स
ज्ञान बे प्रकारे छे, १ व्यवहार ज्ञान, २ निश्चय
व्याकरण,ज्योतिष्य, वैदक, नाटक सायन्स आदिनुं ज्ञ
नछे, एनाथी आत्मानुं हित एकांते थइ शकतुं नथी
द्रव्य गुण पर्याय सात नय,सप्तभंगी. स्याद्वादशैल्या
उपयोगे जाणवुं ते निश्चय ज्ञान छे,आत्मानुं स्वरूप स्या
निश्चयनयथी आत्मानुं स्वरूप जाणी आत्म स्वभा
नाम निश्चय ज्ञान छे, ए ज्ञाननी प्राप्तिथी कोटी भवन
छे, माटे ते ज्ञान आदरणीय छे, ए ज्ञाननी प्राप्ति थ
द्वेषनो क्षय थाय छे, जे ज्ञानथी आत्मा परमात्म पद
नी प्राप्ति पूर्व पुण्ययोगे थाय छे, तेनुं नाम सम्य
निश्चय ज्ञाननुं सद्हेतु श्री सद्गुरु महाराज छे,
शास्त्र छे, एनुं अवलंबन करवुं. वीतराग शास्त्र कथि
यानुं अवलंबन करवाथी कर्म क्षय थाय छे, क्रिया बे
१ शुभ क्रिया २ अशुभ क्रिया, जे क्रियाथी पुण्य
क्रिया, व्यवहार नयथी आदरवा योग्य छे, जे क्रि
पापार्जन थाय छे ते अशुभ क्रिया जाणवी. वीतराग
म्यग् क्रिया शास्त्रमां मळी छे, ते सम्यग् क्रिया ज
सद्गुरु-सम्यग् ज्ञानथी सम्यग् क्रिया जाणी

क्रिया लेखे छे, ज्ञान क्रिया विना पांगळुं छे, अने क्रिया
, ए बेनो संगम थतां मुक्ति पामी शकाय छे. श्री तीर्थं-
ता पण ज्ञानना स्वामी छतां चारित्र अंगीकार करे छे,
अंगीकार करे छे माटे क्रियानी जरुर छे, ज्ञान अने
मुक्ति छे, माटे शास्त्रमां कयुं छे के–ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः
त वाक्यानुसार प्रवृत्ति करवी. मोक्षाभिलाषी भव्यात्मा-
ानुयोग ज्ञान अत्यंत उपकारी छे, सम्यग् ज्ञानथी कलि-
ज्ञानरूप सूर्योदय थतां मिथ्यात्व अंधकारनो नाश थाय
तेम आत्म स्वरूपनुं विशेष ज्ञान थतुं जाय छे, तेम तेम
ान, माया, लोभनी मंदता थती जाय छे. ज्ञानदशा थया
वनी मुक्ति थती नथी, आत्मज्ञानथी मुक्ति थाय छे.
ज्ञानीनां लक्षण कहे छे.

"दुहा."

डुताए विद्वता, जन मन रंजन हेत;
पुस्तक वांचतो, शाश्वत पद क्युं लेत ॥१८॥
द्धि अभिमानथी, यावत् परमां थाय ॥
ज्ञानी को नहीं, पामे नहि शिव ठाय ॥१९॥

ार्थ–मनुष्योनां मन खुशी करवाने माटे वाणीना वाचाल
तेनी विद्वता समायी छे, एवो शुष्क ज्ञानी पोथी पुस्तक
ता अने परने उपदेश आपतो छतो मुक्ति पद पामे नहीं,
मारी विद्वता दर्शाववी, लोको मारी प्रशंसा करे अने हुं
प्रसिद्ध थाउं आ प्रकारनी इच्छाथी जे ज्ञानना पुस्तको
व्याख्यान वांचे छे, तेवा पुरुषो मुक्तिपद पामी शकता
ात्मभावे ज्ञान परिणमतां परमात्मपदमय आत्मा बने छे.

कयुं छे के-

ज्ञानी श्वासोश्वासमे, करे कर्मनो खे
पूर्वक्रोड वर्षा लगे, अज्ञाने करे तेह
देश आराधक क्रिया कही, सर्व अ

इत्यादि विचारी जोतां ज्ञानथी कर्म नाश प
मकित पण ज्ञानथी उत्पन्न थाय छे, माटे ज्ञानना
ज्ञान बे प्रकारे छे, १ व्यवहार ज्ञान, २ निश्च
व्याकरण,ज्योतिष्य, वैदक, नाटक सायन्स आदिनुं
नछे, एनाथी आत्मानुं हित एकांते थइ शकतुं नथ
द्रव्य गुण पर्याय सात नय,सप्तभंगी, स्याद्वादरीत्य
उपयोगे जाणवुं ते निश्चय ज्ञान छे,आत्मानुं स्वरूप ध
निश्चयनयथी आत्मानुं स्वरूप जाणी आत्म स्वभ
नाम निश्चय ज्ञान छे, ए ज्ञाननी प्राप्तिथी कोटी भव
छे, माटे ते ज्ञान आदरणीय छे, ए ज्ञाननी प्राप्ति
द्वेषनो क्षय थाय छे, जे ज्ञानथी आत्मा परमात्म
नी प्राप्ति पूर्व पुण्ययोगे थाय छे, तेनुं नाम स
निश्चय ज्ञाननुं महेतु श्री सद्गुरु महाराज छे
शास्त्र छे, एनुं अवलंबन करवुं. वीतराग शास्त्र क
यानुं अवलंबन करवाथी कर्म क्षय थाय छे, क्रिय
१ शुभ क्रिया २ अशुभ क्रिया, जे क्रियाथी पुण्
क्रिया, व्यवहार नयथी आदरवा योग्य छे, जे
पापार्जन थाय छे ते अशुभ क्रिया जाणवी. वीत
म्यग् क्रिया शास्त्रमां कही छे, ते सम्यग् क्रिया
सद्गुरु-सम्यग् ज्ञानथी सम्यग् क्रिया जाणी

श्रोतकथी व्याख्यान वांची शकाय नहीं, कारण के
राची माची विषयसुख भोगवतो संसार असार जाणी
रयो छे, अहंकारबुद्धिथी परमां अहंपणानी बुद्धि
मोटो आ सर्व मारुं, मारा समान दुनियामां कोण वि
एवा विचार थायछे त्यां सुधी निश्चयज्ञानीपणुं नथी,
नीपणुं जाणवुं, एवा शुष्कज्ञानी परमात्मस्वरूप तरफ
पता नथी अने बहिरात्मपणुं धारी मुक्ति स्थान पामता

आत्मज्ञानीनुं लक्षण कहे छे.

" दुहा. "

वैराग्यादिक गुण वृंद, आतममां प्रगटाय;
समभावे निरखे सदा, परमातम पद पाय.

भावार्थ–वैराग्य, संवेग, समता, सहनशीलता,
आदि गुण समूह आत्मामां प्रगटावे अने गुणधारकअ
भावे शत्रुमित्र, कंचन, उपल, निंदक, वंदकादिने देखे,
मात्म पदनी प्राप्ति थायछे.

" दुहा. "

त्याग विराग विना कदी, थाय न आतम
आत्म ज्ञान विना कदी, पामें नहि शिव ठ

भावार्थ–संसारबंधनभूतपुत्रस्त्रीधनादिकना ममत्वरूप
अने वैराग्य विना आत्मज्ञान थतुं नथी, अने आत्म
शिवस्थाननी प्राप्ति नथी, मारांशके–संसारनी मोहजालने
विशस्थिरज्ञान वैराग्यथी सद्गुरु उपदेशद्वारा
समजी आत्मस्वरूपमां लीन थायछे, आत
अमुकमां अमुक दोषछे, अमुक क्रोधीछे, अमुक मारो श

याने आत्मार्थकी भिन्न जाणे ते पुरुषो तेनो त्याग करी शकेछे, संसार वळता अग्नि समान छे, संसारनां दरेक कार्यो उपाधिमय छे, संसारनी उपाधिमां वसतां आत्मानुं ध्यान थइ शकतुं नथी, माटे संसारी उपाधि त्यागी सद्गुरु उपदेश सांभळवो के जेथी वैराग्य प्राप्त थाय, अने वैराग्य प्राप्त थतां गुरु महाराजने पूछी आत्मानुं स्वरूप ओळखवुं, अने ते आत्मस्वरूप जाणतां तेनुं ध्यान धरतां कर्मनो नाश थायछे, माटे आत्मस्वरूपाभिलाषिओए त्याग अने वैराग्यनी प्राप्ति माटे प्रयत्न करवो.

" दुहा "

योग्य होय ते आदरे, हठ कदाग्रह त्याग;
वैराग्ये मन वासियुं, तस परमातम राग. ॥२२॥

भावार्थ—आत्मतत्त्व तथा तेनी प्राप्तिना अव्यभिचारी हेतुओने भव्यात्मा अंगीकार करे आत्मतत्त्व जेनाथी पामी शकाय नहीं एवां साधनोमां हठ कदाग्रहपणानी बुद्धिनो त्याग होय, सद्गुरु महाराजा भव्यात्माओनी विचित्र प्रकृति जोइ जे साधनथी जेने फायदो थाय ते साधन व्रतादि तेने अंगीकार करावे, त्यारे अतिशय प्रेमभक्तिथी गुरु वाक्यने शिष्य अंगीकार करे, आत्मार्थी जीव भवभयथी बीक पामतो विचारे के—जो दुर्लभ मनुष्यावतार पामी स्वछंदाचारीपणे वर्तीश तो अनंत भवभ्रमण करवां पडशे माटे गुरुनी आज्ञा मस्तके धारी मत कदाग्रहनो त्याग करे अने संसारनी अनित्यता विचारे—कर्मनुं स्वरूप सूक्ष्मदृष्टिथी विचारी सारांश ग्रहे के.—आ जगत्मां सम्यग्धर्मथी आत्महित छे, एम चिंतन करी जळपंकजवत् संसारभावथी न्यारो रहे, तेवा भव्यात्माओने परमात्मपदनो राग थाय किंतु संसारमां विष्टा शुकरवत् अहर्निश

विवेकरुपी शून्य हृदयवाळा, अने परवस्तुने पोतानी मानी हर्ष शोक धारण करनारा रागीषबहिरात्मीयोने परमात्मपदनो राग थतो नथी, वैरागी, त्यागी, मत कदाग्रहवर्जित जीवो परमात्मपदपामी शके छे. आ आत्मार्थीनुं लक्षण छे.

" दुहा. "

समकित जेणे अर्पियुं, ते मोटा गुरु देव;
निमित्त गुरु ते आत्मना, कीजे तेहनी सेव. ॥२३॥
त्यां त्यां गुरुनी बुद्धिथी, भटके जाणे रोझ;
गुरु गुरु शो वस्तु छे, नहीं करतो तस खोज ॥२४॥
थोडुं तेटलुं दुख एम, तेवो गुरुमां बुद्धि;
गुरुबुद्धि सर्वत्र जास; तस नहि आतम शुद्धि ॥२५॥
सेवे सद्‌गुरु प्रेमथी, चरणकमल आधीन;
पामे ते परमार्थने, थवे शिवसुखलीन. ॥२६॥
सद्‌गुरु सम कोनो नहीं, भवमांहि उपकार;
कामकुंभश्रीसद्‌गुरु, भवजल तारण हार ॥२७॥
प्रत्यक्ष उपकारी गुरु, परोक्ष जिनवर होय;
एहवी बुद्धि प्रगटतां, धर्म योग्यता सोय. ॥२८॥
गुरुश्रद्धाभक्ति विना, लागे नहीं उपदेश;
भणवुं सुणवुं शास्त्रनुं, ते पण हेतु क्लेश. ॥२९॥
सद्‌गुरु वचनामृत विना, तत्त्वस्वरूप न पाय;
सदगुरु सेवंतां थकां, समकितरत्न ग्रहाय. ॥३०॥

तारक बुध्धिथी गुरु, कथन करे उपदेश;
श्रध्धा भक्तिथी सुणी, आदर करो विशेष. ॥३१॥

भावार्थ–अनंतकरुणायोगे केवलपरमार्थबुद्धिथी अनंत भव दुःखवल्लिछेदककुठारसदृश धर्ममूलभूतसमकितरुप रत्न जे सद्गुरुए अर्पण कर्युं ते गुरु मोटा देव समानछे, देव गुरु धर्मनी श्रद्धाथी समकित आत्मामां उत्पन्न थायछे, देव वीतराग अष्टादश दूषण रहीत होय तेने स्वीकारवा.

यतः जिनेन्द्रो देवता स्तत्र, राग द्वेष विवर्जितः
हतमोहमहामल्लः, केवलज्ञानदर्शनः ॥१॥
सुरासुरेंद्रसंपूज्य, सद्भूतार्थप्रकाशकः
कृत्स्नकर्मक्षयं कृत्वा, संप्राप्तं परमं पदं ॥२॥
जीवाजीवौ तथा पुण्यं, पापमाश्रवसंवरौ;
बंधोविनिर्जरामोक्षौ, नवतत्त्वानि तन्मते. ॥३॥
तत्र ज्ञानादिधर्मेभ्यो, भिन्नाभिन्नविवर्त्तिमान्
कर्म शुभाशुभं कर्त्ता, भोक्ता कर्मफलस्य च ॥४॥
चैतन्यलक्षणो जीवो, यश्चैतद् विपरीतवान् ॥
अजीवःस समाख्यातः पुण्यं सत्कर्मपुद्गलाः ॥५॥

इत्यादि

वीतराग शासनना जिनेन्द्र भगवान् देवछे, ते राग द्वेष रहित छे, जेमणे मोहरुप महामल्लनो सर्वथा नाश कर्योछे, अने जेमने केवळ ज्ञान अने केवळदर्शन साकार निराकार उपयोग वर्तेछे मानवाछे, वैमानिक अने भुवनपति आदिना चोसठ इंद्रोवडे जेना परम कमळ

तरीके अज्ञानथी गणेछे, ए वर्तन वीतरागशास्त्रथकी विरुद्धछे, साधुना सत्तावीस अने श्रावकना एकवीस गुण मळी अडतालीश गुणयुक्त संघ कहेवाय छे. ज्ञान दर्शन चारित्रथी भिन्नाभिन्न अने व्यवहारनयथी शुभाशुभ कर्मनो कर्ता तथा भोक्ता, चैतन्यलक्षण युक्तजीवतत्त्वनी प्ररूपणा तीर्थंकरे करीछे. जीवथी विपरीत अजीवतत्त्वनु प्ररूपण तेमने कर्युंछे, एम नव तत्त्वनुं प्ररूपण कर्ता वीतराग देवछे, आयुष्य मर्यादा पर्यंत पृथ्वीतल पावन करी अघातीयां कर्म खपावी अशरीरी अनामी थइ सिद्धस्थानमां पहोंची सादि अनंति स्थिति अमरामर पद भोगवेछे, एवा देवने देव तरीके मानवा, वीतराग आज्ञाधारक पंचाचार, पंचमहाव्रत आराधक गुरुने गुरु तरीके स्वीकारवा, वीतरागकथीतमोक्षमार्ग स्वरूप धर्मने धर्मरूपे स्वीकारवो, आ त्रण तत्त्वनी श्रद्धा गुरु महाराजना उपदेशथी थायछे, माटे गुरु महाराज समकितदायक प्रबळ निमित्त कारणछे, तेमनेज गुरु तरीके सदा स्वीकारी तेमनी आज्ञानुसार चालवुं. विवेकशून्य अज्ञानवासीत चित्तवाळो मूढपुरुष परमार्थबुद्धिहीन जेटलुं भरवाडी धोळुं तेटलुं दुध एवी अज्ञानताथी रोज पशुनी पेठे सर्व मुंडोमां, सर्व धर्मोपदेशकोमां गुरुबुद्धि धारण करेछे ते अज्ञानी स्वभावबुद्धि करी शकतो नथी अने भविष्यत् काळे सद्गुरुश्रद्धा विना करशे पण नहीं, आत्मस्वरूप, अध्यात्मोपयोगी गुरुनुं आलंबन अनादिकाळसंबंधअज्ञाननो नाश करेछे, सहजानंदी आत्मानुभव मंदिरमां म्हालनार गुरु महाराज प्रत्यक्ष मारा उपकारीछे, अने जिनेश्वर परोक्ष उपकारीछे, एम विवेकदृष्टि जेने प्रत्यक्ष थइ छे ते धर्म पामी शकेछे, गुरु श्रद्धा अने [illegible] गुरु भक्ति करवाथी तेमनो उपकार भव्यात्माने लागेछे, अने श्रद्धा भक्ति विना उपदेश लागतो नथी, गुरुनी आज्ञा

८ कपट वृत्ति जेने होय नहीं, अने सदाचार प्रवृत्तियुक्त होय.
९ लोकविरुद्धनो त्याग करनार होय.
१० विनय होय अने गुरुनी श्रद्धा सहीत सेवामां तत्पर होय.

इत्यादि लक्षणो जेनामां होय ते उपदेश ग्रहनार उत्तम पात्रभूत श्रावक वा मुनिपणे पण शिष्यो जाणवा.

नीचेनां लक्षणवाळाओने उपदेश लागी शकतो नथी.

गाथा.

रत्तो दुठो मूढो--पुव्विवुग्गाहिओअ चत्तारि
उवएसस्स अणरिहा अहवासएहिं परिवुज्जंति ॥१॥

१ संसारनेज सार मानी तेमां अत्यासक्ति धरनार.
२ हुं कोण छुं? मारे शुं कर्तव्य छे? तेनो पण जेने विचार थाय नहीं.
३ पापनां कार्यो करतां भय पामे नहीं,
४ जीवोनो घात करनार धूर्त शठ मूर्खपणुं जेनामां होय,
५ गुरुना दोषो जोनार, तेमनी निंदा करनार अने गुरुनी श्रद्धा तथा गुरुनो विनय बहुमानरहीत होय.
६ गुरुमहाराजनी वाणी उपर विश्वास, श्रद्धा, तेमज तेमनां उपर प्रीतिरहीत होय.
७ कुगुरु अने सुगुरुनी परीक्षा करवानी जेनामां बुद्धि न होय.
८ कपटी, व्यसनी, तेमज निंदक होय,
९ कुगुरुना फंदामां फसाएल होय अने दृष्टिरागी होय.
१० जेनुं स्थिर चित्त न होय, जेम भमावे तेम भमे, विवेकशून्य हृदय होय.

११ गुरु करतां पोताने मोटो माननार, अने पोतानो कक्को खरो माननार होय.

१२ उपदेश समजे नहीं अने गुरु उपर द्वेष करे.

१३ अविनयी होय.

इत्यादि लक्षणयुक्त जीवो होय ते उपदेश देवाने योग्य नथी, तथापि गुरुसंगतिथी तेवा जीवोने पण लाभ मळे, एकांत नथी, आत्मज्ञानी गुरु महाराज अवसरना जाणछे, माटे स्वपर लाभार्थे प्रवृत्ति करेछे, योग्य लागे तो उपदेश आपे अने अयोग्य लागे तो उपदेश आपे नहीं, मौन धारण करे, ज्ञान, दर्शन, चारित्र वीर्यादि गुणोमां ध्यानथी प्रवर्ते, सद्गुरु महाराजा सदा स्वतंत्र आत्मोपयोगपणे वर्तेछे, धर्मध्यान अने शुक्लध्यानना योगे आत्मा परमानंद स्वरूपमां रमण करी तत्पद प्राप्त करे एम गुरुनी प्रवृत्तिछे, एवा गुरुनी आज्ञासह वर्तवुं.

" दुहा. "

त्याज्यने त्यागी ज्ञानथी, उपादेयथुं हेत;
करता हरता कर्मने, शाश्वत पद झट लेत. ३२

द्रव्यकर्म ने भावकर्म, तेनो करी परिहार;
समता संगे झीलतां, लहीए भवजल पार. ३३

स्वच्छंदाचारीपणुं, रोकी सद्गुरु सेव;
गुर्वाधीन मनडुं करी, पामो शाश्वत मेव. ३४

धन्वंतरिसमसद्गुरु, कर्ता कर्मनो नाश;
उत्तम वैद्यनी उपमा, तेना थइए दास. ३५

मूळ विना नहि वृक्ष जग, गुरुगम वण क्यां ज्ञान;
वांचो पोथी पत्र पण, नहीं टळे अज्ञान. ३६
भणवुं गणवुं मानथी, जन मन रंजन काज;
आत्मलक्ष्यना ध्यान विण, लहे न शिव साम्राज्य. ३७
क्रिया कांड कपटे करी, करतो रंजे लोक;
शुष्कज्ञान पण एकलुं, जाणो भविजन फोक. ३८
लाभालाभे सुख दुःख, शत्रु मित्र सम भाव;
उदासीनता चित्तमां, भवसागरमां नाव. ३९
निंदो निंदक नेहथी, पूजो पूजक कोइ;
धूर्तो कहेशे ढोंगीए, समभावे सव जोइ. ४०
अंतर्मुष्टिगुणतणी, आतममांही अनुप;
वांछा वहु बोले सुणी, मनमां राखी चुप. ४१

भावार्थ–ज्ञानथी त्याज्य वस्तुने त्यागी आदरवा योग्य वस्तु स्वरूपज्ञानाधार आत्मा प्रति प्रीति अंतरात्मायोगे उत्पन्न थइ छे एवा मुनिवरो आत्मानी साथे एकतानथी प्रीति करता छता कर्मनो नाश करी झटिति सिद्धि सौधमां प्रवेशे छे, हे आत्मा जेना योगे तारी अशुद्ध परिणति थइछे, एवुं द्रव्यकर्म अने भावकर्मने स्वतः शुद्धपरिणतिथी असंख्यातप्रदेशथी दूरकर, समतास्त्रीनी साथे ध्यान रुप सरोवरमां क्रीडा करतां तुं भवपाथोधि सहेजे उतरी मुक्तिनगर प्राप्त करीश, एम मुनिराज ध्यानमां भावे, अष्टकर्मनो आत्मानी साथे जे बंध तेने द्रव्यकर्म कहे छे, अने राग द्वेषनी परिणतिने भावकर्म कहेछे, आत्मस्वरूपमां रमणता करवाथी द्रव्य-

लाभ, अलाभ, सुख, दुःख, शत्रु, मित्र, जीवितव्य, मरण आदि प्राप्त थतां जेनुं समचित्त छे अने सांसारिक पदार्थो प्रति उदासीनता जेना हृदयमां वर्तेछे एवा सद्गुरुमुनिवर संसाररूप समुद्रमां नाव समानछे.

निंदक सुखीथी (बेलाशक) एवा मुनिवरनी निंदा करो, अने पूजक भावथी भले पूजो, धूर्तो भले ढोंगी कहे, पण एवा महात्मा सर्वने समभावे निरखे छे. बीजाना भला भुंडा कहे तेमां पोताने शुं ?

ज्ञानिगुरुमहाराजा आत्मानी गुणऋद्धि अंतर्दृष्टि योगे नीहाळी प्रमुदित थायछे, आत्माना असंख्यातप्रदेशोछे, एकेक प्रदेशे अनंत ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्यादि गुणो सदा शाश्वत भावे रह्याछे, वळी आत्मा पोताना स्वरूपे रूपीछे, पुद्गलनी अपेक्षाए अरूपीछे, ज्ञानरूप उपयोगनी अपेक्षाए साकारछे, दर्शनरूप उपयोगनी अपेक्षाए निराकारछे, वळी शाश्वत आत्मामां उत्पादव्यय अने ध्रुव समये समये वर्तेछे, वळी आत्मामां स्थिर अगुरुलघु षड्गुणहानि वृद्धि करेछे, ए आत्मा पुद्गल द्रव्य साथे मिलेछे तोपण ते थकी न्यारोछे, अनंत ऋद्धिनो भोक्ता मारा आत्मा विना परद्रव्यनी साथे मारे कंइ संबंध नथी, मारो आत्मा कर्मे अवरायोछे, पण ते गुणो मारा नष्ट थया नथी, मारा आत्माना गुणोने उपमा आपवी व्यर्थछे, अहो हुं आत्मा अखंडछुं, सर्व पदार्थनो हुं समये समये ज्ञाता छुं, त्रण भुवनमां एवो कोइ पदार्थ नथी के माराथी अजाण्यो होय, हुं प्रकाशकछुं, अन्य द्रव्य प्रकाश्यछे, ज्ञाता अज्ञाता ए हुं जाणुंछुं, पण तेथी हुं न्यारो छुं, मारुं स्वरूप वाच्यावाच्य वैखरी भाषाथी छे, मारा अनंता गुणोछे तो हवे मारे परभावमां रमणता केम करवी ? एम विचारी आत्माना गुणो तरफ

पणुं भिन्न भिन्न परिणमे छे तेम अत्र पण दृष्टांत जाणवुं.

कोइ एम कहेशे के—मुनिओए सर्वने उपदेश आपवो अने उपदेश आपवा माटे तो साधुपणुं अंगीकार कर्युं छे, अने न आपे तो अन्य कोण आपे ? तेने प्रत्युत्तरमां कहेवानुं के—जेम सेनापति लश्करी सिपाइने तरवार खेलतां मारतां शीखवे छे,पण जेनी योग्यता थइ नथी तेवां लघु बालकने कंइ हाथमां तरवार (खड्ग) आपतो नथी, ने आपे तो बाळकनो नाश थाय तेम ज्ञानी गुरु योग्यता जेने प्राप्त थइ छे तेने उपदेश आपे छे. उपदेशमां पण पात्रना आधारे फेरफार रहे छे, केटलाक स्थाने संसारमां राचेला माचेला श्रावको विरतिधर्मना भापणरूपे उपदेश आपे छे, पण तेमनुं वैराग्य त्याग विना सर्व अलेखे जाणवुं. गुरुना उपदेशथी जे वैराग्य थाय छे ते अन्यथी थतो नथी. पंचमारकमां श्री तीर्थंकरादिना अभावे तथा पंचविषना योगे योग्य जीवो अल्प जाणवा माटे हे भव्यात्माओ मोक्षनी प्राप्ति माटे निर्मळ मनथी सद्गुरुनुं शरण करो, अने ते फरमावे तेज श्रद्धाथी अंगीकार करशो तो परमपद पामशो.

" दुहा. "

वने वने नहीं हस्तियो, युगे युगे नहि देव;
मुंड मुंड नहि गुरुपणुं, जाणी सद्गुरु सेव. ४९
भीख भोगी नहीं, ब्रह्मचारि गुणवंत;
वृत्ति त्यागी सदा, नमुं सद्गुरु महंत. ५०

वन वन प्रति हस्तियो होता नथी, अने भरत ऐरवतनां प्रत्येक आरकमां कंइ तीर्थंकरोनी उत्पत्ति थती नथी, ते प्रमाणे मस्तक

गुरु, आजीविकानी विद्या शिखवे ते आजीविका गुरु, पण ए गुरुओ व्यवहारथी छे, धर्मनुं स्वरूप समजावे ते व्यवहारथी शुद्ध गुरु जाणवा, अस्ति नास्ति भेदोवडे करी आत्मानुं स्वरूप समजावनार धर्मगुरु समान अन्य कोइ गुरु नथी. बीजा गुरुओने तो अनंतिवार जीव पाम्यो, पण तेथी आत्महित थयुं नहीं, अने समकित प्रगटयुं नहीं, पण धर्मगुरुयोगे समकितनी श्रद्धा थइ, माटे धर्मगुरु समान कोइ गुरु नथी, व्यवहारनयथी सत्यप्रशस्य धर्मगुरु श्रद्धा जाणवी. आदरवा लायक छे. निश्चय नयथी पोतानो आत्मा गुरु जाणवो, गुरुनी श्रद्धा भक्तिमां खामी तेटलीज धर्ममां खामी समजवी.

मोक्ष जिज्ञासु अने ते माटे उद्यम करनार शिष्य होय, धर्मकार्यमां साहसिक विक्रमराजानी पेठे होय, बीकण ना होय तेमज कोइथी दबाय नहीं, कोइना तेजमां अंजाइ जाय नहीं. वळी मनमां अति गंभीर होय, एटले गुरुए कहेल वातो हित वचनो पोताना मनमां राखे अने गुरुना दोष अन्य आगळ बोले नहीं, गुरुनो विश्वासी होय, श्रद्धा अने विश्वास ए बे मोटा गुणछे, गाडरीया प्रवाहथी गुरुनाम धरावनाराओ कूळाचारमां आसक्त जीवो गुरुनी गुरुता जाणी शकता नथी. एवं शिष्यनुं लक्षण कह्युं.

गुरुभक्त शिष्योनुं लक्षण.

" दुहा. "

वैराग्ये मन वाळीयुं, वार्या विषय कषाय;
धीरज जस सुरगिरिसमी, वश जश मन वच काय ५५

भावार्थ–संसारनी अनित्यता भावी मन जेनुं वैराग्यरंगमां भळ्युंछे, अने जेणे विषय कषायने यथाशक्ति वार्याछे अर्थात्

अने कायाने गुरुनी आज्ञा मरजी अनुसार प्रवर्तावे, कदी गुरुनी आज्ञानो लोप करे नहीं, विपरीत मार्गमां अज्ञान, प्रमाद, मतिभ्रमथी चालतां गुरु भक्तोने गुरु महाराज शीखामण आपतां कोप थाय नहीं, गुरु प्रत्यक्ष होय वा परोक्ष होय तो पण देवनी पेठे तेनुं सदा ध्यान करे, परोपकारनी स्मृति लावे. अने गुरुनी भक्तिमां शिष्य सदा आसक्त रहे, अने गुरुना गुणोनो सर्वनी आगळ प्रकाश करे, कोइ गुरुनी निंदा सांभळवाना करतां पृथ्वीमां पेसी जवुं सारुं, कोइ एम कहेशे के गुरुमां दोषो होय तो केम गुरुने मानवा ? अत्र समजवानु के अन्यना कहेवाथी दोषोनी शंका लाववी नहीं, दोषो होय तो पण ढांकवा, उपकारीना उपकारनुं लक्षण ए छे के कोइ कर्म उदयनी प्रबळताथी गुरु अवळा मार्गे चाले तो गुरुभक्त बुद्धियुक्तिप्रयत्नथी ठेकाणे लावे. पण प्राण जतां तेमनी अन्यना आगळ निंदा करे नहीं, निंदा करवाथी कंइ फायदो थतो नथी माटे परोपकारज्ञशिष्य, गुरुना अवगुण प्रकाशे नहीं, गुरुद्रोही गुरुनिंदक कुशिष्यने आत्मज्ञान सवळुं परिणमतुं नथी, अरिहंतनी स्तुतिथी जेटलो लाभछे, तेटलो गुरुनी स्तुतिथी लाभ जाणवो. दीक्षादायक पण धर्मगुरु होयछे, उपर कहेलां लक्षणो जेनामां होय तेने गुरुभक्तो माणवा, एवा गुरुभक्तो संसार समुद्रनो पार पामी शकेछे, सत्य असत्य धर्मनी परीक्षा करनार पण शिष्य होवा जोइए, तेम देवनुं लक्षण पण जाणनार अने कुदेवने परिहरनार शिष्य होवा जोइए, अन्यथा कुगुरुमां गुरुनी बुद्धि धारण करी भवसागरमां भटकाय माटे शिष्य सुगुरुना परीक्षक होय ते मुक्तिपद पामे.

" दुहा. "

त्रिविध सदगुरु वंदता, निंदे अवगुण नीज;

दुग्धपानसदृश अयोग्यने तत्त्वोपदेशछे, योग्य अने अयोग्यनी प-रीक्षा करवी गुरुमहाराजना हस्तमांछे, बिडालना उदरमां खीर टकती नथी तद्वत् अयोग्यना हृदयेधर्मतत्त्व टकतुं नथी. अविनयीने गुप्तधर्मतत्त्वरहस्य आपवुं आत्महितकर थतुं नथी.

संप्रति काले धर्मतत्त्वनो उपदेश शाक भाजीपालानी वेठे योग्य अयोग्यनी परीक्षारहीत दृष्टिगोचर थायछे, तेथी वाक्क्लेश वा अल्पफळनी प्राप्ति थायछे, खेडुत पण भूमीनी परीक्षा करी वाववा योग्य धान्यकाळे वावेछे, तो धर्मरुप बीज योग्यायोग्यनी परीक्षा कर्या विना काळविना कोइपण मनुष्यना हृदयमां रोपवुं, ते अनुचित्त, चिंतनीयछे. जगत्मां मनावा पूजावानी लालचे जग-त्ना प्रवाहमां पडेला गुरुनाम धरावनाराओ गमे तेम उपदेशआपी भोळा जीवोने फसावी पोताना वशमां करी लेइ राचेछे, माचेछे, त पोतानुं तथा अन्यनुं यथायोग्य भलुं करी शकता नथी. सद्गुरु स्वतंत्रछे, योग्य होय तेहने उपदेश आपे, अन्यथा मौन रहेछे.

कुयुक्ति करनारा अने पोतानी पंडिताइ जणावनारने सद्गुरु अंतकरणथी उपदेश आपता नथी, तेमज गुरुना वचन उपर वि-श्वास नथी तेनी साथे गुरुजी माथाकूट करता नथी. पत्थर उपर कमल उगे तो अविश्वासीने गुरुनो उपदेश लागे. गुरुना उपदेशथी वचमां पोतानु डहापण चलावनार गुरुभक्त कही शकाय नहीं, हालना काळमां गुरुभक्त थवुं मुश्केलछे, केटलाक पत्थर समान कुगुरुओछे, पोते संसार समुद्रमां बूडे अने स्वआश्रितोने बुडाडे, संसार समुद्र तरवामां केटलाक पांदडा समान गुरुओछे, अने केटलाक वहाण समान छे, एमजाणी सद्गुरुनुं अवलंबन करवुं ए परमार्थ छे.

" दुहा "

समकितदायक सद्गुरु, तेनुं नहिं मन भान;
परोपकारी बुद्धि वण, ते भटके अज्ञान. ॥ ६२

समकित दायक सद्गुरुना उपकारनुं जेने भान नथी ते
रोपकारिथी अजाण सम्यक्त्वनो सार फल पामी शके नहीं, उप
कार बुद्धिनी विकलताए गुरुना विनयना अभावे रागमां ध
होनशा जेवुं थाय ते संसार समुद्रनो पार पामी शके नहि.

" दुहा. "

समकितदायक गुरु अने, दीक्षा गुरुमां भेद;
अंतर रवि खद्युआ समो, सुशिष्य मनमां वेद. ६३
दीक्षा दायक महामुनि, धर्मगुरु जग जोय;
समजे समजु सानमां, करो न संशय कोय ६४

भावार्थ–सम्यक्त्व दायक धर्मगुरु अने दीक्षा गुरुमां घणो
भेद छे यथा, रवि अने खद्योत एटलो अंतर छे सुशिष्य मनमां
जाण. दीक्षा प्रदायक गुरु बाहुल्यताथी धर्मगुरु होइ शके छे. कारण
के–धर्मप्राप्ति जेनाथी थइ होय ते दीक्षा आपे तो ते होइ शके छे,
समजु सानमां समजशे संशयनुं कंइ प्रयोजन नथी. धर्मगुरुनो
उपकार कोइ पण रीते वळे तेम नथी.

" दुहा. "

एवा गुरुने सेविए, थइए सद्गुण धाम;
गुण धारी शिष्यो लहे, शिवपुरनो विश्राम. ६५

सद्गुणधाम भूत गुरुपदपंकज सेवतां अनेक गुणधाम भूत

शिष्यो थाय, अने गुणधारी शिष्यो शिवपुरनो विश्राम लइ शके छे, सद्गुणी थनारने प्रथम गुरुनी आवश्यकताछे, दुष्पंथथी सुपंथे लावनार गुरुमहाराजछे, जेने गुरु नथी ते पोते गुरु थइ शकतो नथी.

" दुहा. "

सहस्र सूर्योदय हुवे, चंद्र उगे शतवार;
दीपक करो हजार पण, अंध न जुवे लगार. ६६
ज्ञानी सद्गुरु जो मले, अतिशय दे उपदेश;
मूरखने लागे नहीं, उलटो थावे क्लेश. ६७

भावार्थ–सहस्रगमे सूर्यो प्रकाशे, हजारवार चंद्रनो उदय थाय, हजार दीपक सळगावो, पण जे अंधपुरुषछे ते जरा मात्र पण देखी शकतो नथी. तेम मूर्खात्मा मोहांध जडपुरुषने ज्ञानी सद्गुरु मळे अने अतिशय उपदेश आपे तोपण मगशैलीया पाषाणनी पेठे जरा मात्र असर थती नथी. उलटो मूर्खने क्लेश थायछे, अने सद्गुरुने पण वाक्क्लेश अवशेष फल जाणवुं.

" दुहा. "

जडताए जड थइ रहे, गुरुमां कुगुरु बुद्धि;
रासभपुच्छ ग्रही इव, करे न आतम शुद्धि. ६८
सद्गुरुनो विश्वास नहि, कुगुरुनो विश्वास;
अज्ञानी पशु आतमा, सर्व दुःखनो वास. ६९

भावार्थ–आत्मस्वरुपनी अज्ञानताए जड जेवो थइ जड दृष्टिथी तथा मोहांधपणाथी गुरुस्वरुप समज्या विना कुलनी मर्यादाए गुरुपणु माननो अज्ञानी जीव गुरुमां अगुरुपणुं मानेछे,

अने अवळी परिणतियोगे कुगुरुमां गुरु बुद्धि धारण करेछे, ते पोतानी कुटेवने गदापुच्छ ग्रहनारनी पेठे भवभ्रमण दुःख प्राप्ति पामतां सद्गुरुनो उपदेश लागतां पण पोतानी हठ मुकतो नथी. तेवो अज्ञानी जीव पोताना आत्मानी शुद्धि करी शकतो नथी. जेने सद्गुरुनो विश्वास नथी अने कुगुरुना वचननो विश्वासछे, ते अज्ञानी पशु आतमा सर्व दुःखनुं पात्र बनेछे, अवळी परिणतियोगे अवळा मार्गे मतिकल्पनायोगे गमन करेछे. तेवा जीवने योग्यतानी प्राप्ति विना उपदेश पण क्लेशभूत थायछे, राजा, दीवान, शेठ, लक्षाधिपति होय पण योग्यता विना सद्गुरुनो उपदेश असर करतो नथी.

"दुहा."

तर्कशक्ति जेनी घणी, वाणी जस गंभीर;
मोक्षाशा मनमां वशी, धर्मकार्यमां धीर. ७०
एवा शिष्यो पामशे, अनेकान्त सुपंथ;
गुरुगम ग्रंथो वांचीने, थाशे महानिर्ग्रंथ. ७१

भावार्थ–जेनी तर्कशक्ति घणी होय, अने वाणी गंभीर होय, खर पडे तेटलुं शोधे, मोक्षाशा जेना मनमां वसी होय. अने धर्मकृत्यमां मेरुवत् अडगश्रद्धा होय, गुरुनां वचनो पमना टांकणानी पेठेज जेम जेना हृदयमां कोतरातां होय, एवा शिष्यो स्याद्वाद अनेकांत मार्ग पामशे. अने स्वच्छंदाचारीपणुं तथा अहंपणुं त्यागीने गुरुगम ग्रंथोने वांची धारी भावरूपणुं अंगीकार करशे. अथवा शक्ति परिणामयोगे निर्ग्रंथ अवस्था ग्रहण करशे, योग्यता पोतानी केळवीछे अने कया ग्रंथो वांचवा योग्यछे. ते गुरुपरंपराम मानेछे माटे तेमना फरमावेला ग्रंथो वांचवा

एवी हिताकांक्षा धारवी.

" दुहा. "

सदा महानिग्रंथथइ, पाळे पंचाचार;
पंचमहाव्रत पाळता. शुद्ध धेरे व्यवहार. ७२
निश्चय आत्मस्वरुपमां, रमता रहे निशदीन;
गुणपर्याय विचारने, करवामां लयलीन. ७३

भावार्थ–द्रव्यथी धन धान्यादि नवविध परिग्रह त्यागी भावथी राग द्वेषनो त्याग करी निर्ममत्त्वपणे वायुवत् अप्रतिबद्धपणे सदा विचरे, व्यवहारथी पंचमहाव्रत. अने ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपःआचार अने वीर्याचारने पाळे, आदरे, निश्चयनयथी पोताना आत्मस्वरुपमां निशदिन मुनिवर रमे हवे प्रसंगतः प्रथम षड्द्रव्यनुं स्वरुप बतावेछे.

१ धर्मास्तिकाय द्रव्य–चलण सहावो धम्मो,=चालताने सहाय आपवाने गुण धर्मास्तिकायनोछे, ते अजीवद्रव्यछे, अरुपी, अचेतन, अक्रिय, चलनसाह्यगुण तेनो जाणवो. माछलुं पाणीमां तरेछे तेनो ए स्वभावछे, पण पाणी तेने सहायकारकछे. धर्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेशोछे, प्रत्येक प्रदेशमां उत्पातव्यय थया करेछे, द्रव्य स्वरूपथी ध्रुवपणुं असंख्याता प्रदेशोमां अनादि अनंतमे भांगेछे. अगुरु लघुथी प्रत्येक प्रदेशमां षड्गुण हानि वृद्धि थया करेछे. धर्मास्तिकायद्रव्य अन्यद्रव्यमां परिणमतुं नथी. अने अन्य द्रव्यना गुणोनुं घातक नथी, केवलज्ञानवडे धर्मास्तिकाय द्रव्य देखी शकायछे. अन्य जीवोने केवलीना वचननी श्रद्धा गम्य छे, धर्मास्तिकायना कोइपण प्रदेशनो नाश थतो नथी, एक ठेकाणेथी अन्य स्थाने तेना प्रदेशो जता नथी, लोकाकाशमां व्यापीने

अने उत्पाद, व्ययनी अपेक्षाए अनित्य छे, द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए धर्मास्तिकाय शाश्वतछे, अने पर्यायास्तिकनयनी अपेक्षाए धर्मास्तिकाय अशाश्वतछे, धर्मास्तिकाय ज्ञेयछे, पण तेनामां ज्ञातापणुं नथी, जड छे माटे.

२ अधर्मास्तिकाय-स्थिर रहेवामां साहाय्यदायक गुण अधर्मास्तिकायनो छे, मनुष्य मार्गमां चालतां थाके छे, त्यारे झाड जेम तेने बेसवामां सहाय्यकारक छे, तेम अधर्मास्तिकायनी साहाय्यथी जीव पुद्गल स्थिर थायछे, ए द्रव्यना चारगुण छे, अमूर्त, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श थकी रहित, जीवत्वथी रहीत माटे अचेतन, विभाविक क्रिया रहित माटे अक्रिय, निश्चयनयनी अपेक्षाएतो सक्रिय छे, स्थिर पदार्थने साहाय्य करे छे, माटे स्थिर साहाय्यगुण अधर्मास्तिकाय असंख्यात प्रदेशमयी छे, लोकाकाशमां व्यापीने रह्युंछे, अनादि कालथी छे, माटे तेनो उत्पन्न कर्ता कोइ नथी, कोइ पण काले तेनो अंत नथी, माटे अनंत छे, अधर्मास्तिकायना प्रत्येक प्रदेशमां अगुरु लघुथी समये समये षड्गुण हानि वृद्धि परिणमी रही छे, अधर्मास्तिकाय चर्म चक्षुथी देखी शकातुं नथी. अधर्मास्तिकायना चार गुण छे, रुप रहित माटे अमूर्त, अचेतन एटले जीव रहीत, अक्रिय एटले विभाविक क्रिया रहीत, अने स्थिर सहायगुण ए चारगुण अनादि अनंतमे भांगे अधर्मास्तिकायमांछे, समये समये अनंत जीवोने तथा पुद्गलोने स्थिति सहाय आपे छे, एकेक प्रदेश अनंता गुण पर्याय रह्या छे. अधर्मास्तिकायद्रव्यमां स्वगुण पर्यायनी अस्तिताछे, परगुण पर्यायनी नास्तिता छे, द्रव्यत्वनी अपेक्षाए दरेक अधर्मास्तिकायना प्रदेशो एक सरखा छे, कारण के दरेक प्रदेशमां द्रव्यत्वपणुं रह्युं छे, किंतु अगुरुलघुथी षटपड्गुणहानिवृद्धि प्रदेश प्रदेश प्रति भिन्न भिन्न परिणमी

रही छे. ते अधर्मास्तिकायना प्रदेशमां अनंतगुणनी हानी छे, त्यां अनंत गुणहानी मटीने असंख्यात गुणहानि थाय छे, संख्यात गुणहानि होयछे, त्यां अनंतगुण हानि थायछे, एम असंख्याता प्रदेशोमां षट्गुण हानिवृद्धि समये समये भिन्न भिन्न परिणमवाथी सर्व प्रदेशो अपेक्षाए एक सरखा नथी, एक स्थानथी बीजे ठेकाणे प्रदेशो गमन करता नथी. माटे प्रदेशो अचल छे, वळी प्रदेशोना कटका थता नथी, माटे अखंडछे. अधर्मास्तिकायमां जाणवानो गुण नथी माटे जडछे, पोताना स्वरूपे अधर्मास्तिकायमां अनंत शक्तिछे, तेनी केवली भगवान्‌ना वचनथी श्रद्धा करवी. आ द्रव्य लोकाकाशमां व्यापक छतां कोइ द्रव्यना गुणनुं घातक नथी. अने ते अन्य द्रव्यमां परिणमतुं नथी, पोताना स्वभावनो त्याग करतुं नथी. अधर्मास्तिकायने पुण्य पाप लागी शकतुं नथी, परद्रव्यनी साथे परिणम स्वभाववाळा जीवद्रव्यने पुण्य पाप लागी शकेछे. अधर्मास्तिकाय द्रव्य जाणी शकायछे, माटे अधर्मास्तिकाय प्रकाश्यछे, अने ज्ञान प्रकाशक छे, अधर्मास्तिकाय ज्ञेयछे, अने जीव ज्ञाताछे, द्रव्यार्थिक नयापेक्षया अधर्मास्तिकाय शाश्वत छे. पर्यायार्थिक नयापेक्षया अधर्मास्तिकाय अशाश्वत छे, अन्य द्रव्य साथे परिणमतुं नथी. माटे अधर्मास्तिकाय अपरिणामीछे, अधर्मास्तिकाय द्रव्यरूपे नित्य छे. अने पर्यायरूपे अनित्य छे, अनंत अस्तित्व धर्मथी युक्त अधर्मास्तिकायछे. आ द्रव्य जाणवा योग्यछे, अने ते आदरवा योग्य नथी फक्त ते द्रव्यनुं स्वरूप ज्ञानदृष्टिथी जणायछे, आत्मानी साथे तेने कंइ संबंध नथी. एकेक प्रदेशे अनंत धर्म अनंतगुण अनंतपर्यायनी अस्तिता छे, अने अधर्मास्तिकायना एकेक प्रदेशमां परद्रव्यना अनंतधर्म अनंतगुण अने अनंतपर्यायनी नास्तिता व्यापी रहीछे, प्रत्येक प्रदेशमां रहेला धर्मनी अस्तिता

तथा परधर्मनी नास्तितानी अपेक्षाए सप्तभंगी उत्पन्न थायछे, जेम जेम सम्यग् ज्ञान थतुं जायछे, तेम तेम उपयोगनी एकाग्रताए विशेष ज्ञान थतुं जायछे.

३ आकाशास्तिकाय–अधर्मास्तिकायादिकने अवगाहना आपवानो स्वभाव आकाशनोछे, आकाशना बे भेदछे, १ लोकाकाश अने २ अलोकाकाश, जेमां छ द्रव्यनी स्थीति छे, ते लोकाकाश जाणवुं, जेमां आकाश सिवाय अन्य पदार्थनी स्थीति नथी तेने अलोकाकाश कहेछे. तेना चार गुण छे, अरूपी एटले रूपरहीत, आकाशनुं कालुं, पीलुं, धोळुं, नील्लुं, श्वेतआदि रूप नथी.

प्रश्न–आकाशनुं चक्षुथी जोतां कालुं रूप देखायछे, अने तमे केम ना कहोछो ?

उत्तर–आकाश सामुं देखतां जे कालीमा देखाय छे ते कंइ आकाशनी कालीमा नथी. किंतु पुद्गलद्रव्यनी कालीमाछे, माटे आकाशनुं रूप नथी.

प्रश्न–निर्मळ जलथी परिपूर्ण स्थिर सरोवरमां आकाशनुं प्रतिबिंब पडेछे, देखो, सरोवर माटे आकाशनुं रूप मानवुं जोइए.

उत्तर–विशेष सूक्ष्मबुद्धिद्वारा परीक्षा करतां अवबोधाशे के आकाशनुं प्रतिबिंब सरोवरमां पडतुं नथी, अने सरोवरमां जेनुं प्रतिबिंब पडेछे ते पुद्गलद्रव्यछे, तेमां जोतां मालुम पडेछे के–वादळां विगेरेनुं प्रतिबिंब सरोवरमां देखायछे, साकारनुं प्रतिबिंब पडेछे, निराकारनुं प्रतिबिंब पडतुं नथी, छ द्रव्यमां एक पुदगल द्रव्य साकारछे, बाकीनां पांच द्रव्य निराकारछे, साकारनुं साकारने विषेज प्रतिबिंब पडेछे, आकाश निराकारछे माटे तेनुं प्रतिबिंब पडी शकतुं नथी.

प्रश्न–आत्माने विषे अन्य द्रव्य भासेछे, त्यारे आत्मामां अन्य द्रव्यनुं प्रतिबिंब पड्या विना केम भासे ?

उत्तर–दर्पणमां मुखनुं प्रतिबिंब जेम भासेछे, तेम आत्मामां अन्य पदार्थोनां प्रतिबिंब पडतां नथी, ज्ञान गुण पोतानी शक्तिथी सर्व पदार्थोने जाणेछे, तेथी सर्व पदार्थोनां प्रतिबिंब आत्मा-मां पडतां नथी. ए उपरथी सिद्ध थायछे के–आकाश अरूपी छे, अचेतन एटले जीवरहित, विभाविक क्रियारहीत आकाश जाणवुं. केटलाक मतवादी एम मानेछे के–आकाशथी जडनी उत्पत्ति थइ पण ते मंतव्य नथी. कारण के–आकाश निराकार अक्रियछे अने तेनाथी कोइ पण पदार्थनी उत्पत्ति थती नथी, जडादिक साकारछे, अने आकाश निराकारछे, माटे निरा-कारथी साकार वस्तुनी उत्पत्ति थइ शके नहीं, वळी आकाश अनादि कालनुं छे, अने कदी तेनो अंत आववानो नथी माटे अनंत छे, माटे आकाशनो बनाववनार कोइ नथी, वळी आकाशनो उत्पन्न करनार कोइ होवो जोइए, एम कोइ कहे तो विकल्प के–आकाशरूप कार्यनुं उपादान कारण कोण ? अने निमित्त कारण कोण ? प्रथम पक्ष–आकाशनुं उपादान कारण ईश्वर जो कहेशो तो ते संभवतो नथी, कारण के ईश्वर ज्ञानवान् छे, अने आकाश जडछे, ईश्वरनो ज्ञान गुण आकाशरूप कार्यमां आववो जोइए, पण तेम नथी. माटे ईश्वर आकाशनुं उपादान कारण कहेवाय नहीं, अतएव आ-काशनुं उपादान कारण कोइ नथी. जेने उपादान कारण नथी तेने निमित्त कारण पण नथी. ईश्वर आकाशनुं निमित्त कारण नथी. आकाश अनादि कालथी स्वयंसिद्ध छे, आ-काशमां अवगाहना गुणछे. तेथी अन्य द्रव्योने रहेवा माटे

अवकाश आपेछे. आकाशना एकेक प्रदेशे अनंता धर्म, अनंता पर्याय रह्या छे. आकाश द्रव्यना प्रत्येक प्रदेशो द्रव्यत्व पणाथी एक सरखाछे, अने प्रत्येक प्रदेशमां अगुरु लघुथी षड्गुण हानि वृद्धि समये समये थइ रहीछे तेनी अपेक्षाए एक सरखा नथी. आकाशमां स्वद्रव्य स्वक्षेत्र, स्वकाल, अने स्वभावनी अपेक्षाए अस्तिपणुं छे. अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल अने परभावनी अपेक्षाए नास्तिपणुं छे. आकाशमां परद्रव्यनी जे नास्तिता ते पण अस्तिपणे छे. परद्रव्यनी नास्तिता अस्तिपणे आकाशद्रव्यमां न रहे तो अन्यद्रव्यनी अस्तितानो नाश थाय अने अन्यद्रव्य कहेवाय नहीं, जे समयमां स्वद्रव्यादिकनी अस्तिता छे तेज समयमां परद्रव्यादिकनी नास्तिता छे, अस्तिता अने नास्तिता वैखरी वाणीथी कही शकाय सर्वथा माटे अवक्तव्य छे. इत्यादि विचारतां सप्तभंगी उत्पन्न थायछे. आकाशमां जाणवानो स्वभाव नथी. माटे जडछे. वली तेना प्रदेशना कटका थता नथी माटे अखंडछे. ज्ञानगुणे जणायछे माटे ज्ञेयछे. लोकालोक व्यापी आकाशद्रव्य छे. जलमां थलमां ज्यां त्यां अरुपीपणे आकाशद्रव्य व्यापीने रहुंछे, आत्मगुणोनुं घातक आकाशद्रव्य नथी. अने ते अन्य द्रव्यमां संयोगपणे परिणमतुं नथी. अन्य द्रव्यो तेनामां रहेछे. माटे अन्य द्रव्य आधेय छे. आकाश द्रव्य आधार छे. आकाशद्रव्यना स्कंध, देश, प्रदेश, केवलज्ञानथी जाणी शकायछे, आत्माना एक प्रदेशमां ज्ञाननी एवी शक्ति छे के–आकाशद्रव्यना अनंता गुण–अनंता पर्याय, अनंत धर्म एक समयमां जाणी शकेछे.

४ पुद्गलास्तिकाय–वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श थकी युक्त पु-

द्गलद्रव्यछे, तेना धारणछे. मूर्त अचेतन जीवपणायकी रहित. सक्रिय एटले मळवा विखरवारूप क्रिया करेछे, पुद्गलपरमाणु अनंतछे. परमाणु चाळणी चळे नहीं, भेदाय नहीं, परमाणु दर्शन चक्षु अगोचर जाणवुं. द्विपरमाणु संयोगी स्कंधने द्विप्रदेशी स्कंध कहेछे. अनंत परमाणुं संयोगी स्कंध दृष्टिगोचर थायछे, ते व्यवहार परमाणु कहेवायछे. निश्चयनये तो स्कंधरूपथायछे. एक परमाणुमां एक वर्ण एक गंध एक रस अने बे स्पर्श रहाछे, परमाणुथी बनेला केटलाक स्कंधो चक्षुथी देखाय पण हाथमां पकडाय नहीं, केटलाक स्कंधोनो स्पर्श ग्रहाय किंतु चक्षुथी देखाय नहीं जेम वायु. केटलाकनो गंधग्रहाय पण चक्षुग्राह्य थइ शकतां नथी जेम कस्तूरीना पुद्गल स्कंधो विगेरे. एम विचित्र स्वभावयुक्त पुद्गलस्कंधो थायछे. अने विचित्र पदार्थ बनेछे. ए-थात् विखरी जायछे. यावन्त पदार्थो चर्मचक्षुथी ग्राह्यछे ते सर्व पुद्गल छे. केटलाक पुद्गल स्कंधो चर्मचक्षुथी पण अग्राह्य छे, अंधकार तथा प्रकाश पण पुद्गल द्रव्यछे. कर्म पण पुद्गल द्रव्यछे, पंचश औदारिकादि शरीर पण पुद्गल द्रव्यछे. बादर पदार्थना ज्ञानथी सूक्ष्म पदार्थ स्वरूप अनुमाने जणायछे, पत्थर मृत्तिका आदि सर्व पुद्गल द्रव्य जाणवां. एकेंद्रियथी यावत् पंचेन्द्रि जीवोए पुद्गल स्कंधोने शरीरपणे ग्रही स्व-सत्तामां लीधाछे, ते सर्वपुद्गलद्रव्यछे, पुद्गलद्रव्य जीवद्रव्यना गुणोने आच्छादन करेछे. पुद्गलद्रव्यरूपी छतां जीवद्रव्यने बाधा करेछे.

प्रश्न–जीवनी अनंति शक्ति छे, तेने पुद्गल द्रव्य शुं करी शके ?

उत्तर–प्रभुना कर्मधारक जीवोनी अनंति शक्ति तिरोभावे सत्तामां वर्ते छे, किंतु आविर्भावे शक्ति प्रगट थइ नथी अनादि का-

ळथी आत्माने कर्म लागुंछे, तेथी अनादिकाळथी आत्मानी शक्ति तिरोभावे वर्तेछे. जो आविर्भावरुपे शक्ति थइ होय तो कर्मनुं कंइ जोर नथी, माटे कर्मना योगे जीवनी शक्ति अवराइछे, जेम सूर्यने वादळां आच्छादन करेछे तो सूर्यना प्रकाशनुं आच्छादन थायछे, प्रकाश ढंकाइ जायछे, किंतु यदा वादळां विखराइ जायछे त्यारे प्रकाश स्वच्छ पडेछे. एम आत्मा अने कर्म विषे जाणवुं. आत्मा सूर्य समान छे, अने कर्म वादळां समानछे, दृष्टांत एक देशी जाणवुं.

प्रश्न–अरुपी आत्माना गुणोनो उपघातरुपी कर्मथी शी रीते थइ शके?

उत्तर–ब्राह्मी औषधिरुपी, अरुपी बुद्धि वृद्धिमां उत्तेजकछे, मदिरा रुपी छतां ज्ञानीना अरुपी ज्ञाननुं आच्छादन करी ग्रथिल बनावेछे, तथा रीत्या आत्माना असंख्यात प्रदेशे लागेलां ज्ञाना वरणीयादिक कर्मरुपी अरुपी आत्मगुणोनी आविर्भावतानुं आच्छादन करेछे.

विषयांतरथी निवृत्त थइ पुद्गल द्रव्यनुं स्वरुप कथतां अन्य प्रश्न करेछे.

प्रश्न–पृथ्वी, पाणी, वायु विगेरेनी उत्पन्न कर्त्ता इश्वरछे, अने तमे तेने केम अन्य स्वरुपे कथोछो.

उत्तर–पृथ्वी, पाणी, वायु विगेरेनो कर्त्ता इश्वर नथी. अनादि काळथी ते वस्तुओछे. इश्वर अरुपी निरंजनछे तेनाथी रुपी पृथ्वी आदि जगत् बनी शकतुं नथी, सर्व द्रव्य पोतपोताना स्वभावे वर्तेछे. पुद्गल द्रव्यमां जाणवानो स्वभाव नथी माटे जडछे, प्रत्येक परमाणुमां उत्पाद, व्यय, अने ध्रुवताछे. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शनी परावर्त्तना प्रत्येक परमाणुमां थायछे. पुद्गल द्रव्यमां स्वगुण, स्वपर्याय, स्वपर्यायनी भिन्न-

छे. जीवमां उत्पाद, व्यय अने ध्रुवपणुं व्यापीने रह्युं छे, जीवना असंख्याता प्रदेश छे, एकेक प्रदेशे अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंत वीर्य, अनंतभोग, आदि ऋद्धि रहीछे, पंचद्रव्यना द्रव्य, गुण पर्याय धर्मनुं जाणवापणुं एक आत्माना प्रदेशमां रह्युं छे तो असं ख्याता प्रदेशनी तो वातज शी कहेवी? निश्चयनये स्वगुणा दिकनो कर्ता आत्मा जाणवो, व्यवहारनयथी कर्मनो कर्ता आत्म जाणवो. व्यवहारना घणा भेदछे. शुद्ध व्यवहारनय, अशुद्ध व्य वहारनय. शुभ व्यवहार, अशुभ व्यवहार, अनुपचरित व्यवहार, उपचरित व्यवहारनय, वळी व्यवहारनयना बे भेदछे. १ सद्भूत व्यवहार, बीजो असद्भूत व्यवहार. एक द्रव्याश्रित ते सद्भूत व्यवहार अने जे परविषयनो आश्रय करे ते असद्भूत व्यवहार नय जाणवो.

प्रथम सद्भूत व्यवहारना बे भेदछे, एक उपचरित सद्भूत व्यवहार अने बीजो अनुपचरित सद्भूत व्यवहारनय. सोपाधिक गुण गुणीनो भेद देखाडे. जेम जीवस्यमतिज्ञानं. अत्रमतिज्ञान सो पाधिक गुणछे, अने जीव गुणी तेनो भेद देखाड्यो, ते उपचरित प्रथम भेद जाणवो.

तथा निरुपाधिक गुण अने गुणीना भेदे बीजो अनुपचरित सद्भूत व्यवहार जाणवो. जेम जीवस्य केवलज्ञानम्. जीवनुं केवळ ज्ञान, अत्र केवळज्ञान निरुपाधिक गुणछे, अने जीव गुणी छे, माटे निरुपाधिकपणे गुण गुणीना भेदे बीजो भेद जाणवो.

असद्भूत व्यवहारनयना बे भेद छे, एक उपचरित असद्भूत व्यवहार, अने बीजो अनुपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवो.

प्रथम भेद असंश्लेषितयोगे एटले कल्पित संबंधे होयछे, जेम

आ देवदत्तनुं धनछे, अत्र देवदत्त अने धनने उपर उपरनो संबंध छे, स्वस्वामीभावरूप कल्पित संबंधछे. ते माटे देवदत्तनुं धन कहेवुं ते उपचारथी जाणवुं. तथा देवदत्त अने धन एबे एक द्रव्य नथी, माटे ते धननो आरोप देवदत्तने विषे असद्भूतछे ए उपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवो. आत्मानी साथे कर्मसंश्लेषपणुंछे, एटले आत्मानी साथे कर्म. तथा देहना संश्लेषपणाना (जोडावा वा मळवा) ना योगे अनुपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवो.

आत्मानी साथे अष्टकर्मनो संबंधछे ते धन संबंधनी पेठे कल्पित नथी. वळी औदारिक–वैक्रिय, आहारक. तैजस अने कार्मण शरीरनो आत्मानी साथे संबंधछे ते पण धन संबंधनी पेठे कल्पित नथी. विपरीत भावनाए निवर्ते नहीं, जावज्जीव रहे तेमाटे ए अनुपचरित अने कर्मादिक भिन्न विषय माटे असद्भूत जाणवो.

अनुपचरित असद्भूत व्यवहारनये जीव कर्मनो कर्त्ता जाणवो, अने उपचरित असद्भूत व्यवहारतः गृह धननो कर्त्ता जाणवो, तथा स्वजाति उपचरित असद्भूत व्यवहारे पुत्र पुत्रीनो कर्त्ता जीव जाणवो. पुत्र पुत्री पोतानी जातिनां छे, पुत्रादिक जीवनां नथी तेम छतां जीवनां कहेवां ते उपचार, पुत्रादिक पोतानाथी भिन्नछे माटे असद्भूत जाणवो. विजाति उपचरित असद्भूत व्यवहारे धनादिकनो कर्त्ता जीव जाणवो. धन विगेरेनी जीवना करतां जुदी जातिछे एटले ते पुद्गल जातिछे, माटे विजाति धनादिक जाणवुं, धन विगेरेनो कर्त्ता जीवने कहेवो ते उपचार छे, कल्पितपणुं छे. धनादिक पोतानाथी भिन्न द्रव्यछे माटे असद्भूतपणुं तेवां जाणवुं.

स्वजाति विजाति उपचरित असद्भूतव्यवहारनयतः नगरादिकनो कर्त्ता जीव जाणवो. जीव, अजीव बन्नेनो समास

तेमां थयो. अशुद्धनिश्चय नये राग द्वेपनो अशुद्ध स्वभावे जीव कर्त्ता जाणवो.

शुद्धनिश्चयनये स्वकीयनिरुपाधिकज्ञानदर्शनादिक गुणोनो कर्त्ता जीव जाणवो.

आत्मानुं केवळज्ञान ते शुद्ध सद्भूत व्यवहार जाणवो, धर्म अने धर्मीना भेदथी ए व्यवहार थयो, तथा मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, आत्मानुंछे एम कहीए ते अशुद्ध सद्भूत व्यवहार जाणवो.

परद्रव्यनी परिणति भळवाथी द्रव्यादिकमां नवविध उपचारथी असद्भूत व्यवहार थायछे.

१ द्रव्ये द्रव्योपचार, २ गुणे गुणोपचार, ३ पर्याये पर्यायोपचार ४ द्रव्ये गुणोपचार, ५ द्रव्ये पर्यायोपचार, ६ गुणे द्रव्योपचार, ७ पर्याये द्रव्योपचार ८ गुणे पर्यायोपचार ९ पर्याये गुणोपचार. एनुं स्वरुप कहे छे.

१ द्रव्ये द्रव्योपचार—क्षीरनीरन्यायवत् जीव पुद्गल साथे मळ्यो छे माटे जीवने पुद्गल कहीए ए जीवद्रव्ये पुद्गल द्रव्यनो उपचार जाणवो.

२ गुणे गुणोपचार—भाव लेश्या ते आत्मानो अरूपी गुणछे तेने जे कृष्ण नीलादिक काळी लेश्या कहीएछीए ते कृष्णादि पुद्गल द्रव्यना गुणनो उपचार करीएछीए ए आत्मगुणे पुद्गल गुणनो उपचार जाणवो, इति गुणे गुणोपचार.

३ पर्याये पर्यायोपचार—अश्वहस्ति ममुख आत्मद्रव्यना असमान जातीय द्रव्यपर्याय तेने स्कंध कहेछे, आत्मपर्याय उपरे पुद्गल पर्याय जे स्कंध तेनो उपचार कहीए छीए ते पर्याये पर्यायोपचार.

४ द्रव्ये गुणोपचार—हुं गौरवर्णछुं एम बोलतां हुं एटले आत्म द्रव्य अने गौरपणुं ते पुद्गलनुं उज्वलतापणुं, आत्मद्रव्यमां

गौररूप जे पुद्गलनो गुण तेनो उपचार कर्यो माटे द्रव्ये गुणोपचार जाणवो.

५ द्रव्ये गुणोपचार–हुं गौरवर्णवाळो एम बोलनारो हुं ते आत्मद्रव्य अने देह नो पुद्गल द्रव्यनो सामान्य जातीय पर्याय जाणवो.

६ गुणेद्रव्योपचार–यथा दृष्टांत ए गौर देखायछे, गौरतारूप पुद्गल गुण उपरे आत्मद्रव्यनो उपचार ते गुणे द्रव्योपचार.

७ पर्यायेद्रव्योपचार–देहने आत्मा कहेवो त्यां देहरूप पुद्गल पर्यायने विषे आत्मद्रव्यनो उपचार कर्यो ए सातमो भेद जाणवो.

८ गुणेपर्यायोपचार–मतिज्ञान ते पंचेन्द्रिय अने मनोजन्य छे माटे शरीरज कहीए अत्र मतिज्ञानरूप आत्मगुणने विषे शरीररूप पुद्गल पर्यायनो उपचार कर्यो.

९ पर्यायेगुणोपचार–शरीर ते मतिज्ञानरूप गुणगछे अत्र शरीररूप पर्यायने विषे मतिज्ञानरूप गुणनो उपचार करायछे, ए नवम भेद व्यवहारनये अनेकधा जीव व्यवहरायछे, निश्चय नये सर्व जीवनी सत्ता एक सरखीछे. सर्व वस्तुथी जीव न्यारोछे, अनादि कालथी आत्मानी अशुद्ध परिणतियोगे आत्मा कर्मादिकने ग्रहेछे, यथा मदिरापानथी शुद्ध मनुष्यनी बुद्धि फरी जायछे, तेम कर्मनायोगे आत्मा परस्वभावमां राच्यो माच्योछे, यदा उपयोगनी एकाग्रताए स्वध्यानमां आत्मा रमे तदा कर्मादिकनो नाश थायछे. जे ऋद्धिने माटे जीव फांफां मारेछे, ते ऋद्धि आत्मामां समायीछे. आत्मा पोतानुं स्वरूप ज्ञानवडे जाणेछे अने परद्रव्यनुं स्वरूप पण ज्ञानवडे जाणेछे. आत्माना समान कोइ उत्तम वस्तु नथी, आत्मा आदेय, आराध्य पूज्यछे. आत्मानी ऋद्धि आत्मस्वरूपना ज्ञानथी प्राप्त थायछे. त्रण जगत्नो स्वामी आ प्रत्यक्ष देखाता शरीरमां रहेलो

अने ते ज्ञान आत्मद्रव्यमां रहुंछे, दुनीयामां जेटलां शास्त्रछे ते आत्मामांथी नीकळ्यांछे. अभ्यासादिक ज्ञाननां साधनछे, अनंत गुणोनो भोक्ता आत्माछे, आत्मानी ऋद्धि सदाकाल आत्मामां रहीछे, आत्म ऋद्धिनो कदापि नाश थनार नथी. निश्चयनयथी जोतां आत्मा परभावनो भोगी नथी. आत्मार्थी परभावनुं ध्यान निवारी स्वशुद्ध आत्मस्वरूपनुं ध्यान करे तो चरणनिधान देखे, क्रियाकांडथी भगवदाज्ञा डोळघालु कपटीओ अज्ञानी जीवने पोताना फंदमां फसावी धर्मना विश्वासमां फसावी पोते पण अज्ञानमां घुरेछे, अने अन्योने पण घुडादेछे, सिंहना पराक्रमनो अभिमानथी पोतानामां आरोप करनारो शृंगाल क्यां सुधी कपट वृत्ति चलावी शके. आत्मज्ञान तेज धर्मछे, तेज आदेयछे, अधुना पंचविषना योगे आ भरत क्षेत्रमां कृष्ण पक्षीय जीवोनी बाहुल्यताए गीतार्थना, सद्गुरुना समागम तथा विश्वास विना अने भवाभिनंदीपणाना त्याग विना अशुभ व्यवहारना त्याग विना मुमुक्षुना योग्यगुणो विना अज्ञानी जीवो ज्यां त्यां दृष्टिरागनी अंधताए विवेकनयनशून्य थया छता उपर उपरथी धर्मनामे टीलां टपकां करता अने करभ विवाह प्रसंग रासभ प्रशंसाना आचरणमां पोतानी वाहवाहमां कृत कृत्यता समजनार अज्ञानी जीवा सद्गुरुनी वाणी विषना प्याला समान लेखवी, कुगुरुनी वाणी अमृतना प्याला लेखवता, कुधारामां सुधारानी बुद्धि माननार, अस्थिर चित्तवाळा पामर प्राणीओ आध्यात्मिक शास्त्रोना ज्ञान विना अने देवगुरु धर्मनी श्रद्धा विना स्वच्छंदाचारीपणाने लीधे आत्मप्रशंसा अने परगुणापकर्षताए अज्ञानश्रद्धाए तत्त्व पाम्या जाणे होयनी ? एम संसारमां परभव प्रवृत्तिथी स्वआयुष्य पूर्ण करी नृभवचिंतामणि रत्नसमान हारी नरकादिक गतिना

मेवान था आदि व्याधिनी दुःख श्रेणि परंपराने पामेछे.

आत्मार्थि जीव स्वपरवस्तुनो विवेक करी हेयज्ञेय उपादेय समजी गुणस्थाननी परिणति समजी व्यवहार निश्चयनयनुं स्वरुप गुरुगमद्वारा समजी वैराग्यनी वीरत्वताए सद्गुरु आज्ञाभक्ति विनययोगे आलंबन अने निरालंबन ध्याननी अभिलाषाए अंतःकरण शुद्धिपूर्वक स्याद्वाद आत्मिक धर्मनुं आराधन करतो जल पंकजवत् वर्तन चलावतो व्यवहारमां वर्तेछे, परभाव मद्दविमूलरागद्वेषमहा उच्छेदक आत्मस्वभावपरिणतिमां वर्ततां भव्यात्माओ ज्ञान ध्यानयोगे क्षयोपशमभावे वा उपशम भावे मोहनीय कर्मनो उच्छेद करी सर्वथा घाती स्वभावमां कर्मक्षय करी केवलज्ञानादि संपदा पामी चउदमुं गुणठाणुं आयुष्य मर्यादाए उल्लंघी सादि अनंति स्थिति पामी अनंत आनंददायक शाश्वत सिद्धबुद्ध स्वरुप सिद्धिपद पामी शकेछे. समये समये जीव सात वा आठ कर्म बांधेछे. स्वभावमां रहे तो कर्मबंध टळेछे, माटे आत्मतत्त्वनी प्राप्ति अर्थे सद्गुरु वचनामृतनुं विनयभक्तियोगे पान करवुं एज हितकांक्षा.

" दुहा. "

अखंड अक्षय शाश्वतुं, देखी आतम रूप;
चित्ते चमक्यो आतमा, अरे हुं तो महा भूप.७६

भावार्थ—अखंड, अक्षय, शाश्वतस्वरुप पोतानुं पोते आत्मा देखी चित्तमां चमक्यो अर्थात् आश्चर्य पाम्यो, अने कहेवा लाग्यो के—अरे हुं तो महाभूपछुं. अद्यापि पर्यंत में पोताने अज्ञानी जाण्यो, हुं गरीब छुं एवी मने भ्रांति हती पण हवे ए भ्रांति चाली गइ, हुं निर्धनछुं एम हुं पोताने मानतो हतो पण जाण्युं के—मारा आत्मामां अनंत धन रह्युंछे, तेनी संतति काढे खबर पडी, चक्रवर्ति आदि

अने ते ज्ञान आत्मद्रव्यमां रहुंछे, दुनीयामां जेटलां शास्त्रछे ते आत्मामांथी नीकळ्यांछे. अभ्यासादिक ज्ञाननां साधनछे, अनंत गुणोनो भोक्ता आत्माछे, आत्मानी ऋद्धि सदाकाल आत्मामां रहीछे, आत्म ऋद्धिनो कदापि नाश थनार नथी. निश्चयनयथी जोतां आत्मा पराभावनो भोगी नथी. आत्मार्थी परभाववुं ध्यान निवारी स्वशुद्ध आत्मस्वरूपनुं ध्यान करे तो चरणनिधान देखे, क्रियाकांडथी भगवदाज्ञा डोळघालु कपटीओ अज्ञानी जीवने पोताना फंदमां फसावी धर्मना विश्वासमां फसावी पोते पण अज्ञानमां बुडेछे, अने अन्योने पण बुडाडेछे, सिंहना पराक्रमनो अभिमानथी पोतानामां आरोप करनारो शृंगाल क्यां सुधी कपट वृत्ति चलावी शके. आत्मज्ञान तेज धर्मछे, तेज आदेयछे, अधुना पंचविषना योगे आ भरत क्षेत्रमां कृष्ण पक्षीया जीवोनी बाहुल्यताए गीतार्थना, सद्गुरुना समागम तथा विश्वास विना अने भवाभिनंदीपणाना त्याग विना अशुभ व्यवहारना त्याग विना मुमुक्षुना योग्यगुणो विना अज्ञानी जीवो ज्यां त्यां दृष्टिरागनी अंधताए विवेकनयनशून्य थया छता उपर उपरथी धर्मनामे टीलां टपकां करता अने करभ विवाह प्रसंग रासभ प्रशंसाना आचरणमां पोतानी वाहवाहमां कृत कृत्यता समजनार अज्ञानी जीवा सद्गुरुनी वाणी विषना प्याला समान लेखवी, कुगुरुनी वाणी अमृतना प्याला लेखवता, कुधारामां सुधारानी बुद्धि माननार, अस्थिर चित्तवाळा पामर प्राणीओ आध्यात्मिक शास्त्रोना ज्ञान विना अने देवगुरु धर्मनी श्रद्धा विना स्वच्छंदाचारीपणाने लीधे आत्मप्रशंसा अने परगुणापकर्षताए अज्ञानश्रद्धाए तत्त्व पाम्या जाणे होयनी ? एम संसारमां परभव प्रवृत्तिथी स्वआयुष्य पूर्ण करी नृभवचिंतामणि रत्नसमान हारी नरकादिक गतिना

मेमान थइ आधि व्याधिनी दुःख थेगि परंपराने पामेछे.

आत्मार्थी जीव स्वपरवस्तुनो विवेक करी हेयज्ञेय उपादेय समनी गुणठाणानी परिणति समनी व्यवहार निश्चयनयनुं स्वरुप गुरुगमद्वारा समनी वैराग्यनी तीव्रताए सद्गुरु आज्ञाभक्ति विनययोगे सालंबन अने निरालंबन ध्याननी अभिलाषाए अंतःकरण शुद्धिपूर्वक स्याद्वाद आत्मिक धर्मनुं आराधन करतो जल पंकजवत् वर्तन चलावतो व्यवहारमां वर्तेछे, परभाव मग्नचिमूलरागद्वेषमहाकछेदक आत्मस्वभावपरिणतिमां वर्तता भव्यात्माओ ज्ञान ध्यानयोगे क्षयोपशमभावे वा उपशम भावे मोहनीय कर्मनो उच्छेद करी समकित पामी स्वल्पकालमां कर्मक्षय करी केवलज्ञानादि संपदा पामी चउदमुं गुणठाणुं आयुष्य मर्यादाए उल्लंघी सादि अनंति स्थिति पामी अनहद आनंददायक शाश्वत शिवसुख स्वरुप मुक्तिधाम पामी शकेछे. समये समये जीव सात वा आठ कर्म बांधे छे, स्वभावमां रमे तो कर्मबंध टळेछे, माटे आत्मतत्त्वनी प्राप्ति अर्थे सद्गुरु वचनामृतनुं विनयभक्तियोगे पान करवुं एज हिताकांक्षा.

" दुहा. "

अखंड अक्षय शाश्वतुं, देखी आतम रूप;
चित्ते चमक्यो आतमा, अरे हुं तो महा भूप.७६

भावार्थ-अखंड, अक्षय, शाश्वतस्वरुप पोतानुं पोते आत्मा देखी चित्तमां चमक्यो अर्थात् आश्चर्य पाम्यो, अने कहेवा लाग्यो के-अरे हुं तो महाभूपछुं, अद्यापि पर्यंत में पोताने अज्ञानी जाण्यो, हुं गरीब छुं एवी मने भ्रांति हती पण हवे ए भ्रांति चाली गइ, हुं निर्धनछुं एम हुं पोताने मानतो हतो पण जाण्युं के-मारा आत्मामां अनंत धन रहुंछे, तेनी संतति काले खबर पडी, चक्रवर्ति आदि

राजाओने हुं महाभूप तीरके स्वीकारतो हतो पण हवे आत्मा स्वरुप ओळखतां मालुम पडयुं के इंद्र, चंद्र, नागेंद्र करतां पण अ शरीरमां व्यापक आत्मा महाभूपछे. एनी प्रभुताइने कोइ पामी शके तेम नथी. स्त्री पुत्रादिकपर जेटली ममता थाय छे तेटली जो आत्मा उपर ममता थाय अने तेनुं ध्यान करवामां चित्त लागे ते आत्मा परमात्मस्वरूपने पामे. वहिरात्मिसाधुओने शिष्यो करवा उपर जेटली चाहनाछे तेटली जो आत्माना उपर चाहना थाय तो परमात्मपद अवश्य पामी शकाय. बाह्यधन तो मळेछे अने पापना उदये विणशी जायछे पण आत्मानुं अंतर्धन कदापि काळे नाश पामी शकतुं नथी. दुनीयाना मनाहमां जे तणायछे ते आत्मिक लक्ष्मी पामी शकता नथी-घणा भव कर्या, घणां शरीर छोड्यां, पौद्गलिक माया सर्व नाश पामी किंतु त्रणे कालमां आत्मा चेतन स्वभावेज वर्तेछे माटे आत्मा शाश्वतछे, वांचवा अगर कहेवामात्रथी नहीं पण ते अनुभवगम्यछे.

" दुहा. "

रझळ्यो हुं परदेशमां, लहियां दुःख अनंत;
शुभ देखी निजदेशने, शान्त थयो शिवकंत. ७७

भावार्थ-पोताना आत्माना असंख्यात प्रदेश ते पोताना प्रदेश जाणवा अने पृथ्वीना जे देश ते पुद्गलास्तिकायछे, पुद्गलास्तिकाय द्रव्य जडछे, पृथ्वीना प्रदेशोने पोताना प्रदेश मानी परदेशमां रझळ्यो, क्षुधा पिपसाए ताडनतर्जन छेदनभेदन आदि आत्माए अनंत दुःखो सहन कर्या, अने नाना प्रकारनां शरीरो धारण कर्यां पण दुःखनो अंत आव्यो नहीं, पण हवे सद्गुरुयोगे आत्मानुं स्वरुप जाणतां पोतानो देश ओळख्यो अने आत्मा मुक्तिनो स्वामी शान्त

अंतर्मां पण शान्त होयछे, केटलाक अंतर्थी शांत होता नथी अने उपरथी पण शांत होता नथी. शांतावस्थानुं सुख आत्मज्ञानीयो पाम्या, पामेछे, अने पामशे.

" दुहा. "

परपुद्गलना देशने, मान्या मारा देश;
तेनी ममताए करी, ग्रहिया पुद्गल वेष. ७८
ठाम ठाम हुं भटकियो, चार गति दुःख खाण;
त्यां पण ममता देशनी, कीधी गुणनी हाण. ७९

भावार्थ-पौद्गलिक देशने पोताना मानी राग द्वेषथी कर्म ग्रहण करतो छतो विचित्र प्रकारनां शरीर धारण कर्यां, नाना देहो धारण करी दुःखनी खाणभूत चार गतिमां ठेकाणे ठेकाणे चेतन भटक्यो, अने ज्यां ज्यां उत्पन्न थयो त्यां पण देशनी ममता धारण करी पोतानुं भान भूली आत्मगुणनो तिरोभाव कर्यो, आ मारुं घर, मारुं क्षेत्र, मारी पृथ्वी, आदिना अभिमानथी रशिया जापाननी पेठे हजारो जीवोनो नाश थयो तेनुं कारण परपौद्गलिक देशनी ममताछे, अज्ञानी जीवो स्वदेशाभिमानमां एम. ए. सुधी भण्या होयछे तो पण अज्ञान प्रवाहमां तणाइ जायछे. पोतानो देश कयो छे ते गुरुभक्तो निश्चयतः जाणी शकेछे. मन बाह्य विषयमां धावे छे, तावत् जीव कर्मनी राशि अशुद्ध परिणामे ग्रहेछे, गुजरात, बंगालादि देशो माराछे अने हुं एनोछुं, आ राज्य माराछे अने हुं एनोछुं, आ कुटुंब माराछे, अने हुं एनोछुं, एवी बुद्धि यावत् थायछे तावत् जाणवुं के-चेतन जडता अनुभवेछे, आत्मा अने परमात्म स्वरूपनुं ज्ञान थाय तेने ज्ञान कहेछे. अने आत्मा अने परमात्मानी ध्यानयोगे ऐक्यता थाय तेने विज्ञान कहेछे.

उक्तञ्च—

अन्य शास्त्रेऽपि क्षेत्र क्षेत्र ज्ञयोर्ज्ञानं, तज्ज्ञानं ज्ञानमुच्यते;
विज्ञानं चोभयोरैक्यं, क्षेत्रज्ञ परमात्मनोः १

स्वकीय अज्ञानथी आत्मा भटकायछे, अने पोताना ज्ञानथी कर्म विमुक्त आत्मा बनेछे, आत्मानो उद्धार आत्माज करी शकेछे, आत्मानुं उपादान कारण आत्माना गुणोछे, उपादाननी शुद्धि अर्थे भव्य जीवो निमित्त हेतु अवलंबी परमात्मपद पामेछे. अभव्य जीवोमां उपादान कारणनी शुद्धि थाय तथा प्रकारनो स्वभाव नथी. निमित्त कारण तो पामेछे, किंतु अभव्य जीवमां भव्य स्वभाव नथी, तेथी उपादान कारण शुद्ध थतुं नथी भगवद्गीताना छट्टा अध्यायना पांचमा श्लोकमां कयुंछे के:-

श्लोक.

उद्धरेदात्मनात्मानं, नात्मानमवसादयेत्,
आत्मैवह्यात्मनो बन्धु, रात्मैव रिपुरात्मनः १

आत्मा उद्धारवो पोते, आत्माने मारवो नहि;
बंधु पोतेज पोतानो, पोतेज रिपु छे सहि. १

आत्मा स्वशुद्धपरिणामयोगे पोते पोतानो उद्धार करेछे अर्थात् परमात्मपद पामेछे, प्रभुश्री कहेछे के:-आत्माने भव्यात्माओए मारवो नहीं. पोताना आत्मानो घात करवो तेना समान पाप नथी, अध्यात्मगीतामां कयुंछेके:-

स्वगुण रक्षणा तेह धर्म, स्वगुण विध्वंसना ते अधर्म;
भाव अध्यात्म अनुगत प्रवृत्ति, तेहथी होय संसार छित्ति.१

आत्माना अनंत गुणो कर्मयोगे ढंकायाछे, तिरोभावे रह्याछे,

तेनुं रक्षण करवुं एटले ते अनंत गुणोने आविर्भाव करवा, कर्मशत्रुथी अवरावा देवा नहीं तेनुं नाम धर्मछे, धर्मना चार भेदछे, १ नामधर्म, २ स्थापनाधर्म, ३ द्रव्यधर्म, ४ भावधर्म. कोइनुं धर्म एवुं नाम आपवुं ते नामधर्म, कोइ पण वस्तुमां धर्मनो आरोप करवो ते स्थापनाधर्म, धर्मना हेतुओनुं अवलंबन करवुं ते द्रव्यधर्म वा उपयोग शून्य जे धर्म ते द्रव्यधर्म जाणवो, आत्मानी उपयोगताए नयनिक्षेपा सप्तभंगीथी आत्मानुं अनेकान्त स्वरुप जाणी श्रद्धा करवी, तेनुं रक्षण करवुं तेनुं नाम भावधर्म जाणवो.

ते भावधर्म आत्मामां रह्योछे, शुद्ध, सत्य, अखंड, अक्षयरुप भावधर्म अरुपीछे अने ते भव्य जीवोने प्राप्त थायछे, समकितवंत जीवने भावधर्मनी प्राप्ति थायछे, भावधर्म विना सर्व क्रिया निष्फल जाणवी.

द्रव्यधर्मना बे भेदछे, लौकिक द्रव्यधर्म बीजो लोकोत्तर द्रव्यधर्म, लौकिक द्रव्य मिथ्यात्वनुं कारणछे, भावधर्म सापेक्ष लोकोत्तर द्रव्यधर्म परमात्मपद साधक निमित्त कारणछे, आत्मीय गुणोनुं रक्षण ते धर्म, अने आत्माना गुणोनो नाश करवो एटले आत्माना गुणो तिरोभावे वर्तोय तेम रागद्वेषयोगे ज्ञानावरणीयादि कर्म ग्रहण कराय तेनुं नाम अधर्म जाणवो, नाम अध्यात्म, स्थापना अध्यात्म, द्रव्य अध्यात्म अने भाव अध्यात्म ए चार ४ निक्षेपाए अध्यात्म जाणवुं. आद्यनां ३ त्रण अध्यात्म अनुपयोगी जाणवां, भाव अध्यात्मथकी कर्मकलंक नाश पामेछे. माटे भाव अध्यात्म अनुगत प्रवृत्ति थाय तो तेथी संसारनो उच्छेद थायछे, माटे ज्ञानी पुरुषो कहे छे के आत्माने मारवो नहीं, आत्मानी जो अशुद्ध परिणति थइ तो आत्माए आत्माने मार्यो कहेवायछे, आत्मा पोते पोतानो बंधुछे, एम कहेवाथी सिद्ध थयुं के पोतानुं भलुं करवा पोते आत्मा समर्थ

छे, राग द्वेषने आत्मा जीते तो आत्मा प्रभु गणाय छे. मला
प्रभुनी सत्ताथी आत्मा पोताना आत्माने रागद्वेष त्यागवाथी ते दूर
नथी. माटे पोताने प्रभु नजीक मानवा ए तो संसार व्यव
कल्पनाछे. व्यवहारिक कार्योमां नजीक प्रभुनी नजरछे. किंतु
त्यां परमात्मस्वरूपमय थाय तेमां तो आत्मान पोते प्रभुछे, त्यां अन्
कशुं थावतुं नथी. रागद्वेषना सद्भावमां आत्मा अशुद्ध परिणाम
वर्तेछे तो आत्मा पोते पोतानो शत्रुछे एम जाणवुं. आत्मा परमा
त्यागी स्वभावमां रमे तो आत्मानो कोइ शत्रु नथी, आत्मा सिव
आत्मानो शत्रु अन्य कोइ व्यवहारथी कल्पना मात्र जाणवो. राग
द्वेषे संसारमां रखडवुं पडवुं. तथा आत्मानी अज्ञानताथी मिथ्यात्व परि-
णतिए करी आत्माने परमात्मरूप पामवामां आत्मा शत्रुभूतछे, यावत्
जीव समकित पाम्यो नथी अने मिथ्यात्व भावे रमी परने पोतानुं
मानेछे तावत् तात्त्विक सुख पामी शकतो नथी, माटे आत्मिक अ-
संख्यातप्रदेशमां ध्यान देवुं.

" दुहा. "

धर्माऽधर्माऽकाशना, प्रदेश हान न लेश;
पुद्गलना जे देश छे, दे अज्ञानी क्लेश. ८०

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकायना प्रदेशथी आत्मगुणोनी हानि लेशमात्र पण थती नथी, पण पुद्गल स्कंधो अज्ञानीने क्लेश आपेछे

धम्मा धम्मा गामा तिन्निवि ए ए अणाइया ।
अपज्जवसियाचेव सव्वद्धं तु वियाहिया.

धर्म, अधर्म अने आकाश ए त्रण द्रव्य अनादि कालनांछे अने अनंतछे १४ राजलोक व्यापि धर्मास्तिकायछे, अधर्मास्तिकाय

पण चउद राजलोक व्यापीछे, आकाशास्तिकाय लोकालोक व्यापी छे. अशुद्ध परिणति योगे आत्मा पुद्गलास्तिकायना स्कंधोने ज्ञानावरणीयादि अष्टविधकर्मराशिरूप बनावी ग्रहण करी संसारमां परिभ्रमण करेछे.

आत्मा शुद्धस्वरूप जोतां अरूपीछे, छतां रूपी एवा कर्मथी आत्माना अनंतगुणोनुं आच्छादन थायछे, आत्माना एकेक प्रदेशे अनंति कर्मवर्गणाओ लागीछे, किंतु आत्माना आठ रूचक प्रदेशे कोइ कर्म लागतुं नथी ते आठ रूचक प्रदेश सिद्ध समान सदाकाल निर्मल अनादि कालनाछे, ए आठ रूचक प्रदेशे पण जो कर्म लागे तो जीवनुं जीवत्वपणुं चाल्युं जाय. रूचक प्रदेशनो एवो स्वभावछे के तेने कोइ कर्म लागी शके नहीं, जेम जेम एकेंद्रियादिक भवनुं उल्लंघन करी उच्च गतिमां आवेछे तेम तेम तरतमयोगे सामान्यतः मतिज्ञान श्रुतज्ञाननी प्राप्ति थायछे.

शिष्यप्रश्न—आत्माना असंख्यात प्रदेशो शी रीते कहेवाय ? असंख्यात प्रदेश कहेवाथी आत्माना असंख्यात भाग थया त्यारे आत्माना खंड थया अने अखंड आत्मा कहेवाशे नहिं माटे आत्माना असंख्यात प्रदेशो कहेवा ते शीरीते=

सद्गुरु—आत्मा असंख्यातप्रदेश मयी कहेवायछे, असंख्यात प्रदेश कहेतां आत्माना असंख्याता भाग थइ शकता नथी. कारणके प्रदेशो एक एकथी जुदा पडता नथी, प्रदेशो बाल्या बळता नथी, छेद्या छेदाता नथी, हण्या हणाता नथी. केवली केवली समुद्घात करे त्यारे आत्माना प्रदेशो लोक समान विस्तारेछे छतां पण प्रदेशो एकमेकनी साथे नित्य संबंधथी संबंधितछे. तेथी असंख्यात प्रदेशे मयी आत्मा कहेवामां कोइ जातनुं दूषण नथी आवतुं, आत्माना प्रदेशो अरूपीछे, तेथी

अष्टकर्म आत्माना अष्ट गुणोनुं आच्छादन करेछे. अष्टक
नाशथी अष्ट गुणो आविर्भावे थायछे, यद्यपि जो के
बलवानछे तथापि आत्मा ज्ञानयोगे स्वस्वरूपमां रमे तो
णमां कर्मनो नाश करी शकायछे. भगवद्गीतामां पण कह्युंछे

अध्याय चोथो श्लोक ३७ मो.

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्, भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन.
ज्ञानाग्निः सर्व कर्माणि, भस्मसात् कुरुते तथा. ३
नहि ज्ञानेन सदृशं, पवित्र मिह विद्यते,
तत्स्वयं योग संसिद्धः कालेनात्मनि विंदति. ३
अपिचेदसि पापेभ्यः, सर्वेभ्यः पापकृत्तमः
सर्वंज्ञानप्लवेनैव, वृजिनं संतरिष्यसि. ३

भावार्थ–महामेरुना ओळंघनारने वालुका जेम लंघ्यछे, ज
काष्ट समूहने बाळी भस्म करेछे तेम ज्ञानरूप अग्नि सर्व कर्म
बाळी भस्म करेछे आत्मानुं अनेकांतपणे यथातथ्य ज्ञान थाय
कर्मनो नाश थायछे. परम पुरुषार्थ साधन ज्ञान समान कोइ न
अपवित्रने पण ज्ञान पवित्र करेछे, माटे ज्ञान सदृश अन्य कोइ प
नथी, ज्ञानी सर्व पापनो नाश करेछे, हुं आत्मा परमात्मा स्वरू
एम स्वसत्ताने भव्यात्मा ध्यावेछे.

मोटामां मोटुं पाप करनारो तुं होइश तो पण हे अर्जुन तुं ज्ञ
नौकाथी सर्व पाप तरी जाइश एम कृष्ण कहेछे.

शिष्य–आ ठेकाणे तमो केम भगवद् गीतानो दाखलो आपोछो
जैन–जैनधर्म एक देशी नथी पण सर्व देशीछे, जैनोमां जेम ज्ञान
महात्म्य कथ्युंछे, तेम गीतामां पणछे ते जणाववा माटे सा

" दुहा. "

घटपट वस्तु जे दिसे, ते सहु पुद्गल जाण।
ते आतमथी भिन्न छे, शास्त्र वचन प्रमाण. ८४
पुद्गल देशे म्हालतां, मार्यो चेतन जाय;
तेमां ममता मानता, मरी मरी दुःख पाय. ८५
पृथ्वी थइ नहि कोयनी, कोटी करे उपाय;
लक्ष उपायो लखवे, नहि आकाश झलाय. ८६
पुद्गल वस्तु कारमी, घर हाटो ने म्हेल;
सोनुं रूपुं धन सहु, पुद्गलना छे खेल. ८७
दृष्टा पुद्गलनो सदा, सुख दुःखनो जे जाण;
वास वस्यो पुद्गल विषे, आतम गुणनी खाण.८८
पुद्गल जे देखाय छे, तेथी चेतन भिन्न;
कर्त्ता चेतन कर्मनो, परपरिणति रस पीन ८९
आत्माऽसंख्य प्रदेश छे, प्रति प्रदेशे ज्ञान;
अनंत जिनवर भाखियुं, ज्ञति पर्याये जान ९०
विशेष सामान्ये करी, दो भेदे उपयोग;
असंख्यात प्रदेशथी, वर्त्ते निजगुण भोग. ९१
अस्ति धर्म अनंतनो, भोगी आतम राय;
नास्ति धर्म अनंत त्यांय, समय समय वर्ताय. ९२
उज्वल आत्मप्रदेश छे, समता रस भंडार;
तेनो कर्त्ता आतमा, शुद्धनये निर्धार. ९३

वसतां तेह प्रदेशमां, रमतां समता संग;
सुखसागरमां उछळे, हर्षानंद तरंग.
ममता पर परदेशनी, भागी जागी ज्योत; ९४
सहजे आत्म स्वरूपनो, थयो महा उद्योत. ९५
भिन्न जाति पुद्गल तणी, मारी तेथी भिन्न;
भिन्न जातिशुं संग श्यो, तेथी थइयो खिन्न. ९६
संग अनादि कालथी, तेने मानी मित्र;
राग द्वेषना योगथी, प्रहियां देह विचित्र. ९७
दुग्धनीरसंयोगवत्, आतम पुद्गल संग;
थयो अनादि कालथी, करतां कर्म कुढंग. ९८
तेथी अवच्छी परिणते, कर्त्ता कर्म कदाउ;
सवच्छी परिणति योगथी, शुद्ध निरंजन थाउ. ९९
पुद्गल खावुं पहेरवुं, पुद्गल वसति महेल;
वास वसी तेमां मुधा, मानी सुखनी स्हेल. १००
रमुं हवे शुं बाह्यमां, जेनी कूडी चाल;
संगे तेनी माहरे, थवुं पडयुं बेहाल. १०१
मित्र नहि ते माहरो, अवच्छो तास सहाव;
हाय हाय तस संगथी, बनिया एह बनाव. १०२

भावार्थ—आ मत्पक्ष घट पट देहादि वस्तु चक्षुना विषय गोचर थायछे, ते पौद्गलिक वस्तु जाणवी. अने ते आत्म द्रव्यथी भिन्नछे; एम श्री तीर्थंकर महाराजा शास्त्रमां कथेछे.

पृथ्वी आदिक रूपे स्थित उपवन, गिरि, वस्त्रादि, गुजरात, पंजाब, इंग्लांड, युरोप, अमेरिकादि देशोमां मारापणानी बुद्धियी राची माची तल्लीन यनी तेमां म्हालतां चेतन मार्यो जायछे, देश, गृह, धनादिकमां मारापणानी बुद्धि धारतो मृत्यु पामी पुनः पुनः तद्गत वासना योगे जन्म धारण करी आधि व्याधि उपाधिनां दुःखो पामेछे. हे चेतन शुं तृष्णा जाळमां फसायछे ? स्वभावाभावरूप अज्ञानतमः राशिमां विवेक नयन शून्यात्मा अत्र तत्र ऐहिक सुखनी भ्रान्तिए भ्रमण करतो, मनोराज्यनी संकल्प विकल्प श्रेणिए चढयो छतो धूम्र वृन्द ग्रहण पुरुषवत् क्षणिक तुच्छ सर्वदा जड पृथ्वीने पोतानी मानी तदर्थे सहस्रशः जीव घातक बनी शोफापुरुषवत् स्वमहत्वतामां अन्य भव्यात्माओने पर्वतारोहण पुरुष दृष्टिवत् लघु गणी पारमार्थिक तत्त्व शून्यात्मा क्षणिक तुच्छ स्वार्थमां राची परवस्तुमां ममतानो दृढ भाव संकल्पी रात्री दिवस तिलपीलक यंत्र वृषभवत् असदाचरणोमां स्वकाल अज्ञानी पशुवत् निर्गमेछे, पोतानाथी अत्यंत भिन्न पृथ्वी कोइनी थइ नथी, अने थवानी नथी मारी मारी मानवी ए केवल भ्रांतिछे, लक्ष उपायो करतां पण आकाश हाथमां झाली शकातुं नथी. तेम कोटि उपायो करतां पण पृथ्वी देश, घरबार पोतानां थवानां नथी, देश, घरने जीव मूकी परभवमां चाल्यो जायछे, जे घर हाट म्हेल बंधावतां रक्षण करतां चेतने जरा पण शांति लीधी नहीं, ते घर हाट मूकी मरण समये जीव टगमग जोतो जीववानी सहस्रशः आशाओ करतो परभवमां चाल्यो जायछे, साथे कोइ पण वस्तु आवती नथी, ज्यां जे वस्तु हती ते त्यांने त्यां रही, अनंता भव कर्या पण कोइ वस्तु साथे आवी नहीं, तो आ भवमां तुं कइ वस्तु पोतानी साथे लेइ जइश ? हा अलबत कोइ पण वस्तु पोतानी साथे आववार

नथी, पौद्गलिक वस्तु उपर शो राग अने द्वेष करवो ? केटलीक वस्तुओ पलटे छे अने केटलीक वस्तुओ नाश पामे छे, सगां संबंधी वर्गनी प्रीति पण स्वार्थना लीधे क्षणिक छे. खरी वस्तु आत्मा छे, बाह्य पदार्थोमां मारापणानी बुद्धि थाय छे तेनो नाश थइ अंतर आत्मस्वरूपमां मारापणानी बुद्धि थाय तो परमात्मपद पामी शकाय. घर हाट महेल आदि पौद्गलिक वस्तु कारमी छे, सुवर्ण, रूपुं, मोती, हीरा आदि सहु धन जे कहेवाय छे ते कारमुं छे, हे जीव तेमां तुं शुं ममता धारण करे छे ? जेनो संयोग तेनो अवश्य वियोग थवानो छे, पूर्वोक्त पुद्गलनो दृष्टा अने सुख दुःखनो ज्ञाता आत्मा देहरूप पुद्गलमां वस्यो छे, अनंतगुणनो धणी आत्मा छे, पांच प्रकारना शरीरथी आत्मा भिन्न छे, पर परिणतिमां लीन थएलो चेतन व्यवहारथी कर्मनो कर्त्ता जाणवो.

आत्माना असंख्याता प्रदेश छे, प्रत्येक प्रदेशे अनंतु ज्ञान श्री जिनवरे कह्युं छे. आत्मामां अनंत धर्मनी अस्तिता रही छे, तेमज आत्मामां अनंत धर्मनी नास्तिता रही छे, अस्ति अने नास्ति धर्म समये समये आत्मामां वर्ते छे, सघाए संसारी जीवोना प्रदेश निर्मल सिद्ध समान जाणवा अने ते समता रसनो भंडार छे, शुद्धनयथी स्वज्ञानादिक गुणनो कर्त्ता आत्मा जाणवो.

आत्माना असंख्यात प्रदेशमां रमतां असंख्यप्रदेशरूप आत्मा पोते पोताना स्वरूपे स्थिर थतां अने शत्रु मित्रपर समपणुं ते रूप समता साथे रमतां क्षणे क्षणे अनंत अनंतगणुं सुख थाय छे, आत्म स्वरूपनो स्ववीर्यध्याने उद्योत थतां परपरदेशनी ममता नष्ट थइ अने भाव्युं के–पुद्गलनी जाति माराथी भिन्न छे, अने हुं तेथी भिन्न छुं, तो मारे पुद्गल जातिथी शो लाभ ? अने तेनो संग केम करवो जोइए ? अरेरे हुं अनादि कालथी तेनी संगतिथी खिन्न थयो.

वळी पुद्‌गलने शत्रु तरीके छतां मित्र तरीके मानी राग द्वेषना योगे विचित्र देहो ग्रहण कर्या.

हवे आत्मा अने पुद्‌गल स्वरूप कर्मनो परस्पर कोना जेवो संयोग थयो ते कहेछे=क्षीर नीरवद्=दुग्ध अने जळना संयोगनी पेठे.

जे देखायछे ते पुद्‌गलद्रव्य हे चेतन तारुं नथी अने तुं तेनो नथी तेम छतां तुं केम तेमां मारापणानी बुद्धि धारण करेछे, ज्यां सुधी चेतननी अवळी परिणतिछे त्यां सुधी संसार जाणवो, सवळी परिणति थतां कर्मनो क्षय क्षणमां थायछे, अने आत्मा शुद्ध निरंजन परमात्मपद प्राप्ति करेछे.

पुद्‌गलनुं भोजन तरीके तथा पुद्‌गलनुं पाणी तरीके खान पान करवुं, तथा वस्त्र तरीके पहेरवुं, पण पुद्‌गल जाणवुं, स्थान, मासादरूप पुद्‌गलद्रव्य जाणवुं. फोगट आत्माए पुद्‌गलमां वसी सुखनी सहेल भ्रांतिथी मानी.

हवे हुं पुद्‌गल द्रव्यमां केम राची माची रहुं ? तेनी संगतिथी मारी खराब अवस्था थइ, मारा अनंत गुणोनो पुद्‌गलद्रव्य घातकछे, माटे ते मारो मित्र नथी, कारण के मारा करतां तेनो अवळो स्वभावछे, मारो चेतना गुणछे तो तेनो जड गुणछे, अरेरे तेनी संगतिथी आ संसारमां परिभ्रमण करतां विचित्र बनाव बन्या.

" दुहा. "

चार गतिना चोकमां, लख चोराशी बजार;
त्यां बहु जन्म मरण करी, पाम्यां दुःख अपार १०३
पुद्‌गल संगे राग छे, पुद्‌गल संगे रोग;
रुचि अरुचि पुद्‌गले, पुद्‌गलनो छे शोग. १०४

पर पुद्गलनी लालचे, लडाइ करता लोकः
राजन माजन मोटका, जन्म गमावे फोक. १०५
विरोधिनी मित्रता, करतां निज गुण हाणः
अज्ञानी मुदातमा, रणना रोझ समान. १०६
धुंधी पुद्गल एंठनें, रमतो तेनी संग;
विष्टाना कीडापरे, धरतो कर्म कुरंग १०७
भ्रमित थइ भूली गयो, अविचल आत्मस्वरूपः
अशुद्ध परिणतिथी अरे, पडियो भवजल कूप. १०८
चेत चेत ज्ञ आतमा, शुद्ध स्वरूप निहाल;
आ संसार स्वरूप सहु, परगट माया जाल. १०९
अधुना भ्रान्ति छोडीने, देखो अंतर्दृष्टि,
अंतर्दृष्टि देखतां, प्रगटे निजगुण सृष्टि. ११०
तिरो भाव निजऋद्धिनो, आविर्भाव प्रकाश;
परमातम पद ते कह्युं, ते पदनो हुं दास. १११
ते पद जेणे ओळख्युं, तेमां जेनुं ध्यान;
साधुपद तेणे ग्रह्युं, तेनुं शुध्धुं ज्ञान. ११२
तत्पदना उपयोग वण, चाले जे व्यवहार;
घाणी वृषभ तणीपरे, मटे नहीं संसार. ११३
राचो नव रस ज्ञानथी, काव्य करो को लाख;
तत्पदना उपयोग वण, घी रेडो ज्युं राख. ११४

ते मिष्टान्नमां राचे माचेछे तेने पुद्गल ऊंट चुंथनार जाणवो.

पापथी स्त्री भोगववानुं पचखाण कर्युंछे, पण अंतरमां स्त्री भोगववानी लालसा बनी रहीछे तो ते स्त्री भोगवनारज जाणवो. जो एम न मानीये तो घणा दोषो आवे.

प्रश्न–कोइ बहुचराजीनो फातडो (पुरुष पण स्त्रीनो वेष पहेरनार) छे ते स्त्री कायाए करी भोगवतो नथी तो शुं ते ब्रह्मचारी कहेवाय के नहीं ?

उत्तर–जो फातडाना मनमां स्त्री भोगववानी इच्छा बनी रहीछे तो ते व्यभिचारी जाणवो. कारण के रागथी कर्म बंधायछे, ते राग तो मनमां स्त्री उपर बनी रह्योछे माटे ऋजुसूत्र नयना मते व्यभिचारी जाणवो.

प्रश्न–कोइ ठेकाणे एम कयुं छे के–मन जाय तो जाणे दो, मत जाने दो शरीरः विन चढावी कामठी, क्युं लगेगा तीर. १ आ उपरथी सिद्ध थायछे के मन कदापि आडुं अवळुं जाय तो हरकत नथी किंतु शरीर जवा देशो नहीं, कारण के शरीरथी कर्म बंधायछे, माटे शरीरथी ब्रह्मचर्य पाळे तो शुं ब्रह्मचर्य कहेवाय नहीं ?

उत्तर–ए कथननो सार ए छे के मनमां कदापि स्त्री भोगववानी इच्छा थइ पण हे भव्य शरीरथी स्त्री भोगवीश नहीं, कारण के तेथी एक तो कर्मबंध, ताडन तर्जन, निंदा, अवहेलनादि विशेष दोषो प्राप्त थशे, ते जणाववाने माटे अने वळी जाणवुं के–मनयोगनी साथे काययोग भळे तो विशेष कर्मबंध थाय, तेथी एम शिक्षा वाक्य लख्युंछे.

प्रश्न–कोइ माणसे मनमा एम चिंतव्युं के मारे विष खावुं अने अन्य मनुष्ये विष भक्षण कर्युं, ए बे मध्ये कोने वधारे हानि

थाय ? तथा एक मनुष्ये-कायाए करी लाख मनुष्य मार्या अने एक मनुष्ये मनमां चिंतवना करी लाख मनुष्य मार्या तेमां विशेष दोष कोने लागे ?

उत्तर-कायाए करी विष भक्षकने विशेष हानि थाय कारण के ते मनोयोगथी चिंतनपूर्वक विष भक्षण करेछे, अने तेथी ते मृत्यु पामेछे. मनोयोगथी तेटली हानि थती नथी माटे मायः थोडो दोष जाणवो. कायाए लक्ष मनुष्य मारनारनी साथे मनोयोग भळेलोछे, तेथी विशेष दोष लागे तथा फक्त मनमां चिंतवनाथी लक्ष मनुष्य मारनारने तेना करतां थोडो दोष लागे. प्रसन्नचंद्र राजर्षिए मनमां युद्ध करवाथी घणां कर्म उपार्ज्यां तेथी कर्मबंधमां मननी मुख्यता जाणवी, मननायोगे अल्पमहाविकल्प थायछे, मनमां विकल्प संकल्प थाय नहीं तेने माटे ध्याननी अगत्यता छे, घणां कर्म ध्यान करवाथी नष्ट थाय छे. श्री यशोविजयजी उपाध्यायजी कहे छे के

श्लोक

...य गच्छति परं परिपाकं, पाकशासनपदं तृणकल्पं ॥
...मकाशसुखबोधमयं तद्, ध्यानमेव भव नाशि भजध्वं १

भावार्थ—ज्यां ध्याननी परिपक्वता थएछे मुनिराज इन्द्रनी ...ने पण तृण बरोबर माने, गणे, माटे पोताना आत्माना ...नुं प्रकाशक एवा ध्याननी दुःखनी भ्रान्ति टळे छे, अनुभ... भासेछे-ध्यानविना आत्मिकसुखनो अनुभव थतो ..., केवल सुखनुं निधान छे, तथा ध्यानथी आत्मानुं शुद्ध ...मगटे, माटे हे भव्यात्माओ! मुनिवरो! तमारे थाय उपाधिने ...छे तो रागद्वेषमोहादिक अंतर् उपाधिथी भरपूर एवो जे ...

गतिरूप संसार तेनो नाश करनार जे ध्यान तेने सेवो, तेनो आदर करो, तेना उपर राग धरो. अने ध्यानवंत पुरुषोनी संगति करो के जेथी मति श्रुतज्ञाननी स्फूर्ति थाय जे ध्याननुं अवलंबन करतां प्रसन्नचंद्र राजर्षि कर्मग्रंथी छेदी मोक्षे गया ते ध्याननुं अवलंबन करवाथी मनुष्य जन्मनी साफल्यता जाणवी.

श्लोक.

आतुरैरपि जडैरपि साक्षात्, सुत्यजाहि विषयानतुरागः
ध्यानवांस्तु परमद्युनिदर्शी, तृप्तिमाप्य नतमृच्छति भूयः २

भावार्थ–कामातुर अने जड पुरुषोवडे पण कारण पामी पंचेंद्रियना विषयो त्यजायछे. जेमके–कोइने स्त्री भोगवचीछे पण केदखानामांछे, तेथी मुखे विषय त्यागे. कोइ रोगी दवाखावाना प्रसंगे चरी पाळेछे, तेथी शाकादिकनो मुखे त्याग करेछे, पण ते विषयनो कारणीभूत जे राग तेनो नाश थतो नथी. राग दशा त्यागवी दुर्घटछे. किंतु ध्यानवंत पुरुष तो मात्र परमात्म स्वरूपने देखनारछे तेथी ते ध्यानमां तृप्ति मानी पुद्गल वस्तुने न्यारी गणी आत्म स्वरुपमां मग्न थयो छतो अत्यंत आनंद भोगवेछे, तेवी ध्यान दशा पामी फरीथी विषयनुं मूल कारण रागदशाने वांछतो नथी, कारणके ध्यानीने विषयमां थती जे सुखनी भ्रांति ते टळीछे तेथी राग थाय नहीं.

श्लोक.

यानिशा सकलभूतगणानां,
ध्यानिनो दिनमहोत्सव सएषः ।
यत्र जाग्रति च तेऽभिनिविष्टा,
ध्यानिनो भवति तत्र सुषुप्तिः ३

सर्व प्राणीने निद्रामां जे रात्रि जायछे, ते रात्रि ध्यानदशावंत मुनिने दिवसना महोत्सवरूपछे, अहो ध्यानिनी केटली उत्तमता तेनुं शुं अनुपमछे. अने संसारी जीव विषयमां लीन थइ जे वेळाए जागेछे ते वेळा ध्यानवाळा मुनिराजने शयनरूपछे. एमां केटलो भेदछे ते विचारवो.

श्लोक.

ध्यते न हि कषायसमुत्थैर्मानसैर्नततभूपनमद्भिः
त्मनिष्टविषयैरपि दुःखै ध्यानवान् निभृतमात्मनिलीनः १

भावार्थ-ध्यानवान् पुरुष रागद्वेषरूप कषाय जनित मनथी बंधातो नथी. ध्यानीने नृपतिगति आवी नमस्कार करे तोपण तेनुं चित्त होवातुं नथी, अर्थात् तेना मननी स्थिरता पूर्णता जेवी बनी रहेछे. अत्यंत अनिष्ट विषयना दुःखे पण निश्चळपणुं छोडे नहीं तेने आत्मामां लीन जाणवो.

श्लोक.

स्पष्टदृष्टसुखसंभृतमिष्टं, ध्यानमस्तु शिवशर्मगरिष्ठं ।
नास्तिकस्तु निहतो यदिन,स्यादेवमादि नयवाङ्मयदंडात्

भावार्थ-स्पष्टदृष्टसुखे भर्युं एवुं इष्ट ध्यान ते मोक्षना सुख करतां पण अधिकछे, पण ज्यांसुधी शास्त्रना दंड थकी नास्तिक भावने अतिशयपणे हण्यो नथी त्यां सुधी नथी. पण नास्तिक भावे रहित जे ज्ञान ते मोटुंछे.

श्लोक.

ातिध्यात्मनि नोभूयो ज्ञातव्यमवशिष्यते ।
ज्ञानंपुनरेतस्मिन् ज्ञानमन्यन्निरर्थकम् ॥१॥

जेने आत्माने जाण्यो तेने पुनः किंचित् अन्य जाणवानुं रहुं नथी, अने यावत् आत्माने जाण्यो नथी तावत् अन्य सर्व जाण्युं निरर्थक छे.

श्लोक.

नवानामपि तत्त्वानां, ज्ञानमात्मप्रसिद्धये;
येनाजीवादयो भावाः स्वभेदप्रतियोगिनः १

नवतत्त्वनुं ज्ञान पण आत्मज्ञान प्रगट करवाने माटेछे, कारण के अजीवादिक जे भाव ते पण आत्मज्ञानवडे समायछे.

श्लोक.

एक एवाहि तत्रात्मा, स्वभाव समवस्थितः ।
ज्ञानदर्शनचारित्र, लक्षणप्रतिपादितः १
प्रभा नैर्मल्यशक्तीनां, यथा रत्नान्नभिन्नता.
ज्ञानदर्शनचारित्र, लक्षणानां तथात्मनः २
आत्मनो लक्षणानां च, व्यवहारो हि भिन्नता ।
षष्ठयादिव्यपदेशेन, मन्यते न तु निश्चयः ३
घटस्यरूपमित्यत्र, यथा भेदो विकल्पजः ।
आत्मनश्च गुणानां च, तथा भेदो न तात्त्विकः ४

त्यां आत्मा एक पोते स्वस्वभावपणे रयोछे, ते आत्मा ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप लक्षणे करी युक्तछे.

रत्ननी कांति अने निर्मलता शक्ति कंइ रत्न थकी भिन्न नथी तेम ज्ञान, दर्शन, चारित्र लक्षणथी आत्मा भिन्न नथी. आत्मा अने आत्मानुं लक्षण ए बे व्यवहारे जुदाछे ते षष्ठी विभक्तिना व्यवहारथी मनायछे किंतु निश्चयथी नहीं.

जेम घट अने घटनुं रूप तेनो भेद विकल्प मात्रछे ते प्रमा
आत्मा अने आत्माना गुणोनो भेद तात्त्विक नथी.

श्लोक.

वस्तुतस्तु गुणानां तद्रूपं न स्वात्मनः पृथक्
आत्मास्यादन्यथानात्मा, ज्ञानाद्यपि जडं भवेत्॥

भावार्थ-वस्तुतः जोतां गुणोनुं अने आत्मानुं रूप जुदुं नथी यदि भिन्न कथीए तो आत्मा ते अनात्मा थाय ज्ञानादिक पण जड थाय.

श्लोक.

मन्यते व्यवहारस्तु, भूतग्रामादिभेदतः ।
जन्मादेश्च व्यवस्थातो, मिथो नानात्वमात्मनां· १
न चैतन्निश्चये युक्तं, भूतग्रामो यतोऽखिलः
नामकर्मप्रकृतिजः स्वभावोनात्मनः पुनः २

जन्मावस्था बाल, युवान, वृद्ध, स्त्री, पुरुष, नपुंसक आदि भेदथी आत्माओनुं विचित्रपणुं व्यवहारनयवाळो मानेछे, पण ए वात निश्चयनये जोतां युक्त नथी अर्थात् सत्य नथी, ते नय एम कहे छे के-जीवने सर्व अवस्था नामकर्मना स्वभावथी प्रगटेछे पण ते आत्मानो स्वभाव नथी.

श्लोक.

जन्मादिकोपिनियतः परिणामो हि कर्मणां;
न च कर्मकृतो भेदः स्यादात्मन्यविकारिणि १

निश्चयनयथी जोतां जन्म जरा मरणादिक परिणाम ते आत्मानो नथी पण ते कर्मनो परिणामछे माटे अविकारी आत्माने विषे कर्मनो वास्तविक संबंध नथी.

श्लोक.

यथा तैमिरकश्चंद्र, मप्येकं मन्यते द्विधा;
अनिश्चयकृतोन्माद स्तथात्मानमनेकधा २

भावार्थ–जेम तिमिर रोग वाळो एक चंद्रने बे तरीके मानेछे तेम निश्चयनयना ज्ञान विनानो उन्मादक प्राणी आत्माने अनेक प्रकारे मानेछे.

श्लोक.

व्यवहारविमूढस्तु, हेतूंतानेव मन्यते ।
बाह्यक्रियारतस्वान्त स्तत्वं गूढं न पश्यति १

भावार्थ–व्यवहारनयमां रक्त विमूढात्मा परपर्यायने पोताना फलहेतु मानेछे माटे जेनुं मन बाह्य क्रियामां रक्तछे तेवा प्राणी गुप्त तत्वने देखी शकता नथी.

श्लोक.

अज्ञानी तपसा जन्म, कोटिभिः कर्मयन्नयेत् ।
अन्तं ज्ञानतपो युक्तं, तत्क्षणेनैव संहरेत् ॥

ज्ञानविना एककोटि भवसुधी अज्ञानी जेटलां तप करे ते तपमां जेटला कर्मनो क्षय न थाय तेटला कर्मोने एक क्षणमां ज्ञान तपश्चर्याए खपावे.

श्लोक.

तद्ध्यानं सा स्तुतिर्भक्तिः सैवोक्ता परमात्मनः ।
पुण्यपाप विहीनस्य, यद्रूपस्यानुचिंतनं ॥

शरीररूपलावण्य, वप्रछत्रध्वजादिभिः ।
वर्णितैर्वीतरागस्य, वास्तवीनोपवर्णना ॥

पुण्यपापरहित परमात्माना स्वरूपनुं चिंतवन करवुं तेने ध्यान कहेवुं अने स्तुति तथा भक्ति पण तेज जाणवी.

पण शरीरना वर्ण लावण्य-वप्र, छत्र ध्वजाओथी परमात्माओने करी परमात्माने वखाणवा एवी जे स्तुति ते वस्तुतः वास्तविक स्तुति नथी.

श्लोक.

व्यवहार स्तुतिः सेयं वीतरागात्मवर्तिनां ।
ज्ञानादीनां गुणानां तु, वर्णना निश्चयस्तुतिः ॥
पुरादिवर्णनात् राज, स्तुतिः स्यादुपचारतः ।
तत्त्वतः शौर्यगांभीर्य धैर्यादि गुणवर्णनात् ॥

श्री तीर्थंकरना शरीरादिकनुं वर्णन करवुं एवी जे स्तुति ते व्यवहारे जाणवी. अर्थात् ते व्यवहार स्तुति जाणवी. पण वीतराग परमात्माना ज्ञानादिक गुण प्रशंसवा अने ते गुणो पोताना आत्मामां सत्ताए रह्या छे एम जाणी तेनुं ध्यान करवुं. तेज खरी स्तुति छे परमात्म स्वरूप हुं छुं. एम सतत दृढ निश्चयथी चिंतववुं ते निश्चय स्तुति जाणवी.

जेम देश नगरादिकना वर्णनथी राजने वखाणेलो ते उपचारे स्तुति जाणवी अने राजानुं शत्रु गांभीर्य धैर्यादिक गुणोनुं वर्णन ते निश्चय स्तुति जाणवी.

श्लोक.

पुण्य पाप विनिर्मुक्तं तत्त्वतस्त्वविकल्पकं ।
नित्यं ब्रह्म सदा ध्येयमेषा शुद्धनयस्थितिः ॥

क्षमा खड्गं करे यस्य, दुर्जनः किं करिष्यति;
अतृणे पतितो वन्हिः स्वयमेवोपशाम्यति ८

क्षमा एज भव्यात्माओनो नाथ जाणवो, माता पिता मित्र समान पण क्षमा जाणवी. क्षमा एज मोटी शोभाछे. क्षमा एज कीर्त्ति जाणवी. कारण के जेनामां क्षमा नथी अने क्रोधे करी धमधमायमान सदा रहेछे. तेनी कीर्त्ति जगमां थती नथी. क्षमाथी कीर्त्ति उत्पन्न थायछे. क्षमा तेज सत्य जाणवुं. क्रोधीमां सत्य क्यांथी होय. क्षमा एज मोटी पवित्रताछे. क्षमा विना स्नान पण लेखे नथी. दान पण लेखे नथी. क्षमा रहीत साधु होय तो ते नामनो साधु जाणवो, ज्यां क्षमा नथी त्यां गंभीरता रहेती नथी. क्षमा एज मोटुं तेजछे, सुखकारक आनंदमदा पण क्षमाछे, जे क्रोधी होय ते आनंद क्यांथी पामे ? क्रोधीना अनेक वैरियो दुनीयामां होयछे तेथी क्रोधीने निरांते उंघ पण आवती नथी. वळी क्रोधी मनुष्यनो कोइ मित्र पण होतो नथी. कारण के ज्यां त्यां क्रोधथीतेना उपर अप्रीति जनकी दृष्टि थया करेछे, क्षमा कल्याणकारीछे, जे मनुष्यमां क्षमा नथी ते पोताना तथा परना आत्मानो घातक बनेछे. क्षमा मोटी पूजाछे. कर्मरूप रोगथी रहीत थवा माटे क्षमा पथ्यछे. क्षमा एज मोटुं हितछे. क्षमा ए मोटुं दानछे. जेनामां क्षमाछे ते पोताना आत्माने ज्ञान दर्शन चारित्र गुणोनुं दान आपेछे. क्षमा तुल्य अन्य कोइ तप नथी. दृढप्रहारि क्षमारूप तपथी आत्मसिद्धिनी सिद्धि करी. श्री वीरभगवाने क्षमावडे अनेक उपसर्गो सहन कर्या, श्री मेतार्यमुनिए क्षमाथी आत्महित साध्युं. श्री स्कंधकसूरिना शिष्योने घाणीमां घाणी पील्या पण तेमने क्षमाथी कर्म शत्रुनो पराजय करी. आत्मिक लक्ष्मी प्राप्त करी. गजसुकुमाल केवळीए साधु अवस्थामां स्मशान करी घोर उपसर्ग सहन कर्या. क्षमाधारक अनेक मुनिवरोए

रवो जोइए. अदेखाइ रूप नागण हृदयमां पेसतां आत्माना गुणो हणायछे. परना गुणो सांभळी तथा परजीवनी कीर्त्ति सांभळी प्राणी विचारे छे के–हाय, हाय ते माराथी वधारे वखणायछे लोकोमां तेने वधारे मान मळेछे, एनी जो भूल काइं वा एना उपर कंइ कलंक चडे तो ठीक थाय एम पाप विचार करी लोकोनी आगल निंदा करे. खोटां कलंको चडाववां. ए सर्व अदेखाइनुं फलछे. नागण कदापि कोइने करडे तो तारी पण अदेखाइरूप नागिणी जे प्राणीने डसेछे तेनुं आ भवमां तथा परभवमां पण खराब थायछे, अदेखाइ ज्यां सुधी हृदयमांछे त्यां सुधी आत्मज्ञान थतुं नथी. वकील वकीलनी साथे अदेखाइ, साधु साधुनी साथे अदेखाइ, वेपारी वेपारीनी अदेखाइ, शोक शोकने अदेखाइ प्रायः रहेवानो संभवछे, माटे आत्मार्थी प्राणी मनमां विचारे के–सर्व प्राणी, पोतानां कर्मयोगे शाता वा अशाता भोगवेछे. कोइनी कीर्त्ति थाय तेमां मारे शा कारणथी अदेखाइ करवी ? जेवां कर्म ते प्रमाणे यश वा अपयश थया करेछे, तेमां मारे शुं ? यश वा अपयश, मान वा अपमान ए कंइ आत्मिक वस्तु नथी हुं आत्मा तेनाथी भिन्नछुं, हुं कर्मयोगे कोइ वखत राजी थयो ते वखत याचकोए कीर्त्ति गाइ, पण तेमांनुं आजे कंइ नथी. वळी कोइ भवमां अपमान पण घणां थयां हशे पण तेमांनुं हाल कंइ नथी. जे पोतानी वस्तु नथी तेमां अहंभाव संकल्पी केम रति अरति करवी जोइए, कह्युंछे के–

कबहिक काजी कबहिक पाजी. कबहिक हुआ अपभ्राजी,
कबहिक जगमें कीर्त्ति गाजी, सब पुद्गलकी बाजी. आप स्व० ?

धवलशेठ श्रीश्रीपालनी अदेखाइथी अंते मरण पाम्या अने दुर्गतिमां गया. धवलशेठे अदेखाइथी शुं शुं कृत्य कर्युं नथी, दुनीयामां अदेखाइ करनारनी पडती थया विना रहेती नथी. अदेखा-

समग्र विद्या वैदुष्येऽ, धिगतासु कलासुत्र ।
धन्यानामुपजायेत । वालकानामिवार्जवं ॥३॥
अज्ञानामपि वालानां, आर्जवं प्रीतिहेतवे ।
किं पुनः सर्व शास्त्रार्थ परिनिष्ठित चेतसां. ॥४॥
श्रुताब्धि पारमाप्तोपि । गौतमो गणभृद्वरः ।
अहो शक इवाश्रोपीत् आर्जवाद्भगवद्गिरः ॥५॥
अशेषमपि दुःकर्म ऋज्वा लोचनया क्षिपेत् ।
कुटिलालोचनां कुर्वन् अल्पीयोपि विवर्धयेत् ॥६॥
काये वचसि चित्तेत्र समंतात् कुटिलात्मनां ।
न मोक्षः किं तु मोक्षः स्यात् सर्वत्रा कुटिलात्मनां ७
तपः क्रिया ज्ञान विचक्षणा अपि ।
कौटिल्यमेकं न परित्यजंतः ॥
दुर्योनि दुःखानि लभंति ते नराः ।
सार्ध्वी यथा वीरमतीति नाम्नी. ॥ ८ ॥

भरे आ जगतमां जे सरेसरा गुणोथी मानुजनोछे ते कप-टना त्याग करी सरलताने धारण करेछे, आ भव अने परभव संबंधी इच्छित कार्योनी सिद्धि सरलताथी पामेछे. अने सरलतायी रिवायनां धर्मनो अधिकारी पण निश्चयथी मनायछे. जेमो ति-यथी, दुर्ध. लिगे सरोसरो, मार्गोसरक आदि पापारंभ करता बंधक मानता. इन्द्रने देनार (इन्द्रदत्त) पण मानतुं. सरलता सद्गुणुं स्थान आत्माने शिखावछे.

भागी थशे. भावधर्मनी प्राप्ति कोइ विरला जीवोने थायछे. द्रव्य धर्म तो कपटी पण आदरेछे, आत्मज्ञानी समकिती जीवने भावधर्मनी प्राप्ति थायछे, सारांश के मायानो त्याग करशे ते परमात्मपद पामवाने योग्य थशे. श्रीयशोविजयजी उपाध्याय कहेछे के-

श्लोक.

दंभेन व्रतमास्थाय; यो वांछति परंपदं ।
लोहनावं समारुह्य, सोऽब्धेः पारंयियासति ॥१॥
केश लोचधरा शय्या, भिक्षा ब्रह्मव्रतादिकं ।
दंभेन दुष्यते सर्वं, त्रासेनैव महामणिः ॥२॥
सुत्यजं रस लांपट्यं, सुत्यजं देह भूषणं ।
सुत्यजाः कामभोगाद्या, दुस्त्यजं दंभसेवनम् ३
स्वदोष निन्हवो लोक, पूजास्यात् गौरवं तथा ।
इयतैव कदर्थ्यंते, दंभेन व्रत बालिशाः ४
अहो मोहस्य माहात्म्यं, दीक्षा भागवतीमपि ।
दंभेन यद् विलुंपंति, कज्जलेनेव रूपकं ५
आत्मोत्कर्षात् ततोदंभात्, परेषां चापवादतः ।
बध्नाति कठिनं कर्म, बाधकं योग जन्मनः ६

कपटवृत्तिथी पंचमहाव्रत ग्रही जे जीवो परमपदने वांछे छे, ते जीवो लोहनी नावमां बेसी समुद्रनो पार पामता इच्छता होय तेम जाणवा.

केशनुं लुंचन करवुं साधुने सहेल छे, सूर्यसामी दृष्टि राखी आतापना लेवी सहेलछे, पृथ्वीने विषे शयन करवुं, लज्जानो

करे ते श्रावकनी आगळ एवुं बोलेके ते भद्रिक महामुनि तेमने जाणे पण पोतानामां कंइ होय नहीं.

श्री चिदानंदजी महाराज कहेछे के-

कथनी कथे सहु कोइ, रहेणी अति दुर्लभ होइ;
जब रहेणीका घर पावे, तब कहेणी लेखे आवे. १

निष्कपटी अने कपटी साधुओनी परीक्षा करवी दुर्घटछे, महा बुद्धिना धणी एवा अभयकुमार सरखा कपटी वेश्या श्राविकानुं कपट जाणी शक्या नहीं, तो बाळजीवोनुं शुं कहेवुं ? जेने मान पूजा कीर्तिनी चाहना नथी एवा पुरुषोने धन्यछे, विरला गुरु पुरुष हंसनी पेठे कपटी अने निष्कपटी साधुओनी परीक्षा करी देखे, कपटी एम धारेछे के हुं अत्यंत होशियार छुं पण कपटथी तेना आत्माने कर्म लेपाय पोताने वश करेछे ते जाणी शकतो नथी. आखी दुनीयामां कपटजाळ मोह राजाए पाथर्युंछे तेमां मनुष्यादिक सर्व प्राणीओ शिकारी अजगरना अज्ञाने सपडायछे. अने विविध दुःख पामेछे. जेने परिपूर्ण निज आत्मानुं ज्ञान थायछे ते कपटजाळने छेदी नाखेछे, निष्कपटी पुरुषोनी वाणीमां फेरफार होतो नथी. निष्कपटी मनुष्य जेवुं होय तेवुं कहेछे. कपटीनी [illegible]. पोताना दोषने ढांकनार लोक पोतानुं गौरव मान पूजा जेम थाय तेम ढंगथी आचरण करेछे, अरे केटली अज्ञानता ! जेवो अंत स्याम करणीछे तेवानो मुखनुं ए बाह्यवर्तनतुं जणायछे. सत्य पचना सामार्थ्यदृष्टि विना तो कपट जाळनुं कंइ कारण नथी. एम विचार थाय. गुरुमहाराजने पण कपटी शिष्यो विश्वास आपतो नथी. ज्यारे गुरुमहाराजनी पासे जे कोइ सत्य कपटथी पूजा कंइ तो ते तुरत जाणी लेछे. अने तेथी पुण्यहीन मनोरथ सत्य लीन थायछे, कपटी एवुं जाणीने कपट

करेछे के, हुं युक्ति रचुं छुं, हुं कला करुंछुं, हुं बोलुंछुं, ते अन्य कोइ जाणतुं नथी. पण याद राख के प्रथम तो कपटने जाणनार तारा शरीरमां रहेलो तारो आत्माछे. बीजुं सिद्ध भगवंत ज्ञाने करी तारुं कपट जाणी रह्याछे, कोनाथी छानुं तारुं कपटछे. हे मूर्ख जीव! तुं चार महीना चांदरणानी पेठे आ दुनीयामां थोडो काल रही परभवमां चाल्यो जनारछे, तारा शरीरनी राख थइ जशे. हाडकांना पूरेपूरा थइ जशे. करेलां कर्म परभवमां भोगववां पडशे. तुं तारी मेळे विचार तो तारा आत्मा न्यायाधीशनी पेठे न्याय करी आपशे. कपट विनानी तारी केटली जींदगी गइ? तेनो विचार कर—तारुं कपट कदापि तुं अत्र छानुं राखीश पण परभवमां केम छूटीश? राजा, राणा, शेठ, गरीब आदि सर्व कपट करशे तो ते तेनुं फल भोगवशे. पोताना आत्माने सुबुद्धि-थी प्रश्न करो के हे आत्मा तने कपट शिखवे? त्यारे आत्मा तर-फथी विचार थशे के कपट करवुं ते महापापछे.

अरे मोहराजानुं माहात्म्य तो जुओ के मल्ली श्री तीर्थंक-रोए भागवती दीक्षाने पण काजळे करी चित्रामणनो जेम लोप थाय तेम कपटे करी लोपी नाखेछे.

पोताना आत्मानी वडाइ करे. पणुं कपट धरे अने पारका अवर्णवाद बोले तेथी प्राणी कठीन कर्म बांधेछे, तेवा पुरुषो योगी-ना जन्मने बाध करनाराछे. ते शुद्ध चारित्र पामी शके नहीं. श्री यशोविजयजी उपाध्यायजी "माया" विषे कहे छे के—

नममास उपवासीया सुणो संताजी।
शीत लीए कृश अन्न गुणवंताजी॥
गर्भ अनंता पामशे सुणो संताजी।

आरभ्यते पूरयितुं, लोभगर्तो यथा यथा ।
तथा तथा महच्चित्रं, मुहुरेषो विवर्धते १३
लोभस्त्यक्तो यदि तदा, तपोभिरफलैरलं
लोभस्त्यक्तोनचेत्तर्हि, तपोभिरफलैरलं १४
लोभमूलानि पापानि, रसमूलानि व्याधयः
स्नेहमूलानि दुःखानि, त्रीणित्यक्त्वा सुखीभव. १५

सर्व दोषनुं स्थान लोभछे, गुणनो ग्रास करवाने लोभ राक्षस समान छे. व्यसनरुप वल्ली कंदभूत लोभ जाणवो. एम सर्वार्थनो बाधक लोभ जाणवो. निर्धन सो रुपीयाने इच्छे, अने सो रुपीया मळे हजारनी इच्छा, अने हजारनो अधिपति थये लाखनी इच्छा थाय. लक्षमळे क्रोडनी इच्छा थाय कोटीश्वर नृप रुद्धि चाहे, राजा चक्रवर्तिनी पदवी इच्छे अने चक्रवर्ती देवतानी ऋद्धि चाहे छे. देवताने इंद्रनी पदवानो लोभ रहे छे. एम मूलमां लघु अने अंते वृद्धिने पामनार लोभ शरावनी पेठे जाणवो.

पापनुं मूळ हिंसा अने कर्मनुं मूळ जेम मिथ्यात्व, अने रोगोने विषे जेम राजरोग (क्षयरोग) सर्व रोगनुं मूळछे. तेम लोभ सर्व पापनो गुरु छे. अहो लोभनुं साम्राज्यतो जुओ. पृथ्वीने विषे एक छत्र लोभनुं राज्यछे, वृक्षो पण निधानने पामी मूळीए करी संताडेछे.

द्रव्यना लोभमां द्वीन्द्रियादि जीवो पण सपडायाछे पूर्व भवना निधान उपर मूर्च्छावडे अधिरोहण करे छे.

सर्प, उंदर, गिरोली प्रमुख पण धनना लोभमां पूर्व भवनी मूर्छाना योगे फसायछे. अने निधानना उपर वास करेछे.

भूत प्रेत पिशाच यक्षादिक पण धनना अधिष्ठाता तरीके रहे छे, अहो लोभनी केवी सत्ताके देवताओ सरखा पण धनादिकनी मूर्छाए नीच योनिमां अवतरेछे. मोटा मोटा मुनिवरो के जे उपशा-

न्मोए गुणठाणे क्रोधादिकने हीनी पडयाछे तो पण तेमने लोभ पडी देइ पाडी नाखेछे.

लोभथी राजाओ ठाकोरो विगेरे गामनी सीमोनी तकरारमां हरसाल क्लेश करी वैर धारण करी लडी मरेछे, जुओ मन्दास हर्ष्मीया अने जापान देश लोभना कारण माटे मोटी मोटी हान लडाइओ करी अने तेमां लाखो जीवोनो संहार थयो.

लोभरूपी खाडाने पूरवा माटे जेम जेम प्रयत्न करीये छीए तेम तेम वृद्धि पामेछे. अहो केवुं आश्चर्य ?

लोभ त्याग्यो तो तपवडे पण शुं ? अर्थात् लोभना नाशथी तप तपवानी कंइ जरुर नथी अने कदापि जो लोभ हृदयमां छे तो तपश्चर्यावडे करीने शुं ? अर्थात् कंइ नहीं. लोभ मूळ भूत पाप कृत्य जाणवां, रसमूळ भूत व्याधियो जाणवी. स्नेह मूल दुःखो जाणवां, एटले स्नेहथी सब दुःखो उत्पन्न थायछे, माटे हे प्राणी ए त्रण वस्तुओनो त्याग करी तुं सुखी था.

लोभथी कपट थाय लोभथी जीवहिंसा थाय, लोभथी असत्य वचन बोलवुं पडे, लोभथी चोरी करवानुं मन थाय. लोभथी कृत्य अकृत्यनुं भान रहे नहीं. लोभथी लज्जा दूर रहे, लोभथी धर्मनाश पामे, लोभथी विवेकनो नाश थायछे. लोभी पुरुषने सुखे निंद्रा पण आवती नथी, लोभी पुरुष गरज वखते गधेडाने पण बाप कहेछे. लोभी पुरुष सदा पारकुं खराब चाहेछे, लोभी पुरुष मातापिताने पण छेतरेछे, लोभी पुरुष साधु पुरुषनुं पण अपमान करेछे, मम्मण शेठ जेवा लोभी पुरुषो परभवमां पण सुख पामी शकता नथी, आ दुनीयामां लोभी पुरुष शुं शुं कृत्य करी शकता नथी. लोभी पुरुष धनने माटे अन्यनो घात करेछे तेनुं मरण इच्छेछे, जुओ लोभ वशे धवळ शेठ श्री श्रीपाळ राजाने मारवा माटे गया, पण खोदे ते पडे

तेनी पेठे पोते मरण पाम्या अरे दुर्गतिमां गया. लोभथकी सागर शेठ समुद्रमां बूडी मरण पाम्या. लोभथी पुत्र पोताना पिताने राज्यने माटे घात करेछे, करावेछे, वांछे, लोभी पुरुषनी पासे लाखो रुपैया होय तो पण सुखे उंघी सकता नथी, लोभी पुरुष पापकर्मथी जरा मात्र पण डरतो नथी. साधुओने वस्त्र पात्र शिष्यादिकनो लोभ होय छे. ज्ञानी पासे तेमांनुं कंइ नथी. ज्ञानी वस्त्र पात्रादिक राखे छे छतां ते उपर मोह राखतो नथी. ज्ञानी मनमां एम विचारे छे के हुं कइ वस्तुनो लोभ करुं. जे वस्तुनो लोभ थाय छे ते वस्तुक्षणीकछे अने मारी नथी, राज्य धन, कुटुंब, पुत्र, पुत्रीओ, घर, हाट, वस्त्र, विगेरे वस्तुओ आत्मानी नथी अने आत्मानी साथे आवनार पण नथी. फक्त अज्ञानताए जीव परवस्तुने पोतानी मानी तेना लोभमां विचित्र दुःखो पामेछे. मरी गया बाद सर्व वस्तुओ ज्यां हशे त्यांनी त्यां रेहेशे. माटे अरे जीव जरातो विचार!! पृथ्वी, घर, हाट, राज्य, लक्ष्मी मूकी घणा मनुष्यो चाल्या गया तेम तुं पण एक दिवस सर्व मूकीने चाल्यो जवानो, जे कायामां सारुं सारुं मिष्टान्न तुं भरेछे, जे कायामां तुं वस्योछे, जे कायावडे तुं हाली चाली शकेछे, जे कायाने तुं न्हवरावे धोवरावेछे ते काया पण अंते तारी थवानी नथी. तो तुं लोभ शा माटे करेछे? घूमाडाना बाचक भरवा जेम नकामाछे ते परवस्तुने पोतानी मानी लोभ करवो ते पण खोटोछे. खारु जल पीवाथी जेम तृप्ति थती नथी तेम लोभ करवाथी शान्ति सुख मळतां नथी. माटे अमृत समान संतोष गुणनुं हे जीव तुं सेवन कर के जेथी शान्ति सुख मळे.



संतोष स्वरूप.

श्लोक—रत्नाकर ग्रंथे.

यथा नृणां चक्रवर्ती, सुराणां पाक शासनः
तथा गुणानां सर्वेषां, संतोषः परमोगुणः १
संतोषयुक्तस्य यतेः स्संतुष्टस्य चक्रिणः
तुल्यासंमितोमन्ये प्रकर्षः सुख दुःखयोः २
किमिंद्रियाणां दमनैः किं कायपरपीडनैः
ननु संतोष मात्रेण मुक्तिस्त्रीसुखमीक्षते ३
यत् संतोषवतां सौख्यं, तृणसंस्तारशायिनां ।
न्नतत् संतोषवंध्यानां तुलिकाशायिनामपि ४

जेम मनुष्योमां चक्रवर्ती देवताओमां जेम इंद्र, तेम सर्व गुणोमां संतोष मोटामां मोटो गुणछे. संतोष युक्त यतिना जेटलुं इंद्र चंद्र नागेंद्रने पन सुख होतुं नथी. इंद्रियोना दमन करवावडे करीशुं, कायाने पाडवावडे शुं ? संतोष मात्रवडे मुक्तिथी सुखनुं निरीक्षन थायछे. तृनना संथारा उपर शयन करनार एवा संतोष वान्य मुनिवरोने जे सुखछे ते सुख संतोष वंध्य तुलिकामां शयन करनार धन पुरुषोने होतुं नथी. संतोषी नर सदा सुखी जाणवो. असंतोषि पुरुषने संतोषी एवा भिक्षुक जेटलुं पन सुख होतु नथी. संतोषीने चिंता होती नथी. संतोष कल्पवृक्ष समानछे. संतोष अनहद आनंददायकछे. संतोषी पारकानो उपकार करवा समर्थछे. असंतोषी प्राणि परभवमां पन सुख पामतो नथी. संतोषी मोटो धनवान् जाणवो. संतोषमां जे सुखछे ते सुख अन्यत्र नथी. आ-

त्मज्ञान थया विना तात्त्विक संतोष थतो नथी माटे आत्मज्ञान क-रतां सर्व दोषो नाश पामशे. चक्रवर्ती सरखा मोटा राजाओ पण लक्ष्मीनो त्याग करी सुखी थया.

आत्मार्थी भव्योए पारकी निंदानो त्याग करवो, कारण के निंदक चंडालछे. निंदक मोटो पापीछे. नाम देइने निंदा करे तो अधम जाणवो. परमां भूल होय पण तेना पूठे निंदा करवाथी कंइ फायदो थतो नथी. पापमां शक्तिवाळा पुरुषोने निंदा करवानो स्वभावछे. गंगाजलमां स्नान करनार होय, अडसठ तीर्थनी यात्रा करे किंतु जो ते निंदक छे तो ते अपवित्र अने दुष्ट जाणवो, बहा-दूर पुरुषो निंदा करता नथी. निंदक कागडाना करतां पण भूंडोछे. अदेखाइथी निंदा उत्पन्न थायछे अने निंदाथी क्लेश उत्पन्न थायछे अने ते सामा पुरुषना जाणवामां आवे तो परस्पर वैर बंधायछे, निंदक आभवमां तथा परभवमां पण दुःख पामेछे, निंदा करवाथी मित्रनी मित्राइ पण तूटेछे.

जो तमे गुणी थवाने चाहताहो के मनुष्यनी धोळी बाजू तरफ दृष्टियो. पण काळी बाजु तरफ दृष्टि यो नहीं, हालना वखतमां कोइ सर्व गुणी नथी, कोइ पुरुषनी कोइ निंदा करे तो तेने मनमां एम विचारवुं के भले ए निंदे. हुं जो सारो मनुष्य छुं तो तेनी निंदाथी मारे शुं ? निंदकना उपर मारे केम क्रोध करवो जोइए ? सामा मनुष्यनुं हित इच्छवुं होय तो तेना गुण गावा. कोइ निंदक निंदा करे तो उलटुं निंदकनामां जे गुण होय ते आपणे वखा-णवो पण खराब लागणीथी सामु तेनुं बुरुं करवा प्रयत्न करवो नहीं. कोइ आपणा उपर दुष्टता करे तो पण आपणे तेनी तरफ शुभ भावना राखवी, तेनु सारुं करवा शुभ संकल्प करवो एम क-रवाथी सामो पुरुष अंते दुष्टतानो त्याग करशे आ नियमनो अनु-

भव करवाथी ग्लानी थशे.

आत्मज्ञानीओ कोइनी पण निंदा करता नथी तेओ तो आत्म स्वरूपमां तल्लीन रहेछे. परना तरफ दृष्टि देता नथी अने कदापि उपकारने माटे परतरफ दृष्टिछे तो पण आत्महितथी अन्य प्रवृत्ति करता नथी.

कोइ विरला जगत्मां आत्म तत्त्वनी शोधमां स्वकाल निर्गमन करेछे, अने कोइ विरला परमात्मपदने पामेछे, सत्य तरफ प्रायः दुनीया प्रवृत्ति करती नथी पण असत्य तरफ करेछे ते उपर एक दृष्टांत मुसल्मानी धर्ममां प्रगट थयुं छे ते एवी रीते के कोइ एक महान् पादशाहना वखतमां एक फकीरे प्रश्न कर्यो के–रे पादशाह आ सब खल्क बुरे रस्तेपर क्युं चल रही है ? त्यारे एना उत्तरमां पादशाहे फकीरने विज्ञप्ति करी कयुं के–आपकुं मेरा मुकाममें दो वर्षतक रहेना चाहिए. जब आपका सवालका जवाब में देनेकु शक्तिमान होउंगा—आ उपरथी फकीर बावा रह्यां रह्या के तुरत पादशाहे पोताना राज्यमांना तमाम अमीर उमरावोने बोलावी हुकम आप्यो के–अमारा खजानामांथी तमाम लक्ष्मी खर्ची एक महा मोटो बाग बनाववो जोइए ने ते बागमां तमाम सृष्टिनी सर्व वस्तुओ प्रगट करीदेवी. बाद तमाम जगत्मांनी सर्व प्रजाने ते बाग जोवा बोलाववी, ने तेमनो तमाम खर्च तेमनी जग्यापर पहोंचाड्या सुधीनो आपणे करवो जोइए. आवा प्रकारनो हुकम मळ्तां सर्व कचेरी मंडळे तावडतोब आग्या पृथ्वीमां रहेला तमाम कारीगरोने बोलाव्या ने तेमना कला प्रमाणे असंख्य जातनां साधनो पुरां पाडवा लाग्या. जे उपरथी थोडा कोसनी वचमां जमीन पहाड समुद्र नाना प्रकारनां तमाम दुनीयामां रहेलां पशुपंखीओ तथा प्रकारप्रकार

वनस्पति, मेवानां झाड, विचित्र प्रकारनां अमूल्य वस्त्र रत्न इत्यादि भातभातनां पक्वान्न, बागमां फरवाना मनोहर लताना मंडपोवाळा रस्ता, ठेकाणे ठेकाणे सुंदर वेश्याओ नाटक करे तेम गोठवण थइ, स्थळे स्थळे विचित्र प्रकारनां नाटको. तेमज खेलाडुओनी गोठवण थइ, साकरीयां पाणी, गुलाबजल लोकोना उपभोगने माटे तैयार क-राव्यां. अनेक तरेहना जानवरोना तमासानी रमतनी गोठवण थइ. बाग जोनाराने वेसवाने माटे अनेक खुरशीओ आदिनी सगवड थइ. बागमां सुंदर सरोवरो हवा खावाने माटे बंधाव्यां अने ते सरोवरनी आसपास चारे तरफ लीमडा ववराव्या. घटा करावी, ठेकाणे ठेकाणे पाणीना फुंवारा मूकी दीधा, विषेश शुं ? अपरं-पार तेनी शोभा बाह्य जगत्नी वस्तुओथी बनावी दीधी, अने रा-जवर्गे पादशाहने खबर आपी. पादशाहे जगत्मां एवी जाहेरात् खबर आपी के–मारा बसो कोशना बागना मध्यभागमां एक महे-ल में रचावेलो छे, ते महेलमां अमुक दिवसे बपोरना त्रण वागे हुं एक कलाक संताइ रहीश, तेवामां जे पुरुष मने शोधी काढशे तेने हुं मारी तमाम पादशाही आपी देइश. एवी रीतनी जाहेर खबर दुनीयामां फेलावी दीधी. ठरावेला दिवसे तमाम लोको वा-दशाही बाग जोवा आव्या. तमाम प्रजा बाग जोवा मशगुल थइ कोइ फुलनां झाडो जोवा लाग्या. कोइ वाघसिंहादि पशु-ओने जोवा लाग्या, केटलाक शोखीन तळावनी शोभा जोवा लाग्या अने ठंडो पवन खावा लाग्या, नाटक जोवाना रसीया ना-टक जोवामां लीन थया. मेवाना रसीया मेवा खावा लाग्या. कोइ पुरुषे बीजा पुरुषने कह्युं के–भाइ चालो आपणे बादशाहने शोधी काढीए, त्यारे सामा पुरुषे जवाब आप्यो के–तुं तो घेलो थयो छे, शुं राजा ते महेलमां संताय ? एने एनुं राज्य व्हालुं छे.

माटे आपणे सौ वेश्याओनो नाच जोवामां आनंद मानीशुं-कोइ व्याकरण शास्त्रना विद्वाने नैयायिकने कयुं-हे नैयायिक तुं बादशाह महेलमां संताणो छे ते वातने खरी वात माने छे के खोटी त्यारे नैयायिके कयुं के-बादशाह वाक्यं प्रमाणं वा अप्रमाणं वा. तस्य वाक्यं सत्यं वा असत्यं वा. एतत् कार्यस्य किं प्रयोजनं, इदं पूर्वं न भूतं, कदापि बादशाह गांडो थयो हशे, कदापि महेलमां तेने शोधवा जतां बादशाह मारी नांखे तथा वळी एक एवी शंका थाय छे के-बादशाह महेलमां छे तेमां शुं प्रमाण ? प्रत्यक्ष प्रमाण प्रत्यक्ष विरुद्ध छे. अनुमान प्रमाणमां कोइ हेतु अव्यभिचारी सिद्ध थतो नथी, उपमान प्रमाण पण सादृश्यना अभावथी बाधितछे. आगम प्रमाणनी पण अत्र सिद्धि थती नथी. माटे अमो तो बादशाहने शोधवानुं बंध राखी आ प्रत्यक्ष देखाती वस्तुओ जोवामां आनंद मानीशुं, त्यारे व्याकरणशास्त्रवेत्ताए कयुं सत्यं सत्यं भवतां कथनं पादशाह वाक्यं प्रमाणीभूतं मया न ज्ञायते-कोइ सगां संबंधीनी वातो करवा लाग्या, बागनी मनोहरतानी एवी खुबी हती के पगले पगले विचित्र जोवानुं मळे, खावानुं मळे, केटलाक तो इस तरे मूढ गया, केटलाकएक बीजाने वस्तुओ ओळखावबा लाग्या, केटलाक रंडीया खर्चां डींकीरो करावी तमासा जोवा लाग्या, केटलाक एम विचारवा लाग्या के बादशाह बुद्धिमान छे, तेनी ओळी माया नथी ते एवो संताणो हशे के आपणा हाथम आववो मुश्केलछे, माटे आपणा करता होइए ते करो. केटलाक एथितववा लाग्या के ज्यारे आ बागमां पण एवी भूलवणी चुकवणं छे के आपणे भूला पडीपडीये तो बादशाहना महेलमां तो घ भूलवणी चुकवणी हशे के जेथी शोधवाने बदले आपणे भूला ' डीए तो अतोभ्रष्ट ततोभ्रष्ट थइए. केटलाक सुंदर परीओ देखी ते

मोह पाम्या. केटलाक रागरागणीना तानमां गुलतान थया. केटलाक व्यापार करवा लाग्या, केटलाक विषयनी वातो करवा लाग्या केटलाक एम चिंतववा लाग्या के आ बागमां सदा रहेवानुं थाय तो ठीक. एम सर्वजन बागनी मोहमायामां फसाया. कोइए बादशाहने शोधी कहाडवानो प्रयत्न कर्यो नहीं, एवामां एक डाह्यो पुरुष हतो तेणे विचार्युं के-खरेखर आ जगत्नी तमाम प्रजा गांडीने मूर्ख छे, केमके ते जोवामां मशगुल थइ पडी पण तेमनामां एटली समजण नथी के प्रथम बाग जोवाना करतां बादशाहने शोधी कहाडवो जोइए बादशाहने शोधी काढे तो आ सर्व बाग तथा बादशाही तेने मळे, माटे आपणे तो प्रथम बादशाहने शोधी काढवो जोइए एम निश्चय करी आ पुरुषे महेल तरफ प्रयाण कर्युं. कोइ वस्तु तरफ दृष्टि दीधी नहीं, अंते महेलमां गयो, बादशाहने शोधी काढ्यो, के तुरत बादशाहे एक हजार तोप फोडावी मान साथे पोतानी बादशाही तेने हवाले करीने तुरत पेश फकीर थावाने पादशाहे कह्युं के-फकीर साहेब देखो. ऐसी दुनीया दिवानीकी रीति है के सब खल्क जुठा बाग देखनेमें मशगुल हुइ, लेकीन कीसीका ध्यान मेरी शोध तरफ नहीं आया. सारांश के एवी रीते आ दुनीयाना जीवो असत्य मोहमायाथी जगत्मां फसायाछे. मोहमायानो त्याग करी जिनाज्ञा सत्य मानी पोतानी कायारूपी महेलमां अनंत शक्तिमान् अनंत सुखभोक्ता एवा आत्मारूपी बादशाह रहेलोछे तेने शोधवा ध्यान लगाडे तो जीव पोते परमात्मा बनी त्रण जगतनो स्वामी थाय. संसाररूप बागमां सर्व जगत् मोहमायाथी फसायुंछे, कोइ विरला प्राणी आत्मज्ञानने माटे सद्गुरुनुं सेवन करेछे, जेम मृगजळना पाणीथी तृषा शान्त थती नथी तेम संसारनी मोहमायाथी आत्माने शान्ति मळती नथी, संसारनी सर्व खटपटने त्यागी आत्मस्वरूप प्राप्त करवुं. एज

स्वादमां मागे छे. पुनः पुनः मनुष्यभव मळवानो नथी, तथी वचन पाळो भावनार नथी सद्गुरुनां वचन हृदयमां ठस्यां नथी एम मानेछे, जो ठस्यां होत तो संसारना पदार्थोमां मन जाय नहीं. हे चेतन तुं हलकां खाटां खारां भोजन जमवानी इच्छा करेछे पुनः स्त्रीविषयाभिलाषे तुं करेछे पण समजतो नथी के-स्त्रीना उपर मोह पामवानुं शुं कारण ? स्त्रीनुं शरीर सात धातुथी भरेलुं छे, जेनी कायामांथी मलमूत्र शीर बहार करेछे. एना शरीरमां जरा पण पवित्रता देखाती नथी. परसेवो. मेल, मस्तकना केशमां जू विगेरे मलीन देखावछे माटे हवे तुं वैराग्य धारी ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर.

ब्रह्मचर्य स्वरूप

श्लोकः

वन्हिस्तस्य जलायते जलनिधिः कुल्यायते तत्क्षणात्,
मेरुःस्वल्प शिलायते मृगरिपुः सद्यः कुरंगायते;
व्यालो माल्य गुणायते विपरसः पीयूष वर्षायते,
यस्यांगेऽखिल लोक वल्लभतमं शीलं समुन्मीलति. १
ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक् संयमो,
ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः,
अक्रोधस्तपसः क्षमा प्रभवितुः धर्मस्य निर्व्याजता,
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणं. २

तथा गाथा

शीलं कुल आहरणं, शीलं रूवं च उत्तमं जयइ;
शीलं चिय पंडिचं, शीलं चिय निरुवमं धम्मं. १

मोह करे शुं जीवडा, समज समज तुं चित्त. ५
भोग रोग सममानतो, स्वप्ने पण नहीं आश;
अनित्य आ संसारमां, क्यांथी तेनो वास. ६
दुर्लभ आत्मस्वरूपनी, वातो करवी सहेल;
किंतु आत्म स्वरूपनी, प्राप्तिछे मुस्केल. ७

निंदा, आलस्य, असत्यादि दूषणो निवारी निःसंगी थइ आत्म तत्त्वनी खोज करनार आत्मतत्त्व पामी शकेछे. आत्मतत्त्वनी वातो करवी सहेलछे पण आत्म तत्त्वनी प्राप्ति थवी मुश्केलछे. कोइ विरला प्राणी आत्मा उपर रुचि करेछे.

आ चेतन अज्ञानयोगे भ्रमित थइ कदापि चलित थइ गयो छे. एवुं आत्म स्वरुप भूली गयो तेथी परवस्तुमां मोह पाम्यो, अशुद्ध परिणत्तिथी औदारिक, वैक्रिय आहारक, तेजस, कार्मणादि शरीरो धारण करी तेना योगे ताडन तर्जन छेदन भेदनादिक दुःखो लह्यां, हवे जो तने सुखनी आशा थइ होय तो हे आत्मन् वेर वेर समय चाल्या जायछे मनना मनोरथ मनमां रहेशे, सद्गुरु संगे तुं आत्म स्वरूप समज अने तेना ध्यानमां रहेतां आश्रवनुं दूरी करण थशे. अने अंतर् तत्त्वोपयोगे संवरनी प्राप्ति थशे तारुं स्वरूप हुं छुं एटले तारो मोक्ष थशे.

श्री देवचंद्रजी पण कहेछे के-

"दुहा."

तत्त्वते आत्म स्वरूपछे, शुद्ध धर्म पण तेह;
परभावानुग चेतना, कर्म गेहछे एह. १
[illegible] भज निज भाव विशुद्ध;

आत्म भावथी एकता, परमानंद प्रसिद्ध· २
स्याद्वाद गुण परिणमन, रमता समता संग;
साधे सुद्धानंदता, निर्विकल्प रसरंग· ३
मोक्ष साधनतणुं मूळ जे, सम्यग्दर्शन ज्ञान;
वस्तु धर्म अवबोध विणुं, तुस खंडण समान· ४
आत्मबोध विणुं जे क्रिया, तेतो बालक चाल;
तत्वार्थनी वृत्तिमं, लेजो वचन सभाल· ५

इत्यादिथी पण आत्मज्ञाननी खास जरूरछे, आ जगत्मां राग द्वेषव्यापी गयोछे ने आत्माना अज्ञानने लीधे जाणवो. आ शरीरमां रहेला आत्माना सरखा अन्य शरीरोमां पण रहेला आत्माओछे एम जो जाणवामां श्रद्धा पूर्वक आवे तो कोइ दुःख कोइ जीवने आपे नहीं, अने कोइ जीवना उपर कोइ जीव वैर राखे नहीं. आत्मज्ञानी सर्व जीवने सिद्धसमान गणे तो पछी कया जीवनी साथे ते विरोध करे ? अलबत्त कोइ जीवनी साथे ते विरोध करे नहीं, ए वातनो अनुभव करवाथी मालम पडशे, आत्मिक शुद्धानंद पण त्यारे अनुभवमां आवशे. राग द्वेषथी जेनुं मलीन छे तेने सुख मळतुं नथी. जगत्मां तात्विक सुखना भोक्ता आत्मज्ञानी मुनिवरोछे. तेमने शी नथी. पण समता रूपश्री भावथी जाणवी. राजाओ शेठीयाओ, वकीलो, दाक्तरो, ज्यारे ताप आदिना निवारण माटे छत्री धारण करेछे तो तेना बदले आत्मज्ञानी मुनिवरो समारूप छत्रीने धारण करेछे. समारूप छत्रीथी क्रोधरूप ताप लागतो नथी, अने अदेखाइरूप उष्ण पवन तो जरा मात्र लागतो नथी. वळी मोहरूप मेघनी दृष्टिथी पडेलुं तृष्णारूप पाणी तेने समा छत्रीथी शीतो ब

कायछे, अन्य राजाओ पादशाहो ज्यारे एक देश वे देशना मालिक होयछे त्यारे मुनिराज तेना करतां पण अधिक पोताना आत्माना असंख्यात प्रदेशना मालीक होयछे. ज्यारे अन्य राजाओ धणी लक्ष्मी भेगी करेछे. त्यारे मुनिराज आत्मानी ज्ञान दर्शन चारित्र लक्ष्मी भेगी करेछे. तफावत एटलो के राजानी लक्ष्मी खोटी, क्षणिक छे अने मुनिनी लक्ष्मी सत्य अने अचल अखूटछे, राजा पादशाहने मनवचन कायाए करी संतोष रहेतो नथी. त्यारे मुनिने मनवचन कायाए करी संतोष रहेछे. राजा ज्यारे नृपादिक शत्रुओनी साथे युद्ध करेछे, त्यारे मुनीश्वर रागद्वेषरूप शत्रुओनी साथे युद्ध करेछे, राजाओ ज्यारे बागमां क्रीडा करेछे त्यारे मुनीश्वरो धर्मध्यानरूप बागमां क्रीडा करेछे–धर्मध्यानरूप बाग केवो छे ते कहेछे–धर्मध्यानरूप बागनी चारे तरफ उदासीनतारूप वाड करेली छे. ज्ञानरूप कूपधर्म ध्यानरूप बागमां शोभी रहेलोछे. संवेगादिक वनस्पति त्यां खीली रहीछे. त्यां मुनिराज स्थिर चित्तरूप आसन उपर बेसी विचरेछे. ते बागनी शोभा अनहदछे. तेनी सुगंधीथी अनेक जातना रोगो नाश पामेछे. ए बागनी अंदर क्षुद्र प्राणीओ प्रवेश करी शकतां नथी. जेनी योग्यता होय ते त्यां जइ शकेछे. जगतनी मोह मायामां फसाएला प्राणीओने ते बागनुं सुख थतुं नथी, वळी ए बागमां एक चारित्ररूप महेल शोभी रह्योछे. तेनी अंदर जन्म जरा मरणनां दुःख नाशक अनेक औषधो रह्यांछे तेनो मुनीश्वर उपयोग करी शकेछे. अने ते औषधोनुं भक्षण करी अजरामरपद पामेछे. वळी ते बागमां रहेला ज्ञानकूपमांथी मुनिश्वर जलपान करेछे. ज्यां परोपाधिरूप तापतो आवी शकतो नथी. वळी ते बागनी असंख्यात प्रदेशरूप जमीन स्वच्छ निर्मलछे. मुनीश्वरनी साथे शुद्ध चेतना रहेछे. वळी ते मुनीश्वर आत्मा अने परमात्मानी ऐक्यतारूप भांगने कायारूप ख-

सर्वां यूंरी मनरूप प्यालाथी पीवेछे. तेथी शुद्ध चेतनारूप नीशो मुनीश्वर महाराजने एवो चढे छे के ते वखते अगम निगम दर्शाय छे. अने ते मदथी शरीर अने शरीरीनुं पण भान रहेतुं नथी अने ते वखते अनहद आनंद थायछे. आवा मुनिराजने सुख थायछे ते अनंत छे. श्री यशोविजयजी उपाध्याय अध्यात्मसारमां कहेछे के—

श्लोक.

कान्ताधर सधा स्वादात्, यूनां यज्जायते सुखं । १
बिंदुः पार्श्वे तदध्यात्म शास्त्रस्वादसुखोदधेः
अध्यात्मशास्त्र संभूत-संतोष सुख शालिनः २
गणयंति न राजानं नश्रीदंनापि वासवम्.

भावार्थ—स्त्रीना अधर रूप अमृतना स्वादथी युवान पुरुषोने जे सुख थायछे तेतो भ्रमना मात्र छे, तात्विक सुख नथी. ते सुख तो अध्यात्म शास्त्रना स्वादथी उत्पन्न थयेलुं दरिया समान सुख तेनी आगळ बिंदु समान छे. अध्यात्म शास्त्रथी उत्पन्न थयेलुं संतोष रूप सुखना भोक्ता जे प्राणी छे ते प्राणी राजाने तथा धनदने तथा इंद्र सरखाने पण लेखामां गणता नथी.

श्लोक.

रसो भोगावधिः कामे, सदभक्ष्ये भोजनावधिः
अध्यात्म शास्त्र सेवाया रसो निरवधि पुनः १

कामने विषे भोगववां सुधी रसछे, मिष्ट भोजनने विषे जमवाना वखत पर्यन्त मधुररसछे. पण अध्यात्म शास्त्रनी सेवानो जे रस छे तो निरवधि छे. कारण के अध्यात्मशास्त्रनो रस प्रारंभ कालथी मांडीने प्रतिदिन वृद्धि पामेछे. ते रस कोइ वखत घटतो

नथी, ज्यारे आत्मानंदी मुनिराजने अत्यंत सुख थायछे त्यारे सिद्ध भगवंतोने अनंत सुख छे तेमां शुं कहेवुं ? अनुभवथी सुखनी प्रतीति थायछे. वळी मुनीश्वर उपर कहेला एवा बागमां सदाकाल वास करेछे, तेमने कोइ जातनी स्पृहा नथी आवा मुनींद्रना बागनी तोळे राजा वा शाहुकारोना बाग आवी शकता नथी. राजाने तो मनुष्य सेवेछे किंतु मुनीश्वरने सुर असुर इंद्रादिक पण सेवेछे. राजाने परशत्रु थकी भय रहेछे. किंतु मुनीश्वरने जय होतो नथी. राजानी पासे अनेक सुभटो होयछे त्यारे मुनीश्वर रूपी राजानी पासे क्षमा, वैराग्य, ज्ञान, दर्शन चारित्रादि अनेक सुभटो होयछे. राजानी लक्ष्मी जन्मांतरमां साथे आवती नथी. पण मुनींद्रनी लक्ष्मी तो परभवमां साथे आवेछे अने मोक्षमां पण साथे रहेछे, राजा पोताना देशमां पूजायछे, अने मुनींद्र तो ज्यां विचरे त्यां पूजायछे. राजा वैभव छतां दुखी थायछे, अने आत्मज्ञानी मुनीश्वर तो वैभव विना पण अंतर् वैभवथी सुखी रहेछे, राजाने पोताना राज्यथी संतोष रहेतो नथी. अने मुनींद्रने तो सदा संतोष छे. राजाने आ भवमां तथा परभवमां क्लेश सहन करवो पडेछे, अने मुनीश्वरने आ भव तथा परभवमां सुखनी प्राप्ति थायछे, राजा संसारमां प्रवृत्ति करेछे. त्यारे मुनीश्वर प्रवृत्तिनो त्याग करेछे, राजा हाथी उपर बेसी बखतरथी शोभा पामतो तीक्ष्ण भालाने धारण करेछे त्यारे मुनीश्वर संवेग रूप हाथी उपर बेठा थका ब्रह्मचर्यरूप बखतरथी शोभा पामता ध्यानरूप तीक्ष्ण भालाथी रागद्वेष रूप शत्रुनो शिरच्छेद करेछे, मुनीश्वरने तो कोइ शत्रु नथी. किंतु व्यवहारथी शत्रुनी कल्पना जाणवी. पोते पोताना आत्म स्वभावमां रमेछे एटले स्वतः राग द्वेषनो क्षय थायछे, राजाने जरापण शांति मळती नथी, अने मुनीश्वरतो सदा शान्तिमां रहेछे. राजा ज्यारे बाह्यवस्तु उपर ममता

राखेछे त्यारे मुनीश्वर अंतर्थी उपर समता राखेछे. क्यां मेरु अने क्यां सरसवनो दाणो, क्यां सागर अने क्यां तळाव. क्यां रात्रि अने क्यां दिवस एटलो तफावत आत्मज्ञानी मुनीश्वर अने राजा बच्चे जाणवो. दुनियामां आत्मज्ञानी मुनिसमान अन्य कोइ सुखी नथी, शेठ, वकील, बारीष्टरादि लोको तत्त्वथी विचारतां सत्य सुख भोगवता नथी. सत्य सुखनी प्राप्ति तो आत्मज्ञानीने थायछे. अंतर्दृष्टिना अभावे बाह्यदृष्टिजीवो सत्य सुखनो अनुभव करी शकता नथी. आत्मज्ञानी मुनि सदा निर्भय रहेछे, अहो ते जीवता जीवन्मुक्तनी दशाने अनुभवेछे. आत्मज्ञान विना खंडनमंडननी विद्वत्ताथी आत्महित थतुं नथी. दुनीया ज्यारे परपरिणतिमां म्हालेछे त्यारे मुनीश्वर स्वपरिणतिमां म्हालेछे.

आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति

आ वाक्यनो अनुभव पण आत्मज्ञानी मुनीश्वर करी शकेछे. शुष्कज्ञानी जीवो वाक्चातुर्यथी आत्मज्ञानीनो डोळ भले घणो बतावो पण तेना अनुभवथी थतुं सुख ते पामी शकता नथी. आत्माना केवल ज्ञानादिगुणोनी प्राप्ति आत्मार्थीने थायछे.

संसारी जीवने ज्ञान दर्शन चारित्रादिक ऋद्धि सर्व तिरोभावे छे. ते तिरोभाव ऋद्धिनो आविर्भाव थाय, तेज आत्मानुं परमात्म पद जाणवुं. ते परमात्मनो हुं दास एटले उपासक छुं ते परमात्मपद जेणे ओळख्युं अने परमात्मपदमां जेनुं एकाग्र चित्तथी ध्यान वर्तेछे. तेने साधुपद प्राप्त थयुं एम जाणवुं. अने शुद्धज्ञान पण ते पाम्यो एम जाणवुं. नाम. स्थापना, द्रव्य, भाव ए चार निक्षेपे साधु जाणवा.

कोइनुं साधु एवुं नाम ते नाम साधु, स्थापना फकीर ते स्थापना साधु तथा जे पंचमहाव्रत पाळे क्रियानुष्ठान करे शुद्ध आहार ग्रहण करे पण ज्ञान ध्यानथी जेवो उपयोग जोइए तेवो उपयोग न

होय ते द्रव्य साधु जाणवा. जे भाव संवरपणे मोक्षनो साधक थई भाव साधुनी करणी करे ते भाव निक्षेपे साधु जाणवा.

कोइ जीवनो ज्ञान एहवो नाम ते नामज्ञान तथा जे पुस्तकमां अक्षररूपे लख्युंछे ते स्थापना ज्ञान, अने उपयोग विना सिद्धान्तनो भणवो अथवा अन्यमतिनां सर्व शास्त्र भणवां तथा शरीरादिक ते सर्व द्रव्यज्ञान. अने नवतत्त्वनो नय निक्षेपाए जाणवां अने आत्मतत्त्व आदरवुं ते भावज्ञान जाणवुं. ए आगमसारमां कह्युंछे. शुद्ध ज्ञाननी प्राप्ति पंचमकाळमां कोइक महा पुरुषने थायछे. ज्ञानना पंच प्रकारछे. १ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मनःपर्यवज्ञान. देवर्द्धि वाचक कहेछे के-पाठ. से किंतं मइनाणं दुविहं मइनाणं पन्नत्तं तंजहा सुयनिस्सियं च असुयनिस्सियं च सेकिंतं असुयनिस्सियं असुयनिस्सियं चउविह पन्नत्तं तंजहा उप्पत्तिया वेणइया कम्मिया परिणामिया बुद्धि चउव्विहा पन्नत्ता.

भावार्थ-मतिज्ञान बे प्रकारेछे. श्रुतनिश्रित मतिज्ञान, बीजुं अश्रुतनिश्रित मतिज्ञान. प्रायशः श्रुतज्ञानना अभ्यास विना सहज क्षयोपशमवशे जे उत्पन्न थाय तेने अश्रुतनिश्रित कहे छे ते चार प्रकारनुंछे. उत्पादिकी बुद्धि, वैनयिकी बुद्धि, पारिणामिकी बुद्धि तथा कर्मजा बुद्धि.

पोतानी मेळे उत्पन्न थाय ते औत्पातिकी बुद्धि अने गुरुनो विनय शुश्रूषा सेवा करतां आवे ते वैनयिकी बुद्धि, कर्म करतां उपजे जे ते कार्मिकी बुद्धि अने परिणामते दीर्घकालवुं पूर्वापर अर्थनुं अवलोकन करतां उपजे ते पारिणामिकी बुद्धि.

पूर्वश्रुत परिकर्मित मतिना उत्पादकालने विषे शास्त्रार्थ पर्यालोचन करतांज जे उत्पन्न थाय तेने श्रुतनिश्रित मतिज्ञान कहेछे. तेना

चार प्रकारछे. अवग्रह, ईहा, अपाय अने धारणा तेमां अवग्रह बे भेदेछे. व्यंजनावग्रह, अर्थावग्रह. किंचित् एटले आ शुंछे ? एवो (अव्यक्त) अवगट ज्ञानरूप अर्थावग्रह थायछे. तेनी पूर्वे अत्यंत अव्यक्ततर (अति छानुं जे ज्ञान) होयछे तेने व्यंजनावग्रह कहेछे. वंजणवग्गहचउहा=एटले व्यंजनावग्रह चार प्रकारेछे. ते नीचे मुजब-मणनयण विणिंदिय चउहा=मन तथा नयन ए बे विना बाकीनी चार ४ इंद्रियोने आश्रयी चार भेदछे. श्री नंदीसूत्र पाठ. से किं तं वंजणुग्गहे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा, सोइंदिय वंजणुग्गहे घाणिंदिय वंजणुग्गहे, रसेंदिय वंजणुग्गहे, फासिंदिय वंजणुग्गहे= श्रोत्र, घ्राण, जिव्हा, स्पर्शेन्द्रिय व्यंजनावग्रह जाणवो. मन तथा नयन ए बे इंद्रियो अप्राप्यकारीछे. चक्षुरिन्द्रिय छे ते विषयदेश प्रति जाइने देखती नथी, तेम प्राप्त अर्थनुं अवलंबन करती नथी, तेम मननुं पण जाणवुं.

आ कंइपणछे ? एवुं अनिर्धारित सामान्यरूप अव्यक्तपणे अर्थनुं जे ग्रहण तेने अर्थावग्रह कहेछे, ते पांच इंद्रियो अने मने करी छ प्रकारनोछे. श्रोत्रेंद्रियार्थावग्रह, चक्षुरिंद्रियार्थावग्रह, घ्राणेंद्रियार्थावग्रह, रसनेंद्रियार्थावग्रह, स्पर्शनेंद्रियार्थावग्रह तथा मानसार्थावग्रह. अवग्रहगृहीत वस्तुने विषे जे धर्मनी गवेषणा करवी एटले आ स्थाणुछे ? अथवा पुरुषछे ? तेमां पण हाल संध्याकालछे अने महा अरण्यछे, वळी सूर्य पण आथम्योछे, माटे पुरुष नथी. इत्यादि व्यतिरेक धर्मनुं निराकरण करवुं. अने एने पक्षीओ भजेछे. वळ-मांथी बांकुछे, अने कोटर सहितछे. इत्यादिक अन्वय धर्मनो अंगीकार करवो, एवुं जे ज्ञान विशेष तेने ईहा कहेछे. ए पण पंच इंद्रियो अने मने करी छ प्रकारेछे. तथा ईहित वस्तुने विषे आ निश्चये करी स्थाणुजछे, एवो एक कोटिनो निश्चयरूप जे बोध तेने

अपाय कहेछे. स्थाणुरेवायं इत्यात्मकरूपो अपायः तथा निः
वस्तुने विषे अविच्युतिपणे अथवा स्मृतिपणे अथवा वासना
ने धारण करवुं तेने धारणा कहे छे. ते पण पंचइंद्रियो अने
करी छ प्रकारे छे. एम छने चारे गुणतां चोवीस भेद अने व्यं
नाग्रहना चार मेळवतां २८ अठ्ठावीश भेद मतिज्ञानना जाणवा
चार भेद अश्रुत निश्रितना मेळवतां बत्रीस भेद थाय छे. तथा ज
स्मरण पण अतीत कालना संज्ञी पंचेंद्रियना संख्याता
देखे. मतिज्ञाननोज ते भेद जाणवो. श्री आचारांग सू
टीकामां जातिस्मरण ज्ञानने धारणानो भेद कह्यो छे-
जातिस्मरणं त्वाभिनिवोधिक ज्ञान विशेषमिति. कोइ
सभामां घणा पुरुषो बेठाछे ते वखते शंख, तथा भेरी, रणशिं
आदि वार्जीत्र वागवा लाग्यांश्रोताजनोए सर्व वार्जित्रनो शब्द
काले सांभळ्या छतां सर्वनी क्षयोपशमनी विचित्रताथी ओ
न्यूनादिक सांभळवामां आवेछे जेमके कोइने ते शंख भेरी
वार्जीत्रनो शब्द भिन्न भिन्न सांभळवामां आवेछे तेना जाणवामां
एम आवे के अमुक भेरीओ आटला शंख वागेछे एम जणाय
तेने बहु कहेछे. १ कोइने मात्र वार्जीत्र वागेछे एम जणाय
तेने अबहु जाणवो. २ तथा ते शब्दमां पण कोइ
कने मधुर, मंदत्वादि बहुपर्यायोपेते जे शंखादिक ध्वनि पृथक् पृथक्
घणा प्रकारे सांभळवामां आवेछे तेने बहुविध कहीए. ३
कोइने एक बे पर्यायोपेत ते ध्वनि सांभळवामां आवेछे ते अबहु-
विध जाणवो. ४ कोइकने तुरत ते नाद सांभळवामां आवे
छे ते क्षिप्र जाणवो. ५ कोइक विचारी विचारी घणी वार
पाछळथी जाणे ते अक्षिप्र जाणवो. ६ ध्वजारूप लिंगेकरी जेम
देवकुल ओळखायछे तेम लिंग सहित जाणे तेने निश्रित कहेछे. ७

कोइ उक्त प्रकारे लिंगरहीत जाणे तेने अनिश्चित कहेछे. ८
कोइने संसयरहीत संभळायछे तेने असंदिग्ध कहेछे. ९
कोइने संसयसहीत संभळायछे तेने संदिग्ध कहेछे. १०

कोइके एक वेळा सांभळी ग्रहण करी लीधेलुं ते सदा सर्वदा स्मरण रहे पण वीसरे नहीं तेने ध्रुव कहेछे ११. अने कोइक एकवार ग्रहण करेलुं सर्वदा स्मरणमां रहे नहीं तेने अध्रुव कहेछे. १२. एवी रीते बार भेदे ज्ञान थायछे तेने पूर्वोक्त अट्ठावीश भेदोथी गुणतां प्रगटेने छत्रीश भेद मतिज्ञानना थाय. तथा तेमां अध्रुव निश्रितना चार भेद मेळवीए तो त्रणसेने चाळीस भेद मतिज्ञानना थायछे. अर्थावग्रह एक समय प्रमाणछे. इहा अने अपाय अंतर्मुहूर्त प्रमाणछे. धारणा संख्यात असंख्याता काळ सुधीछे अथवा द्रव्यक्षेत्र काळभावथी मतिज्ञान चार प्रकारनुंछे.

मतिज्ञानी आदेशथी सर्व द्रव्य जाणे पण देखे नहीं.
क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्र लोकालोक जाणे पण देखे नहीं.
काळथकी आदेशे सर्व काळ जाणे पण देखे नहीं.
भावथकी आदेशे सर्व भाव जाणे पण देखे नहीं.

श्रुतज्ञान स्वरूप

श्रुतज्ञान चौद तथा वीश प्रकारनुंछे चौद भेद कहेछे—

गाथा.

अक्खर सन्नी सम्मं, साईयं खलु सपज्जवसियं च ।
गमियं अंग पविठं, सतविए ए सपडिवक्खा १

भावार्थ–अक्षरश्रुत, अनक्षरश्रुत, संज्ञीश्रुत, असंज्ञीश्रुत, सम्यक्श्रुत, असम्यग्श्रुत, आदिश्रुत, अनादिश्रुत, पर्यवसितश्रुत, अपर्यवसितश्रुत, गमिकश्रुत, अगमिकश्रुत, अंगप्रविष्टश्रुत, तथा अंगबाह्यश्रुत, ए चौद भेद जाणवा.

१ अक्षरश्रुत–अक्षरश्रुतना त्रण भेदछे संज्ञाक्षर, व्यंजनाक्षर तथा लब्ध्यक्षर. तेमां प्रथम संज्ञाक्षर–अढार प्रकारनी लीपी, तथाहि–हंसलिवी, भूयलिवी जरूखातह रख्खसीय बोधवा। उड्डी जवणी तुरुकी फीरी दवडीय सिंधविया १ माल विणी नडिनागरि लाडलिवी पारसीय बोधव्वा। तह अनमित्तियलिवी चाणकी मूलदेवीय. २ बीजो व्यंजनाक्षर प्रकार ते अकारथी हकारपर्यंत बावन अक्षर मुखे उच्चारवारुप जाणवो ए बन्ने प्रकार यद्यपि अज्ञानात्मकछे तथापि श्रुतना कारण होवाथीं उपचारे करी ए बे प्रकारने श्रुतज्ञाननी संज्ञा आपीछे.

३ शब्द श्रवण तथा रुप दर्शनादिक थकी अर्थ परिज्ञान गर्भित जे अक्षरनी उपलब्धि रुप लब्ध्यक्षर श्रुत जाणवुं, करपल्लवी आदिके जेथी अक्षर संरुपानुं ज्ञान थायछे तेनो समावेश लब्धि अक्षर श्रुतज्ञानमां जाणवो.

२ अनक्षरश्रुत–शिरकंपन, हस्तचालन प्रमुख तथा समस्याए करी गमनागमनादिक मनना अभिप्रायनुं जे परिज्ञान तेने जाणवुं. यथा कोइ मनुष्य कोइ मनुष्यने पृच्छा करे के भाइ बाहेर जावुं छे के ? तेनो प्रत्युत्तर मुखथी नहीं देतां मस्तक हलावीने अथवा हाथवती शान करीने पोतानी नामरजी जणाववी. पूछनारने तेना मनना अभिप्रायनुं परिज्ञान (जाणपणुं) थाय तेने अनक्षरश्रुत कहेछे.

३ त्रीजुं संज्ञीश्रुत-संज्ञा त्रण प्रकारनीछे १ दीर्घकालिकी, २ हेतुवादोपदेशिकी, तथा दृष्टिवादोपदेशिकी.

केम करवुं ? हवे केम थशे ? इत्यादिके करी अतीत तथा अनागत घणा कालनी घणा काल पर्यंत विचारणा करवी ते दीर्घकालिकी संज्ञा जाणवी. तात्कालिक इष्ट अनिष्ट वस्तु जाणीने प्रवृत्ति निवृत्ति करवी ते हेतुवादोपदेशिकी संज्ञा. क्षयोपशम ज्ञाने सम्यग् दृष्टिपणुं होय ते दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा जाणवी. विकलेंद्रिय असंज्ञीने हेतुवादोपदेशिकी संज्ञाछे. संज्ञी पंचेंद्रियने दीर्घकालिकी संज्ञाछे. कारण के ते विचार चिंतवना करी शकेछे, समकिती जीवने दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा जाणवी. मन तथा इंद्रियोथी उत्पन्न थयेलुं जे ज्ञान तेने संज्ञीश्रुत कहेछे.

४ मन विना मात्र इंद्रियोए करी थयेलुं ज्ञान ते असंज्ञीनुं श्रुत जाणवुं.

५ पक्षपात विना कोइ विषयना स्वरूपने जे यथार्थ जाणवुं तेने सम्यक्श्रुत कहेछे, अर्हन् प्रणीत आगमने सत्य मानवुं पक्षपात विना ते.

६ यथावस्थित बोधना अभावथी मिथ्यादृष्टिए अर्हत्प्रणीत अथवा मिथ्यादृष्टि प्रणीत वाक्यादिकनुं जाणवुं एटले पक्षपात प्रमुख बुद्धिए करी कोइ विषयना स्वरूपने यथार्थ न जाणवुं तेने असम्यक्श्रुत कहेछे.

८ श्रुतज्ञान सादि पर्यवसितछे. तेमज अनादि अपर्यवसित पणछे.

१० द्रव्यथी एक पुरुष आश्री लइए तो सादि सपर्यवसितछे, अने घणा पुरुषो आश्री लइए तो अनादि अपर्यवसित पणछे. क्षेत्रथकी भरत तथा ऐरवतने विषे ज्यारे तीर्थंकरनो तीर्थ

वर्तेछे त्यारे द्वादशांगी रूप श्रुत होयछे, अने ते तीर्थनो विच्छेद थवाथी ते श्रुतनो पण विच्छेद थायछे. तेथी ते सादि सपर्यवसित जाणवुं. महाविदेहमां तीर्थनो विच्छेद श्रुतनो पण विच्छेद थतो नथी तेथी त्यां अनादि अपर्यवसितश्रुत जाणवुं. कालथी उत्सर्पिणि तथा अवसर्पिणीमां चोथे तथा पांचमे आरे श्रुतज्ञान होय अने छठ्ठे आरे विच्छेद थायछे तेथी सादि सपर्यवसित जाणवुं. महाविदेह क्षेत्रमां एवुं कालचक्र नहीं होवाने लीधे त्यां श्रुतज्ञान पण अनादि अपर्यवसित जाणवुं.

भावथी–भव्यसिद्धिआ जीवने ज्यारे सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे त्यारे आदि अने केवलज्ञाननी प्राप्ति थायछे त्यारे अंत होवाथी सादि सपर्यवसित श्रुतज्ञान जाणवुं.

११ अग्यारमुं गमिकश्रुत ते ज्यां सूत्रना सरखा आलावा आवे ते जाणवुं. दृष्टिवाद सूत्रमां जाणवुं.

१२ बारमुं अगमिक श्रुत अणसरखा अक्षरोना आलावा होय ते जाणवुं.

१३ तेरमुं अंग प्रविष्ट ते द्वादशांगीरूप जाणवुं.

१४ चौदमुं अंग बाह्यश्रुत ते आवश्यक तथा दशवैकालिक जाणवुं तथा श्रुतज्ञानना वीश भेद पण कर्मग्रंथ विगेरेथी जाणी लेवा.

अवधिज्ञान स्वरूप.

अनुगामी, वर्धमान, प्रतिपाति, अप्रतिपाति, हीयमान, अननुगामी ए छ प्रकार गुण प्रत्यय अवधिज्ञानना छे. उक्तंच. नन्द्यध्ययने "तं समासओ छव्विहं पन्नत्तं तंजहा आणुगामियं अणाणुगामियं, वड्ढमाणयं, हीयमाणयं, पडिवाइ, अपडिवाइ.

१ प्रथम जे ठेकाणे अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं होय ते ठेकाणुं मूकीने बीजे देशांतर प्रमुख जाय त्यां लोचननी पेठे जे साथे आवे तेने अनुगामिक अवधिज्ञान कहेछे. ज्यां पुरुष जाय त्यां साथे आवे ते.

२ बीजुं जे ठेकाणे त्यां अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं होय ते स्थानके आवे तेवारेज होय. पण अन्यत्र स्थाने जाय तेवारे साथे न होय तेने अननुगामि अवधिज्ञान कहेछे.

से किंतं णाणुगामीयं आहीनाणं ओहीणाणं तंजहा नामएगेइ पुरिसेगमगइं जोइठाणं काउं तस्सेव जोइठाणस्स परि पेरं तेसुपरिहिंडमाणे परिहिंडमाणे परिघोल्माणे तमेव जोइठाणं पासइ अन्नप्पगए न पासइ एतमेव अणाणु गामियं ओहिनाणं जथ्थेव समुपज्जइ तथ्थेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइ पासइ न अन्नथ्थ.

भाष्यकारोप्याह–अणुगामिउ अणुगच्छइ गच्छंतं लोयणं जहा जहा पुरिसं इयरोउ नाणु गच्छइ ठियप्पइवव्वगच्छंतं–इति.

३ त्रीजुं जे वृद्धि पामे तेने वर्द्धमानअवधिज्ञान कहेछे, जेमके दाळगनिभग्निमां जेम जेम बळतण नाखीये तेम तेम वधती ज्वाला थायछे तेनी पेठे यथायोग्य प्रशस्त अनिप्रशस्ततर अध्यवसायने लीधे पूर्वावस्थायी ते उपरोतर समय समय वधतुं वधतुं जाय तेने वर्धमान अवधिज्ञान कहेछे अर्थात् प्रथम उपजती वखते अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटलुं क्षेत्र जाणे देखे पश्चात् वधतां वधतां यावत् अलोकाकाशने विषे लोक जेवडा असंख्याता खांडवां देखे.

४ चोथुं पूर्वे शुभ परिणामवडे घणुं उपजे पश्चात् तथाविध

सामग्रीनो अभाव थयाथी पडता परिणामे करी हानि पामे तेने हीयमान अवधिज्ञान कहेछे.

५ पांचमुं संख्याता असंख्याता योजन उत्कृष्टपणे यावत् समग्र लोक देखीने पण पडे एटले जे आव्युं जाय तेने प्रतिपाति कहेछे.

६ छठुं जे उत्पन्न थया पछी क्षीणताने न पामे ते लोक समग्र देखीने अलोकना एक प्रदेशने देखे ते अप्रतिपाति ज्ञान जाणवुं. ते ज्ञान आव्युं जाय नहीं.

प्रश्न–हीयमान अने प्रतिपाति ए बन्नेनां लक्षणो तो सरखांछे तेम छतां जूदां बताववानुं शुं कारणछे ?

उत्तर–पूर्वावस्थाथी हळवे हळवे घटतुं जाय एटले क्षीणताने पामे ते हीयमान कहेवायछे अने जे विध्यात प्रदीपनी पेठे एक कालने विषेज निर्मूल थायछे ते प्रतिपाति कहेवायछे.

अवधिज्ञानना असख्यात भेदछे, वळी अवधिज्ञानना चार प्रकारछे तथा चाह.

तंसमासओ चउव्विहं पन्नत्तं तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं ओहीनाणी जहन्नेणं अणंताइं रुविदव्वाइं जाणइ पासइ उक्कोसेणं सव्व रुविदव्वाइं जाणइ पासइ, खित्तओणं ओहीन्नाणी जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जभागं उक्कोसेणं असंखिज्जाइं अलोए लोयप्पमाण मित्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ कालओणं ओहिन्नाणी जहन्नेणं आवलियाए असंखिज्जभागं उक्कोसेणं असंखिज्जाओ उस्सप्पिणी अवसप्पिणी अतीयं च अणागयं च कालं जाणइ पासइ भावओणं ओहिन्नाणी जहन्नेणंवि अणंते भावे जाणइ पासइ उक्कोसेणं वि अणंतेभावे जाणइ पासइ सव्वभावाणं अणंतभागं.

अवधिज्ञानी द्रव्यथी जघन्यपणे अनंतारूपी द्रव्यने जाणे देखे

उत्कृष्टपणे सर्वरूपी द्रव्यने जाणे देखे ते द्रव्यथी अवधिज्ञान.

क्षेत्रथी जघन्यपणे अंगुलनो असंख्यातमो भाग जाणे देखे अने उत्कृष्टपणे अलोकाकाशने विषे लोक प्रमाण असंख्यातां खांडवां जाणे देखे.

कालथी अवधिज्ञानी जघन्यपणे आवलिकानो असंख्यातमो भाग जाणे, देखे अने उत्कृष्टथी असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी पर्यंत अतीतकाल अनागतकाल जाणे देखे ते कालावधि ज्ञान.

भावथी अवधिज्ञानी जघन्यपणे अनंतभावने जाणे देखे अने उत्कृष्टथी पण अनंता भावने जाणे देखे ते भावावधिज्ञान जाणवुं.

मनःपर्यवज्ञानस्वरूपं.

मनःपर्यव ज्ञानना बे भेदछे. एक ऋजुमति, बीजो विपुलमति अमुक पुरुषे घट चिंतव्योछे एम सामान्यपणे मननो अध्यवसाय ग्रहे ते ऋजुमति जाणवुं.

तथा अमुक पुरुषे घट चिंतव्योछे ते द्रव्यथी सुवर्णनोछे, क्षेत्रथी पाटलीपुरनोछे. [कालथकी शीतकालनोछे, अने भावथी पीतवर्ण मूल्यवाळ द्रव्यादि विशेष ग्राहिणीमति तेने विपुलमति ज्ञान कहेछे.

अथवा मनःपर्यवज्ञान ४ चार प्रकारनुंछे, द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा भावथी. उक्तंच तं समासओ चउव्विहं पन्नत्तं तंजहा दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ. दव्वओणं रिउमइणं ते अणंतपएसिए खंधे जाणइ पासइ ते चेव विउलमइ अब्भहियतराए विमलतराए जाणइ पासइ.

भावार्थ-द्रव्यथी ऋजुमति अनंत प्रदेशी अनंता स्कंध जाणे देखे अने विपुलमति तेहिज स्कंध कांइक अधिकेरा विशुद्धपणे जाणे. देखे, क्षेत्रथकी ऋजुमति नीचे रत्नप्रभा पृथ्वीनुं क्षुल्लक प्रतर लगे.

अने उंचुं ज्योतिषिना उपरीतल लगे तीर्च्छुं अढीद्वीप बे समुद्र पन्नर कर्मभूमि त्रीश अकर्मभूमी अने छप्पन्न अन्तरद्वीपने विषे संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ताना मनोगत भाव जाणे देखे अने विपुलमति तेहिज क्षेत्र अढी अंगुले अधिक देखे अने विशुद्ध देखे. कालथकी जघन्यपणे रुजुमति पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्टपणे अतीत अनागत जाणे देखे. अने विपुलमति तेथी अधिक अने विशुद्धतर जाणे देखे. भावथकी रुजुमति अनंताभाव जाणे देखे. अने विपुलमति तेथी अधिक जाणे देखे.

केवलज्ञानस्वरूप.

केवलज्ञान उत्पन्न थतांज समकाले सर्व पदार्थोना द्रव्य क्षेत्र काल तथा भाव जाण्यामां आवी जायछे, तथा दीठामां आवी जायछे, माटे केवलज्ञान एक प्रकारनुं छे.

आत्मानुंछे, केवलज्ञानमां मतिज्ञानादिनो अंतर्भाव थायछे, आत्मज्ञानी समकिती मुनिने शुद्ध ज्ञाननी प्राप्ति थायछे.

आत्मस्वरूपना उपयोग विना जे संसारमां चालेछे तेनो तिल पीलक यंत्र वृषभनी पेठे संसारनो पार आवतो नथी.

काव्यना नवरस ज्ञानथी राचो अने लाखो काव्य करो किंतु आत्मपदना उपयोग विना अन्य सर्व राखमां घृत सींचननी पेठे निष्फळ जाणवुं. तर्कशास्त्र पण आत्मतत्त्वना उपयोग विना मिथ्याभावे परिणमेलुं नरकादिक गति भ्रमण हेतुभूतछे. व्याकरण शास्त्रथी पग आत्मपद भिन्नछे.

सारांशके–व्याकरण शास्त्र भणतां छतां पण जो आत्मानी ओळखाण थइ नहीं तो तेथी शुं थयुं ? अलबत आत्मतत्त्व ज्ञानमां व्याकरण हेतुभूतछे पग आत्मतत्त्वना रस्ता उपरदोराय तो लेखे थाय. व्याकरणभणीने वादविवाद मिथ्या करवाथी वैरविरोध वधे.

ज्ञानी उत्पत्ति थायछे. मारा जेवो कोण विद्वानछे ? सभामां मने कोण जीतनारछे ? इत्यादि अभिमानना आवेशमां सपडाइ जवायछे. माटे व्याकरण शास्त्र भणीने पण आत्मतत्त्व जिज्ञासु थवुं. एज परमोपदेश रहस्यछे, आत्मतत्त्व जाणतां रागद्वेष क्रोध मान माया लोभ विगेरेनो नाश थायछे. वैरविरोध कदाग्रहनो आत्मतत्त्व जाणतां नाश थायछे. जेना अज्ञानथी संसारनी मायामां खपटावानुं थयुं अने जेना ज्ञानथी अनंतकाल पर्यंत चतुर्गत्यात्मक संसारमां जडवत् स्वचेतना नष्ट प्रायः थइ परिभ्रमण करवुं पडयुं तेनुं जो ज्ञान थाय तो संसारनी उपाधिथी मुक्त थाय अने अस्पद्भूत अनादि शुद्ध अखंड निर्मल शाश्वत आत्मसुख अनुभवी शकाय. पोतानुं ज्यां अज्ञान त्यां रागद्वेष अने पोतानुं ज्ञान थतां सूर्योदयथी अंधकार जेम स्वतः नाश पामेछे तेम रागद्वेष स्वतः नाश पामेछे.

अन्यदर्शनियो पण आत्मतत्त्वनुं गान करेछे ते नीचे प्रमाणेछे.

फकीर फकीर क्या कहो, फकीर जगत्का पीर;
फकीरसें तो ढुंढ निकाला, पूर्ण रूप अमीर. १
मन मारे तन वश करे, सोवे सकल शरीर;
दया धर्मकी कफनी पेहेरे, आप रूप फकीर. २
वेद वेद शुं कहो, वेद छे धर्म तारो;
वेदथी वस्तु छे न्यारी, अखंड तखलो मारो. ३
कुवा देखा तळाव देखा, न्हाया देवकी कुंड;
गोळकी गंगडीके उपर, मख्खीकी वहोत हे झुंड, ४
चल चल बोलो मत, खोलो पडदा अपना;

शमभाव सहित विचित्रदर्शनभेदे अपुनर्बंधी जे चोथुं गुणठाणुं तेनी जे क्रिया ते पण यद्यपि धर्मना विघ्नने कारनारीछे, तो पण भला आशय थकी अशुद्ध क्रिया करे ते पण शुद्ध कहेवाय.जेम ताम्र रसानुवेधे सुवर्णताने पामेछे, तेम अत्र समजवुं, अन्योऽन्य क्रिया, विषक्रिया, गरलक्रिया, तद्धेतुक्रिया, अमृतक्रिया ए पंच प्रकारनी क्रिया जाणवी. तेमांनी आद्य त्रण क्रिया त्याज्य जाणवी. तद्धेतु, अने अमृत क्रियानी प्राप्तिथी मुक्ति थायछे, अनेकान्त मार्गमां कदाग्रह करवो नहीं, समयसिंधुनुं बिंदुग्रही प्रकलावुं ते व्यर्थ छे, मतकदाग्रहग्रस्तमना जीवोनी रागद्वेषयोगे सर्व क्रिया दुःखनुं धाम एटले स्थान छे, स्वात्मोत्कर्ष मान पूजा कीर्त्तिने माटे परात्मापकर्षकारक क्रियावादी स्वात्महित निरपेक्ष पणाने लीधे साधन साध्य बुद्धि शून्यताथी परमात्म पद साधी शकतो नथी, सापेक्षपणे व्यवहार निश्चय पूर्वक जिनाज्ञा सहित तद्धेतु अमृत क्रियानु अवलंबन करीने भव्यात्माओ अखंड निर्मल शाश्वत सुखमय शिवस्थाननी प्राप्ति करे छे, जे भव्यो क्रियानुं अजीरणते निंदा तेनुं सेवन करेछे ते मुक्तिपदना अधिकारी थता नथी, अमुकमां अमुक दोषछे, अमुक तो आम करेछे, इत्यादि परभाव परिणति ज्यां सुधीछे त्यां सुधी आर्त्तध्यान अने रौद्र ध्याननी क्रिया जाणवी. अंतर्दृष्टि थतां धर्मध्याननी क्रिया थइ शकेछे, जगत्मां रोगो अनेक प्रकारना होयछे, तेमज औषधो पण अनेक प्रकारनांछे, कोइने उधरस थइ होय ते अमुक औषधथी मटे अने ते उधरस कोइने तो दवाथी मटती नथी. मुनयौ विहार करता मीयागाम आव्या त्यां श्री दुर्लभविजयजी साथे दीपविजयजी नामनी हता तेमने उधरस घणी हती, तेम नाव पण हतो ते गाममां मोटां मोटां मरचां खाधाथी उधरस मटी तो भव्यात्माओने समजवानुं के भावरोगनी नी·

था अनेक प्रकारनाछे, कर्मरोग पण अनेक प्रकारनाछे, तेना उपर धर्मनां औषधो पण अनेक प्रकारनांछे, कर्मरोगने टाळनार सद्गुरु वैद्यो पण अनेक प्रकारनाछे, कोइ जीवने कोइ धर्म औषधथी लाभ थाय, कोइ जीवने कोइ मुनीश्वर वैद्यथी लाभ थाय, माटे पक्षपात करी एकान्तमतरूप कदाग्रहनुं अवलंबन करवुं नहीं, पंचमारके अल्पपुण्यवंत बहुपापकर्मीजीवो प्रायशः धर्मनुंनाम धरावी मारा मारा पणानी बुद्धि धारण करी पक्षपातरूपविषनु पान करी अनंतभवभ्रमण करनारा थशे. अज्ञानरूप निद्रामां सुतेलाने तो सद्गुरु महाराज सहेलाइथी उठाडी शकेछे किंतु जे मत कदाग्रह पक्षपातरूप दारूनुं पान करीने अज्ञानरूप निद्रामां सुइ रहेलाछे ते पुरुषने तो गुरुमहाराज पणीज लाकडीओ मारीने आत्मस्वरूपे जगाडवाने समर्थ नथी. कारणके ते बिलकुल बेशुद्ध बनी गयाछे, सत्यतत्त्व समजवाने शक्तिमानछे किंतु जेणे मतकदाग्रह रूप मदिरानुं पान कर्युंछे, एवा पुरुषनी आगळ सत्यतत्त्वनी हित शिखामण गुरुमहाराजना आपेलो ते व्यर्थ जायछे, उलटुं ते गुरुमहाराजने पण निंद्य वचन संभळावेछे, केटलाक जीवो तो एवा होयछेके पोताना मतमां बेठुं ते खरूं अन्य सर्व खोटुं मानेछे तेवा जीवोने ज्ञानी गुरुमहाराज बहु प्रयासे सत्यमार्गे दोरेछे, व्यवहार अने निश्चय नयना जाण ज्ञानी गुरुमहाराजा क्रियावडे कर्मनो नाश करेछे, ए परमार्थ.

"दुहा."

आत्मोपयोगी साधुने, किरिया सद्गुण धाम;
मतकदाग्रह लालचु, बहु किरीया दुःख ठाम. ११८
जलनी उपाधिथकी, जुदी अवस्था थाय;
तेवी जे जननी थती, भवमां ते भटकाय. ११९

उपादान समजे नहीं, समजे नहीं निमित्त;
कारण कार्य समजे नहीं, तत्त्वे शुं शुभ चित्त. १२०
द्रव्यभाव समजे नहीं, वर्ते बाह्याचार;
अनुपयोगिआत्मनो, पामे नहि भवपार. १२१

भावार्थ–प्रथम दुहानो अर्थ उपर लखायोछे जलनी उपाधिथी जेम भिन्न भिन्न अवस्थाओ थायछे–एटले जेम जलमां लाल रंग नाखीए लाल देखायछे. पीळो रंग नाखीए तो जळ पीळुं देखाय छे, लीलो रंग नाखीए तो जल लीलुं देखायछे, एटले जळ अन्यनी साथे मिश्र थवाथी व्यवहारथी स्वशुद्ध रूपनो त्याग करेछे. तेम जे जीवो असत् संगतिरूप उपाधिना योगे जेवा मळ्या तेवा थइ जायछे, ते भवमां अटकेछे, अर्थात् सारांशके–जे जीव पादरीनी संगतथी तेना उपदेशवडे इशुने पूज्यमाने, अने ख्रीस्ति धर्म स्वीकारे, कदापि ते जीवने कोइ बौध गुरुनी संगति थइ. बौधे कह्युं ख्रीस्ति धर्म तो अनार्य धर्मछे, ते धर्मथी मुक्ति मळती नथी, बौध धर्म सत्यछे माटे ते स्वीकार. त्यारे तेना उपदेशथी बौध धर्म स्वीकारे, वळी तेने कोइ मुसल्मान मळ्यो तेणे कह्युं बुद्ध धर्म तो खोटोछे,सत्य धर्म तो खुदाकाहे, बुद्ध धर्ममें तो अमुक जूठा कहाहे, ओ तो काफरोंका धर्म हे, इसलिये खुदाका धर्म मानेगा तो दोझखमे पडेगा नहीं, एम मुसलमानना उपदेशथी मुसलमान धर्म स्वीकार्यो. त्यारे ते पुरुषने कोइ वेदांति मळ्यो. वेदांतीए कह्युं सर्व धर्मनुं मूळ वेदान्त छे, वेदथी मुक्तिनी प्राप्ति थायछे. इत्यादि कथनथी वेदधर्मनो स्वीकार कर्यो. त्यारे कोइ कालीकाना भक्ते कह्युं. अरे मनुष्य तुं कालिकानो भक्तथा, कालिका पुत्र धन स्त्री वैभवने आपनारीछे, माटे कालिका तेज खरीछे, वेदथी तो कंइ सुख मळतुं नथी,

इत्यादि कथनथी कालिकानो भक्त थयो, त्यारे वळी नास्तिकवादी तेने मळ्यो तेणे कह्युं. भव्य मनुष्य तने पर्व पुण्यश्री तेरेछे तेमते मे वस्तु आपमी भक्ति देवानी नथी. ते वस्तुनी इच्छा रावमी ते व्यर्थ छे, कालिका तो पत्थरनी मूर्ति छे ते कंइ फल आपवा समर्थ नथी इत्यादि कथनथी नास्तिक थाय इत्यादि अनुस्था जे मनुष्यनी थायछे ते कदापि आत्मगुण पामी शकतो नथी. कारण के ते अज्ञानी अविवेकी अने श्रद्धा रहीतछे, तेथी भवभ्रमण कर्या करेछे.

वळी ते भव्यो उपादान कारणने समजता नथी अने निमित्त कारणनुं स्वरूप पण जाणता नथी, अमुक कार्य अने तेनुं कारण अमुक ते पण समजी शकता नथी. साधन अमुक अने साध्य अमुक ते पण समजी शकता नथी एवा अज्ञानी जीवोनुं तरवमां चित्त होतुं नथी.

द्रव्य अने भावथी चारित्रने समजता न होय, फक्त ओघदृष्टिथी बाह्याचारमां धर्म मानी मवर्ते, आत्मतत्त्वनो उपयोग होय नहीं तेवा जीवो भवनो पार पामी शके नहीं श्री यशोविजयजी उपाध्याय कहेछे के-

दाल.

ज्यां लगें आतम तत्त्वनुं, लक्षण नवि जाण्युं;
त्यां लगें गुणठाणुं भलुं, किम आवे ताण्युं. आतम.१

ए प्रमाणे विचारतां आत्म तत्त्वावबोध विना क्रिया मुक्तिमार्गनिकारणीभूत थती नथी. हुं क्रिया कोने माटे करुंछुं, क्रियाथी शुं थायछे, क्रियानो कर्ता कोणछे? एवी यथायोग्य समज विना अनुपयोगताए परमात्मपदरूपसाध्यसंसिद्धि थइ

उपादान समजे नहीं, समजे नहीं निमित्त;
कारण कार्य समजे नहीं, तत्वे शुं शुभ चित्त. १२०
द्रव्यभाव समजे नहीं, वर्ते वाह्याचार;
अनुपयोगिआत्मनो, पामे नहि भवपार. १२१

भावार्थ–प्रथम दुहानो अर्थ उपर लखायोछे जलनी उपाधिथी जेम भिन्न भिन्न अवस्थाओ थायछे–एटले जेम जलमां लाल रंग नाखीए लाल देखायछे. पीळो रंग नाखीए तो जळ पीळुं देखाय छे, लीलो रंग नाखीए तो जल लीलुं देखायछे, एटले जळ अन्यनी साथे मिश्र थवाथी व्यवहारथी स्वशुद्ध रूपनो त्याग करेछे. तेम जे जीवो असत् संगतिरूप उपाधिना योगे जेवा मळ्या तेवा थइ जायछे, ते भवमां अटकेछे, अर्थात् सारांशके–जे जीव पादरीनी संगतथी तेना उपदेशवडे इशुने पूज्यमाने, अने ख्रीस्ति धर्म स्वीकारे, कदापि ते जीवने कोइ बौध गुरुनी संगति थइ. बौधे कह्युं ख्रीस्ति धर्म तो अनार्य धर्मछे, ते धर्मथी मुक्ति मळती नथी, बौध धर्म सत्यछे माटे ते स्वीकार. त्यारे तेना उपदेशथी बौध धर्म स्वीकारे, वळी तेने कोइ मुसल्मान मळ्यो तेणे कह्युं बुद्ध धर्म तो खोटोछे,सत्य धर्म तो खुदाकाहै, बुद्ध धर्ममें तो अमुक जूठा कहाहे, ओ तो काफरोंका धर्म है, इसलिये खुदाका धर्म मानेगा तो दोझखमे पडेगा नहीं, एम मुसलमानना उपदेशथी मुसलमान धर्म स्वीकार्यो. त्यारे ते पुरुषने कोइ वेदांति मळ्यो. वेदांतीए कह्युं सर्व धर्मनुं मूळ वेदान्त छे, वेदथी मुक्तिनी प्राप्ति थायछे. इत्यादि कथनथी वेदधर्मनो स्वीकार कर्यो. त्यारे कोइ कालीकाना भक्ते कह्युं. अरे मनुष्य तुं कालिकानो भक्तथा, कालिका पुत्र धन स्त्री वैभवने आपनारीछे, माटे कालिका तेज खरीछे, वेदथी तो कंइ मुख मळतुं नथी,

इत्यादि कथनथी कालिकानो भक्त थयो, त्यारे वळी नास्तिकवादि तेने मळ्यो तेणे कह्युं. भला मनुष्य तने धर्म धुताराओ छेतरेछे केमके जे वस्तु आपणी आंखे देखाती नथी. ते वस्तुनी इच्छा राखवी ते व्यर्थछे, कालिका तो पत्थरनी मूर्ति छे ते कंई फल आपवा समर्थ नथी इत्यादि कथनथी नास्तिक थाय इत्यादि अवस्था जे मनुष्यनी थायछे ते कदापि आत्मसुख पामी शकतो नथी. कारण के ते अज्ञानी अविवेकी अने श्रद्धा रहीतछे, तेथी भवभ्रमण कर्या करेछे.

वळी जे भव्यो उपादान कारणने समजता नथी अने निमित्त कारणनुं स्वरूप पण जाणता नथी, अमुक कार्य अने तेनुं कारण अमुक ते पण समजी शकता नथी. साधन अमुक अने साध्य अमुक ते पण समजी शकता नथी एवा अज्ञानी जीवोनुं तत्त्वमां चित्त होतुं नथी.

द्रव्य अने भावथी चारित्रने समजता न होय. फक्त ओघदृष्टिथी बाह्याचारमां धर्म मानी मचर्ने. आत्मतत्त्वनो उपयोग होय नहीं तेवा जीवो भवनो पार पामी शके नहीं श्री यशोविजयजी उपाध्याय कहेछे के-

ढाल.

ज्यां लगें आतम तत्त्वनुं, लक्षण नवि जाण्युं;
त्यां लगें गुणठाणुं भलुं, किम आवे ताण्युं. आतम.१

ए प्रमाणे विचारतां भाव्य तत्त्वावबोध विना क्रिया मुक्तिमार्गनविकारणीभूत थती नथी. हुं क्रिया कोने माटे करुंछुं, क्रियाथी शुं थायछे, क्रियानो कर्ता कोणछे ? एनी यथायोग्य समजण विना अनुपयोगताए परमात्मपदरूपसाध्यनीसिद्धि थइ

शकती नथी, उलटुं ते अनुपयोगताए क्रिया करी अन्य फल प्राप्त करेछे यथा विनायकं प्रकुर्वाणो, रचयामास वानरं। विनायकनी मूर्त्ति बनावतां वांदरो रच्यो तेनी पेठे—आत्मानी अज्ञानताए अन्योन्य, विष, गरल, ए त्रण क्रियानुं सेवन थायछे—अने ए त्रण क्रियाथी जीव अशुद्धपरिणतियोगे शुभाशुभ कर्मपुद्गलो ग्रही अनेक जन्म ग्रहतो त्रिविध तापथी पीडातो कूटातो दुःख संततिनो भोगी बनेछे. जड चेतननुं विशेषतः भेद ज्ञान थयुं नथी त्यां सुधी बहिरात्मपणुं टळतुं नथी. अने बहिरात्मयोगे चेतन जड जेवो भासेछे, अने अज्ञानी जीव परवस्तुमां अहंत्व परिणाम धारतो जडता अनुभवेछे—श्री यशोविजयजी उपाध्याय कहेछे के—

हुं एहनो ए माहरो, ए हुं एणी बुद्धि;
चेतन जडता अनुभवे, न विमासे शुद्धि· आतम· १
आतम अज्ञाने करी, जे भव दुःख लहीए;
आतम ज्ञाने ते टळे, एम मन सद्दहीए· आतम· २

आत्माना अज्ञानथी जे भवदुःख परंपरा थायछे, ते भव दुःख परंपरानो नाश आत्मज्ञान थतां थायछे. अर्थात् आत्मज्ञान थतां अनादि कालथी परमां परिणमन थयुंछे ते टळेछे. रागद्वेष योगे जीव परवस्तुमां परिणमेछे अने यदा रागद्वेषनी परिणति टळेछे, तदा आत्मा परवस्तुमां परिणमतो नथी. ज्यां सुधी सम्यग् रीत्या आत्मस्वरूप जाण्युं नथी. त्यां सुधी जीव रागद्वेष परिणामे भोगी बनेछे. आत्मज्ञानथी रागद्वेषनी परिणति उपशमेछे, आत्मज्ञाने सहज स्वभावे रमतां रागद्वेषनी परिणति नाश पामेछे, आत्मोपयोगे स्थिरता थतां निर्विकार अखंड आत्मिक सुख भोगवाय छे, माटे आत्मोपयोगी साधुने सर्व धार्मिक क्रिया सुखनी खाणि

वायुना योगे वादळां दूर थतां जेम सूर्य किरणोथी प्रकाशेछे तेम आत्मारूपसूर्य कर्मरूपवादळांथी अन्तरायोछे तेथी सर्व वस्तुओ आत्माना ज्ञानमां ज्ञेयरूपे भासती नथी. पण मतिज्ञानने श्रुतज्ञानना योगे ध्यानरूप वायु वातां कर्मरूप वादळां आत्माथी दूर थायछे. त्यारे आत्मारूप सूर्य ज्ञानरूप किरणोथी लोकालोकने प्रकाशेछे. ध्यानपरंपराए आत्मोपयोगीपणुं मुनिराजने सतत बन्युं रहेछे, भावचारित्रनी प्राप्ति विना आत्मोपयोगता वर्तती नथी. द्रव्य चारित्रथी कर्म नाश थतुं नथी, चारित्र शुं छे ? ते जे जीवो अज्ञानयोगे समजता नथी, ते भाव चारित्रनो स्पर्श करी शकता नथी, भावचारित्र प्राप्ति प्रति रजोहरण मुहपत्ति साधुवेष दीक्षा आदि निमित्त कारणोछे, अने तेवी दीक्षा प्रत्येक तीर्थंकरोए ग्रही भाव चारित्र प्रगटाव्युं, तेम अन्य भव्यात्माओए पण प्रभुना पगले चाली तेमनुं अनुकरण करी भावचारित्र प्रगट करवुं, ते भाव चारित्रनी निरपेक्षताए बाह्याचारमां सरागदृष्टिथी मुंझाता एवा जीवो उपयोगनी शून्यताए संसाररूप समुद्रनो पार पामी शकता नथी.

प्रश्न–भाव चारित्र विना साधुवेष असमंजसछे तो ते केम ग्रहण करवो जोइए ?

उत्तर–रजोहरण मुहपत्तिथी युक्त साधुवेष अंगीकार करी जीव बाह्यग्रंथिनो त्याग करेछे ते आभ्यंतरग्रंथि नाश प्रति कारणछे. माटे दीक्षा अंगीकार करवाथी बाह्य उपाधि टळेछे. अने छकायना जीवोनी रक्षा थायछे, पंचमहाव्रत पाळवाथी आश्रवना मार्गो नाश पामेछे. सर्वतीर्थंकरभगवंतोए एवी भागवती दीक्षा अंगीकार करीछे. अने तद्द्वारा विकल्प संकल्प त्यागी आत्मध्यानमां प्रवर्ती परमात्मपद साध्युं, माटे भव्यात्माए पण भागवती दीक्षा अंगीकार करवा प्रयत्न करवो. संसारमां

गृहस्थावासमां वसी सर्वतः विरतिपणुं पामवुं मुश्केलछे, माटे दीक्षा अंगीकार करतां राग द्वेषनी हीनता थतां आत्मस्वरूपे रमण करतां भावचारित्र प्रगटेछे, ए राजमार्ग जाणवो. मोक्ष पद लक्ष्यमां राखी सद्गुरु संगति करतां आत्मज्ञान प्रगटेछे. उपाधिमां अहर्निश राचीमाची रहेनार गृहस्थ जीवोने दुःख संतविरुप फलनी प्राप्ति थायछे. आत्मज्ञानना अभिलाषि पुरुषोए सद्गुरुनुं सेवन करवुं. सद्गुरु सेवनथी जे ज्ञान मळेछे ते तात्त्विक फळने प्रकटावेछे, अने ते ज्ञानथी संयमनुं ग्रहण थायछे. अने संयमथी पोताना स्वरूपमां स्थिरता प्रगटेछे, अने स्थिरतायोगे जीव स्वगुणोने आविर्भाव रूपे प्रकाशेछे. माटे द्रव्यचारित्र एटले साधुवेष दीक्षाअंगीकार पंचमहाव्रत धारण आदि द्रव्यचारित्र कदापि असमंजस कहेवाय नहीं, भावचारित्रनी सापेक्षताए द्रव्यचारित्र निमित्त कारणीभूत आदरणीयछे. माटे भागवती दीक्षा अंगीकार करवी एम हितकांक्षा-निज गुण स्थिरता तेज वस्तुतः चारित्र जाणवुं. व्यवहार चारित्रथी निश्चयचारित्र प्रगटेछे, आत्म परमात्मपद ए माटेज व्यवहार चारित्रक्रियारूप कथ्युंछे. निश्चय चारित्रनी सापेक्षताए व्यवहारचारित्र समपाण निमित्त कारणछे.

" दुहा. "

शिथिलाचारी आळसु, विषय वासना राग;
कृष्ण सर्प सम ते गुरु, करवो तेनो त्याग. १२२
ब्रह्मचर्य उपदेश दे, मनमां ललना वास;
कृष्णसर्पसम ते गुरु, संग न कीजे खास. १२३

भावार्थ-वळी जे शिथिल आचारवंत-धर्मध्यानमां आळसु;

परस्त्रमात्र रमणतामां तत्पर, वळी जेना हृदयमां विषयवासनानो राग सदा वस्यो रहेतो होय. तेवा कुगुरुओ कृष्णसर्पवत जाणवा, तेनो धर्माभिलाषी जीवोए त्याग करवो जोइए. कृष्ण सर्प संगतिथी एकवार मृत्यु थायछे, अने एवा कुगुरुनी संगतिथी मिथ्यातत्त्वोपदेश पामतां रागद्वेष परिणति योगे अनेक जन्म मरण करवा पडेछे. वळी जे गुरु नाम धरावता ब्रह्मचर्यव्रत पाळवानो उपदेश आपेछे. अने अंतरमां स्त्रीनो वासछे एवा कृष्णसर्प सदृश कुगुरुनी संगति करवी नहीं. विषयना जे रागी होयछे तेनी संगतिथी आत्मा निर्विषयी बनतो नथी. विषयो विषना करतां पण अति दुःखदायकछे. कह्युं छे के–

श्लोक.

विषस्य विषयाणा च, दृश्यते महदंतरं
उपभुक्तं विषं हंति, विषयाः स्मरणादपि· १

विष अने विषयोनुं महद् अंतर देखायछे, विष तो खाधुं छतुं माणनो नाश करेछे. अने कामादिक विषयो तो स्मरण मात्रथी आत्माना गुणोने हणेछे तो जे विषयना संगी होय तेनी संगतिथी आत्महित थतुं नथी तेवा कुगुरुओनी पण निंदा करवी नहीं. मनमां एम चिंतववुं के ए विषयना भिखारी अशुद्ध परिणतियोगे हेयज्ञेय उपादेय विवेक शून्य चित्तवाळा थइ चिंतामणि रत्नसमान आत्मधर्मनो अनादर करी परपुद्गलरूप एंठमां राचीमाची रह्याछे, ए तेमनी भवितव्यतानो वांकछे. एम विचारी माध्यस्थपणे वर्ती तेमनी संगति त्यागवी. कुगुरुनुं लक्षण जणाववानुं मुख्य कारण ए छे के–भव्यजीवो जेवुं आलंबन मळे तेवा थइ जायछे, सारुं आलंबन मळे तो आत्मा सारा रस्ते वळेछे. अने नठारुं आलंबन

पडे तो आत्मा अधोगति भाक् थायछे माटे भव्यजीवो असत्य आलंबननो त्याग करी सत्य सद्गुरुरूप निमित्त कारणनुं अवलंबन करे, एम हितावहछे.

" दुहा. "

विषय त्याग वैराग्यता, वनितानो नहि संग;
धन कंचननो त्याग जास, नमीए सद्गुरु चंग. १२४
विषयाशा मनमां मटी, मन मर्कट वश जास;
भवभीरु भ्रमणा मटी, तेना थइए दास. १२५

सुगुरु लक्षण कथेछे–जेओए विषयनो त्याग कर्योछे. अने जेम्नुं मन वैराग्यथी सतत वासीत थयुंछे. अने जे वनितानो संग करता नथी. धन कंचन ए उपाधिछे. तेथी विकल्प संकल्प उद्भवेछे. एम जाणी जेणे त्याग कर्योछे, एटले बाह्य परिग्रहनो त्याग कर्योछे. एवा सुंदरगुरुने नमस्कार करीए, विषयनी आशा तृष्णाना अंकुरा जेना हृदयमां उत्पन्न थता नथी. अने जेणे मन रूप मांकडुं वश कर्युंछे. अशुद्ध राग द्वेषनी परिणति योगे मनमां आर्तध्यान वा रौद्रध्यान थायछे, ते मन वश करवाथी थतुं नथी. चित्तने वश करतां विकल्प संकल्पनो नाश थायछे. मन वश करवुं ते अत्यंत दुर्लभछे. कोई मनुष्यधारी स्वबुद्धि विचक्षणताथी रात्रिवेश सहस्र मासमां साधी शके तेवो पण मनने पोताना वशमां करी शकतो नथी.

पुनः श्लोक.

चित्तमेवहि संसारो, रागादि क्लेशवासितं ।
तदेव तैर्विनिर्मुक्तं, भवान्त इति कथ्यते ॥१॥

रागादि क्लेशथी वासीत चित्त तेज संसारछे, अने रागद्वेष.

विकथी रहित मन थतां भवान्त थायछे. एवुं चित्त पण जेणे वश कर्युंछे एवा सुगुरुमहामुनिराजने देखी प्राणी पण शान्त भावने पामेछे. तेमना उपदेशथी अनेक जीवोने सर्वज्ञ कथीत तत्वनी श्रद्धा थायछे. कोइ श्रावक व्रत अंगीकार करेछे. कोइ साधु व्रत अंगीकार करेछे, वळी जे सद्गुरू ज्ञान दर्शन चारित्रथी मोक्ष सुख आराधेछे, ते सद्गुरु मुनिराज चोराशी उपमाए विराजीत होयछे ते ग्रंथान्तरथी जाणवी वळी मुनिराज अनेक उपमाओने धारण करनाराछे. यथा. गाथा.

कंसे संखे जीवे, गयणे वाउय सारए सलिले ॥
पुख्खरपत्ते कुम्मे, विहग खग्गेय भारंडे ॥१॥

कंस पात्र समान उज्जवळ, शंख, जीव, गगन, वायु, शरद्ऋतु जल, कमलपत्र, काचबो, पंखी, खड्गी, भारंडपंखी, हाथी, वृषभ, सिंह, मेरुपर्वत, समुद्र चंद्र, सूर्य, सुवर्ण, पृथ्वी, अग्निनी आदि उपमाओने धारण करनार मुनीश्वर जाणवा. वळी मुनीश्वर लक्षण कथे छे—भवभीरु—एटले संसारमां अनेक प्रकारनां दुःख भर्याछे, ज्यां सुधी संसारछे त्यां सुधी तात्त्विक सुख नथी. पुनः पुनः रागद्वेषथी बीता होय माटे रागद्वेषने सेवे नहीं. भ्रमणा गइ—जड वस्तुमां आत्मबुद्धि हती ते टळी हुं अने मारूं आवी भ्रमणारूप बुद्धि परवस्तुमां थती हती, ते भ्रमणा बुद्धिनो जेणे नाश कर्योछे, एवा महात्मामुनीश्वर आत्मतत्त्व साधी शकेछे, वळी जे पुरुष शिष्यभाव तथा वैराग्यथी रहितछे. एवा अनधिकारी पुरुषने प्रायः उपदेश देवा पण प्रवृत्ति करता नथी. अन्य शास्त्रोमां पण कह्युंछे के—

श्लोक.

नापृष्टः कस्यचित् ब्रूया । न्नचान्यायेन पृच्छतः ॥
जानन्नपिच मेधावी, जडवल्लोकमाचरेत् ॥ १ ॥

विद्वान् मुनिवर्य प्रश्न कर्या विना कोईनी आगे बोले नहीं, अन्यायथी पुरुषोने पण उपदेश करे नहीं, किंतु सर्वत्रपरनो जाण छतो पण देखावो जगत्नां जडनो पेठ विचरे वळी ए मुमुक्षु मुनिनी आत्मज्ञान वगर धारणाते, अनेक प्रकारनी वासनाओथी आश्रित चित्त ज्यां सुधी होयछे त्यां सुधी आत्मस्वरूप प्रतिभास थातुं नथी जेम मलीन दर्पणमां प्रतिबिंब स्वच्छ पडे पडतुं नथी. ज्यारे दर्पणने राख विगेरेथी स्वच्छीकृत करीए त्यारे तेनी अंदर स्पष्ट प्रतिबिंब भासेछे तेम मनोरूप दर्पण रागद्वेष तेमज अनेक प्रकारनी वासनाओथी युक्त होयछे त्यां सुधी तेनामां आत्मस्वरूप भासतुं नथी, पण ज्यारे रागद्वेष इच्छा वासनारूप मलीनतानो नाश थाय छे त्यारे आत्मस्वरूप भासेछे, निर्वाह विना जेनुं चपुंछे एवा मुनिवर्यो आत्मस्वरूपना अधिकारीछे. अन्य के जेनां मन मत्सर वासनाथी दग्धछे एवा पुरुषो सुरस्थो—तत्व मार्गनां अधिकारी नथी.

वळी मुनीश्वर निंदा वा स्तुतिथी संतुष्ट थाय नहीं. कारण के आपणा पंथमां पडेली दुनीया दोरंगीछे, कोइ वंद करे अने कोइ वंद करे, लोककीर्ति अने लोकनी स्तुति अर्थे जे आचरण आचर्यां ते मायानी वृद्धिने माटेछे पण आत्मसुख माटे नथी. माटे लोककीर्ति स्तुतिरूप वासनाने मुनि त्याग करे.—स्वकीय आत्मानुं हित करवुं तेम योग्य छे,

यतः श्लोक.

विद्यते न खलु कश्चिदुपायः। सर्वलोक परितोषकरो यः।
सर्वथा स्वहितमाचरणीयं। किं करिष्यति जनोबहुजल्पः

आ दुनीयामां एवो कोइ उपाय नथी के जेथी सर्व लोक स्तुति करे. माटे आत्मस्वरूपार्थि पुरुषे लोकवासनानो सर्वथा परि-

त्याग करी आत्महित आचरवुं. लोकनी निंदा स्तुति तरफ देखवुं नहीं, वळी अन्य शास्त्रोमां कह्युं छे के—

श्लोक.

न लोकचित्तग्रहणेरतस्य। नभोजनाच्छादन तत्परस्य॥
न शब्दशास्त्राभिरतस्य मोक्षो।न चातिरम्यावसथप्रियस्य

जो पुरुष सर्व प्रकारसें लोकोंके चित्त रंजन करणे विषे मीतिवाळा है तथा जो पुरुष भोजन आच्छादन विषेहीं तत्परहै. तथा जो पुरुष व्याकरणादिक अनात्मशास्त्र विषे अभिनिवेशवाला है. तथा जो पुरुष अत्यंत रमणीय गृहो विषे मीति वाळाहै ऐसे पुरुषकुं मोक्ष प्राप्त होता नहीं, यातें मोक्षकी इच्छा करनेवाले मुनिवर्यकुं सा लोकवासना सर्व प्रकारसें परित्याग करणी चाहिये.

ए श्लोकथी पण विचारतां मुनिवर्यने सर्व प्रकारनी वासनानो परित्याग थवो जोइए. वासनारहित मुनिवर्य अनेक प्रकारनां धार्मिक कार्य करतां बंधाता नथी.

अंतरथी वासना आदिनो त्याग विना बहिरनो निष्फळ त्याग जाणवो. आत्माथी भिन्न सर्व जगत्ने देखनारा मुनिराजना हृदयमांथी सर्व वासनानो नाश थायछे.

असंख्यात प्रदेशी आत्मा तेज हुं परमात्माछुं, अन्य जडवस्तुओ हुं नथी. अने अन्य जडवस्तुओ मारी नथी आ प्रमाणे दृढ निश्चय भावनाभावे, अने अंतरथी न्यारो वर्ते. आत्माभिमुख चेतनापणे वर्ते. एवा परमपूज्य करूणासागर मुनिश्वर महाराजना दास थइने रहीए. एवा मुनिना दास महाभाग्य होय तो थवाय. एमनी सेवा चाकरीथी भवोभवनां दुःख नाश पामे. अने सर्व उपाधि टळे, आत्मा परमात्मरूप थाय. माटे भव्य सुशिष्योए एवा

मुनिवर्यना दास थइ रहेवुं, एमनी आज्ञा मस्तके चडाववी. कदी पण मुनिवरनी आज्ञानो लोप करवो नहीं, तेमनुं सदाकाल ध्यान स्मरण करवुं, तेमनी वैयावच्च करवी.

प्रश्न–गुरु अने मुनिनां मतना बोलवा प्रमाणे कंइ भेद समजाय छे तेनुं शुं कारण ?

उत्तर–जेणे उपदेश देइ सम्यक्त्व पमाड्युं होय ते धर्माचार्य गुरु जाणवा.

ते मुनिराज छते पण धर्म पमाडनारा धर्माचार्य गुरु मुनिराज जाणवा. अने ते विनाना उपरोक्त लक्षण सहित जे होय तेवा रत्नत्रय गुणादिना धारक मुनिराज जाणवा. सम्यक्त्वदान दातृत्वथी तेमां एटलो भेद जाणवो. उपकारथी भेद जाणवो. हवे सर्व जीवने धर्मनी प्राप्ति जेवा लक्षणथी थाय ते देखाडेछे, अत्र मुनि तेमज श्रावकनो भेद पाड्या विना, सर्वेने हितकारक आत्म धर्म जाणी सर्वेने उपदेश आपेछे.

" दुहा "

रहीए आप स्वभावमां, लहीए तत्त्व स्वरूप ॥
आपोआप विचारतां, मिटे अनादि धूप ॥ १२६ ॥
जाति नहीं है आत्मकुं, जस जाति अभिमान ॥
पामे नाहि ते धर्मने । नक्की मनमां जाण ॥ १२७ ॥

भावार्थ–शेष परभावपरिहरीने आत्मस्वभावमां रमणता करवी. जो आत्मस्वभावमां रमण करीए तो सत्य स्वरूप प्रगटे परमात्म पद पामीए, वेष बदलो, देश बदलो, किंतु आत्मस्वभावमां रमणता विना मुक्ति नथी. परवस्तु संबंधे थता अनेक प्रकारना विकल्प संकल्पो हेते मनथी दूर करवी केवळ आत्मानुं ध्यान करवुं. आ-

त्याग करी आत्महित आचरवुं. लोकनी निंदा स्तुति तरफ देखवुं नहीं, वळी अन्य शास्त्रोमां कह्युं छे के—

श्लोक.

न लोकचित्तग्रहणेरतस्य । नभोजनाच्छादन तत्परस्य॥
न शब्दशास्त्राभिरतस्य मोक्षो।न चातिरम्यावसथप्रियस्य

जो पुरुष सर्व प्रकारसें लोकोंके चित्त रंजन करणे विषे प्रीतिवाळा है तथा जो पुरुष भोजन आच्छादन विषेहीं तत्पर है. तथा जो पुरुष व्याकरणादिक अनात्मशास्त्र विषे अभिनिवेशवाळा है. तथा जो पुरुष अत्यंत रमणीय गृहो विषे प्रीति वाळा है ऐसे पुरुषकुं मोक्ष प्राप्त होता नहीं, यातें मोक्षकी इच्छा करनेवाले मुनिवर्यकुं सा लोकवासना सर्व प्रकारसें परित्याग करणी चाहिये.

ए श्लोकथी पण विचारतां मुनिवर्यने सर्व प्रकारनी वासनानो परित्याग थवो जोइए. वासनारहित मुनिवर्य अनेक प्रकारनां धार्मिक कार्य करतां बंधाता नथी.

अंतरथी वासना आदिनो त्याग विना बहिरनो निष्फळ त्याग जाणवो. आत्माथी भिन्न सर्व जगत्‌ने देखनारा मुनिराजना हृदयमांथी सर्व वासनानो नाश थायछे.

असंख्यात प्रदेशी आत्मा तेज हुं परमात्माछुं, अन्य जडवस्तुओ हुं नथी. अने अन्य जडवस्तुओ मारी नथी आ प्रमाणे दृढ निश्चय भावनाभावे, अने अंतरथी न्यारो वर्ते. आत्माभिमुख चेतनापणे वर्ते. एवा परमपूज्य करुणासागर मुनिश्वर महाराजना दास थइने रहीए. एवा मुनिना दास महाभाग्य होय तो थवाय. एमनी सेवा चाकरीथी भवोभवनां दुःख नाश पामे. अने सर्व उपाधि टळे, आत्मा परमात्मरूप थाय, माटे भव्य सुशिष्योए एवा

मुनिवर्यना दाम पर रहेवुं, एमनी आज्ञा मस्तके चडाववी. कदी एवा मुनिवरनी आज्ञानो लोप करवो नहीं, तेमनुं सदाकाल ध्यान स्मरण करवुं, तेमनी वैयावच्च करवी.

प्रश्न-गुरु अने मुनिमां आगमा बोलवा प्रमाणे कंइ भेद समजाय छे तेनुं शुं कारण ?

उत्तर-जेने उपदेश देइ सम्यक्त्व पमाडयुं होय ते धर्माचार्य गुरु जाणवा.

ते मुनिराज छते पण धर्म पमाडनारा धर्माचार्य गुरु मुनिराज जाणवा. अने ते विनाना उपरोक्त लक्षण सहित जे होय तेवा रत्नोदरण गुणधारी पालक मुनिराज जाणवा. सम्यक्त्वदान दातृत्वथी बेमां एटलो भेद जाणवो. उपकारथी भेद जाणवो. हवे सर्व जीवने धर्मनी प्राप्ति केवा लक्षणथी थाय ते देखाडेछे, अत्र मुनि वेषना धारकनो भेद पाडया विना, सर्वेने हितकारक आत्म धर्म जाणी सर्वेने उपदेश आपेछे.

" दुहा "

रहीए आप स्वभावमां, लहीए तत्त्व स्वरूप ॥
आपोआप विचारतां, मिटे अनादि धूप ॥ १२६ ॥
जाति नहीं हे आत्मकुं, जस जाति अभिमान ॥
पामे नाहि ते धर्मने । नक्की मनमां जाण ॥ १२७ ॥

भावार्थ-मोक्ष पदप्राप्त्यर्थम् आत्मस्वभावमां रमणता करवी जो आत्मस्वभावमां रमण करीए तो नग्न स्वरूप एटले परमात्म पद पामीए, वेष बदलो, देश बदलो, किंतु आत्मस्वभावमां रमणता विना मुक्ति नथी. परवस्तु संबंधे थता अनेक प्रकारना विकल्प संकल्पो तेने मनथी दूर करावी केवल आत्मानुं ध्यान करवुं. आ-

त्मा पोते सुखनुं स्थानछे. आत्मा पोतानी मेळे ज्ञान गुणथी पोतानुं स्वरूप जाणेछे, हुं आत्मा सदा सच्चिदानंद स्वरूपनो धारण करनारछुं. हुं मायाथी न्यारोछुं. सर्व उपाधिथी हुं भिन्नछुं. मारुं पोतानुं स्वरूप रागद्वेष रहितछे तो हुं केम तेनो एटले परपुद्गलनो संग करूं ? हुं अरूपी छुं तो रूपीवस्तुने केम पोतानी मानुं ? हुं विजातिथी न्यारोछु तो माराथी भिन्न विजातिय पुद्गल द्रव्य तेने केम पोतानुं मानुं ? मारा शुद्ध स्वरूपे हुं रमुं तो हुं अखंड आनंदमयछुं. विकल्प संकल्प रहित हुं छुं तो विकल्प संकल्पने हुं पोताना केम मानुं ? अने विकल्प संकल्प हुं केम करूं ? अने ज्यां सुधी विकल्प संकल्प करूं त्यां सुधी सुखी केम थाउं ? तेमज निर्विकल्प एवुं मारुं स्वरूप पण शी रीते पामुं ? विकल्प संकल्प करवा ए मारा आत्मानो शुद्ध स्वभाव नथी तो हवे हुं स्थिर असंख्यप्रदेशमय उपयोगी थाउं ? अने गाढ निद्रानी पेठे सर्व माया जाळने भूली जाउं, तो मारो अनुभव आगो आर विचारतां थाय अने एम निर्विकल्प दशामां रहेतां आत्मशक्तिनी आविर्भावप्रकाश, क्षायिकभावे, दृढध्यान संततियोगे आत्मगुणो स्फुरायमान थाय, विकल्प संकल्प श्रेणि परंपरानाश थवाथी सहज अनुभव सुखराशि प्रगटे, अने अनादिकाळ सलग्न आधि व्याधि उपाधिरूप धूप नाश पावे. सारांश के—आधि व्याधि उपाधिना दुःखोनुं मूळ कारण कर्मनी प्रकृतियोछे. अने द्रव्य कर्मरूप प्रकृतियोनुं आत्मानी साथे जे बंधावुं ते रागद्वेष परिणतिथायछे.

रागद्वेष परिणतिनी नष्टता ज्ञान ध्यानथीछे. आत्मा स्वस्वभावमां रमण करतो अनंत भवोपार्जित कर्मराशिने दूर करेछे अनुक्रमे सर्व कर्म प्रकृति विकृति समूलतः क्षय करी परमात्मस्वरूपने प्रगटावेछे, आत्मज्ञानथी एतादृश् सुखोत्पत्तिज्ञान कि-

पामी शकेशकी शकतो.

आत्मानुं स्वरूप दर्शावेछे.

" जाति नहि हे आत्मकुं "—आत्माने जाति नथी एटले ब्राह्मण जाति, वनिक् जाति, कणबी, सोनार, लुवार. ढेड. चंडाळ, इत्यादिजाति आत्मानी स्वरूपतः विचारी जोतां बिलकुल जणाती नथी. जाति देहकुलने आश्रितछे, आत्मा अरूपी तेथी न्यारोछे. माटे जातिमान् आत्मा नथी. कोइ जात्याभिमानथी हुं ब्राह्मण छुं, हुं वनिकछुं, हुं रजपुत छुं. हुं कणबी छुं. एम अज्ञानयोगे जाति अध्यास पोताना आत्मामांमानी लेछे ते आत्मपद प्राप्त करी शकतो नथी. वस्तुतः विचारी जोतां मालुम पडेछेके जगत्व्यवहारमां जाति एक संज्ञा मात्र छे, आत्मामां सदा ब्राह्मणत्व क्षत्रियत्वादि जाति कदी रहेती नथी अने रहेशे पण नहीं, व्यवहारमार्गे जातिनी कल्पना छे पण ते वस्तुतः सत्य नथी माटे जातिनो अध्यास आत्मामां धारण करवाथी परिणत्मपदनी प्राप्तिनो वियोग थतो नथी. जेम आकाशमां कोइ जाति नथी. तेम आत्मामां पण कोइ जाति नथी अभिमानवाळा जडजीवो आत्मअनात्म विवेकशून्य बनी परमां अहंममत्वबुद्धिथी रागद्वेष परिणति भजी मानसिक अनेकशः संतापो अनुभवी आर्त रौद्रध्यान वड थइ अधोगति प्राप्त करेछे. " जस-जाति अभिमान " जेने जातिनुं अभिमान छे ते बाह्य पदार्थोमां धर्म मानेछे, जातिना अभिमानथी लोको परस्पर एक बीजानी निंदा करेछे. एक बीजाने जाति अभिमानथी हलका गणेछे. जात्यभिमानी जीव जातिमां रागी थयो रहेछे. उंची जातिवाळो हलकानो स्पर्श तो नीच जातिवाळाने हलको गणेछे. पोतानी जातिमां राग बंधाय छे, अने अन्य जातिमां द्वेष बंधाय छे. पोतानी जातिमां ज धर्मछे अपर जातिमां धर्म रहेतो नथी एम कदाग्रहथी भवमां बंधायछे.

माटे तेवा जीवो बहिर् दृष्टिपणाथी चिदानंद आत्मामां सदा रहेला धर्मने प्राप्त करी शकता नथी. जात्यभिमानी जीवनी अंतर्दृष्टि थती नथी, तेतो क्षणे क्षणे हुं ब्राह्मण छुं, हुं क्षत्रीयछुं, हुं वाणियोछुं, एवी बुद्धि धारण करेछे, पण हुं ब्राह्मण नथी, हुं वणिक् नथी, हुं क्षत्रिय नथी, एवी बुद्धि धारण करी शकतो नथी, श्री यशोविजयजी उपाध्याय पण समाधिशतकमां कहेछे के—

" दुहा. "

जाति देह आश्रित रहे, भवको कारण देह ॥
तातें भव छेदे नहीं, जातिपक्षरति जेह ॥ १ ॥

इत्यादिकथी विचारतां पण जात्यभिमानी आत्मधर्म साधी शकतो नथी, माटे आत्मधर्मार्थी मुमुक्षु जनोए आत्मानुं स्वरूप समजवुं, अने बाह्य जात्याभिमानरूपभ्रमबुद्धि त्यागी अंतर्दृष्टिथी आत्मधर्म साधवो, परमार्थ शिक्षा इत्येवं.

" दुहा. "

लिंग देह उपर रहे, आतमथी छे भिन्न;
तेमां शुं रंगाइये, रंगातां दुःख दीन. १२८
वर्णाश्रमना भेदथी, माने जे मन धर्म;
सत्य धर्म ते नवि ग्रहे, बांधे उलटां कर्म. १२९

भावार्थ—पुरुषलिंग वा स्त्रीलिंग आदि लिंग देहाश्रित छे, देह ज्यारे आत्माथी भिन्न छे, अलबत आत्मानी देह नथी त्यारे लिंग आत्मनुं कहेवायज केम ? पुरुषादि त्रणे लिंगो आत्माने कर्मोपाधिना संबंधथीज कहेवाय छे, हुं पुरुष ए अभिमान मनुष्य धारण करतो मायान्ध बनी हुं असंख्यप्रदेशी आत्मा एवो विवेक

भूली जाय छे, पुरुष लिंग मात्र थयुं ए कर्मना उदयथी छे, तेमां अहंता धारण करवी ते अज्ञानी जीवनुं लक्षण छे, पुरुष वा स्त्रीना अध्यासथी घणानां आपणुं आत्मानुं शुद्ध स्वरुप भूलीएछीए, हुं अने मारुं ए अभिमानथी त्रण जगत्‌मां कोइ आत्मानंदानुभवी थयो नथी अने थवानो नथी माटे वस्तुतः मिथधर्मसाधक भव्यात्माओ लिंग अध्यासथी केम परमां रंगावुं जोइए ? अर्थात् कदी पण लिंगाध्यास मनमां स्फुरवा देवो नहीं, अने एमां जो रंगाशुं तो दुःख थशे दीन एटले गरीब अवस्था मात्र थशे एमा संशय नथी. कोइ मर्द पुरुषने चंपालाल, नपुंसक कहे तो त्वरित तेना मनमां आवशे. के मने नपुंसक कहेनार कोण ? एम संकल्प थतां क्रोधनो आविर्भाव थतां मुख तोबरा जेवुं फुली जशे. वखते चंपालालने त्रण चार अपशब्दो पण संभळावे, परस्पर एक बीजानो अपकर्ष करवा बाकी राखे नहीं, ए लिंगाभिमाननुं फळ छे. माटे विवेकनयनाधिष्टानाओए परमात्मपद प्राप्त्यर्थ अन्तर्दृष्टि सार्थी एतादृश अभिमानने त्यजवो, ज्यां सुधी लिंगाध्यास छे त्यांसुधी जीव हुं परमात्मा छुं एवी दृढ भावना धारण करवाना अभावे जन्म मरणनी उपाधि संचय संग्रहेछे.

वर्ण, तेमज आश्रमभेदे जे आत्मिकशुद्धधर्मनो भेद मानेछे, ते शुद्ध शाश्वत आत्मधर्म प्राप्त करतो नथी, सत्यधर्म तेवा व्यवहारजडजनथी समजातो नथी. अने कदापि तेवा पुरुषनी आगळ कोइ सत्य धर्मनुं दर्शावे तोपण कदाग्रहग्रस्त थवाथी वचनामृतो पण तेने विषवत् परिणमेछे, अने सत्य धर्म ते आत्मानो पोताना सहज स्वभावे सदाकाळ पोतानाथी जरामात्र पण दूर नथी तेने अज्ञानान्धजीव विपरीत दृष्टिथी जाणी शकतो नथी.—जडमां आत्म धर्मना अभिनिवेशथी उल्टुं कर्म संग्रही तेना उदये अधोगति भजे छे,

यशोविजयजी उपाध्याय पण समाधि शतकमां कहेछे के:—

लिंग देह आश्रित रहे, भवको कारण देह;
तातें भव छेदे नहीं, लिंग पक्षरत जेह. १
जाति लिंगके पक्षमें, जिनकूं है दृढ राग;
तातें भव छेदे नहीं, जाति पक्ष रति जेह. २

जाति लिंगना पक्षमां जेने दृढ राग छे ते भवान्त कदापि करी शकता नथी. आत्माने जाति नथी के लिंग नथी जेम स्वप्नमां अनेक प्रकारनी जातियो तथा लिंगो धारण करायछे, अने ते जागीने जोतां कंइ भासतुं नथी, तेम जाति अने लिंगाध्यास पण ज्यारे आत्माभिमुख चेतना थायछे त्यारे स्वप्नवत् लागेछे. हुं पुरुष वा स्त्री नथी. आ मंत्रनो मनमां १००८ वार जाप जरा श्रद्धा राखीने जिज्ञासु कर, पछे तारा मनमां केवा प्रकारना विचारो आवेछे ते विचार अने पहेलांना विचारोमां केटलो फेर पडेछे ते विवेकथी विचार. एकवार आ मंत्रप्रयोग श्रद्धाथी जे अजमावशे तेने अनुभवनी मालुम पडशे, हुं चंपालाल, मनसुखलाल नथी एम अर्ध कलाक पर्यंत धारणा करवाथी प्रथमनी अवस्था अने चालती अवस्थाना विचारोमां एक मोटो भेद पडतो पोताने मालुम पडशे, अने आत्म धर्म प्राप्त करवानी जिज्ञासानो उद्भव थशे. शुं त्यारे जाति लिंग मानवुं खोटुं छे, तो कोइ पोताने अमुक जातीवाळो कहीने बोलावे तो बोलवुं नहीं ? वा कोइ कहे के तुं पुरुष छे के स्त्री छे ? त्यारे एम कहेवुं के हुं तो पुरुष वा स्त्री पण नथी. आम जो वर्ताए तो चाले केम ? तेना प्रत्युत्तरमां समजवानुं के-अंतर्थी जाति वा लिंगनो अध्यास धारण करवो नहीं ? व्यवहारथी जाति वा लिंगना व्यवहारो कराय छे तेम करवा, पण अंतर्थी पोताना

मानवा नहीं. तेमज जाति या लिंग आश्रित धर्म मानवो नहीं. धर्म आत्मानो अने धर्मी आत्मा अरूपी छे अने ते देह तथा जातिथी भिन्न समजवो. ए ज परमार्थ.

कुलाचारनी रीतमां, जे माने मन धर्मः
धर्म मर्म समजे नहीं, ले नहीं शाश्वत शर्म.१३०

भावार्थ—जे भव्यो अज्ञानताथी पोताना कुलना आचारमां धर्म मानेछे ते धर्म मर्म समजता नथी. अने धर्मज्ञानना अभावे शाश्वत शर्म पामी शकता नथी. कुलाचारनी प्रवृत्ति दरेकनी भिन्न भिन्न होयछे, अने ते प्रमाणे सर्व मनुष्योनी प्रवृत्ति थया करेछे, ज्ञानी पुरुषो कुलाचारनी रीतिमां धर्म मानता नथी. प्रायः कुलाचारनी रीति जे देशमां जे धर्म चालतो होय तेनी मिश्रताथी थइ होय छे,—जैनोनी कुलाचारनी रीति जैन धर्म फीलोसोफीथी मिश्रितछे, माटे जैनोनी कुलाचारनी रीतिमां धर्मना हेतुओमानो अंतर्भाव वर्त्ते छे. माटे तेनाथी विपरीत वर्तवुं नहीं—बाल जीवोने कुलाचारनी रीति पण व्यवहारथी धर्म साधनमां कारणी भूतछे आ वचन योग्यतामां दीर्घदृष्टिथी विचार करतां घणो ऊंडो परमार्थ समायोछे, ते अपेक्षाए उपरथी होइ बाल्य जनोना जाणवामां आवशे नहीं,—जैन धर्मनी सत्यताथी ते धर्म जे लोको आचरेछे तेनी कुलाचारनी रीति पण धर्मकारणमिश्रित होयछे, माटे श्रावकना कुलाचारे पण जे धर्मनी श्रद्धा—आचार ते श्रेयस्कर छे, जेम कोइ कुवामां पाणी (जल) ना होय अर्थात् सुकाइ गयुं होय तो पण ते खोदवा गाळवाथी जलनी सेरो फुटी कुवामां पाणि नीकळशे,—तेम जैन धर्म पण कुलाचारथी पाळतां ज्ञानीगुरुनो संग थतां तेनुं रहस्य समजातां—समकीतनी प्राप्ति थशे, माटे समजु भव्यजनोए आ बाबतनो विचार करवो—हालनो समय प्रथमना जेवो नथी, माटे जैनीओए

नहीं समजतां पण लौकिक देवगुरुनो त्याग तेमज देवपूजा-गुरुवंदन जैन देरासरे जवुं अन्यत्र नहीं, ए विगेरे ओघथी पळातो आचार पण धर्मनुं अंग जाणी त्यागवो नहीं, ज्ञानियोनी दृष्टिमां ते हलको छे, पण बालजीवोने तेथी चढवानुं छे, श्रावक कुलमां उत्पन्न थएलो माणस एटलुं तो समजशे के अरे हुं तो जैन छुं, मारो धर्म जैन छे, एम मानी अन्य धर्म मानशे नहीं, तेम गुरुनो संग थतां समजतो थशे–कुलथी पण जैन धर्म पाळनार, कुळमां उत्पन्न थनार विशेष धर्म समजशे नहीं तो पण मारो जैन धर्म छे एटलुं पण धर्माभिमान आवशे माटे सापेक्षपणे विचारतां व्यवहारनयथी श्रावक कुळाचारमां मवर्त्त थनारने धर्मनो माप्तिछे, अन्य कुळमां उत्पन्न थनारने माटे नहीं,–एकांत वादीओ कुळाचारमां धर्म मानेछे तेना निषेधपर आ वचन छे. जाति संबंधी पण अंतर् अभिमान त्याग करवो. कोइ एम चिंतवे के आपणे वर्णावर्ण गण्याविना ढेढ भंगी ख्रीस्ति विगेरे सर्वनी साथे खावुं पीवुं, तेथी आपणो आत्मानो अभडातो नथी, त्यारे तेनी साथे खावा पीवामां शो दोषछे? आम कोइ सहेज भ्रष्ट बुद्धिथी कहे तेनो मत्युत्तर के जे जातोनी साथे खावापीवानो व्यवहार नथी तेनी साथे खावाथी जाति अभिमान टळ्युं कंइ कहेवातुं नथी, पण अंतरमां जाति अभिमान बिलकुल नहीं रहेवाथी अभिमान टळ्युं कहेवाय छे. जाति अभिमान ज्यांथी उत्पन्न थायछे त्यांथी तेनो नाश करवो जोइए. एज मुख्य परमार्थछे, इत्यादि घणुं कहेवानुं छे पण विस्तारभयथी लख्युं नथी, द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भावनो विचार करी चालवुं.

हवे कुसाधु संबंधी कहेछे.

" दुहा. "

सत्य धर्म समजे नहीं, दे उलटो उपदेश;
धर्म मर्म समज्या विना, अंतरमां व्हे क्लेश. १३१
स्त्रीविषयाशक्ति घणी, त्याग विराग न लेश;
मन चंचल जेनुं सदा, लजवे साधु वेष. १३२
शिष्य थइने रीसथी, वर्ते गुरुनी साथ;
आत्महित ते नहि करे, विनयी ले शिवपाथ. १३३
कपटी काव्या कागडा, कुगुरु कर्मचंडाल;
संगकदी करवो नहीं, भवतस अरहट्ट माळ. १३४

तत्त्वनो उपदेश अज्ञानी कुगुरुओ सत्य आपी शकता नथी. अने उलटां कर्म ग्रहेछे ते जणावेछे.

भावार्थ–आत्मानुं स्वरूप सम्यग् जाण्या विना जे गुरु एवुं नाम धरावेछे, ते कुगुरु जाणवा, धर्मनो मर्म जरा मात्र समज्या विना आत्मापरमात्मानो उपदेश आपवा तैयार थइ जायछे, जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष, इत्यादिनुं किंचिदपि ज्ञान होय नहीं, तेम छतां उपदेश आपे तेवा कुगुरुओ मनमां क्लेश पामेछे, अने पोते पण बूडेछे, अने बीजाने पण बूडावेछे, आ वचन लौकिक कुगुरु अने लोकोत्तर कुगुरुना उपदेशने उद्देशी कहुंछे, सामान्यनीति शिक्षण हितशिक्षा तो परस्पर मनुष्यो एक बीजाने आपेछे, तेनुं आ ठेकाणे ग्रहण थयुं नथी. फक्त धर्मना उपदेश माटे लखवानुंछे, धर्मनो उपदेश आपवाने साधुओने अधिकार छे, संसारमां रात्रीमाथी रहेना श्रावकोने तो धर्मनो उपदेश ..

संसारी अवळा फरे, संवळा फरे फकीर;
नमो नमो ते सद्गुरु, भयभंजन वडवीर. १३८

भावार्थ—हे आत्मा सद्गुरु संगत्या आत्मतत्व समजी बाह्यनी एटले धन, धान्य, क्षेत्र, स्त्री, पुत्र, गृह, हाट, राज्यादि जे पर वस्तु तेनी ममता त्यजी हे चेतन तुं तारा अंतर्धनने देख-ज्ञान दर्शनचारित्र रुप अंतर् धन आत्मानी अंदर रह्युंछे तेने हे आत्मा निहाळ, अंतर् धन ताराथी दूर वा भिन्न नथी, अंतर् धननी प्राप्तिथी अपूर्व शान्तिनो भोगी आत्मा बनेछे, अंतर्धन विना क्षायिक सुखनी प्राप्ति कदी थवानी नथी. दरेक ग्रंथोमां आत्म स्वरुपना हितने माटे विवेचन छे, सात नयथी सम्यग् आत्मानुं स्वरूप जाणवुं. एकांत पक्षथी आत्म स्वरुप जे जाणेछे ते सम्यग् परमात्मपदनी प्राप्ति सन्मुख थइ शकता नथी. आत्मानुं ध्यान मनन करवाथी आत्मगुणोनो आविर्भाव थायछे, ते संबंधी श्री देवचंद्रजीए आत्मस्तुति नीचे प्रमाणे करीछे.

स्तवन--ध्यानदीपिका.

गुण अनंत धर जीवने, बंधे भवमे कर्म-धरोनिज भावना-ए टेक.

राग द्वेष मुख हि वहढया, शत्रु हणु धरी ध्यान. धरो०
आतम लखो निज ज्ञानथुं, बाळी कर्म अज्ञान. ध० २
कर्म हणु तिम ध्यानथुं, जेम न पडुं भवमहि. ध०
भवज्वर अज्ञाने नडया, नवि दीठो शिव राह. ध० ३
परमातम जग गुरु ठग्यो, निरस विषयने संग. ध०
सर्वज्ञ आत्म नवी लेखीयो, भ्रम अज्ञाने रंग. ध० ४
आत्म स्वरूप पिछाणवा, ज्ञान दृष्टिए करी देख. ध०
पंच ध्येय अरु आत्मा, ज्ञान गुण एक लेख. ध० ५

निल्य छनोछे सहम ते, केवल गुण गुन मांहि. ध०
मोह दारु त्यां पीदवे, ज्ञान अमृत ज्यां नांहि. ध० ६
कर्म उदय चउगति भमुं, निश्चय सिद्ध स्वरूप. ध०
कर्मने भजुं केम हुं, अनंत चतुष्टय भूप. ध० ७
तजी आशा निज शक्तिथुं, हुं आनंद स्वभाव. ध०
छेद अज्ञान अनादिनो, आज लह्यो निज दाव. ध० ८
एम जाणी धीरज धरी, रागादि मल खोय. ध०
ध्यावे आतम शक्तिथुं, धर्म शुक्ल ध्यान होय. ध० ९
ध्यान ध्येय स्वरूपथी, ध्यातो स्ववेद ध्यान. ध०
कर्महीन सर्वज्ञता, निर्मल शील भगवान. ध० १०
जड चेतन जीवादि ए, ध्येय स्वभाव विभागि. ध०
ध्यान लहो मन स्थिर करो, ज्ञान ध्याए आणि. ध० ११
परमेश्वर परमात्मा, ध्येय अरूपी देव. ध०
द्रव्यार्थिक नय शाश्वतो, ए परमातम सेव. ध० १२
मचटुम सपकर शुद्धछे, ज्ञान थकी पर भिन्न. ध०
जगत् सकल आदर्श ज्युं, जीर्ण ज्योतिमय. ध० १३
दर्शन ज्ञान आनंदमय, अक्षर विगत-विकार. ध०
इंद्रि विणुं निकल गुणी, शान्त जाण शिवधार. ध० १४
शुद्ध अष्ट गुण युक्तछे, निर्मल अभेय अभेय. ध०
पर त्यागी अक्षय गुणी, ज्ञानीने आदेय. ध० १५
अणुथी पण जे सूक्ष्मछे, धंमथी पग जे वृद्ध, ध०
जगत् पूज्य निर्भय सदा, परमातम शिव सिद्ध. ध० १६
ध्याने कर्म सहु गले, जगगुरु अमल अरूप. ध०
जिण जाणे सहु जाणीये, जाय अविद्या धूप. ध० १७
तत्त्व दृष्टि निज धीर हुवे, जागे निज अनुभूति. ध०

धरो ध्येय ज्ञेय आदेय ते, अंतर आतम भूत. ध० १८
वचन अगोचर भ्रम विता, चिनरी सहज अनंत. ध०
जास ज्ञानमें अंशज्युं, मावे द्रव्य अनंत. ध० १९
आत्म ज्ञानथी आतमने, जाण्यां थाये सिद्धि. ध०
मुनि तन्मय गुग तिहां ल्हे, तजी ग्रहीका नहीं लब्धि. ध० २०
लीन थइ ग्रहे एकता, ध्याता ध्यान सु ध्येय ध०
परमात्मा अंतरात्मा, एक अभिन्न अमेय. ध० २१
फटमे फट कर्त्ता तणी, दिसे दुविधा रीति. ध०
पण ध्यान ध्येय ए आत्मा, एगी नवीय परतीत. ध० २२
भवमें भम्यो अज्ञानथी, विण लाधा निज नाण. ध०
परम ज्योति जग दुःखहरु, तेहिज अनुभव जाण. ध० २३
भावे एम निज भावना, ध्यान बीज गुणधाम. ध०
देवचंद्र सुख सागरु, ध्यान अमूलख पाम. ध० २४

श्री देवचंद्रजी पण ए प्रमाणे आत्म स्वरूपनुं वर्णन करेछे. गुण विशिष्ट आत्माने संसार चक्रमां वर्ततां आत्मस्वरूपनी अनुपयोगताए परस्वभावमां रमणपणाथी परपुद्गलरूप जे कर्म तेनुं ग्रहण समय समय प्रति थतुं जायछे, माटे हे चेतन स्वस्वरूप रमणता रूप निजभावनानो दृढ प्रयास अने स्थिरताथी आदर कर. अनादि कालथी तुं परभाव एटले पुद्गल द्रव्यना वर्ण, गंध, रस स्पर्श, मय पर्यायोनी लालचमां–तृष्णामां, ग्रहणमां, ममत्त्वमां, पराभिमुख चेतना करी अशुद्ध परिणति धारी, स्वभाव भूली लोभायो पण परवस्तु पोतानी थइ नहीं उलटुं राग द्वेपनायोगे पुद्गल द्रव्यने आकर्षी कर्मरूप परिणमावी अनेक योनिमां विचित्र देहो धारी स्वऋद्धिनुं आच्छादन करी परपुद्गुल भोगी थइ राजा जेवो पण तुं

रंक बन्यो, राग द्वेषरूप शत्रुने हणी आत्मीयध्यानमां मग्न थाउ, अने ज्ञान शक्तियी निजस्वरूप जाणुं. आत्मज्ञान थतां परमां बंधाएलो अज्ञानाध्यास स्वतः दूर थायछे, आत्मा निर्मल थतां परमात्मा कहेवायछे–तेनुं स्वरूप कहेछे.

श्लोक.

साकारं निर्गताकारं, निष्क्रियं परमाक्षरं ।
निर्विकल्पं च निःकंपं, नित्य मानन्दमन्दिरम् ॥ १

आत्मा ज्ञानरूप उपयोगथी साकारछे, तथा दर्शनरूप उपयोगथी निराकारछे तथा आत्मा निष्क्रिय निश्चय नयथी जाणवो.

प्रश्न–शरीरस्थ आत्मा सक्रियछे, अनेक प्रकारनी खावा पीवानी गमनागमननी क्रिया करेछे, छतां ते निष्क्रिय केम जाणवो?

उत्तर–ज्यां सुधी जीवना प्रदेशोनी साथे कर्म लाग्युंछे त्यां सुधी ते सक्रियछे–अने कर्मनो नाश सर्वथा थतां निर्मल सिद्ध बुद्ध परमात्मा निष्क्रियछे. शरीरस्थ आत्मा व्यवहार नयथी सक्रियछे कर्मनो संबंधछे माटे, अने निश्चयनयथी अक्रिय जाणवो. वस्तुतः आत्मानुं जेवुं स्वरूप होय तेवुं निश्चयनय वर्णवे छे, माटे आत्मानुं वस्तुतः ध्यान करतां निष्क्रिय भावशो, अने छे पण निष्क्रिय.

परमाक्षरं–क्षर एटले खरवुं, पोतानुं स्वरूप बदलवुं. परम एटले सर्वोत्कृष्टपणे पोतानुं स्वरूप नहि फेरवनार आत्माछे, अनादि कालथी विभाव दशाणेजे भवचक्रमां आत्मा परिभ्रमेछे तोपण तेना असंख्यात प्रदेशमांथी एक प्रदेश पण खरी गयो नहि, तेमज अनंत गुणोमांनो एक गुण पण खरी गयो नथी, माटे आत्मा अक्षर. निश्चयदृष्टिथी जाणवो. यद्यपि आत्माना प्रदेशोनुं तथा गुणोनुं

कर्मथी आच्छादन थयुंछे तोपण प्रदेशों तथा गुणोनो नाश थयो नथी तेम पण थवानो पण नथी त्रण कालमां अक्षर रूप आत्माछे;

प्रश्न—परमाक्षर असंख्यात प्रदेशी आत्मा कीडी अने हाथीना शरीरमां एक सरखो केम मनाय ? कीडीनुं शरीर छोडी ज्यारे हाथीनुं शरीर धारण करे त्यारे तेनो विकास थयो, अने ज्यारे हाथीनुं शरीर त्यागी कीडीनुं शरीर धारण करे त्यारे आत्मानो संकोच थयो, असंख्य प्रदेशी आत्मानो संकोच विकास थयो त्यारे ते नाना शरीरमां लघु अने मोटा शरीरमां महान् थयो त्यारे आत्मानुं एकसरखुं रूप रह्युं नहीं, देहमात्र व्यापी जीव थयो तेनुं केम ?

उत्तर— गाथा.

जह पउम राय रयणं, खित्तं खीरं पभासयदि खीरं॥
तह देही देहथ्थो, सदेहमत्तं पभासयदि १

छाया.

यथा पद्मराग रत्नं, क्षिप्तं क्षीरे प्रभासयति क्षीरं;
तथा देही देहस्थ, स्सदेह मात्रं प्रभासयति· १

भावार्थ—पद्मरागरत्न दुग्धथी भरेला वासणमां नांखीए तो ते रत्नमां एवो गुण छे के-तेनी प्रभाथी सर्व दुग्ध तद्वर्णमय थइ रहेछे. जो नानी वाटकीमां दुग्ध भरी अंदर पद्मरागरत्न नांखीए तो पद्मरागना रंग सरखुं सर्व दूध थइ जायछे. तेमज मोटुं कुंडुं होय तेमां दूध भरी पद्मराग रत्न नांखीए तो ते रत्ननी प्रभा तेटला सर्व दूधमां व्यापी जायछे. तथा संसारी जीव पण अनादि काळथी कपायोद्वारा मलीन थतो शरीरमां रहेछे. शरीरमां असंख्यात प्रदेशोवडे व्याप्त थइ रहेछे, स्निग्ध पौष्टिक आहारथी जेम जेम शरीर

वृद्धि पामेछे. तेम तेम शरीरनी अंदर रहेला आत्मप्रदेशो पण तेटला शरीरमां व्याप्त थायछे. मोटा शरीरमां जीवप्रदेशो विस्तारपूर्वक रहेछे, नाना शरीरमां शरीरने व्यापी रहे तेवी रीते आत्मप्रदेशो रहेछे. असंख्यात प्रदेशनी व्यक्ति स्वरूप जीव जाणवो, जो के आत्मा शरीरादि परद्रव्यथी जुदोछे तोपण संसार अवस्थामां अनादि कर्म संबंधथी नाना प्रकारना विभाव भाव धारण करेछे ते विभाव भावोथी नवीन कर्मबंध थायछे, वळी ते बांधेलां कर्मोना उदयथी फरी एक देहथी देहान्तर धारण करेछे, अने तेम अशुद्धकारक चक्रथी संसारवृद्धि पामेछे, संसार अवस्थामां जीव कर्मसहित होय छे अने मोक्षदशामां कर्मरहित आत्मा सादि अनंतभांगे सदा समय समये अनंत सुख भोगवतो वर्तेछे, संसारी यद्यपि आत्माछे तोपण तेनी सत्ताथी असत्छे, तथा सत्तातः निर्विकल्प आत्मा जाणवो, विकल्प संकल्प मनना योगे थायछे, विकल्प संकल्प योगे राग द्वेषमां आत्मा परिणमेछे, हुं आत्मा ज्यारे विकल्प रहितछुं तो केम विकल्प संकल्प करूं ? परभावमां रमतां विकल्पादि उद्भवेछे, माटे परभावमां रमणता निवारवी, बाह्यदृष्टि योगे आत्मा परभावमां परिणमेछे माटे मुमुक्षु भव्यजनोए बाह्यदृष्टि प्रचार वारवा माटे अंतर्दृष्टिथी आत्मधर्म तरफ क्षणे क्षणे लक्ष्य आपवुं, अंतर्दृष्टि थतां बाह्यवस्तुमां परिणमतो मननो वेग अटकतां मन अंतरात्मा प्रति वळेछे, एम प्रतिदिन सतत दृढ अभ्यास थतां पोतानी ऋद्धिनो स्वयं अनुभव थायछे. कह्युं छे के.—

श्लोक.

बहिर्दृष्टि प्रचारेषु, मुद्रितेषु महात्मनः ।
अंतरेवावभासंते, स्फुटाः सर्वाः समृद्धयः ॥ १ ॥

महात्माने बहिर्दृष्टिना प्रचारो बंध थए छते पोताना

आत्माथी न्याराछे, चक्षुथी देखाता आकारो अने स्वप्नमां देखाता आकारो पुद्गल द्रव्यनाछे. अने पुद्गल द्रव्यथी आत्मा त्रणे कालमां निश्चयनयतः जोतां भिन्नछे, माटे भिन्न वस्तुमां आत्मपणानी बुद्धि भ्रांति मात्रछे, माटे जेवी स्वप्नमां देखाता पदार्थोमां मारापणानी बुद्धि खोटी तेना सरखीज चक्षुथी देखाता पदार्थोमां मारापणानी बुद्धि खोटी जाणवी.

प्रश्न—त्यारे चक्षुथी देखाता सर्व पदार्थो असत्य समजवा? अने जो ते असत्यछे तो तेमां ममत्व भाव केम उत्पन्न थायछे.?

प्रत्युत्तर-चक्षुथी देखाता सर्व पदार्थो पुद्गलना पर्यायोरूपे सत्य एटले अस्तित्व युक्त जाणवा, अने ते पुद्गल पर्यायरूप पदार्थो आत्मस्वरूपे नथी एटले आत्माथी भिन्नछे, आत्मपणुं तेमां कंइ नथी माटे आत्मअपेक्षाए ते असत्य जाणवा, आत्मद्रव्यमां पुद्गल पर्यायरूप पदार्थोनुं अस्तित्व नथी किंतु आत्मद्रव्यमां पुद्गल पर्यायरूप पदार्थोनी नास्तिता सदा समये समये परिणमी रहीछे, तदपेक्षया असत्य जाणवा, अने पुद्गलरूपे ते सत्य जाणवा, माटे पुद्गल वस्तुओ ज्ञानदृष्टिथी जोतां आत्माथी अत्यंत भिन्नछे तेमां मारापणानी बुद्धि अज्ञान तथा मोहथी उत्पन्न थायछे, ज्यारे अज्ञान नाश थतां ज्ञान प्रगटेछे त्यारे मोहनो नाश थतां परवस्तुमां थती अहंममत्वबुद्धि नाश पामेछे.

शंका—ज्यारे आ प्रत्यक्ष देखातुं शरीर पोतानुं नथी एम जाण्युं त्यारे कोइ शरीरनो घात करे तो शुं करवा देवो?

समाधान-कोइ शरीरनो घात करे तो बिलकुल करवा देवो नहीं. अने उलटुं शरीरनुं संरक्षण करवुं यतः शरीरमाद्यं खलु धर्म

साधनं प्रथम तो शरीरज धर्म साधनमां कारणीभूतछे. यतः कयुं छे के–

श्लोक.

शरीरं धर्मसंयुक्तं, रक्षणीयं प्रयत्नतः
शरीराज्जायते धर्मः पर्वतात्सलिलं यथा. १

भावार्थ–धर्म संयुक्त एवा शरीरनुं यत्न पूर्वक रक्षण करवुं, कारण के जेम पर्वतथी नदी उत्पन्न थाय छे तेम शरीरथी धर्मनुं साधन थाय छे ने वळी कयुं छे के शरीरंच पुद्गल धर्मत्वात् आहाराधारं–शरीर पुद्गल रूपछे माटे ते आहारना आधारे रहेछे कयुंछे के–

गाथा.

देहो अ पुग्गलमओ । आहाराइ विरहिओ न भवे॥
तय भावे नय नाणं । नाणेण विणा कओ तित्थं. १

भावार्थ–देह एटले शरीर पुद्गलमयछे, अने ते शरीर आहार विना होतुं नथी. तेना अभावे ज्ञान नथी अने ज्ञान विना तीर्थ नथी. पूर्वे बार वर्षनी दुकाली पडी हती त्यारे आहारना अभावे श्रुत ज्ञाननी विस्मृति घणी थइ गइ माटे आहार पण श्रुत ज्ञानना अभ्यासमां चारित्र पालनमां कारणीभूतछे. अने आहार विना ज्ञान नाश पामेछे, आहार पुनः बे प्रकारनोछे, सावद्य आहार अने निरवद्याहार–जीवमय जे आहार ते सावद्याहार, अने जीव रहित जे आहार ते निरवद्याहार–सावद्यआहार भक्षणथी कर्म बंध थायछे. माटे मोक्षाभिलाषिजीवोए निरवद्याहारनुं ग्रहण करवुं, तेमां मुनिराज तो सर्वथा सावद्याहारना त्यागी होयछे, सावद्यआहारना निमित्तथी जीवो सप्त नरक पर्यंत गमन करेछे यतः कयुंछे के–

गाथा.

आहार निमित्तेणं, जीवा गच्छंति सत्तमिं पुढवीं।
तंडुल जसं आहरणं, भणियं सुत्ते जिणंदेहिं· १

भावार्थ–आहारनो अभिलाषी तंडुल तत्स्य बीजा जीवोने भक्षण करवानी इच्छामात्रथी सातमी नरक सुधी जायछे. माटे भवभीरु मुनिवर्यो शुद्धआहार संयमार्थे ग्रहण करेछे, यतियोने आहार शुद्धि अति दुष्कराछे कह्युं छे के–

गाथा.

आहारे खलु सुद्धी, दुलहा समणाण समणधम्मंमि।
ववहारे खलु सुद्धी, दुलहा गेहीण गिहधम्मे· १

श्रमणोने श्रमण धर्ममां वर्ततां निर्दोष आहारनी प्राप्ति दुर्लभछे, म गृहस्थोने गृहस्थावासमां वर्ततां व्यापारादिमां व्यवहार सुधी लभछे. शुद्ध आहारथी शरीरनुं पोषण संयमार्थम् श्रमणो करेछे संगथी आहारनुं विवेचन करी शरीर धर्मसाधनमां कारणी भूत े एम सिद्ध कर्युं, धर्मीजीवोनुं शरीर धर्म माटेछे तेम पापी जीोनुं शरीर पाप माटे जाणवुं. चतुरशीति लक्ष जीवयोनि परिभ्रण करतां दुष्प्राप्य मनुष्य शरीर चिंतामणि रत्न जेवुं पामी जे नुष्यो खावा पीवामां, तेमज विषय सुख भोगववामां, मोज मजा ारवामां शरीरनी सार्थकता समजेछे, ते जीवो मूढ अविवेकी पशु मान जाणवा. देवताना शरीर करतां मनुष्य शरीर अत्यंत उपोगीछे. मनुष्य शरीरथी मोक्ष प्राप्ति थायछे, बीजा शरीरथी मोक्ष ाप्ति थती नथी, माटे शरीरनुं आहारादिकथी पोषण करवुं. रोगादिक ाये छते रोगनाशार्थ औषध दवा करवी. कोइ शरीरनो घात करे ा करवा देवो नहिं कारण के शरीर विना धर्म साधन थतुं नथी.

निंद्य आर्तध्यान अने रौद्रध्यानमां आत्मा परिणमी अनेक प्रकारनां कर्म वांधेछे. अने बहिर्भावे राचीमाची अनेक जन्मनी वृद्धि करे छे.

जेम कुंभकार चक्रने एकवार वेग आवेछे तेथी ते चक्र चकरचकर घणी वखत सुधी भम्या करेछे तेम मनने आर्तध्यान, रौद्रध्यानना चिंतवननो एकवार वेग आप्याथी घणा वखत सुधी आर्तध्यानादिमां परिणमी रहेछे. रागद्वेषनो वेग आत्माने आपवाथी घणा काल सुधी आत्मा रागद्वेष वेग जोरे संसारमां परिभ्रमण करेछे, माटे अत्र सार ए ग्रहवानोछे के–धर्मनो वेगजो आत्माने आपवामां आवे तो मुक्तिपद आत्मा पामे, तत्पद अर्थे सदाकाल एम भाववुं के–देखाती वस्तुओमां हुं नथी. त्यारे मारे कंचन कामीनीने केम मारी मानवी ? वा मनमां तेनुं चिंतन केम थवा देवुं. कारण के ते वस्तुओ पोतानी नथी तो निरर्थक ते संबंधी विचार मारे केम करवो घटे ? हुं एटले आत्मा जेमां नथी तेमां रागद्वेषथी परिणमवुं मारे केम घटे. कदापि जाणोके शरीर निर्वाह आदि अर्थे ते वस्तुओनुं ग्रहण करवुं पडे तोपण उदासीन भावे ग्रहण करवुं. अंतर्थी ते वस्तुओथी हुं न्यारोछुं एवा उपयोगनी स्थिरताए रहुं. पण तेमां रागद्वेषथी परिणमवुं योग्य नथी. संसारनां कार्यो करुं पण तेमां लपटाउं नहीं एवी रीते वर्तवुं तेज आत्माने हितकारीछे, देखाती वस्तुओ पुद्गलना पर्यायो जाणवा, पुद्गलनो सडण पडण, विध्वंसन स्वभावछे. पुद्गलना पर्यायो अनेक आकाररुपे देखायछे. अने पाछा विखरी जायछे. जेम संध्या समये पुद्गलना पर्यायो अनेक रंगरूपे परिणमेछे अने क्षणमां नष्ट थइ जायछे तेम चक्षुथी देखाती वस्तुओ विचित्र वर्ण गंध रस स्पर्शमय देखायछे अने वळी ते पाछी जुदा आकाररूपे परिणमी

एम थवानुं कारण इश्वरना हाथमांछे एम कहीए तो आपणे इश्वरने गेर इन्साफी अने दया विनानो ठेरवीए छीए, कर्मथी ज आवा अवतारो बनेछे. इश्वरने सुख दुःख आपनारो मानवुं ए न्यायथी विरुध्ध तेमज महा अज्ञान जाणवुं. इश्वर कोइने सुख दुःख आपतो नथी. जीव, पुण्य, पाप रुप कर्मना अनुसारे सुख दुःख पामेछे एम श्री तीर्थंकर भगवान् कहेछे, तीर्थंकर केवळ ज्ञानीछे माटे ते सत्य पदार्थ स्वरूप कथेछे. माटे तेमना वचन उपर विश्वास राखवो. पुनर्जन्म सिध्धि सर्व प्रमाण सिध्धछे, चोराशी लाख जीवयोनिमां परिभ्रमण करतो जीव महापुण्योदये मनुष्य जन्म पामेछे.अमूल्य चिंतामणि समान मानवतनुं पामी भवोदधिनो पार पामवो एज कर्तव्यछे. संसाररूप समुद्र तरवा मनुष्यावतार एक वहाण समान छे. मनुष्यरूप वहाणमां आत्म रूप उतारु बेठोछे. आत्मोपयोग रूप खलासी वहाणने चलवेतो वहाण सम्यग् मार्गे चाले. समुद्रमां तृष्णा रुप मोटी भमरीओ आवेछे तेमां वहाणने बुडवा नहीं देतां शुध्धोपयोग रुप खलासी समुद्र पार वहाण उतारे माटे हे चेतन तुं शुध्धोपयोगनो आदर कर के जेथी तुं अनंत शाश्वत सुख पामे.

तुं क्यां जाइश—परभवना पुण्यथी मानसिक शक्तिवाळं मानव तनु प्राप्त थयुंछे ते आयुष्यनी मर्यादा सुधी अंते रहेछे. पश्चात् ते शरीरमांथी आत्मा जुदो पडेछे. कोइ आत्मा महापाप करी नरक गतिमां संचरेछे. नरको सातछे, पहेली करतां बीजी नरकमां विशेष दुःखछे, बीजी करतां त्रीजीमां विशेष दुःख जाणवुं. सर्व करतां सातमी नरकमां विशेष दुःख भोगववुं पडेछे, उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनुं आयुष्य सातमी नरकना जीवोनेछे जे जीवो हजारो गायो भेंसो बकराने रेंसी नांखेछे अने तेथी पोतानुं गुजरान च-

ज्ञानो त्याग थाय अने वैराग्य प्रगटे त्यारे प्रायश्चित्त लेवायछे, जे जे गुप्त पापो कर्या होय तेने बीजानी आगळ कहेवाथी जीव डरेछे वा लज्जा पामेछे. पण मोक्षाभिलाषी जीवोए गुरु पासे लोकवासना त्याग करी प्रायश्चित्त ग्रहण करवुं. व्रतभंगनुं प्राय-श्चित्त ग्रहनार जीव आराधक जाणवो. मनमां शल्य राखवुं नहीं कहुं छे के—

गाथा.

ससल्लो जइवि कट्ठुग्गं, घोरं वीरं तवं चरे।
दिव्ववास सहस्सं तु, तओवि तं तस्स निप्फलं १
सल्लुद्धरण निमित्तं, गीयस्स नेसणाउ उक्कोसा।
जोयण सयाइं सत्तउ, बारस वरिसाइं २
आलोअणा परिणओ, सम्मं संपट्ठिओ गुरू सगासे।
जइ अंतरावि कालं, करिज्ज आराहगो तहवि· ३
लज्जाइगारवेणं, बहुस्सुअ मएणवाविदुच्चरिअं।
जो न कहेइ गुरुणं, नहु सो आराहगो भणिओ· ४
जह बालो जंपंतो, कज्जमकज्जं च उज्जुअं भणइ।
तं तह आलोइज्जा, मायामयविप्पमुक्कोअ· ५
न वि तं सथ्थं व विसंवर, दुप्पउत्तो च कुणइ वेआलो।
जं तं च दुप्पउत्तं, सप्पो व पमाइओ कुद्धो· ६

: माटे उपरोक्त भावार्थ समजी सद्गुरु पार्श्वे कृत पापोनी व्रत भंगोनी आलोचना लेवी गुरु गीतार्थ जाणवा तेमनी पासे आलोचना लेवी सातसे योजन तथा बार वर्ष सुधी गंभीर

गीतार्थ पासे आलोचना लेवानी धीरेच्छा राखवी, तथा आलोचना लेनार पण आत्मार्थी सरलनो अभिलाषी होवो जोइए. गुरुनी पार्श्वे पापनो पश्चात्ताप करतो प्राणी कर्मथी हलवो थायछे अने निर्मल थयेलो निशल्य भव्यात्मा सत्पंथे चालेछे, जेम कोइना उदरमां बगाड थइ ते अजीर्ण थयो होय तो ते माणस वैद्यने नाडी देखाडेछे, वैद्य तेनी वर्तणुक पुछी लेछे, कया कया पदार्थो खावामां आव्या हता ते पुछेछे त्यारे रोगी पण सर्व भान करेछे पश्चात् वैद्य तेना शरीरने सारुं करवा प्रथम मळ शुद्धि जुल्लाब आपेछे. पश्चात् बीजी दवाओ आपेछे, तेम गुरु महाराज पण अनेक प्रकारना पापोनी आलोचना रूप जुल्लाब आपी तेनुं हृदय शुद्ध करेछे पश्चात् आत्महितने माटे अन्य मार्गो, प्रभो बतावेछे माटे हे चेतन तुं हवे विचार कर अने नरकना हेतुओ दूर कर. श्रीवीरभगवाननी मशीए माथाना वाळ जेटला थगो कर्या एम प्रभुनी पासे पश्चात्ताप कर्यो तेथी सर्व पाप जतुं रहु, हे चेतन आर्तध्यान जो मनमां करीश तो तिर्यंचनी गतिमां जाइश. धर्मध्यानथी देवगति मनुष्यगति प्राप्त थायछे अने शुक्ल ध्यानथी मोक्ष स्थान प्राप्त थायछे. माटे चेतन-चारे गतिनां द्वार तारे माटे खुल्लांछे, जेवां कृत्य करीश तेवी गतिमां जाइश-आयुष्य पूर्ण थतां, देवता मनुष्य तिर्यंच अने नरक ए चार गतिमांथी गमे ते गतिमां कर्मानुसारे तुं जाइश-एक गतिमांथी नीकळी बीजीमां, बीजीमांथी नीकळी त्रीजीमां, एम अनादि काळथी तुं चतुर्गतिमां परिभ्रमण करेछे. चतुर्गतिमां परिभ्रमण करावनार कर्मछे. कर्माष्टक प्रकृति रूप द्रव्यकर्म जाणवुं. राग अने द्वेष रूप भावकर्म जाणवुं, राग अगर द्वेषना विचारो कर्याथी जीव पुद्गल स्कंधोने कर्म रूप परिणमावी ग्रहण करेछे.

दरेक माणस पोते करेला रागद्वेषना विचारोथी ज पोताने कर्मनी जाळमां घेरी लेछे, एम समजवानुंछे.–विचारमां समायला जोखमनो ख्याल नही होवाथी रागद्वेषना सर्वे विचारो सुखेथी आवया देछे. हवे एवा विचारोथी रागद्वेषना संस्कारो उत्पन्न थायछे. अने ते राग द्वेषना संस्कारो पोताना बनावनार उपर दबाण करी तेनी पासे फरीथी तेवा विचारो उत्पन्न करावेछे के जेनी अणसमजु लोकोने खबर नहि होवाथी तेम थतुं अटकाववानी कोशेश करवाने बदले उल्टुं वारंवार तेवाज विचारो उत्पन्न थवा देछे, अने तेनुं छेवट परिणाम एवुं आवेछे के एकज विचार बे पांच वखत कीधाथी माणस पोते रागद्वेषना कबजामां आवी जायछे. अने ते पछी रागद्वेष, निंदा, शोक, मोह, अदेखाइ, बुराइ, चोरी, असत्य, व्यभिचार, हिंसा, कपट, विश्वासघातना विचारो माणसनी मरजी उपरांत तेनाथी थइ जायछे, एवी रीते राय द्वेष मोह मायाना विचारोना बंधनमां जीव पडेछे, कर्मनो कर्त्ता पोते अने जेमां बंधानार करोळीयाना जाळनी पेठे पोते ज छे, जे नठारा विचारो अजाण पणे फरी फरीथी करवाथी तेमां पोते बंधाइ जाय छे वळी रागद्वेष मोह, माया, मत्सर, रुप नठारा विचारो थी छेवटे नठारुं काम थइ जायछे के जेनुं कडवुं फल भोगवती वेळाए ते दुःखी थायछे, दुःख खमती वखते तेने पोताना करेला कर्मथी छूटो थवानी इच्छा थायछे. अने फरीथी एवुं नठारुं काम नहीं थाय अने नठारो विचार नहीं आवे तेने माटे हवे ते सावचेत रहेवानी कोशेश करेछे. उत्पन्न करेली रागद्वेषनी टेवो घणी बलवान तथा अनादि कालथी होवाथी शरुआतमां तो मनुष्य निरुफळ जायछे, एटले तेनी मरजी उपरांत रागद्वेष मोहना विचारो आवी जायछे, अथवा तो खराब काम थइ जायछे. पण लांबो वखत पो-

तानी महेनत चालु राखवाथी छेवटे ते रागद्वेष मोह मायाना खराब विचारोने अटकावी शकेछे. अने तेम कीधाथी रागद्वेषथी बंधेलां कर्मनो पण ते नाश करी शकेछे, मनोजय अभ्यासथी थायछे. रागद्वेषना विचारोथी मनुष्य आवता भवने माटे नवां कर्म संग्रहेछे. तेथी परभवमां जन्म लेवो पडेछे, जन्म जरा मरणथी आत्मा खरुं सुख भोगवी शकतो नथी माटे हवे मनुष्य भवमां चेतवानुं छे, दरेक मनुष्यो पोतानी बुद्धि अनुसारे सुखी थवा महेनत करेछे–कोइ राज्यथी सुख मानी लेछे. कोइ पैसाथी तो कोइ स्त्रीथी कोइ कुटुंबथी तो कोइ पुत्रादिकथी सुख माने छे पण ते पुद्गल वस्तुओमां सुखनी बुद्धि धारवी ते केवल अज्ञानछे, खरुं सुख आत्मामां रह्युंछे, ते सुख आत्म ध्यानथी प्राप्त थायछे. श्री तीर्थंकर महाराजाए मोक्षनुं सुख सत्य कथ्युंछे, अने मोक्ष तो आत्मा कर्मथी मुकाय त्यारे मळे छे, मोक्षनुं सुख कंइ वातोना गपाटा मारवाथी मळतुं नथी. पण ते माटे सांसारिक सुखनी इच्छा त्यागी मोक्ष सुख प्राप्त करवा मुख्यताए चारित्र मार्ग आदरवो जोइए.

प्रश्न–चारित्र विना शुं मुक्ति नथी मळती ?

उत्तर–श्री सर्वज्ञ ज्ञाननुं फळ विरति कथ्युंछे माटे विरतिरूपचारित्र सर्व कर्मनो क्षय करेछे, विरति पणुं बे प्रकारेछे–देशविरति अने सर्व विरति–देशविरतिपणुं व्रतधारी श्रावकने होयछे. अने सर्वविरतिपणुं मुनीश्वरने होयछे. श्री तीर्थंकर महाराजाओ पण दीक्षा अंगीकार करेछे, जेटला तीर्थंकर थया अने थशे ते सर्व सर्वविरतिरूप चारित्रने ग्रहण करेछे. ज्यारे तीर्थंकरने दीक्षा लेवानो समय थायछे त्यारे लोकांतिक देवता वीनति करवा प्रभु पासे आवेछे. हे प्रभो आप दीक्षा लेइ जना जीवोनो उद्धारणत् करो, भव्यो विचारो के जेने

केवल ज्ञान उत्पन्न थायछे तेवा तीर्थंकर महाराजाओ पण चारित्र अंगीकार करेछे अने गृहस्थावासनो त्याग करेछे. तो बीजा भव्यजीवोने चारित्र विना मुक्ति शी रीते मळे ?अने वळी शास्त्रमां पण कह्युंछे के-

गाथा.

दंसण नाण जुओ विहु। न कुणइ कम्मक्खयं चरण रहिओ।
नाणरुइ जुओ विज्जुव्व । किरिय रहिओ अरोगत्तं १

भावार्थ-दर्शन अने ज्ञानवडे सहितपण प्राणी चारित्र विना कर्मनो क्षय करतो नथी. जाणकार वैद्य क्रियाहीनपणाथी रोग रहित थाय नहीं तेनी पेठे-वळी कह्युं छे के-

गाथा.

बहुभवं कयंपि कम्मं । खवइ चरित्तमप्पकालंमि ।
चिर संचि इंधण भरं । खणेण निद्दहइ जह जलणो१
एग दिवसंपि जीवो । पव्वज्ज मुवागओ अनन्नमणो।
जय वि न पावइ मुक्खं। अवस्स वेमाणिओ होइ २
अथ्यव ता एग दिणं। अंतमुहुत्तंपि चारु चरण जुओ।
खवइ असंखिज्ज भव । ज्जियंपि जीवो बहु कम्मं.३
सुइरंपि चरण विणा। न दिंति नाणं च दंसणं सिवं।
वरचरित्त जुयाइं । खणेण ताइं सिव फलाइं । ४

भावार्थ-बहु भवनां कर्यां कर्मने चारित्र अल्प काळमां क्षय करेछे घणा काळनो संचित इंधण समूहने जेम अग्नि बाळी भस्म करेछे तेनी पेठे अन्यत्र चिन नथी. अने आत्मस्वतामां विनराई

एवुं चारित्र एक दिवसनुं जो मोक्ष न आपे तो पण वैमानिक देवपणाने आपे.

भाव सहित भावचारित्र एक अंतर्मुहूर्तमां पण असंख्यभवार्जित पापनो क्षय करे, ज्ञान अने दर्शन ए बे पण चारित्र विना मोक्ष आपी शकतां नथी. माटे सम्यग्ज्ञानदर्शनचारित्राणि मोक्षमार्गः ज्ञान, दर्शन, अने चारित्र मोक्षनो मार्ग जाणवो. भावचारित्रथी पण पोताने मुक्तिनी प्राप्ति थायछे. चारित्र विना रागद्वेषनो जय थतो नथी. माटे कह्युंछे के–ज्ञान विना चारित्र नहि, चारित्र विना नहि मुक्तिनां सुख छे जाणवां। ते केम मरीए मुनिवरे–इत्यादि महापुरुषोनां वचनथी चारित्र मार्ग भावकर्मनो क्षय करनार बलवत्तर जाणवो. हव चारित्र पालवा असक्त होय ते श्रावकव्रत अंगीकार करे तेथी पण मननो शनैः शनैः जय थायछे. अने मोक्षाभिमुख थवाय छे.

हवे भव्यात्माओने समजवानुं के–श्रावकनां व्रत वा साधुनां व्रत अंगीकार करीने पण रागद्वेषनो क्षय करवानोछे, मनने जीत्या विना रागद्वेषनो क्षय करवो दुर्लभछे, अने आत्मज्ञान छे ते षड्द्रव्य तेना गुण पर्यायना ज्ञानविना तथा वैराग्यविना थतुं नथी. मन पवन करतां पण घणुं चंचलछे. पवनने जेम मुठीमां झाली राखवो तेम मनने पण वश राखवुं दुर्लभछे, आत्मस्वरूप चिंतवनना कुण्डमां मनने लगाडवुं ए सिवाय बीजो रस्तो पलोजपनो नथी. प्रथम स्थिर दृष्टि राखीने जोवुं के मनमां क्या क्या (शा शा) विचारो थायछे, तुरत जोतां हजार विचारो आवता जणाशे ते वखते एम चिंतववुं के हे आत्मा ! ए विचार त्हारा नथी; तुं तेनाथी भिन्नछे, त्हारे एणी तरफ लक्ष आपवुं नहि, एम विचारी तुरत आत्मगुणोना चिंतनमां वळवुं, अरूपी आत्मा केवी रीतेछे ? तेनो विचार करवो.

प्रथम अभ्यासमां मनविचार करतां वंध रहेतुं नथी. माटे तेने कंइक उद्यम तो जोइए. माटे आत्मस्वरूप चिंतवनमां मनने दोरवुं. एटले मन वहिरनी हजारो वस्तुओमां भटकतुं पोतानी मेळे वंध थशे. मनने वहिरनी वस्तुओमां भटकवाथी जेवो आनंद मेळेछे तेवो पहेलां मळशे नहीं. जेम नानां छोकराने निशाळे जतां जेवुं कंटाळा भरेलुं लागेछे तेम तथा कोइ पंखीने प्रथम पांजरामां पुरवामां आवेछे त्यारे जेम कंटाळा भरेलुं तेने लागेछे तेम पेला छोकराने ज्यारे निशाळमां भणतां समजण पडेछे त्यारे कंटाळो थतो नथी. अने पंखीने जेम पांजरामां खावो पीवानो आनंद थायछे तथा तेना धणीनी साथे हळी मळी जायछे त्यारे स्थिर थायछे तेम मन पण आत्मध्यानमां प्रथम कंटाळी जायछे. पण ज्यारे तेने स्थिर आत्मध्यानमां करवामां आवेछे त्यारे कंइक स्थिर थायछे. अने अंते तेना उपर काबु मेळवी शकायछे. अने ते वासना विषयोमां भटकतुं नथी अने शान्त जेवुं थइ जायछे. पश्चात् निर्विकल्पमय आत्मस्वरूपमां स्थिर उपयोगदृष्टिनी धारा वृद्धि पामेछे तेथी भव्यात्मा आत्माना असंख्यप्रदेशे लागेलां घणां कर्म निर्जरावेछे, अने निराधार स्वपर प्रकाशक बने माटे परमपदनी चाहना करनारे प्रथम मनोजय करवो आवश्यकछे. श्री आनंदघनजी महायोगी कहेछे के—

श्री कुंथुनाथजीना स्तवनमां—

मन साध्युं तेणें सघळुं साध्युं, एह वात नहिं खोटीः
इम कहे साध्युं ते नवि मानुं, ए कंइ वात छे मोटी हो, कुंथुजिन॰

जेणे मन वश कर्युं तेणे मुक्ति सुख वश कर्युं एम कहेवुं अतिशयोक्ति भर्युं नथी माटे पहेलां तो दरेक अभ्यासीए मन काबुमां राखवुं, जेम घोडाओ गाडी गमे त्यां घसडी जायछे. माटे तेओने काबुमां राखवा पडेछे, तेम इंद्रियो रुपी घोडाओ आ शरीररुपी

द्वेषरूपी जन्द आत्माने वळग्यो छतो अनेक प्रकारनां तोफान करे छे अने आत्मानुं भान भुलावेछे, चूडेल अने जन्दने कोइ महा उस्ताद मंत्र वादी काढेछे तेम आत्माने लागेलो रागरूपी चूडेल अने द्वेषरूप जन्द ते उस्ताद गीतार्थ गुरुना उपदेशरूप मंत्रथी दूर थायछे त्यारे आत्मा अत्यंत सुखी थायछे आ ठेकाणे शिष्यना आत्मामां रहेला रागद्वेषने काढवामां गुरु बलवान निमित्त कारण जाणवा, अने उपादन कारण तो शिष्यना आत्मानी शुद्ध परिणति जाणवी. आत्मानी शुद्ध परिणति थाय त्यारे आत्मा निर्मळ थइने पामेछे, निश्चय नयथी कहेवानुं जे पोतानुं शुद्ध स्वरुप, तन्मय आत्मा बनतां लोक अने अलोक तेना केवलज्ञानमां प्रकाशेछे. ज्ञानावरणीय कर्म नाश पामेछे त्यारे अनंतज्ञान उत्पन्न थायछे.

प्रश्न–ज्ञानावरणीय कर्म क्यां रहेतुं हशे ? अने तेनुं ग्रहण शाथी थतुं हशे ?

प्रत्युत्तर–ज्ञाननुं जे आच्छादन करे ते ज्ञानावरणीय कर्म-ज्ञानना पंच प्रकारछे पंच प्रकारनुं ज्ञान आच्छादन करे तेथी ज्ञानावरणीय कर्म पण पंच प्रकारनुं जाणवुं. पुद्गलना स्कंधोने आत्मा अशुद्ध परिणतियोगे ज्ञाननुं आच्छादन करे तेवा करे पोताना असंख्य प्रदेशोनी साथे क्षीर नीरनी पेठे परिणमावे ए उपरथी स्पष्ट समजाशे के क्षीर नीरना मळवाना संबंधनी पेठे ज्ञानावरणीय कर्म आत्माना प्रदेशोनी साथे रहेछे अने ते ज्ञानावरणीय कर्मनुं ग्रहण अज्ञानयोगे अशुद्धपरिणतिथी ग्रहण थायछे.

जेम सूर्यनां किरणोनो प्रकाश वादळांना आच्छादननी आवाय , तेम आत्मानुं सूर्य सदृश जे ज्ञान ते ज्ञानावरणीय कर्मथी आवरायछे. तेथी आत्मज्ञान स्वपर प्रकाशकरूप कार्य करी शकतुं नथी.

हवे ज्यारे ज्ञानावरणीयकर्मनो नाश थायछे त्यारे अनंतज्ञान उत्पन्न थायछे, दर्शनावरणीय कर्मनो सर्वथा नाश थवाथी अनंत दर्शन उत्पन्न थायछे. तथा शाता अने अशाता वेदनीयनो सर्वथा क्षय थवाथी अनंत अव्याबाध सुख उत्पन्न थायछे. मोहनीय कर्मनो सर्वथा क्षय थवाथी क्षायिक सम्यक्त्वनी तथा चारित्रनी प्राप्ति थायछे, आयुष्य कर्मनो क्षय थवाथी आत्मा सादि अनंत स्थिति पामेछे. सारांश के-आयुष्य कर्मथी मुक्त थयेलो जीव सिद्धशिलानी उपर एक योजनना २४ चोवीस भाग करीए तेमांना त्रेवीस भाग मूकी चोवीसमा भागे एक समयमां सिद्धिस्थानमां जीव विराजेछे त्यां गयानी आदिछे पण त्यांथी पडवानुं नथी माटे अंत नथी. माटे सादि अनंतमा भांगे सिद्धमां मुक्त थएल मुक्तात्मा रहेछे. नामकर्मना नाशथी आत्मा पोतानुं अरूपीरूप आविर्भाव करेछे. गोत्रकर्मना नाशथी आत्मा अगुरु लघुगुण प्राप्त करेछे. अंतराय कर्मना नाशथी आत्मा सहज जे अनंतवीर्य तेने प्रगट करेछे एम ए आठ कर्मना नाशथी आत्मा अष्टगुणने प्रगट करेछे. अने परमात्मारूपे थायछे, पंचमीगति मोक्ष तेनी प्राप्ति कर्मना क्षयथीछे, एम जीवने चारे गतियोमां जवानां कारणो बताव्यां तेमज पंचमीगतिमां जवानो मार्ग याने उपाय बताव्यो. आत्मा जेवुं वर्तन चलावशे तेवी गतिमां जशे. ए स्पष्ट वात छे. कयांथी आव्योने क्यां जाउंछं ? ए संबंधी विचार लख्यो, हवे पंचम विषय संबंधी विचार लखेछे.

पंचमविषय-मनुष्य जन्मनी साफल्यता शाथी-पंचमगति साध्य क-रवाथी मनुष्य जन्मनी साफल्यता थायछे. पुण्यपापक्षयान्मुक्तिः पुण्य अने पापना क्षयथी मुक्ति पद मळेछे शुभ कर्मने पुण्य कयेछे अने अशुभ कर्मने पाप कयेछे. शुभ वा अशुभ कर्म पौद्गलिक छे. बे प्रकारना कर्मने पण आश्रव कहेछे. शुपुण्य-

भाश्रव कहेवाय छे अने पापने अशुभाश्रव कहेवायछे. आत्माने अनादि कालथी आश्रव एटले कर्म लाग्युंछे, क्षीरनीरवत् आत्मा अने कर्मनो संबंध थयोछे. आत्माना असंख्याता प्रदेशो छे तेमां प्रति प्रदेशे अनंति कर्मनी वर्गणाओ लागीछे. एकेक वर्गणा मध्ये अनंता पुद्गलपरमाणुछे एम अनंता परमाणु जीव साथे लाग्याछे. वर्णगंधरस अने स्पर्शमय परमाणुओनी वर्गणाओ जाणवी, जीवद्रव्यने लागेला परमाणुथकी अनंत गुणा परमाणुओ छूटाछे–कर्म सहित आत्मद्रव्य पण सत्ताथी सिद्ध परमात्मा समानछे. जीव द्रव्य नित्य पणछे अने अनित्य पणछे कह्युंछे के.–

गाथा.

निच्चानिच्च सरूवा, भावा सव्वेवि ताव तियलोए ॥
उप्पाय विगम ठिइ धम्म, संगया ते पुणो एवं. ॥१॥
पुव्वभवपज्जएणं, विगमोइह भवगएण उप्पत्ती ॥
जीव दव्वेण ठिइ, निच्चा निच्चत्तमेवंतु ॥ २ ॥

नित्य अने अनित्य स्वरूपी सर्वे पदार्थो त्रिलोकमां वर्तेता उत्पादव्यय अने ध्रौव्यना धर्ममय जाणवा, एक पदार्थमां उत्पादव्यय ध्रौव्यता केवी रीते थायछे ते बतावेछे–

यथा जीवद्रव्यमां पूर्व भवना पर्यायनो विनाश अने आभवना पर्यायथी उत्पाद अने जीव द्रव्यत्वपणे ध्रौव्यता एम त्रण धर्ममय जीव पदार्थ जाणवो, जीव द्रव्यमां गतिपर्यायथी उत्पाद व्यय ध्रौव्यता दर्शावी, आत्माना संसारावस्थामां अशुद्धपर्याय जाणवा वली स्थूलदृष्टि उत्पाद व्यय ध्रौव्यता वर्णवेछे ·

गाथा.

कुंडल विगमो मउड प्पाओ कणगं अवठियं जहा ॥
तहसव्वेवि पयथ्था, जीवोनेओ पुणो एवं ॥ १ ॥

कुंडलरूप पर्यायपणे सुवर्णनो नाश अने तेनो ज्यारे मुकुट बनाव्यो त्यारे मुकुटरूप पर्यायपणे सोनानो उत्पाद, अने सुवर्णपणे ध्रौव्यता कुंडलमां तेम मुकुटमां पण बनी रहीछे, सोनुं कायम बनी रहुंछे सुवर्णमां सुवर्णना पर्यायोनो एटले आकारोनो उत्पाद व्यय थया करेछे. तेम अत्र जीवद्रव्यमां पण अनंत गुणोनो उत्पाद व्यय समये समये थया करेछे. एम धर्मास्तिकायद्रव्य, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने उपचारे कालमां पण उत्पाद व्यय थया करेछे, अने ध्रौव्यतापणुं सदा अवस्थित छे, षड्द्रव्य द्रव्यार्थिकनयापेक्षया नित्य जाणवां अने पर्यायार्थिकनयापेक्षया अनित्य जाणवां. जीवे धारण करेला मोटा शरीरमां वा नाना शरीरमां आत्माना असंख्यात प्रदेशो सरखा जाणवा-ते वात दृष्टांतथी दर्शावेछे-

गाथा.

संकोय विकोएहिं, पईवकंतिव्व मल्लगगिहेसु ॥
हथ्थिस्सव कुंथुस्सव, पएससंखा समाचेव ॥ १ ॥

मृत्तिकाना नाना वा मोटां कुंडामां दीवानी कान्ति संकोच अने विकाश करी युक्त जेमछे. एटले नाना कुंडामां दीवानी कांति संकोचरुपे रहेछे, अने तेज पाछी दीवानी कांति मोटा कुंडामां विकाशपणे रहेछे, तेम जीव पण हाथीनुं शरीर पामतां तेमां आत्माना प्रदेशोना विकाशथी सर्व शरीरने व्यापी रहेछे. तेम कुंथुवानुं शरीर जीव ज्यारे ग्रहेछे त्यारे तेटला शरीरमां जीवना असंख्यातप्रदेशो

व्यापीने रहेछे. कर्म संयुक्त संसारी जीव शरीरमां वस्योछे तेनी अपेक्षाए नानामां नानुं अंगुलना असंख्यातमा भागनुं शरीर धारण करेछे माटे अंगुल असंख्यातमा भाग जेवडो आत्मा कहेवायछे. अने केवली समुद्घात करतां जीव लोकप्रमाण असंख्यात प्रदेशो विस्तारेछे माटे तदपेक्षाथी लोकप्रमाण आत्मा कहेवायछे. मोक्ष दशामां आत्मा अक्रिय थवाथी एकरुपे आत्मानी स्थीति रहेछे. शुद्धबुद्ध सिद्ध परमात्मामां पण उत्पाद व्यय ध्रौव्यता बनी रहेछे.

प्रश्न—हे सद्गुरो! संसारावस्थामां शरीर प्रमाणे आत्माना प्रदेशोनो संकोच विकोच थायछे त्यारे आत्माना प्रदेशो एक बीजा प्रदेशथी जुदा पडता हशे के केम—;

प्रत्युत्तर—तेवी स्थितिमां जो के आत्माना प्रदेशोनो संकोच विकाश थायछे तोपण प्रत्येक प्रदेशो एक बीजा प्रदेशोनी साथे नित्य संबंधे संबंधितछे. तेथी आत्माना प्रदेशो संकोच विकाशताने पामेछे तोपण एक बीजाथी जुदा पडता नथी. अग्नि तणखाओनी पेठे सर्वथा भिन्न आत्माना प्रदेशो जो पडे तो असंख्यात प्रदेश मळीने एक आत्मा कहेवाय नहीं, अने आत्मापणुं नष्ट थइ जाय. माटे अरुपी आत्माना प्रदेशो संकोचविकाशने संसारी अवस्थामां पामेछे तोपण तादात्म्य संबंधे संबंधीत होवाथी कोइ कालमां जूदा पड्या नथी अने पडशे पण नहीं. एवो प्रदेशोमां स्वभाव रह्योछे ते केवलीना ज्ञानगम्यछे, अनुभवीओ ए वातने सम्यग् अनुभवेछे.

प्रश्न—आत्माना असंख्यात प्रदेशने ठेकाणे एक प्रदेश मानीए तो कंइ हरकत आवे;

उत्तर—हा हरकत आवेछे, श्री सर्वज्ञ महाराजे आत्माना असंख्यात प्रदेश दीठा छे तेथी एक प्रदेश केम मानी शकाय, हे शंका-

थाती मने केवलज्ञान थयुंछे के एम कही शके. ना. त्यारे असंख्यात प्रदेश आत्माना छे एम श्रद्धा कर. प्रति कल्पनाथी कंइ काम थतुं नथी. वळी हे शंकावादी गुरुकदृष्टिथी समज के ज्यां आत्माना प्रदेशोछे ते आत्माना प्रदेशोने व्यापीने ज्ञान अनंतपणुं रहुंछे, प्रति प्रदेशे अनंतु ज्ञान रहुंछे. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान अने केवलज्ञान ए पंचमांनुं कोइपण ज्ञान आत्माना प्रदेशोने त्यागीने रहेतुं नथी. हवे आत्मानो असंख्यात प्रदेश न मानीए नहींतो एक मोटो विरोध आवेछे.–

शिष्य--हे सद्गुरो आत्माना असंख्यात प्रदेशो मानीए नहीं तो मोटो शो विरोध आवेछे–ते कृपा करीने कहो.

सद्गुरु–प्रथमतो केवली केवलीसमुद्घात करेछे. लोकाकाश प्रमाण आत्माना प्रदेशो कर्मनुं परिशाटन करवा विस्तारेछे. अने कर्म भोगवी लेछे ते वातनो विरोध आवेछे एक प्रदेश लोकाकाश प्रमाण विस्तारतो नथी तेथी शी रीते कर्मनुं परिशाटन करे नागो पम्हाडे शुं अने नीचोवे शुं एवी वात थइ, वळी बीजो विरोध ए आवेछे के.–ज्यारे चतुर्दशपूर्वी शंका पुछवा माटे आहारकशरीर, लब्धिथी बनावी सीमंधर स्वामी पासे मोकलेछे त्यां जइ ते शरीर शंका पुछी तीर्थंकर सीमंधरस्वामी पासेथी उत्तर लेइ जल्दी आवेछे. हवे कहो के–चउदपूर्वीए बनावीने मोकलेलुं जे आहारक शरीर तेमां आत्माना प्रदेशो खरा के नहि ?

शिष्य–हा सद्गुरो ते आहारक शरीरमां आत्माना प्रदेशो होवा जोइए– जो ते आहारक शरीरमां आत्माना प्रदेशो न होयतो ज्ञान विना भगवानने प्रश्न शी रीते पूछे. अने भगवान्

वाणीथी उत्तर आपे ते आहारक शरीरमां आत्माना प्रदेशोना होयतो समजी शकाय ते विना उत्तरनो अर्थ शी रीते समजे अने उत्तर अमुक प्रकारनो छे ते कोण धारण करी शके-माटे अवश्य आहारक शरीरमां आत्माना प्रदेशो मानवाज जोइए. श्री तीर्थंकर भगवाने जे वात कही छे. ते सत्यज छे-अनंतज्ञानी सर्व पदार्थनुं बराबर स्वरुप जाणेछे.

सुगुरु-ज्यारे चउदपूर्वीए आहारक शरीर अत्रथी बनावी महाविदेह क्षेत्रमां मोकल्युं त्यारे-बे शरीर थयां एकतो चउदपूर्वीनुं सात धातुथी बनेलुं औदारिक शरीर अने बीजुं महाविदेह क्षेत्रमां मोकलेलुं आहारक शरीर.

हवे बन्ने शरीरमां आत्माना प्रदेशो रहाके नहीं-

शिष्य-हा गुरुजी बन्ने शरीरमां आत्माना प्रदेशो छे. औदारिक शरीरथी तो चउद पूर्वी व्याख्यान वांचेछे. ते समजुं छुं त्यां पण ज्ञान छे. नहीं तो व्याख्यान शी रीते वंचाय. वळी समजुं छुं के-यत्र यत्रज्ञानं तत्र तत्र आत्म प्रदेशाः ज्यां ज्यां ज्ञाननो सद्भाव छे त्यां त्यां आत्माना प्रदेशो जाणवा. अने शरीरमां जो आत्मप्रदेशो होय नहीं तो बन्ने शरीरमां ज्ञान होय नहीं माटे बन्ने शरीरमां ज्ञानथी आत्माना प्रदेशो छे एम नहीं पदार्थ सिद्ध स्पष्ट मालुम पडयुं.-

सुगुरु-हवे ते बन्ने शरीरमां आत्मप्रदेशो छे एम सिद्ध थयुं. हवे समजो के एक प्रदेशी आत्मा होय तो बन्ने शरीरमां ज्ञाननो सद्भाव शी रीते होय, एक प्रदेश जो आत्मानो होय तो एवो बनाव बने नहीं. अने लब्धिथी बीजां शरीर धारण करवानां होतो आवे. वैक्रिय शरीर पण धारण करी शकाय नहीं. आत्माना असंख्य प्रदेशो मान्या सिवाय बन्ने शरीरमां आत्मा·

पणुं घटे नहीं. एम पण सिद्ध थयुं. चउदपूर्वीना आहारक शरीरना दृष्टांतथी बन्ने शरीरमां आत्मप्रदेशो असंख्याता छे एम सिद्ध थयुं अने एक प्रदेशआत्मानो मानवामां बाध आवेछे ते पण सिद्ध कर्युं. युक्त अने युंजान योगियो पण अनेक शरीर धारण करे छे तेमां पण आत्माना असंख्य प्रदेशो जाणवा. तीर्थंकर महाराजे लोकाकाश प्रमाण आत्माना प्रदेशो कथाछे ते वात पण सिद्ध ठरी, अने ते सिद्धछे. हवे आत्माना प्रदेशो संबंधी वर्णन करेछे. आत्माना एकेक प्रदेशे अनंता पर्याय रह्याछे, ज्ञान पण प्रति प्रदेशे अनंतु सदाकाळ शाश्वत समये समये वर्तेछे.

प्रश्न—आत्माना दरेक प्रदेशे जुदु जुदु अनंतज्ञान छे एम मानीए तो एक प्रदेश जुदु जाणवारुप कार्य करे. त्यारे आत्मानो कंइक जुदु जाणवारुप कार्य करे. बीजो प्रदेश वळी कंइ जुदु जाणे. त्यारे एक जाणनार आत्मा रह्यो नहीं.

उत्तर—जो के आत्माना प्रत्येक प्रदेशे अनंतज्ञान सत्ताभावे रह्युंछे तो पण असंख्यात प्रदेशो मळी एक उपयोग वर्तेछे, पण प्रत्येक प्रदेशनो जुदो जुदो उपयोग वर्ततो नथी ते कंइ बाध आवतो नथी. असंख्य प्रदेशो मळी एक आत्मा कहेवायछे, माटे आत्मापणुं नष्ट थतुं नथी. असंख्यप्रदेशो मळी एक समये निर्मल सिद्धात्माने एक उपयोग होयछे तेथी एकज आत्मा जाणवो.

कोइक आचार्य युगपद् उपयोग मानेछे. तथा चनत्वाद:

गाथा.

केइ भणंति जुगवं, जाणइ पासइ केवलीनिअमा ॥
अन्ने एगंतरिअं, इच्छंति सुउवएसेणं ॥ १ ॥

केचित् सिद्धसेनाचार्य वगेरे कहेछे के—युगपत् एककालावच्छेदन केवल ज्ञानी जाणेछे देखेछे–अन्ये जिन भद्रक्षमाश्रमण वगेरे एक समये केवल ज्ञानी जाणेछे अने बीजा समये देखेछे. एटले एक समये ज्ञानापयोग अने बीजा समये दर्शनापयोग एक क्रमवर्तिपणे इच्छेछे–आगमना अनुसारे तेम इच्छेछे. आ बे पक्षनी नंदिसूत्रमां घणी चर्चाछे. त्यांथी विस्तार विशेष जोइ लेवो.

जिज्ञासु–केवल ज्ञान विना मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्यव ज्ञानीने एक समये ज्ञानोपयोग अने बीजा समये दर्शनोपयोगे होय के नहीं.

सुगुरु–केवलज्ञानी विना बीजां ज्ञानवाळाओने एक समये ज्ञानोपयोग अने बीजा समये दर्शनोपयोग व्यक्त होतो नथी.

जिज्ञासु--आत्मज्ञानना छतिपर्याय अने सामर्थ्य पर्याय केवी रीते समजवा ?

सुगुरु–आत्माना असंख्यात प्रदेश पैकी प्रतिप्रदेशे छतापणे अनंत अनंत ज्ञान रहुंछे ते ज्ञाननो त्रिकालमां कदीपण नाश थनार नथी. ते ज्ञानना छतिपर्याय जाणवा, अने ज्ञानमां ज्ञेय पदार्थनो भासनपणो तेथी ज्ञानना सामर्थ्य पर्याय जाणवा. ज्ञेयपदार्थो अनंताछे. अने ते समये समये ज्ञानमां भासेछे, माटे ज्ञेय जे अनंत पदार्थो तेनी भासता कार्य करणशक्तिवाळा जे ज्ञानना पर्यायो ते ज्ञानना सामर्थ्य पर्याय जाणवा. छति पर्यायथी सामर्थ्य पर्याय अनंत गुण विशेष जाणवा. सामर्थ्य पर्याय ते कार्यरूपछे. तथा च महाभाष्ये–यावंतो ज्ञेयाः तावंत एवज्ञानपर्यायाः ते च अस्तिरूपाः प्रतिवस्तुनि अनंताः ततोऽप्यनंतगुणाः सामर्थ्यपर्यायाः जेम एक दोरडो

जम एटले जो जाणवानो छे ते अविभागपणे छता पर्यायछे अने ते दोरडाथी अनेक कार्य थाय, अनेक वस्तुओ बंधाय अने ते अनेकने आधार थाय. तेने सामर्थ्य पर्याय कहिए, तातिरूप जे पर्याय तेनो वस्तुरूपछे. अने सामर्थ्य पर्याय तो प्रवर्तन रूप एटले कार्यरूपछे. तेम अत्र ज्ञानना छति पर्याय-मां अने सामर्थ्य पर्यायमां पण समजवुं-

जिज्ञासु–श्री सर्वज्ञे षड्द्रव्यनी बहार कोइ वस्तु नथी एम कह्युं छे अने नैयायिक सोळ पदार्थ कहेछे. तेनुं केम ?

सुगुरु–षड्द्रव्यरूप छ पदार्थोनी अंदर सोळ पदार्थनो समावेश थायछे. तेथी छ पदार्थ सत्य जाणवा. प्रथम नैयायिक प्रमाणने भिन्न पदार्थ कहेछे ते युक्त नथी कारण के प्रमाण जेटलांछे तेटलां ज्ञानछे अने ज्ञानतो आत्मानो गुणछे तेने भिन्न पदार्थ कहेवाय नहि. प्रमेयपणुं पण षड्द्रव्योनी बहार नथी. बीजा प्रयोजन सिद्धांतादिक ते सर्व जीवद्रव्यनी प्रवृत्ति जाणवी माटे भिन्न पदार्थ कहेवाय नहीं,

जिज्ञासु–वैशेषिक द्रव्यगुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय अने अभाव ए सात पदार्थ कहेछे. तेनो षड्द्रव्यनी अंदर समविश थायछे के षड्द्रव्यथी भिन्न पदार्थछे तेनी यथार्थ स्पष्ट समजण आपो.

सुगुरु–हे जिज्ञासु स्थिर दृष्टि राखी सांभळ. गुणने पदार्थ बीजो कहेवाय नहीं. गुण तेतो द्रव्यमां रयाछे. तेथी गुणने भिन्न पदार्थ कहेवाय नहीं, तथा कर्म ते द्रव्यनुं कार्यछे तथा सामान्य विशेष ए बे तो द्रव्य मध्ये परिणमनछे. वळी समवायने पण द्रव्यमां समायछे, अने अभावतो अछताने कहेवाय ते अछताने पदार्थ मानवो घटतो नथी अभावछे

ते वस्तुनो व्यतिरेक धर्मछे माटे वैशेपिक मतपण पड्द्रव्यमां समाइ जायछे. वळी वैशेपिक द्रव्यना पृथिवी अप, तेज वायु आकाश. काल, दिशा, आत्मा, मन ए नव भेद कहेछे. ते संबंधी समजवुं के–पृथ्वी, अप, अग्नि वायु एतो एकेंद्रिय जीव जाणवा, पृथ्वीरूप शरीर धारण करी जे जीवो रह्याछे ते पृथ्वीकायना जीवो समजवा, अने शरीरतो पुद्गल द्रव्यमां आव्युं. एम ए चार पण आत्मद्रव्य ठर्यो. पण कर्मयोगे शरीर भेदे नाम जुदां पडयांछे. दिशीतो आकाशमां मळी जायछे अने आकाश ए आकाशास्तिकाय द्रव्य जाणवुं. मनतं आत्मानुं संसारीपणामां उपयोग मवर्तवानुं द्वारछे तेथी ते भिन्न द्रव्य कहेवाय नहीं. वैशेपिक मतवादी सामान्य विशेप ए बेने भिन्न पदार्थ मानेछे ते पण युक्त नथी–

गाथा.

तथाहि सकलशास्त्रे पक्षद्वयं,
जातिपक्षो व्यक्तिपक्षश्च तत्रजातिः
सामान्यं व्यक्तिस्तुविशेपः
इतिवचनात् सामान्येतुसर्वेपामेव
नित्यत्वं सत्ताप्रतिपादनपरत्वात्
यथागोत्वाश्वत्वादिकं नित्यं ननु गौर
श्वोवानित्यः व्यक्तिपक्षेत्वनित्यमेव
यस्तुजातिपक्षः सत्वस्माकं
जैनानां द्रव्यार्थिकनयः व्यक्तिपक्षः
स्त्वस्माकं पर्यायार्थिकनयः

भावार्थ-प्रकरणमां पक्ष बे छे. १ जातिपक्ष २ बीजो व्यक्तिपक्ष जाति एटले सामान्य अने व्यक्ति एटले विशेष. एवा बन्नेनो अर्थ जाणवुं. सामान्य एटले जातिपक्षमां सर्व पदार्थोनुं नित्यपणुं जाणवुं कारणके जातिपक्ष समानुं प्रतिपादन करवामां तत्पर छे ते हेतुथी जेमके गोत्व, अश्वत्व, गायपणुं अने अश्वपणुं ए नित्य छे. पण व्यक्तिरूप जे गौ घोडो ते अनित्य छे. जे आ जातिपक्ष छे ते जैनोनो द्रव्यार्थिक नय छे. अने जे व्यक्तिपक्ष छे. तेम जैनोनो पर्यायार्थिक नय छे. जातिपक्ष द्रव्यनुं ग्रहण करे छे अने व्यक्तिपक्ष पर्यायोनुं ग्रहण करे छे. जातिपक्ष ए सामान्य अने व्यक्तिपक्ष ए विशेष छे माटे ते बेनो नयमां समावेश थवाथी सामान्य विशेष षड्द्रव्यथी भिन्न पदार्थ नथी.

जिज्ञासु-पृथिवी, अप, तेज, वायु, ए चार विना बाकीनां पंच नित्य कह्यां छे. तो जैनोना स्याद्वादपक्ष प्रमाणे नित्य अनित्य ए बे पक्ष प्रत्येक द्रव्यमां घट्या नहीं. ते तमो पदार्थोछे ते केवी रीते ते समजावो

सुगुरु-हे भव्य सांभळ, प्रत्येक वस्तुमां ज्ञानदृष्टिथी जोतां नित्य अने अनित्यपणुं रह्युं छे. पृथिवी, अप, तेज अने वायु कार्यरूप न्यायमतमां अनित्य कह्यां छे अने परमाणुरूप नित्य कह्यां छे. आकाश स्वस्वरूपे सर्वकालमां एकरूप छे माटे तदपेक्षया नित्य छे. अने=(घटाकाशोनष्टः पटाकाशोनष्टः) घटाकाश नष्ट थयुं. पटाकाश नष्ट थयुं, एवी रीते घटपटनी उपाधिथी अनित्य पक्षपणुं आकाशमां आव्युं. दिशाकालमां पण तेवी रीते नित्यानित्यपणुं घटयुं=आत्मापि तस्यपक्षे सचदेहेंद्रियव्यतिरिक्तः विभुर्नित्यश्चेति वचनात् तत्र कौटिल्य न्यायेन पारिशिष्यानुमानेन देशाधिशेऽनित्यत्वेति=आत्मा

पण वैशेषिकना मतमां देहथकी भिन्न जे आत्मा ते विभु अने नित्यछे त्यां कोइनिय ग्रायपदे जोतां देहमां रहेलो आत्मा अनित्य कयोछे. स्याद्वाद मतमां अशुद्ध पर्याये तथा शुद्धपर्याये आत्मामां नित्यानित्यपणुं स्वीकार्युछे. मनमां पण नित्यानित्यपणुं रह्युंछे. देहना अनित्यपणाथी मननुं पण अनित्यपणुं जाणवुं. देहाश्रितंमनः देहाश्रित मनछे माटे, पुद्गलरूपे देहनुं पण नित्यपणुं छे तेम मननुं पण पुद्गलरूपे नित्यपणुंछे. पुद्गल परमाणुओमां पण द्रव्यार्थिकनयनी अपेक्षाए नित्यपणुंछे. कारण के-परमाणुरूप पुद्गलनो कदी त्रिकालमां पण नाश थतो नथी तेम पुद्गलरूप परमाणुओमां पण वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श समये समये फर्या करेछे माटे पर्यायार्थिकनयनी अपेक्षाए तेमां अनित्यपणुं जाणवुं.

जिज्ञासु—स्याद्वाद एटले शुं ? ते समजावो.

सुगुरु—एकस्मिन् वस्तुनि विरुद्धधर्मद्वय समावेशः स्याद्वादः एक वस्तुमां परस्पर विरुद्ध बे धर्मनो समावेश ते स्याद्वाद जाणवो अथवा वस्तु स्वरूप प्रतिपादन परः श्रुतविकल्पः स्याद्वादः भावार्थ-वस्तुनुं यथार्थ स्वरूप प्रतिपादन करवामां पर एवो श्रुतनो विकल्प स्याद्वाद जाणवो. अथवा विरुद्धधर्मद्वय प्रतिपादन परोवक्तुरभिप्राय विशेषः स्याद्वादः अथवा तो एक वस्तुमां विरुद्ध धर्म बेने प्रतिपादन करवामां तत्पर एवो वक्तानो अभिप्राय विशेष तेने स्याद्वाद जाणवो. तथा एकस्मिन् जीवाजीवादौ विरुद्धंपद्धर्म द्वयं नित्यानित्यास्तित्व नास्तित्वोपादेयानुपादेयाभिलाप्यानभिलाप्यादि लक्षणं तस्य समावेशः समाश्रयः स्याद्वाद इत्यर्थः

तथा जीव अजीव आदि पदार्थमां विरुद्ध जे धर्मद्वय-नित्य

अनित्य तेम अनित्व नास्तित्व तथा उपादेय, अनुपादेय तेमज अभिलाप्य अने अनभिलाप्य धर्मनो समावेश, ए विरुद्ध धर्मोनी स्थिति तेनुं नाम स्याद्वाद जाणवुं.

ए प्रमाणे स्याद्वादनुं लक्षण कही प्रस्तुतविषय वर्णन करीए. तथा वेदांती सांख्य ते एकज आत्मा अद्वैतपणे एकज द्रव्य मानेछे, ते पण युक्ति युक्त नथी. केमके शरीरजे आ चर्मचक्षुथी देखायछे वा औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस अने कार्मण ए पंच प्रकारनां शरीर तो पुद्गलास्तिकायपणेछे माटे रूपीछे, तेमज पुद्गल द्रव्यना स्कंधो जे जुदी जुदी आकृतिरूपेछे ते एक केम थाय. तथा आत्मा अने शरीरनो आधार ते आकाश जाणवुं. अवगाहो आगासं इति वचनात्. बीजा द्रव्योने रहेवा अवकाश आपवो ते आकाशनुं लक्षणछे अने ते सर्वत्र प्रसिद्धछे. ते आकाश द्रव्यने जुदुं मानवुं जोइए. आत्मा भिन्न ठर्यो. पुद्गलद्रव्य भिन्न ठर्युं. आकाशद्रव्य भिन्न ठर्युं. तो एकज आत्माछे आत्मा विना अन्य वस्तु नथी. एवो अद्वैतवाद सिद्ध ठर्यो नहीं. वळी अद्वैतवादमां एकज आत्माछे. पण अनेक आत्मा नथी एवुं मनायछे. तो अनेक आत्मानी शास्त्र युक्ति, अनुभवथी सिद्धि आगळ करवामां आवशे. अद्वैतवादी आत्मानुं अस्तित्व मानेछे माटे ते वादनो समावेश आत्मद्रव्यमां करवामां आवेछे, माटे षड्द्रव्यनी बाहार कोइ वस्तु नथी एम सिद्ध ठर्युं.

षड् द्रव्यनी अंदर बौद्धदर्शननो समावेश.

बौद्धदर्शनने समये समये नवा नवापणे आकाश १ काल २ जीव ३ पुद्गल ४ ए चार द्रव्य मानेछे. ते वादी प्रति कहेवानुं केपायछे. माटे तेना अपेक्षाकारणरूप, धर्मास्तिकाय अने अधर्मा-

जीव अने पुद्गल एकज क्षेत्रे केम रहेता नथी. ते तो घटनादिभाव

स्तिकाय. ए बे द्रव्य पण मानवां जोइए. तथा केटलाक संसार चक्रनो कर्त्ता एक परमेश्वर मानेछे. ते पण मृषा समजवुं. निर्दंभ राग द्वेषातीत प्रभु, विभु, परमात्मा, परना सुख दुःखनो कर्त्ता थाय नहीं. वली जगत्कर्त्ता ईश्वर नथी. एनो विस्तार अग्रे करवामां आवशे. हाल तो आत्मानुं स्वरूप वर्णवनाप्रसंगे अन्य चर्चा चाली. हवे आत्म स्वरूप विषयनुं वर्णन करीए. आपणे नक्की समजवुं के आत्मद्रव्य बीजां पंचद्रव्यथी न्यारुंछे. अनादि कालथी अशुद्ध परिणतियोगे पुद्गलद्रव्यने परमाणुओ तेना स्कंधो कर्मरूप परिणमी आत्मानी साथे क्षीरनीर पेठे परिणम्युंछे. मन, वाणी, लेश्या, शरीर, संस्थान ए सर्व पुद्गल समजवुं. अष्टकर्मनी वर्गणाओ पण पुद्गलछे.

अष्ट वर्गणानुं स्वरूप लखेछे.

औदारिकवर्गणा, वैक्रियवर्गणा, आहारकवर्गणा तेजसवर्गणा, भाषावर्गणा, श्वासोश्वासवर्गणा, मनोवर्गणा, कार्मणवर्गणा, बे परमाणु भेगा थाय त्यारे द्व्यणुक स्कंध कहेवायछे. त्रण परमाणु भेगा थाय त्यारे त्र्यणुक स्कंध थाय. एम संख्याता परमाणु मिले त्यारे संख्याताणुकस्कंध थाय. तेमज असंख्याता परमाणुआ भेगा थाय त्यारे असंख्याताणुकस्कंध थायछे. तथा तेमज अनंतपरमाणुओनो स्कंध थावे अनंताणुकस्कंध थाय. एटला सर्व स्कंध ते जीवने ग्रहण करवा लायक नथी, पण ज्यारे अभव्यथी अनंतगुण अधिक परमाणुओ भेगा थइ ते स्कंध थाय. त्यारे तेवा औदारिक शरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय.

एमज औदारिकथी अनंतगुणा अधिकवर्गणानां दल भेगा थाय. त्यारे वैक्रियवर्गणा थाय. वली वैक्रियथी अनंतगुणा परमाणु मले त्यारे आहारकवर्गणा थाय एम सर्व वर्गणाना पुद्गल

१ पुद्गलपिंडना ने खंड कर्या पोते फरी मळे नहीं ते काष्ट पा-
पाणादिक बादर बादर भेद प्रथम जाणवो.

२ पुद्गल स्कंध खंडखंड कर्या पोतानी मेळे परस्पर एकमेक थइ
जाय एवां दुग्ध, घी, तेल वगेरेने बादर कहेछे.

३ जे पुद्गल स्कंधो देखवामां स्थूल होय–खंडखंड करवामां
आवे नहीं हस्तादिकथी ग्रहण थाय नहि, एवा धूप, चंद्र,चांदनी,
आदिपुद्गलबादरसूक्ष्म कथायछे.छायातम पुद्गलो पणजाणवां.

४ जे स्कंधो सूक्ष्मछे किंतु स्थूलोपलंभ होय. स्पर्श, रस, गंध
वर्ण, शब्द विगेरे सूक्ष्म बादर जाणवा.

५ जे पुद्गल स्कंधो अति सूक्ष्मछे इंद्रियोना ग्रहवामां, आवता
नथी एवा कर्मवर्गणादिक सूक्ष्मपुद्गल कहेवायछे.

६ कर्मवर्गणाओथी पण अतिसूक्ष्म द्वयणुकस्कंध आदि सूक्ष्मसूक्ष्म
कहेवायछे.

पूर्वोक्त स्कंधोनुं मूलकारण परमाणुछे, परमाणु शब्दरहीतछे
जोके स्कंधोना मिलापथी शब्दरूप पर्यायने धारण करेछे तो पण
व्यक्तरूप शब्दपर्यायथी रहीतछे. वळी परमाणु अविभागी एटले
भाग रहीतछे. पृथिवी, अप अग्नि, वायु ए चारनुं कारण
परमाणुआछे अर्थात् पृथिवी अप अग्नि वायु ए चार भूतो पण प-
रमाणुओथी पेदा थायछे. वळी परमाणु परिणमन स्वभाववाळोछे.
परमाणु अशब्द छे तोपण शब्दनुं कारणछे. परमाणु पोते द्रव्यछे
अने तेमां वर्ण, गंध रस अने स्पर्श ए चार गुणोछे अने ते मूर्त
कहेवायछे. पृथिवी जाति परमाणुओमां चारे गुणोनी मुख्यताछे.
जलमां गंध गुणनी गौणता, अने बाकीना त्रण गुणोनी मुख्यताछे.
अग्निमां गंध अने रस गुणनी गौणताछे, अने स्पर्श वर्णनी मुख्य-
ताछे. वायुमां त्रण गुणोनी गौणताछे, अने स्पर्श गुणनी मुख्यताछे.

इन्द्रियो वडे उपभोग्य पदार्थो, तथा पांच प्रकारनी द्रव्येन्द्रिय तथा औदारिक वैक्रिय आहारक तैजस अने कार्मण ए पांच प्रकारनां शरीर तथा पौद्गलिक द्रव्य मन तथा द्रव्यकर्म नोकर्म विगेरे सर्व पदार्थ पुद्गल द्रव्य जाणवुं. ए पुद्गल द्रव्य द्रव्यार्थिक नयथी शाश्वत छे, अने पर्यायार्थिक नयथी अशाश्वत छे. वस्तुतः पुद्गल द्रव्यथी आत्मा न्यारो छे. परपरिणति परिणामथी सर्व पुद्गल ग्राहक पुद्गल भोगी थइ रह्यो छे तेथी नवां कर्म बांधे संसारी थाय छे. ज्यारे आत्मा स्वस्वरूप ग्राहक तथा स्वस्वरूप भोगी थाय त्यारे सर्वकर्म रहित थइ अनंत ज्ञानमयी-अनंत दर्शनमयी-परमानंदमयी सिद्ध,बुद्ध अशरीरी,अक्षयी, अवेदी, अखेदी, अनाहारी, निःकामी, अविनाशी,अज,अविचल, विमल स्वरूप,गुणनो भोगी सिद्ध परमात्मा थाय, माटे सर्व जगत् जीवोए अनुक्रमे पुद्गलना भोगनो त्याग करी स्वआत्मा स्वरूप भोगी थवाना रसीया थइ स्वतत्त्व अनुभवथी केवल निजगुण स्थिरतारूप चारित्रनो मार्ग करवो. एम मनुष्य जन्म पाम्यानी सार्थकता जाणवी.

षष्ठविषय-धर्म क्यां रहे छे अने तेना हेतुओ कोण:

विचार-संसारसमुद्रमां पडता प्राणिओने धारी राखे तेने धर्म कहे छे. धर्मना बे भेद छे व्यवहारधर्म अने निश्चयधर्म.

प्रश्न-ज्यारे धर्म एकज छे, त्यारे तेना बे भेद केम कथन कर्या.

उत्तर-जो के आत्मा मां स्थिरपणारूप कार्य निश्चयथी कारण विना थतुं नथी. माटे सर्वज्ञ प्रभुए व्यवहार धर्म अने निश्चयधर्म एवे प्रकारनो धर्म कह्यो छे. व्यवहारधर्मजे धर्मछे ते निश्चय जे शुद्ध आत्मिक धर्म तेने प्रगटाववामां कारणछे. व्यवहार धर्म ते साधनछे अने आत्मिक धर्म ते साध्यछे. माटे धर्मना पण कारण कार्यनी अपेक्षाए बे भेदछे.

प्रश्न–निश्चय नयथी शुद्ध आत्मानोज ज्यारे धर्मछे तो व्यवहार धर्म आदरवानुं शुं कारण छे. एक फक्त निश्चय आत्मिक धर्म आदरवो जोइए.

उत्तर–व्यवहारधर्म विना निश्चयधर्म प्रगट थतो नथी. जेमके–बाजरीना दाणामां उगवानी घणी सारी शक्ति रहीछे तोपण जलनो संयोग थतां उगी नीकळेछे. तेम व्यवहारधर्म विना निश्चय धर्मनी प्राप्ति थती नथी–

प्रश्न–मरुदेवी माताए व्यवहारधर्म आदर्यो नहोतो. तेम छतां केम तेमने निश्चय आत्मधर्मनी सिद्धि थइ.

प्रत्युत्तर–कारण विना कार्यनी निष्पत्ति थती नथी. तेतो अवश्य समजवुं. जोके मरुदेवी माताए देशथीना सर्वथी चारित्र ग्रहुं नहोतुं. तोपण व्यवहारधर्मने अवलंब्यो हतो तेथीज निश्चय आत्मिक धर्मने प्रगटाव्यो.

जिज्ञासु–हे सद्गुरो मरुदेवी माताए कयो व्यवहार धर्म आदर्यो हतो. ते समजावो.

सुगुरु–मरुदेवी माता प्रथम श्री रुषभदेव भगवान्‌ना दर्शन करवा चाल्यां ए पण व्यवहारधर्मछे. तेमज मरुदेव माताए मनवचन अने काया ए त्रण योगनी गुप्ति करी, एटले मनवचन अने कायाना व्यापारोने परभावमां जता अटकाव्या. धर्म ध्यान ध्यायुं ते रुप व्यवहारथी उत्तम ध्याने चडयां. शुक्र ध्यानध्यायी अंतकृत् केवली थइ मोक्षमां गयां–पुत्रप्रेम नाश थवानुं कारण मरुदेवी माताने समवसरण थयुं. ते पण व्यवहार, तेमज तेथी संसारनी असारता उद्‌भवी, ते पण व्यवहारथी उत्पन्न थइ. मनवचय कायाना खराब आश्रवना व्यापार रोक्या. अव्यवतधर्मध्याना दिध्यावतां रोकाणा, पश्चात् शुक्र ध्यान ध्यावतां निश्चय आत्मिक धर्म प्रगटयो, ते आत्मिक धर्म

रूप कार्यमां मनवचन कायानी गुप्ति तथा धर्मध्यानरूप व्यवहार धर्म मरुदेवी माताने थइ गयो, मनोगुप्ति वचनगुप्ति अने काया गुप्तिरूप तथा धर्मध्यानरूप व्यवहारधर्मने कारणता निश्चयधर्म रूप कार्यमांछे, व्यवहारधर्म घणा प्रकारेछे. तेनी विचित्रता मुगुरुना मुखथी सांभळी अनेकांतधर्म ग्रहवो. वळी भरतराजाने पण धर्मध्यानरूप व्यवहारधर्म केवळ ज्ञान प्रगटवामां निमित्त कारणीभूत हतो. निश्चय धर्मनो अरुपीछे, ते व्यवहार धर्मनी मददथी प्रगट थायछे. उपादान कारणनी शुद्धिमां निमित्त कारण बलवत्तरछे. एम समजवुं सारांश के मरुदेवी माता वा भरत चक्रवर्ति पण नीचला गुणठाणानुं छोडवुं अने उपरना गुणठाणे चडवुं ते रूप शुद्ध व्यवहार पाम्यां हतां.

जिज्ञासु प्रश्न--जो एमछे तो व्यवहारधर्म कोने कहेछे ते समजावो.

सुगुरु-पंच महाव्रत उचरवां. सर्व विरतिधर्म देशविरतिधर्म अनुक्रम साधुधर्म. श्रावकधर्म ए व्यवहारथी धर्म जाणवो. ए व्यवहारधर्म निश्चयधर्मनी प्राप्ति करावी आपेछे. निश्चयथी संपूर्ण निरावरण परमात्मपदनी प्राप्ति कराव्या बाद व्यवहार रहेतो नथी.

शिष्यप्रश्न--आत्मा परमात्मारूप थाय तेमां कयां कयां कारणोनी जरुरछे.

सुगुरु-उपादान कारण. अने असाधारण कारण अपेक्षाकारण निमित्तकारण. ए चार कारणथी कार्यनी सिद्धि थायछे.

शिष्यप्रश्न-आत्मा सिद्धपणुं पामे तेमां पामे तेमां उपादान कोने समजवुं.

सुगुरु-सिद्धतारूप कार्य ते आत्मानुं अभेद स्वरूपछे. सिद्धतारूप कार्यनो कर्ता आत्मा पोतेजछे अने सिद्धपणुं आत्मानुं कार्य समजवुं. अथुना सिद्धता प्रगटाववी तेज कर्तव्यधर्मछे. सिद्ध-

तारुप कार्यनी रुचि विना अनंतकाल संसारमां परिभ्रमण थयुं. अने अज्ञान रागद्वेषयोगे पोताना धर्मथी भ्रष्ट बन्यो. हवे आत्मानो मूलधर्म भासन थयो तेथी हवे ते कार्यनी सिद्धि करवी. एम निर्धार करी तदनुगत चेतना वीर्यथी स्वस्वरुप कार्यनीपजावे प्रथम तो अंशथी आत्मा कर्त्ता थाय. पश्चात् आत्मिक गुणोनी आविर्भावता थतां संपूर्ण कर्त्तापणुं पामीने परमात्मरुप कार्य नीपजावे. एवी सिद्धतानुं उपादान कारण पोतानी सत्तागत ज्ञान दर्शन चारित्र वीर्यादिक अनंतागुण छे. तेज उपादान कारणपणे जाणवा. उपादान कारणरुप जे ज्ञानदर्शन चारित्र अने वीर्यछेते कार्यथी भिन्न नथी, अने तेज कार्यरूप परिणामेछे. माटे तेने उपादान कार्य कहेछे, आत्मानाधर्म छे तेमां पण ज्ञानदर्शन चारित्रनी मुख्यता जाणवी.

शिष्य--हे गुरुजी असाधारण कारण कोण समजवुं.

सुगुरु–उपादान कारणथी जे अभेद स्वरूपेछे. अने जे कार्यपणुं पामतुं नथी एटले कार्य संपूर्ण उत्पन्न थतां जे रहेतुं नथी तेने असाधारण कारण कहेछे. घटरुप कार्यनुं उपादानका मृत्तिका छे. मृत्तिकाछे. तेज घटरुपे थायछे, तेतो वाचकने लक्ष्यमां आव्युं हशे हवे असाधारण कारणनुं दृष्टांत कहेछे. जेमके घटरुप कार्य थतां स्थास, कोस, कुसलाकारजे थायछे. ते मृत्तिका पिंडरुप कारणथी अभेदछे परंतु घटरुप कार्य थतां ते असाधारण कारण स्थास कोस कुसलाकाररूप रहेतुं नथी. कह्युं छे के–प्रमाण निश्चयेन उपादानस्य कार्यत्वामाप्तस्य अवांतरावस्था साधारणमिति.

हवे परमात्मरूप कार्यमां असाधारण कारण घटावेछे. सिद्धता कार्यमतिप्रथम मनवचन कायानायोग तेहने स्वगुण रमणमां

अरागी अद्वेषीपणे प्रवर्तावबा. चोथा गुणठाणाथी मांडीने सिद्धतारूप कार्य पर्यंत गुणनी वृद्धि करवी. उपशमभाव क्षयोपशमभाव श्रेणीगतस्थान, विधिसहित आवश्यका, पूजा भक्ति, गुणिनुं बहुमान, ज्ञान क्रियारूप साधक अवस्थानी तरतमता ते सर्व असाधारण कारण जाणवुं. आत्मानुं ध्यान करवुं. क्षणेक्षणे आत्मोपयोगमां स्थिरपणे वर्तवुं साधुव्रत. श्रावकव्रत पालवां इत्यादि सर्व असाधारण कारण जाणवुं. भेदज्ञान विना असाधारण कारणनी प्राप्ति थती नथी.

शिष्य--हे सुगुरो आत्मा सिद्धतारूप कार्यनीपजावे तेमां निमित्त कारण कोण ?

सुगुरु--देव अरिहंत, गुरु, अने सिद्धांत ते निमित्त कारण जाणवुं. निमित्त कारण विना जीव उंची स्थिति ए चढी शकतो नथी. धर्मनी प्राप्तिमां निमित्त कारण बलवान रहेछे. देवगुरु सिद्धांत ए मुक्तिरूप महेलमां चढतां निसरणी समानछे. देवगुरुनी भक्ति बहुमान करवाथी कार्य सिद्धि थशे. तेम सिद्धांतनुं बहुमान विनयआदि करवाथी गुण प्रगट थशे. सुगुरुनो विनय विश्वास श्रद्धाभक्ति जेम थशे तेम निमित्त कारणनी पुष्टता जाणवी, सुगुरुनुं आलंबन मोटुंछे. अज्ञानरूप अंधकारनो नाश सुगुरु महाराज करेछे.

शिष्य-देवनी भक्ति बहुमान शी रीते करवुं.

सुगुरु-श्री अर्हन्तनी पूजा करवी, अर्हन्तना गुणोनुं स्तवन, कीर्तन, करवुं, अर्हन्तनी आज्ञा मानवी, इत्यादिथी पूजा भक्ति जाणवी.

शिष्य--अर्हन्तनुं पूजन शी रीते करवुं, अरिहंत साक्षात् तोहाल नथी. तेनो खुलासो आपो.

सुगुरु--अष्ट प्रकारी पूजा विगेरेथी प्रभुनी पूजा करवी. अरिहंत भगवान् साक्षात् लोके विद्यमान् नथी तोपण [जिनना अभावे

जिन मतिमानुं पूजन करवुं. जिन मतिमामां जिनेश्वरनो आरोप करी मानतां-पूजतां समकितनी शुद्धि अने निर्जरानुं कारण जिन मतिमा थायछे.

शिष्य--श्री जिन मतिमानुं कथन सूत्रमां छे के नहि ?

गुरु-हा जिन मतिमानुं कथन मभुना पवित्र सूत्रोमां छे.

शिष्य--हे गुरुजी, कृपा करीने सूत्रनो एक पाठ कहो के जेथी जिन मतिमानी साबीती थाय:

गुरु-हे भव्य सांभळ—सूत्रपाठः

तेणं कालेणं, तेणं समएणं, जावतुंगीयाए नयरीए, बहवे समणो वासगा परिवसंति, संखे, सयगे, सिलप्पवाले, रिसद्दत्ते, दमगे, पोख्खली, तिविह, सुपयहे, भाणुदत्ते, सामिले, नरवम्मे, आणंदा, इणोभजे अन्नथ्थ परिवसंति, से अड्डा, दित्ता, वुछिन्न विपुलवाहणा, जाव लध्धठा, गहिअठ्ठा, अठमी, चाउदसी, पुन्न मासिणी, सुपडिपुन्नं पोसहं पालेमाणा, निग्गंथाणं निग्गंथीणं, फासुएसणिज्जेणं, असण, पाण, खाइम, साइमेणं, जाव पडिलाभेमाणा, चेइआलएसु तिसं गंध पुप्फ वथ्थाइएहिं अच्चणं कुणमाणा जावविहरंति. सेतेणठेणं गोयमा, जेजिण पडिमं पूएइ, सोसम्मदिठी अन्नोपुणमिच्छदिठि, मिच्छदिठिस्स नो नाणं, नोचरणं, नोमोख्ख इत्ति सम्मदिठिस्स नाणं, चरणं, मोख्ख, इतिसेतेणठेणं गोयमा, अवस्सजिणपडिमाण गंधपुप्फवथ्थाइएहिं पूयाकायव्वा-श्रीपंचकल्प सूत्रे पूजाल्हावक.

भावार्थ-तुंगीया नगरीमां रहेनाग मूत्रोक्त बार श्रावको पोसघव्रतनुं आठम चउदस पूर्णिमा अमावास्याए आराधन करता हता, तथा शुद्ध भावे साधु साध्वीओने निरवद्य आहार पाणी वहोरावता हता. अने चैत्यालयमां जिनमतिमानी पुष्पादिकथी पूजा करता,

रता. माटे दृढव्रत श्रावक जिन प्रतिमानी अवश्य पूजा करे. इत्यादि अधिकार समजी लेवो.

द्वितीय सूत्रपाठ.

तएणं सा दोवइ रायवरकन्ना. जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ. उवा० मज्जणघरं अणुपविसइ. अणु२ ण्हाया कय बलिकम्मा कयकोउअ मंगलपायछित्ता सुद्धप्पा वेसाइं. मंगल्लाइं, वथ्थाइं. पवरपरिहिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ. पडि२ जेणेव जिणघरे तेणेव उवागच्छइ उवा२ जिणघरं अणु पविसइ जिणपडिमाणं आलोए. पणामंकरेइ, लोमहथ्थगं गिन्हइ.' गा२ जिणपडिमाओ पमज्जेइ, गा सुरभिणा गंधोदएणं पहावेइ, गा२ सुरभिए गंधकासाइए गत्ताइं लूहेइ, गा२ सुरभीहिं गन्धेहिं अच्चेइ जहा सुरियाभो जिण पडिमाओ अच्चेइ अच्चेइत्ता तहेव भाणिअव्वं जाव धूवं दहइ, दहइत्ता, वामं जाणुं अंचइ, अंचइत्ता, दाहिणं जाणुं धरणिअलंसि बहुनिगुणो-इत्यादिपाठः

भावार्थ-राजकन्या द्रौपदी स्नान करवा मज्जनघरमां जाय अने त्यांथी जिनेश्वरना देरासरमां जाय. प्रभुनी प्रतिमाने देखी प्रणाम करे. पछी लोम हस्तकथी जिन प्रतिमानुं प्रमार्जन करे. सुरभि गंधमिश्रितजलथी प्रभुनी प्रतिमानुं स्नान करे पश्चात् अंगलुंहन करे, पश्चात् गंधादिकनुं विलेपन करे-इत्यादि घणा पाठ छे तेथी सिद्ध थायछे के-प्रभुनी पडिमा एटले प्रतिमा छे. महानिशीथमां पण प्रभुनी प्रतिमा विषे पाठछे-माटे जिन प्रतिमामां जिनेश्वरनो आरोप करी माननां पूजवां आत्महित थायछे.

वळी ज्यारे श्रीतीर्थंकर भगवान समवसरणमां पूर्वदिशा सन्मुख बेसेछे अने दक्षिण, पश्चिम, उत्तरदिशिना द्वारे श्रीअरिहंतना प्रतिबिंब स्थापेछे, ते त्रण दिशाना स्थापनाजिननो आलंबन पामीने अनेक

जन समवसरणमां समकितरत्नने पाम्या, बीजी पर्षद् मध्ये जिन सेवनथी समकितनो लाभ थायछे. ए पण स्थापना निक्षेपानो उपगारछे.

विचरता अरिहंत तथा तेमनी स्थापना ए बे साधक जीवने निमित्त कारण छे पण उपादान नथी. अर्हन्ने वांदवानुं तथा अर्हन्नी प्रतिमाने वांदवानुं फल सरखुं जाणवुं. कारण के बेमां पण भावनी मुख्यता अंतर्थी थातां फल थायछे.

वळी दरेक वस्तुना चार निक्षेपा श्रीअनुयोग द्वारमां वर्णव्या छे. नामनिक्षेपो, स्थापनानिक्षेपो, द्रव्यनिक्षेपो, अने भावनिक्षेप. ए चार निक्षेपामां आद्यना त्रण निक्षेपाते भावना कारण छे. उक्तंचभाष्ये.

गाथा.

अहवा नाम ठवणा, दव्वाए भाव मंगलंगाए ॥
पाएण भाव मंगलं, परिणाम निमित्त भावाओ ॥१॥

माटे आद्यना त्रण निक्षेपा कारणछे. ए त्रण निक्षेपा विना भाव निक्षेपो थाय नहीं. अने नाम तथा स्थापना एबे निक्षेपा उपकारी कह्याछे. चोवीस तीर्थंकरनां नाम ए नाम निक्षेपोछे. तेमज नमो अरिहंताणं आ अरिहंत भगवान्नो नाम निक्षेपोछे. अर्हन्नी मूर्ति ए स्थापना निक्षेपछे, ज्यारे नमो अरिहंताणं ए नाम निक्षेपो कबुल करीए छीए अने ते जेम आत्मा प्रतिनिमित्त कारणछे तेम अरिहंतनी प्रतिमा पण आत्मा प्रति निमित्त कारणछे. नाम निक्षेपाथी जेटलो फायदोछे तेटलोज स्थापना निक्षेपाथी फायदो छे. नमो अरिहंताणं ए नाम निक्षेपाथी अरिहंतना गुणोनुं स्मरण थायछे तेटलुंज अरिहंतनी प्रतिमाथी अरिहंतना गुणोनुं स्मरण थायछे, अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, ए पंच परमेष्ठिनां

नाम तथा तेमनी स्थापना बन्ने सरखां फळने उत्पन्न करनारीछे. माटे जे भव्य पुरुष पंच परमेष्ठिनां नामनुं आलंबन करेछे तेणे पंच परमेष्ठिनीं स्थापनानुं पण आलंबन करवुंज जोइए.

शिष्य-वीतरागनी स्थापनाथी आत्महितछे. एमां तो जरा मात्र संशय नथी, पण प्रभुनी प्रतिमा पूजतां श्रावकने हिंसा थाय तेनुं केम ?

सुगुरु-हे भव्य तुं सांभळ, जिनेश्वरनी आज्ञा प्रमाण के आपणी मति कल्पना प्रमाण.

शिष्य-गुरुजी, प्रभुनी आज्ञाप्रधान.

गुरु-त्यारे सांभळ-बीजे गाम जतां वचमां नदी आवे ते साधु उतरे के नहीं, यादराख-एकपाणिना बिंदुमां एटला जीवछे के ते पारेवा जेवडी काया करेतो जंबुद्वीपमां माय नहीं. एवुं जळनुं बिंदु समजवुं. वळी पाणीमां सेवालरूप वनस्पति पण साधारण बादर निगोदरूपे रहेछे. वळी पुरा प्रमुख सूक्ष्मत्रस जीव पण एवाछे के मनुष्यनी कायाना स्पर्शथी हणाइ जाय हवे कहोके एवी नदीना जळमां मुनिराज पगमुकी उतरे के नहीं?

शिष्य-प्रभु ए सिध्धांतमां हिंसा थतां पण साधुने नदी उतरवानीं आज्ञा करीछे. कारणके तेथी मुनीश्वरने अन्य भव्यजीवो प्रतिबोधमां लाभ मळेछे. अने भावदयानी पुष्टि थायछे माटे, आपे एवुं मने समजाव्युं हतुं, प्रतिमाना निषेधको पण आ वात मानेछे.

सुगुरु-तेज प्रमाणे सर्वज्ञप्रभुए सिध्धांतमां श्रावकने, प्रभुनी प्रतिमा पूजननुं फरमान कर्युंछे. प्रभुनी प्रतिमा पूजतां मोटो लाभ थायछे. अत्र प्रभुनीं आज्ञाज प्रधान जाणवी, प्रभु सर्वज्ञ हता. तेमना केवलज्ञान आगळ आपणी मति कल्पना

हिंसावमां नथी। माटे सर्वज्ञ प्रभुनी आज्ञानुसारे श्रावक प्रभुनी प्रतिमानुं पूजन करे. तेथी तेने आत्महित थायछे अने प्रभुकी आज्ञानो आराधक बनेछे, श्रावकनो आहारादिक माटे छकायना जीवनी हिंसा कर्या करेछे माटे ते हिंसाना आरंभथी दूर थयो नथी माटे श्रावक प्रभुनी प्रतिमानुं पूजन भक्ति करे तेमां तेने मोटो लाभ छे प्रभुनी प्रतिमाने मानेछे ते सम्यग्दृष्टि जाणवो. प्रभुनी प्रतिमा पूजतां श्रावकने हिंसाना परिणाम नथी-जीवोने मारवानी बुद्धि श्रावकने नथी. तेथी तेने हिंसानो बंध थतो नथी अने तेथी शुभ भाव प्रगटतां पुण्य बंध अने शुभ भाव प्रगटतां परमानंद पदनी प्राप्ति थायछे, यद्यपि जोके शुभ भावने पुण्य बंधनो हेतुछे. तोपण ते छताआत्मगुणने स्थिर थवानो तथा नवा प्रगट करवानो हेतुछे. पुण्यानुबंधी पुण्यनो हेतुछे माटे प्रभुना उपर रागरूप शुभ भाव पण परंपराए मोक्ष प्राप्तिमां हेतुभूतछे. श्रीहरिभद्रसूरिए पंचवस्तु ग्रंथमां कह्युं छे के:-

गाथा.

गुणरूइ मूलं एयं, तेणं गुणवुड्ढि हेउअं भणिअं ॥
जह एलाइयुत्तो, पसथ्थ रागेण गुणपत्तो ॥ १ ॥

माटे प्रभुनी प्रतिमा पूजतां शुभभाव पण उपादन कारणनी शुध्धिमां कारणछे, माटे श्रावके प्रभुनी प्रतिमानुं पूजन करवुं जोइए. वळी सूत्रमां कह्युंछे के-ज्ञानीने आश्रवनां कारण पण संवर रूपछे अने अज्ञानीने संवरनां कारण पण आश्रव स्वरूपे परिणमेछे.

वळी सर्व विरतिपदने धारण करनारा मुनीश्वर ज्यारे नदी उतरेछे ते पण ज्यारे लाभने माटे छे त्यारे श्रावक प्रभुनी प्रतिमानुं

पूजन करे ते पंथ मानवो माटे न होय. अन्यथा प्रभुनी आज्ञाए वर्ते ते श्रावक तथा साधुने लाभकारी छे. आज्ञा ए धर्म जाणवो

श्री आनंदघनजी महाराज पण नवमा सुविधिनाथना स्तवनमां प्रभुनी प्रतिमानुं पूजन करवुं एम उपदेशेछे. माटे जिनेश्वर वीतरागनी स्थापनारूप प्रतिमानी बहुमानता, सेवना, पूजा, भक्ति करवी जोइए. एक सामान्य उत्तम गुणवंतनी छबी जोइने पेटमां आनंद थायछे. त्यारे प्रन जगतना पदार्थने जाणनार सर्वज्ञ अभिनव उपकारी तीर्थंकरनी प्रतिमाने देखी जोइने आनंद थाय बहुमानता थायछे, एमां शुं कहेवुं—निमित्त कारणरूप देव तथा तेमनी प्रतिमानुं अवलंबन भव्यजीवोने करवा लायकछे. प्रभुनी प्रतिमा संबंधी घणुं विवेचन करवानुं धार्युं हतुं पण ग्रंथना भयथी संक्षेपमां प्रसंगे वर्णन कर्युं.

शिष्य—हे सुगुरो ! आपे कृपा करी निमित्त कारण कोण अने तेनुं स्वरूप समजाव्युं हवे कृपा करी अपेक्षा कारण कोणछे ते समजावशो -

सुगुरु—जे कारण कार्यथी भिन्न छे अने जे कारण माटे कर्त्ताने प्रयास करवो पडतो नथी, अने कार्यनी सिद्धिमां निश्चयथी ते जोइए. अने जे बीजा कार्योमां पण कारणछे. तेने अपेक्षा कारण कहेछे.

यथा पृथ्वी. आकाश, काल, ए विना घटादिक कार्यनी निष्पत्ति थती नथी. भूमी, आकाश, काल, जेम घटनी निष्पत्ति प्रति कारणछे तेम अन्य कार्योना प्रति पण कारणछे. कर्त्ता जेम उपादान तथा निमित्त कारणनो व्यापार करेछे. तेम एनो प्रवर्तन करतो नथी. ते अपेक्षा कारणनुं तत्त्वार्थादिक ग्रंथोमां कथुंछे.

ज्ञान होयछे. अने तेओ संमकितपणाथी चोथा गुणठाणाना स्वामी जाणवा. एटले ते अविरति सम्यग् दृष्टि देवना जाणवा. तेओ विरतिपणाने पामे नहीं एवी देवगतिनी स्थीति छे माटे तेओ उपरउपरना गुणठाणे चडी शकता नथी. मिथ्यादृष्टि देवताओतो प्रथम गुणस्थानके वर्तेछे. वेमानीक, भुवनपति, व्यंतर, अने ज्योतिष एम देवताना चार प्रकारछे.

तिर्यंच पंचेंद्रियना पंचभेदछे जलचर, थलचर, खेचर, उरपरि सर्प, भुजपरिसर्प.

तिर्यंच समकित पामी शकेछे. कृष्णमहाराजना भाइ बलदेव मुनीश्वरनुं एक हरिणभक्त हतुं. पण त्यां अपेक्षा कारण प्रथम तो नथी. गुर्वादिकनुं निमित्त पामी कदापि पंचम गुणस्थानक पर्यंत जाय. पण त्यां असाधारण कारणनी श्रेष्टता नथी. असाधारण कारणनो अंश पामे.

नारकीना जीवोनो पण देवतानी पेठे अधिकार समजी लेवो ए त्रण गतिमां धर्मसामग्रीनी संपूर्ण जोगवाइ नथी.

यतः गाथा

देवा विसय पसत्ता, नेरइया विविह दुःख संसत्ता ॥
तिरिया विवेग विगला, मणुआणं धम्म सामग्गी १

देवताओ विषयमां प्रसक्तछे. नारकी जीवो अहर्निश विविध प्रकारनां दुःखो भोगव्या करेछे, तिर्यंच विवेकथी विकलछे. फक्त गर्भज मनुष्योने धर्मनी सामग्रीछे.

मनुष्यगतिमां अपेक्षा कारण, निमित्त कारण, असाधारणकारण उपादान कारण, ए चार कारणनी सामग्री प्राप्त थायछे.तेमां अपेक्षा कारणमां प्रथम संघयण अधुना नथी.

हाल पंचमारके पण निमित्तादि कारणो पामी आत्मधर्म साधन थायछे. मतिज्ञान अने श्रुतज्ञानना क्षयोपशमभावे असाधारण कारणने अवलंबतो जीव शुद्धानुभव पामेछे. अने भव्य, कर्मनां तिक्ष्ण बंधनने छेदवा समर्थ थायछे,

माटे भव्यजीवोए चिंतामणिरत्न, कल्पवृक्षथी पण दुर्लभ एवो मनुष्यजन्म पामी धर्मसाधन करवुं गयो वखत पश्चात् आवतो नथी. आयुष्य क्षणेक्षणे ओछुं थतुं जायछे. आ दुनीयामां कोइ अमर रह्यो नथी अने कोइ रहेवानो नथी. कायारूप माटीनुं पूतळुं आत्मानुं कदी थयुं नथी, अने थवानुं नथी. भ्रांतिथी परवस्तुमां सुखबुद्धि कल्पायछे. जेम आकाशमां कमलनी उत्पत्ति खोटीछे. तेम परवस्तुमां सुखबुद्धि खोटीछे. जडवस्तुमां आत्मसुख क्यांथी होय? अलबत जडवस्तुथी कदापि सुखनी माप्ति थती नथीज. बाल्यावस्थामां अज्ञानतायोगे जे सुख धूळना ढगलामां रमकडां रमवाथी मान्युं हतुं. ते मोटी उमर थतां पोतानी मेळे टळेछे. एटले मोटी उमर थतां रमकडां वा धूळमां रमवानुं मन थतुं नथी. ते रमत उपर अरुचि थायछे. तेम विषयभोग आदिमां रुचि बाल जेवा जीवोने थायछे. जेम कागडाए विष्टा चुंथवामां पोतानुं श्रेयः मान्युंछे. तेम अज्ञानी बालमनुष्योए विषयभोग आदि परवस्तुमां पोतानुं सुख मान्युंछे पण ते सर्व मिथ्याछे. ज्ञानीनी दृष्टि आगळ एवा बाळजीवो केवल दया पात्रछे. आत्मामां अखंड परमानंद समायोछे. अनंतसुख आत्मामां रहुंछे. शोधेसोपावे आत्मसुखनी माप्ति अर्थे ज्ञाताओ आत्मध्यानमां सदाकाळ मग्न रहेछे. परवस्तुमां रागद्वेष बुद्धि धारण करता नथी. पोताना आत्मस्वरूपमां रमणता करेछे. परभावनो अनादर करेछे. परवस्तुमां आत्मपणुं कंइ मानता नथी. पुद्गल वस्तुथी आत्मा सदा न्यारोछे एम भावेछे, अने सदा अंतर्लक्ष्य राखेछे,

परपरिणतिनां द्वार रोकेछे. आत्माना गुण पर्यायनुं चिंतवन करेछे. पोताना आत्मामां अनंतऋद्धि शोधेछे. उज्ज्वल ध्यान ध्यावेछे, अने ज्ञानीओ मनमां थता अनेक संकल्पविकल्पो दूर करी आत्मस्वभावमां मग्न रहेछे, प्रतिदिन उच्चस्थितिने भोगवेछे. सहज शांतिथी थतुं तात्त्विक सुख ते प्राप्त करी शकेछे. मननी थती चंचलतानो त्याग करवो. मनसंबंधी प्रथम घणुं कहेवामां आव्युंछे. तेथी अत्र विशेष वर्णन करवुं योग्य नथी. तोपण प्रसंगवशात् कहेवानुं के मन चंचल अने अस्थिरछे ते ज्यां जाय त्यांथी पाछुं वाळीने आत्मानी साथे वश करवुं.

मन ज्यां सुधी स्थिर रहे नहीं त्यां सुधी शास्त्रोक्तक्रिया जेटली करीए तेटली सफल थाय नहि. श्रीयशोविजयजी उपाध्याय कहेछेके–

श्लोक.

या निश्चयैकलीनानां, क्रिया नातिप्रयोजना ॥
व्यवहार दशास्थानां ताएवाति गुणावहाः ॥ १ ॥

भावार्थ–जेनुं मन निश्चयमां लीनछे. तेने क्रियानुं प्रयोजन नथी. व्यवहार दशावाळाने क्रिया अति गुणकारीछे. मन वश करवाथी बंधातां कर्म अटकेछे, ज्ञानी थइने फरता एवा पुरुषोथी पण मन जीतातुं नथी. अभ्यासथी मन जीतायछे, महा अनुभवी योगीओना शिष्यो मन वश करी शकेछे. पुस्तक, पोथी, पुराण, वांचवाथी पण जे मन वश थतुं नथी, ते मन सुगुरु महाराजनी गुप्त अर्पेली कूंचीओथी धीरे धीरे वश थायछे. पुस्तक सिद्धांतमां लखेला विषयोने जाणी सुगुरुए परिणामिकी बुद्धिथी जे अनुभव मेळव्यो होयछे ते शिष्यो के जे गुरुना सदाने माटे विश्वासी होयछे तेने मळेछे. माटे सुगुरुनुं शरण करी आत्मिक धर्मनी प्राप्ति करवी.

कर्मनो क्षय करतां आत्मिकधर्मनी आविर्भावता थायछे. काया पुद्गलछे, वचन पुद्गलछे, मनपुद्गलछे, धर्म तो निश्चयथी चेतनगत जाणवो, आत्मामां धर्म रहेछे. ते आत्मिक धर्म आत्मस्वभावे स्थिर थतां प्रगटेछे. निश्चयथी आत्मा अरूपीछे, अने आत्मामां रहेलो धर्म पण अरूपीछे. असंख्य प्रदेश आत्माना छे, प्रतिप्रदेशे अनंत अनंत धर्म व्यापी रह्योछे, तात्त्विक आत्मिक धर्मथी अनंत सुखनी प्राप्ति थायछे. कर्मनो क्षय करी जे भव्यो सिद्धिपद पाम्याछे तेमने शुद्ध आविर्भावे आत्मिक धर्म प्रगट्योछे, जे जीवो कर्म सहितछे तेमने तिरोभावे आत्मिक धर्म जाणवो. जे वस्तु मूलमां वस्तुतः सद्रूपे नथी. तेनी उत्पत्ति थती नथी. कारण के–

नासतो विद्यतेभावो

सारांश के–असत्नुं उत्पन्न थवापणुं नथी.

शिष्य–जेम असत्नुं उत्पन्न थवापणुं नथी. तेम सत् जे वस्तु त्रिकालमां वर्तती होय तेनी उत्पत्ति कहेवी ए पण अयुक्तछे. कारण के–जे वस्तुनो उत्पाद थाय ते वस्तु प्रथम होय नहीं. यथा घट तेनो उत्पाद थयो तो ते प्रथम नहोतो. तेम जो आत्माना धर्मने सत् मानवामां आवे तो ते त्रिकालमां विद्यमानपणाथी तेनी उत्पत्ति थए एम कहेवुं असत्य ठरेछे अने जो आत्माना शुद्ध धर्मने असत् कहेवामां आवे तो तेनी उत्पत्ति असत्य ठरेछे माटे हे सुगुरो कृपा करी यथार्थ स्वरूप समजावशो.

सुगुरु–हे शिष्य ! एकाग्र चित्तथी श्रवण कर. असत् पदार्थनी तो त्रिकालमां पण उत्पत्ति थती नथी, हवे सत्वस्तुनो विचार करीए.

गाथा.

भावस्स णत्थि णासो, णत्थि अभावस्स चेवउप्पादो,
गुण पज्जयेसु भावा, उप्पाद वए पकुव्वंति ॥ १ ॥

भावार्थ-भावनो एटले सत्रूप पदार्थनो नाश नथी, अने निश्चयथी अभाव एटले असत्‌नो उत्पाद नथी, गुणपर्यायोमां भावो उत्पाद व्ययने करेछे.

सारांश के-द्रव्यार्थिकनयथी सत् षट्पदार्थो उपजता नथी, तेम विनाशताने पण पामता नथी.

अने जे त्रिकाल अविनाशी सत्पदार्थोमां उत्पाद व्यय थाय छे ते पर्यायार्थिक नयनी अपेक्षाथी गुणपर्यायोमां जाणवा.

हवे आत्मधर्मना सत्पणा संबंधी विचार करतां समजाशे के आत्मिक शुद्ध धर्मनुं सत्पणुं द्रव्यार्थिकनयनी अपेक्षाए अनादि सत्पणेछे. जो के कर्मावरणथी आत्मिक शुद्धधर्मनुं आच्छादन थयुंछे तोपण आत्मधर्मनुं द्रव्यार्थिकनयथी जोतां सत्पणुं टळ्युं नथी. अनादि कालथी कर्मावरणथी आत्मिक धर्म आच्छादनताने पाम्योछे एटले ते तिरोभावे सत्पणे वर्तेछे, आत्मिक शुद्ध धर्मनुं सत्पणुं बे प्रकारे छे. संसारदशामां तिरोभावे सत्पणुं अने सिद्धावस्थामां आविर्भावे सत्पणुं एम प्रकारे जाणवुं. अनादि कालथी जीवनी साथे कर्मनो संबंधछे अने ते कर्मना संबंधे आत्मिक शुद्ध धर्म ढंकायोछे. ते ज्यारे कर्मनो नाश थायछे त्यारे आत्मिक शुद्ध धर्म प्रगटपणे प्रकाशेछे, हवे सत्स्वरूप आत्मिक धर्मनो उत्पाद केवी रीते थायछे ते समजावेछे. तिरोभावपणे वर्तता आत्मिक धर्म छे तेनो आविर्भाव थयो. तेनी अपेक्षाए उत्पत्ति समजवी सारांश के-सत्स्वरूप जे आत्मिक शुद्ध धर्मनो कर्मावरणथी तिरोभाव थयो हतो. ते सत्स्वरूप आत्मिक शुद्ध धर्मनो कर्मनाशथी आविर्भाव थयो-तिरोभावनो जे

आविर्भाव तेनी अपेक्षाए शुद्धधर्मनी आत्मामां उत्पत्ति जाणवी. सत पणुं तो प्रथम पण विद्यमान हतुं. हवे ते उपरथी स्पष्ट समजाशे के सत्स्वरूप आत्मिक धर्म द्रव्यार्थिकनयनी अपेक्षाए सदात्रिकाल सत्पणे जाणवो.

निरोभावे ढंकाएलो धर्म आविर्भावनी अपेक्षाए प्रगटपणे वर्ततो नथी माटे असत् अने निरोभावनो नाश थतां आविर्भावपणे प्रकाशतां सत्स्वरूप जाणवो.

आविर्भावपणे आत्मिकशुद्धधर्म प्रगट थतां आत्मा परमात्म स्वरूप थइ जायछे अने ते अनंत सुखनो भोगी थायछे. पश्चात् कंइ कर्तव्य बाकी रहेतुं नथी. सिद्ध स्वरूप थतां पण आत्मामां पर्यायार्थिकनयनी अपेक्षाए पर्यायनो उत्पाद व्यय समये समये थया करे छे, सिद्धस्वरूपी आत्मामां अक्रियपणुं जाणवुं. गमनागमन पण सिद्धात्माने नथी. रागद्वेषरूप मलनो सर्वथा क्षय थवाथी सदाकाल स्वस्वभाव रमणतागुण प्रगटपणे वर्तेछे, ज्ञानावरणीय अने दर्शनावरणीय कर्मनो सर्वथा समूलतः क्षय थवाथी अनंत ज्ञान अने अनंत दर्शन आत्मामां प्रगटपणे प्रकाशेछे एम अष्टकर्म क्षयथी अष्टगुण आदि अनंत गुण आत्मामां आविर्भावताए प्रगटेछे.

एम अनंत धर्ममय आत्मा जाणवो, सत्य धर्म आत्मामां रहेछे, शुध्ध आत्मिक धर्म प्रगटाववाना हेतुओने व्यवहार धर्म कथायछे, माटे व्यवहार धर्म अने निश्चय धर्म ए बेनुं अवलंबन करवुं.

श्री सिद्धसेनाचार्य कहेछे के—

श्लोक.

निश्चयव्यवहारौ द्वौ, सूर्यचंद्रमसाविव ॥
इहामुत्र दिवारात्रौ, सदोद्योताय जाग्रतः ॥ १ ॥

अंतस्तत्त्वं मनः शुद्धि, र्बहिस्तत्त्वंच संयमः ॥
कैवल्यं द्वयसंयोगे, तस्माद् द्वितयभाग्भव ॥ २ ॥
नैकचक्रोरथो याति, नैकपक्षो विहंगमः ॥
नैवमेकांतमार्गस्थो, नरो निर्वाण मृच्छति ॥ ३ ॥
परस्परं कोऽपियोगः, क्रिया ज्ञान विशेषयोः ॥
स्त्रीपुंसयोरिवानंदं, प्रसूते परमात्मजं ॥ ४ ॥
भाग्यं पंगूपमं पुंसां, व्यवसायोऽ धसंनिभः ॥
यथा सिद्धिस्तयोर्योगे, तथा ज्ञानचरित्रयोः ॥ ५ ॥
खड्गखटकवज्ज्ञाने, चारित्र द्वितयंवहन् ॥
वीरो दर्शन सन्नाहः क्लेशपारं प्रयातिवै ॥ ६ ॥
एकांते नतु लीयंते, तुच्छेऽनेकांतसंपदः
नदरिद्रगृहे मांति, सार्वभौमसमृद्धयः ॥ ७ ॥

भावार्थः–निश्चयनय अने व्यवहारनय आ जगत्मां सूर्यचंद्रनी पेठे प्रकाश करता जागताछे. सूर्य अने चंद्रनी उपमामां विशेष गंभीर भावार्थ समायोछे. सूर्य अने चंद्रना प्रकाशमां घणुं समजवानुं छे. पूर्वोक्त श्लोकोना भावार्थ स्पष्टछे. तेनुं तेथी अत्र विवरण कर्युं नथी. तुच्छ एकांत मार्गमां अनेकांत संपदाओ लीन थती नथी. आ वाक्य आपणने केटलुं समजावेछे, तेनी केटली वधी महत्त्वताछे. वळी कहेछे के–दरिद्रिना घरमां सार्वभौमनी समृद्धि मानी नथी. माटे भव्यात्माओए आपनि सर्व शाश्वत सुख संतति प्रदायक व्यवहार निश्चय धर्मनुं अवलंबन करी उत्तम पुरुषोना पंथने अनुसरवुं तेमां ति समायलुंछे. अज्ञान मार्गनी अंध श्रद्धाथी एकांत मार्गनुं सेवन

करनारा मत कदाग्रही जीवो-व्यवहार अने निश्चयनयना ज्ञान विना वस्तु स्वरूप ओळखी शकता नथी. अने तेथी कर्तव्य कार्य सन्मुख थता नथी. सातनयोना ज्ञान विना जगत्‌मां मतोनी उत्पत्ति थइछे, परस्परनयोनी निरपेक्षताए वस्तु स्वरूप यथार्थ कथातुं नथी. श्री यशोविजयजी उपाध्याय कहेछे के-

एकेकनयना हठथी मतोत्पत्ति.

श्लोकः

बौद्धाना मृजुसूत्रतो मतमभू द्वेदांतिनांसंग्रहात ॥
सांख्यानां ततएव नैगमनयाद्द योगश्चवैशेषिकः ॥
शब्दब्रह्मविदोपि शब्दनयतः सर्वैर्नयैर्गुंफिता ॥
जैनीदृष्टिरितीह सारतरता प्रत्यक्षमुद्वीक्षते ॥ १ ॥

भावार्थ-ऋजुसूत्रनयथी बौधमत प्रगटयो, अने संग्रहनयथी वेदांतिनो मत प्रगटयो. तथा सांख्यमत पण नैगमनयथी तथा योग मत अने वैशेषिक मत पण ते नयथी प्रगटयो. शब्दनयथी मीमांसक दर्शन उत्पन्न थयुं. अने जैन दर्शन एटले स्याद्वाद दर्शन तो सर्वनयथी गुंफितछे. माटे अनेकांत जैन दर्शनमां सारमां सारपणुं सदा प्रत्यक्षपणे देखीए छीए-जैन सर्व दर्शनीछे. अने बीजां दर्शन ते जैनना एकएक अंशछे.

श्री आनंदघनजी महाराज कहेछे के.

जिनवरमां सघळां दर्शनछे, दर्शने जिनवर भजनारे;
सागरमां सघळी तटिनी सही, तटिनीमां सागर भजनारे.
षड्‌दर्शन जिन अंग भणीजे.

जिनदर्शनमां सर्व दर्शनछे माटे अन्य दर्शन जिनेश्वर दर्शनअंगभूतछे. अने एकेका दर्शनमां सर्वांशे सप्तनय परिपूर्ण जैन दर्शननी

माप्ति थाय नहीं. कारण के तेमां जैन दर्शननी भजनाछे. एक अंग-नय पक्षथी पामीए पण सर्वांगे माप्ति थाय नहीं. जेम सघळी नदीओ समुद्रमां होय पण नदीओमां समुद्रनी भजना जाणवी. सारांश के-जे नदी समुद्रमां मळी तेमां समुद्रनी भरतीओटनुं पाणी आवे. एवी रीते नदीओमां समुद्र एकदेशे संभवेछे. तेवी रीते समुद्रनी उपमाने धारण करनार जिनवरनां ए षड्दर्शन ते अंग जाणवां. एकांते नयनुं कथन करतां मिथ्यात्व लागे-कह्युं छे के-

एगंते होइ मिच्छत्तं.

एकांते मिथ्यात्वपणुं होय-माटे हितशिक्षा निर्ग्रंथ प्रवचन कथे छे के-एकांतपक्ष आत्म हितकारक नथी. व्यवहारनय अने निश्चयनय अवलंबी आत्म धर्मरूप साध्यना साधक बनवुं. साध्यनी सिद्धि करवी मुश्केलछे. वातो करवी सहजछे माटे आत्मिक हितेच्छुओए प्रमाद त्याग करवो अने व्यवहार निश्चयधर्मनुं साधन करवुं. सप्तनय सप्त-भंगी चारनिक्षेपा षड्द्रव्य, गुणपर्याय-उत्सर्ग अपवादथी परिपूर्ण स्याद्वादमतने कोइ वीरला भव्य पुरुषो सम्यग् रीत्या जाणी शकेछे. केटलाक विचित्र मार्गनी भ्रमणाओमां गोथां खायछे केटलाक ज्ञान ज्ञान पोकारी ज्ञानी नाम धरावी शुद्ध धर्मरूप क्रिया तरफ अरुचि मार्ग दर्शावे छे अने क्रियानुं उथ्थापन करेछे, तेथी स्वआत्मानो उद्धार करी शकता नथी. सप्तनयोथी परिपूर्ण वीतराग धर्मने सद्गुरु अने सत्श्रद्धा विना अवगाहवो मुश्केलछे माटे भव्य पुरुषो प्रभुना धर्मनो मार्ग समजी निश्चयदृष्टि हृदयमां धारण करी व्यवहार मार्ग चालेछे.

श्रीयशोविजयजी वचनामृत.

निश्चय दृष्टि चित्त धरीजी-पाळे जे व्यवहार-इत्यादि.

श्री यशोविजयजी उपाध्याय महा विद्वान् हता. संवत् १७४० नी लगभग विद्यमान हता, आत्मिक ग्रंथो दरेक दर्शनना वांच्या

हता. अध्यात्मज्ञानदृष्टि पण धरावता हता. जेमणे शास्त्रवार्ता स
धप आदि ग्रन्थो बनाव्या. ते महा पुरुष पण निश्चय दृष्टि हृदय
धारण करी व्यवहार मार्गे चालवानी खास भलामण करेछे.
हालमां अध्यात्मनी किंचित् वात सांभळी व्यवहार मार्गथी विरु
थानी होळवालु अध्यात्मी बनी जनाराओ करतां विशेष ज्ञानी
नहोता. एम केम कहेवाय ? ना तेओ महा ज्ञानी हता. माटे व्य-
वहार धर्म मार्गनुं यथाविधि यथाशक्ति आराधन करता हता-

भगवान् सर्वज्ञानी कहेछे के-

जइ जिणमयं पवज्जह, तामा ववहारनिच्छए मुयह;
ववहारनओ छेए, तिथ्थुच्छेओ जओ भणिओ १

जो तुं जिनदर्शनने अंगीकार करे तो व्यवहार अने निश्चयने
मूकीश नहीं. कारण के-व्यवहार नयनो उच्छेद करवाथी तीर्थनो
उच्छेद कर्यो कहेवायछे, माटे महात्मा थवानी इच्छा होय तो सद्गुनी
शिक्षा धारवी. मानवी.

केटलाक ज्ञाननी आकांक्षा विना अंध श्रद्धावाननी पेठे क्रिया
करेछे. ते क्रिया जड जाणवी तेमनो धर्मव्यवहार फोनोग्राफवत् जाणवो.

कोइ एम कहेशे के-बराबर वस्तुनुं स्वरूप समजीने अने क्रिया
करीशुं-ज्यां सुधी ज्ञान नथी त्यां सुधी क्रिया शा कामनी ? वस्तुतस्तु
समजवानुं-एम बोलवामां पण समजवानी पनी तारतम्यता रहेलीछे.
प्रथम विकल्प थशे के कया ज्ञाननी प्राप्तिथी क्रिया करवी. मति-
श्रुतज्ञाननी प्राप्तिथी वा केवलज्ञाननी प्राप्तिथी.

मतिश्रुतज्ञान थया बाद क्रिया करवी एम कहेतां पण विचा-
रवानुं के—आपणोना जेवुं मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, तेवुं ज्ञान हालना
वखतमां नथी. त्यारे कहो के चउदपूर्वी वा दशपूर्वधारी जेवुं मति
ज्ञान तेवुं ज्ञान पण हालना वखतमां नथी त्यारे हालमां

श्रुतज्ञान तरतमताए थोडुं अपेक्षाए कहेवाय. हवे ज्ञाननेज माननारा कहो के, केवुं ज्ञान थयाथी क्रिया करशो, ते बतावो, वा कहो के, ज्यां मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान होय त्यां क्रिया होय के नहीं. अने वळी विचारो के मतिज्ञानी अने श्रुतज्ञानी क्रिया विना शुं करे. माटे क्रियानो स्वीकार करवो योग्यछे. क्रिया विना एकलुं ज्ञान शुं करे. क्रिया ज्ञानिनी पासे होयछे शास्त्रमां पण—

ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः

ज्ञान अने क्रियाथी मोक्षछे, ज्ञानाभ्यासरूपक्रिया विना ज्ञाननो पण क्षयोपशम थतो नथी. त्यां पण क्रियानी जरूरछे. कोइ एम कहेशे के, मति वा श्रुतज्ञान थयुं एम प्रत्यक्ष जणाशे एटले क्रिया करीशुं. तेना उत्तरमां समजवानुं केवलज्ञान प्रत्यक्षज्ञानछे, मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान परोक्षज्ञानछे. मति वा श्रुत छे के नहीं ते अनुमानथी जाणी शकाय. केवलज्ञानी कंइ कहेवातो कोइ आवनाना नथी. माटे भव्य जीवोए ज्ञान श्रद्धाथी जाणी धर्मध्यानादि कारक क्रियामां प्रवर्तवुं—

आलेखक—कोइ स्थळे ज्ञाननी विशेषता वा क्रियानी न्यूनता लखे तोपण ते कोइना आदरभणीया कोइना निषेध भणी नथी किंतु बन्नेना स्वीकार माटेछे एम समजवुं. एकज स्थळे सर्वेनुं स्वरूप एकज वखते वर्णवी शकातुं नथी. तेथी जेजे स्थळे जेनुं जेनुं स्वरूप वर्णन करवामां आवे ते नयनी सापेक्षताए ते ग्रहण करवुं. व्यवहार धर्म अने निश्चयधर्म सदा जयवंता वर्तेछे. सद्गुरुपासेथी एनुं स्वरूप समजवुं. मति मंदताथी शंकादि उत्पन्न थायतो पण सर्वज्ञ वीरना वचनमां सत्यता भरीछे. मतिदोष काढी सत्शास्त्रनो गुरुगमता पूर्वक अभ्यास करवो. केटलीक बातोमां तो श्रद्धाज राखवी पडेछे. केवलज्ञानथी जाणेला पदार्थोनुं स्वरूप तेने अल्पमति ज्ञानी

जीव बराबर शी रीते समजी शके, माटे जिनवचनमां जरा मात्र शंकानो अवकाश नथी. एम श्रद्धा करवी मोक्षार्थी जीवने घटेछे.

उपर प्रमाणे यथा मतिलेशथी व्यवहार निश्चयधर्म वा धर्म क्यां रहेछे ते दर्शाव्युं.

सप्तम विषय.

हुं संसारमां जन्म मरण पामुंछुं तेनुं शुं कारण ?

प्रत्युत्तर–कर्म, कर्म ए आत्मा नथी. आत्माथी भिन्न द्रव्यछे. आत्मानी साथे अनादिकालथी लाग्युंछे. जेनी आदिनथी तेनो अनादिकाल समजवो–

प्रश्न–कर्म आत्मानी साथे पोते पोतानी मेळे लाग्यांछे वा कोइए लगाड्यांछे.

उत्तर–कर्म पुद्गल स्कंध स्वरूपछे. जडछे. खरवा मिळवा रूपक्रिया करेछे. अनादिकालथी आत्मानी अशुद्धि परिणतियोगे कर्म ग्रहायछे, परमात्मा आत्मानी साथे कर्म लगाडतो नथी. अर्थात् आत्मा पोते अशुद्ध भावथी कर्मने ग्रहेछे. अशुद्ध परिणति आत्माथी न्यारी नथी. तेथी आत्माज पोते कर्मनो कर्त्ता तथा भोक्ता कहेवायछे.

आत्मानी साथे अन्य कोइ कर्म लगाडतुं नथी. केटलाक जीवो इश्वर जीवनी साथे कर्म लगाडेछे एम मानेछे पण ते युक्तिहीन तथा सर्वज्ञनामत विरुद्ध वातछे. कारण के परमेश्वरने शुं प्रयोजन छे के ते जीवोनी साथे कर्म लगावे. अलबत रागद्वेष रहीत प्रभुने कंइपण प्रयोजन नथी के ते जीवोनी साथे कर्म लगाडी शके. वळी परमेश्वर कहो के परमात्मा सिद्ध, तेओए कर्मनो नाश कर्योछे, कर्मनो सर्वथा प्रकारे नाश थवा सिद्ध परमात्मा कहेवायछे, त्यारे

पनी क्रिया पोते करे तो ते क्रियाथी माननाशरूप थतुं फल पण पोते भोगवेछे. हवे कहो के तेमां न्याय कर्ता कोण ईश्वर वा क्रियानो कर्ता, ईश्वरे मनुष्यना माननो नाश कर्यो वा तालपुट विषे माननो नाश कर्यो. अलबत्त कहेवुं पडशे के विषमांज एवी शक्ति रहीछे के ते माननो नाश करेछे, प्रत्यक्ष ते सिद्ध वातछे. ईश्वर न्याय करेछे एम मानवुं ते केवल मृषा. प्रमाणविरुद्ध कल्पना मात्रछे, निरंजन निराकार ईश्वर मिथ्यात्वीने शुं प्रयोजन छे के कर्मना फलो रूपने भोगवावे. वळी ते उपर बे विकल्प करीएछीए के कर्म पोते फल आपवामां स्वतंत्रछे के परतंत्र प्रथम पक्षमां कर्म पोतेज सारू वा खोटुं आपवामां स्वतंत्रछे. एम स्वीकारतां ईश्वर जीवोने कर्माकर्म प्रमाणे न्याय आपेछे ते वात खोटी आकाश कुसुमवत् ठरी. कर्ममां ज सारूं वा नरसुं फल आपवानी शक्ति रहीछे तो ते प्रमाणे कर्मथी सुख दुःख फल पडशे. पोतानी मेळे जेम पुरुषनुं वीर्य अने स्त्रीनुं रजस् ए बेना संयोगमां गर्भ उत्पन्न करवानी शक्ति रहीछे तथा जेम अग्निमां स्वाभाविक दाहकशक्ति रहीछे तेथी अग्निनो अंगारो हाथमां लइने पोतानी मेळे हाथ बळे, हाथने बाळवामां दाहकस्वरूप न्याय पोते करेछे. तेमां ईश्वर कंइ न्याय करतो नथी. जेम कर्म पोते स्वतंत्र रीते फल आपता समर्थछे. त्यां ईश्वरने न्याय कर्ता मानवो केवल भ्रमणा अने अज्ञान अने मिथ्यात्व समजवुं. कर्मनांज जणाता अज्ञानरूप फल आपवानी शक्ति छे एम सत्य छे, अने एम ज्ञान दृष्टिथी देखायछे. सर्वज्ञने असत्य कहेवानुं कंइ कारण नथी हवे बीजो पक्ष लइए, कर्म फल आपवामां परतंत्र छे एटले ते ईश्वरना ताबामांछे. ईश्वरनी इच्छा प्रमाणे कर्म फल आपी शकेछे एम मानीएतो ईश्वर अन्यायी प्रपंची दुराग्रही ठरेछे.

आशंका-तेम करतां इश्वर अन्यायी दयाहीन मपंची शीरीते ठरे वारु?

समाधान-कर्म फल आपवामां परतंत्रछे. तेम लागवामां पण परतंत्र, जे परतंत्र होय ते सदाय फलोदयमां तथा लागवामां परतंत्रज रहेछे, जेम तरवार बीजाने लागवामां तथा तेनो माण लेवामां सदाय परतंत्र रहीने कार्य करेछे. मनुष्य हाथमां तरवार ग्रहीने अन्यने मारे त्यारे तेना माणनो नाश थायछे, तरवार पोतानी मेळे उंची थइ मारवानी क्रिया करी शकती नथी, कारण के ते कर्त्ताथी मवर्तेछे माटे परतंत्रछे. तेम कर्म इश्वरना तावामां रही मवर्तता होय तो मथम जीवोने इश्वरे कर्म लगाडयां एम कहीएतो पहेला जीव कर्मरहीत हता. त्यारे तेमने शा माटे कर्म लगाड्यां ? कंइपण अपराध विना कर्म लगाड्याथी इश्वर अन्यायी पातकी ठरे. वळी कर्मरहीत पहेला जीवो हता तेओने कर्म लगाडवाथी इश्वर मभुनुं शुं कल्याण थवानुं हतुं अलबत कंइ नही, वळी इश्वरनामां जीवोने कर्म लगाववानी शक्ति नित्यछे के अनित्यछे, जोते कर्म लगाडवानी शक्तिने नित्य मानीए तो सदाय इश्वरजीवोने कर्म लगाडया करशे. जीवो कदी कर्मरहीत थशे नहीं. तो मभुने भजवुं इत्यादि सर्व व्यर्थ कल्पना मात्र थइपडे. वळी इश्वरमां कर्म लगाडवानी शक्ति अनित्यछे एम कहीए तो अनित्य शक्तिनो आधारी भूत इश्वरपण अनित्य ठरेछे, निराकार साकार इश्वर मानवामां कोइ ममाण नथी. निराकार इश्वर सिध्धने मानतां निराकार इश्वरने कोइपण जातनी इच्छा नथी तेथी ते कर्म लगाडवानी उपाधिमां केम पडे.

वळी निराकार इश्वरने जो इच्छा कहीए तो इच्छा अधुराने होयछे, पण पूर्णने होती नथी. इच्छा मानवाथी इश्वरनी पूर्णतानो

नाश थायछे. वळी समजवानुं के-इच्छा राग विना होती नथी अने ज्यां राग होयछे त्यां समाय द्वेष रहेछे. रागी द्वेषी होवाथी कर्म सहित होय अने कर्म सहित होवाथी संसारी ठरेवायछे, संसारी थवाथी ईश्वरपणुं नष्ट थयुं. कर्म कलंक नाश करी निरंजन निराकार पद पामवाथी ईश्वर थायछे- कर्म ए कंइ पोलना माफक हवा नथी, कर्म पुद्गल परमाणुओनो स्कंधथी बनेलुंछे. अने ते रूपीछे. कर्म लागवाथी आत्माना गुणो ढंकायाछे. हवे कहो के-कर्मथी रहित एवा ईश्वरमां कर्म लगाडवानी शक्ति मानवी ए केटली भूलनी वातछे, जे पोते कर्म रहित थयाछे ते बीजाने केम कर्म लगाडे, कर्म लगाडवानी शक्ति ईश्वरमां कल्पवी ते आकाश कुसुमवत् असत्य कल्पना मात्रछे. तेमज ईश्वरोमां सुख दुःख भोगाववानी शक्ति मानवी ते पण कल्पना मात्र शश शृंगवत् वातछे.

कर्म पोतानी मेळे लाग्यां एम मानतां ईश्वर कर्ता हर्ता नथी एम सिद्ध थयुं. हवे जीवने कर्म पोतानी मेळे लाग्यां एम मानतां शंका थशे के-कर्म लगाडया विना पोतानी मेळे शी रीते लाग्यां अने ते क्यारथी लाग्यां-तेनुं समाधान सूक्ष्म विचारथी थशे के-कर्म अनादि काळथी जीवने लाग्यांछे. जीव अनादि काळथीछे. जेनी आदि होय उत्पन्न थवापणे ते वस्तुनो अंत पण होयछे, जे वस्तुनी आदि अने अंतछे. ते अनित्य होयछे अने जे अनित्य होयछे ते कार्यछे अने जे कार्य पणे वस्तुछे ते विनाशीछे जेम घट उत्पन्न थयानी आदिछे तो तेनो अंत फुटछे नाश होयछे, आत्मा कहो के चेतन या जीव तेनी उत्पन्न थवानी आदि नथी अर्थात् आत्मा द्रव्यार्थिकनयापेक्षाए कोइनाथी उत्पन्न थयो नथी, अने जे वस्तु उत्पन्न थइ नथी ते अनादि काळथीछे, जेम आकाश. जे वस्तु अनादि काळथीछे तेनो अंत पण नथी, माटे जीव पण अनादि अनंतछे. आत्माना असंख्यात

प्रदेशमय व्यक्ति द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए अनादि अनंतछे, कोइ पण कालमां आत्माना असंख्यात प्रदेश पैकी एक प्रदेश पण खरवानो नथी. आत्मा कह्यो के जीव ते त्रिकालमां पोताना रूपे सत्छे अने जे वस्तु सत्छे ते नित्यछे, आत्मा सत्छे माटे ते नित्यछे,

प्रागभावाप्रतियोगित्वं नित्यत्वं

प्राग्भावनुं जे अप्रतियोगी होयते नित्य जेटला कार्य रूप पदार्थो घट पट दंडादिकछे ते पर्यायार्थिक नयनी अपेक्षाए अनित्य जाणवा–कारणके घटपटादिक पदार्थो प्राग्भावना प्रतियोगीछे. आत्मा वा चेतन प्राग्भावनो अप्रतियोगीछे माटे आत्मा नित्य जाणवो–द्रव्यार्थिक नय द्रव्यत्व पणाने ग्रहेछे माटे द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए आत्मा नित्यरूप जाणवो. संसारमां चार गतिमां परिभ्रमण करनारा अनंत आत्माओनुं द्रव्यपणुं त्रिकाल एक स्वरूपछे माटे ते द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए नित्य जाणवा, हवे आत्मा अनादि अनंत नित्यछे, तेम सिध्ध कर्युं, ते आत्माने अनादिकाळथी कर्म लाग्यांछे ते वातनुं विवेचन करायछे. आत्मा अनादिकाळथी छे एम सर्वज्ञ श्री वीरप्रभुना वचनथी जाण्युं तेम कर्म पण अनादिकाळथी आत्माने लाग्युंछे. एम सर्वज्ञ श्री महावीरना वचनथी जणायुं, वीर प्रभु सर्वज्ञ अने रागद्वेषथी सर्वथा रहित हता माटे तेमना वचननो पूर्ण विश्वास भव्यजीवने थाय एमां कंइ आश्चर्य नथी,

आप्तोक्तं वाक्यं प्रमाणं

श्री वीरप्रभु त्रिकाल सर्वज्ञानी आप्त हता. माटे तेमनुं वाक्य प्रमाणीभूत जाणवुं. कर्म अनादिकालथी जीवने लाग्यां एमां आगम प्रमाण पण सिध्ध ठर्युं. कोइ जीव राजा थायछे, कोइ रंक थायछे, कोइ जन्मथी अंधा बधिर अवतरेछे कोइ–रोगीतो कोइ–भोगी इत्यादि सर्व पुण्यपापनुं फल प्रत्यक्ष देखवामां आवेछे माटे तेमां

प्रत्यक्ष प्रमाण पण सिध्ध करेछे. (भोगायतनं शरीरं) सुख दुःख भोगववानुं स्थान शरीरछे, अने ते प्रमाणे दरेक जीव क्षणिक सुख तथा दुःख शरीरादिकथी भोगवेछे एम प्रत्यक्ष जोवामां आवेछे. तो ते सुख दुःखनुं कारण कर्म-पुण्य पापरूप आत्मानी साथे लाग्युं छे एम अनुमान थायछे. जेम कोइ शहेरपासे नदीछे तेमां जलनी रेल आवीछे. शहेरनी आसपासनो मेघ वरस्यो नथी. ते उपरथी एम अनुमान थायछे के-ज्यां त्यां अत्यंत मेघनी वृष्टि थवी जोइए. कारणके नदीमां रेल रूप कार्य देखायछे ते मेघनी वृष्टि विना होय नहीं अहीं तो मेघनी वृष्टि थइ नथी. तेथी अनुमान थायछे के पर्वतमां दूरे खूब मेघ वृष्टि थइ हशे, तेम कर्मनो बाबतमां पण अनुमान थायछे के- भोग रोग सुख दुःख रूप कार्य फलनो प्रत्यक्ष देखवामां आवेछे माटे तेनुं कारण कर्म होवुं जोइए. पुण्य पाप विना शाता तथा अशाता वेदनीय होय नहीं, ए अनुभव सिध्ध वातछे, वळी कहेछे के-जेम कोइ वृक्षना कोटरमां अग्नि सळगेछे अंदरना भागमां अग्नि बळेछे बाहिर देखाती नथी बाहिरतो फक्त धूम देखायछे. ते उपरथी अनुमान थायछे के-

यत्रयत्र धूम स्तत्रतत्र वन्हिः

ज्यां ज्यां धूम होयछे त्यां त्यां अग्नि होयछे, वृक्ष अंदरथी धूम बहिर निकळतो देखायछे माटे वृक्षना कोटरमां अग्निछे एम अनुमान थी सिद्धि थायछे. तेम सुख,पूर्णेच्छा,भोग, रोग,शोक,वियोग,अंधत्व, बधिरत्व, दरिद्रत्वरूप,कार्यरूप, फल देखायछे माटे तेनुं कारण पुण्य पापरूप कर्म आत्मानी साथे लाग्युंछे एम सिद्ध थायछे, सर्व विद्वानो कर्मनुं अस्तित्व स्विकारेछे तेम कर्म ग्रंथमां कर्मनुं स्वरूप विस्ताराथी ज्ञानीए वर्णव्युंछे तेमज कम्मपयडी, भगवतीसूत्र, पन्नवणासूत्र, विपाकसूत्र विगेरे सूत्रो तथा ग्रंथोथी कर्मनुं यथातथ्य स्वरूप सम-

जायछे अने ते अनुभवमां आवेछे. कर्मनी प्रकृतिनुं स्वरूप निर्ग्रंथ प्रवचनमां सूक्ष्मपणे वर्णन कर्युंछे; तेवुंवर्णन अन्य दर्शनमां ते प्रमाणे परिपूर्ण पण नथी. कोइ कर्मने किस्मत कहेछे, कोइ कर्मने प्रकृति कहेछे, पण कर्मनुं अस्तित्व मान्याविना छुटको थतो नथी.-

श्लोक.

कृतकर्मक्षयोनास्ति, कल्पकोटीशतैरपि ॥
अवश्यमेव भोक्तव्यं, कृतं कर्म शुभाशुभं ॥ १ ॥

कृतकर्मनो क्षय नथी. कोटीकल्पशतोए पण कर्म अवश्य शुभाशुभ भोगववुं पडेछे, जन्मजरा अने मृत्यु पण कर्मथी थायछे. चोराशी लाख जीवयोनिमां अवतरवुं पण कर्मथी थायछे. एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिंन्द्रिय, पंचेंद्रियना अवतार पण कर्मथी थायछे, कर्म अनेक प्रकारेछे. कर्मना मूळ आठ भेदछे. तेनी उत्तर प्रकृति एकशतअठावनछे. देवगति, मनुष्यगति, तिर्यंचगति, नारकगति, ए चार गतिमां अवतार पण शुभाशुभ कर्मथी छे कह्युंछे के-

गाथा.

जंजेण कयंकम्मं, पुव्वभवे इहभवे वसंतेणं ॥
तं तेण वेइअव्वं, निमित्तमित्तो परो होइ ॥ १ ॥

जे जीवे पूर्वभवमां तथा आभवमां वसतां जे कर्म कर्याछे. ते कर्म ते जीवे भोगववा योग्यछे. सुखदुःखमां परजीव तो निमित्त मात्रछे. कर्मनो कर्त्ता पण जीवछे तेम कर्मनो भोक्ता पण जीवछे. देखो सूयडांगसूत्र-सम्मतितर्कमां परभावमां रमतो जीव परनो कर्ता तथा भोक्ता बनेलोछे-केटलांक कर्म भोगवीने खेरवेछे. अने जीव केटलांक कर्म नवां ग्रहण करेछे-एम अनादि काळथी जीव कर्मने ग्रहण करतो तथा कर्मने छंडतो वर्तेछे, मातानुं रुधिर अने पुरुषना

वीर्य संयोगे गर्भमां जीवनुं उत्पन्न थवुं अने शरीरेन्द्रिय इत्यादि थवुं इत्यादि सर्व कर्मनो संबंधे गर्भमां पण जीव ओजाहार ग्रहेछे

प्रश्न-गर्भमां जीव शावडे आहार ग्रहण करेछे.

प्रत्युत्तर-आहार त्रण प्रकारनाछे. १ ओजाहार. २ लोमाहार, (रोमाहार) कवलाहार-पूर्व स्थले मातृभाने ज्यारे पीनां करेछे त्यारे मातृभो मनथी पीनी मार्गे परिणमी जायछे. तेम गर्भमां जीव आहारने लेथी शरीररूपे परिणमावी शरीरनी वृद्धि करेछे. रोमथी जे आहारने ग्रहण करवो ते रोमाहार कहेवायछे. कवलनुं ग्रहण शरीरमां रोमथी थायछे, कवलथी जे आहारनुं ग्रहण करवुं. ते कवलाहार कहेवायछे, मनुष्य पशु पंखी जनावरने कवलाहार प्रत्यक्ष देखवामां आवे छे. पण गर्भमां ओजाहारनुं ग्रहण छे.

प्रश्न-केटलाक मोटा लोको अज्ञानताथी एम मानेछे के-गर्भमांथी बाहिर नीकल्या बाद-जीव शरीरमां प्रवेशेछे. अने पश्चात् छट्ठा दीवसनी रात्रिए सरस्वति बालकनुं भविष्य कपालमां लखेछे अने कहेछे के-छट्ठीना लेख लख्या मटे नहीं तेनुं केम?

प्रत्युत्तर-गर्भमांज जीव उत्पन्न थायछे. ते माटे प्रवचन सारोद्धार नवतत्त्व विगेरे ग्रंथो जोवा छट्ठीना लेख सरस्वति लखेछे एम मानवुं पण मिथ्या कल्पनामात्रछे-कर्म साथे बंध पामेलो जीव गर्भमां उत्पन्न थायछे, अने त्यां वृद्धि पामी नव मास थया बाद बाहिर नीकलेछे, कोइ गर्भमांज मरण पामेछे. इत्यादि सर्व कर्मनुं फलछे.

कर्मनो सर्वथा प्रकारे क्षय थवाथी जन्मजरा मरणनी प्राप्ति थती नथी-

प्रश्न–कर्मनो क्षय थवाथी मुक्तिपद मळेछे त्यारे जेटला जीव कर्मनो क्षय करेछे ते परमेश्वर कहेवाय के नहीं.

प्रत्युत्तर–हा, जेटला जीव, कर्मनो क्षय करेछे तेटला जीव परमात्मा सिद्ध, बुद्ध, कहेवायछे, कर्मथकी सर्वथा प्रकारे रहीत थवुं. तेनुं नाम मोक्ष कहेवायछे.

प्रश्न–कर्म सहित जीव मोक्षमां जाय के नहीं ?

प्रत्युत्तर–कर्मसहित कोइ जीव मोक्षमां गयो नथी अने जशे पण नहीं.

शिष्य–हे सद्गुरो–कोइ मति अज्ञानीयोए नवीन कल्पना उत्पन्न करी एम कहेछे के मुक्तिमां केटलांक वर्ष सुधी जीव रही पश्चात् संसारमां आवे छे. आ बाबत शुं समजवुं.

सद्गुरु–मुक्तिमां गया बाद जीव पुनर्संसारमां पाछो आवतो नथी. जीवने एक स्थानथी अन्यत्र लेइ जनार कर्मछे. अने ते कर्मनो संपूर्ण नाश थाय त्यारे मुक्ति स्थानमां जीव सिद्ध रूपे बीराजेछे. त्यांथी संसारमां आवी शकातुंज नथी. कारण के जीवनी साथे कर्म संबंध छतां गमनागमनछे. कर्मना अभावे मुक्ति स्थित मुक्तात्मानुं गमनागमन थतुं नथी, श्री वीरप्रभु एम सर्वज्ञ दृष्टिथी वदेछे–चकलाचकलीनी पेठे मुक्तिना जीवो गमनागमन करता नथी–मुक्त जीवो अक्रियावंतछे. माटे ते गमनागमननी क्रिया करता नथी.

प्रश्न–मुक्त आत्मामां सर्वशक्तिमानपणुं छेके नहीं,

उत्तर–हा मुक्तात्मामां पोताना स्वरूपथी सर्व शक्तिपणुं रहुंछे. पण पुद्गल द्रव्यनी शक्तिथी मुक्तात्मानी शक्ति भिन्नछे. आकाश द्रव्य अरूपीछे. आकाश जेम अनंत प्रदेशीछे अने ते जेम स्वस्वरूपे स्थिर वर्तेछे. तेम सिद्ध परमात्मा स्वस्वरूपे शुद्ध थया छता स्थिर वर्तेछे. स्थिरवर्तवाथी आत्मिक सर्व शक्तिपणुं जरा

मात्र घटतुं नथी. गमनागमन परमाणुओनुंछे. परमाणुओना संबंधथी थएला पुद्गल स्कंधो कर्मरूप परिणमी आत्माना प्रदेशोनी साथे लाग्याछे ते ज्यारे कर्म नाश थायछे. त्यारे मुक्तात्मा सिद्धबुद्ध कहेवायछे. मुक्तात्मानी सर्व शक्ति आत्माना असंख्य प्रदेशोनी व्यापीने रहीछे. मुक्तात्मानी शक्ति स्वद्रव्य बाहिर जती नथी. माटे आत्मस्वभावे सर्व शक्तिपणुं सदा बनी रघुंछे, सिद्ध अक्रिय होवाथी गमनागमननी क्रिया करे नहीं.

प्रश्न–कोइ एम कहेछे के–इश्वर अवतार लेइ दैत्योनो नाश करेछे ए वात खरी के खोटी–

उत्तर–कर्म रहीत निर्मल परमात्माने इश्वर कहेवामां आवेछे ते परमात्मा अवतार ग्रहण करता नथी कारणके कर्मातीतने अवतरवुं आदि उपाधि नथी–पण कर्म सहित जे संसारी जीवछे ते अवतार ग्रहण करेछे अने जन्म जरा मरणनां दुःख पामेछे.

प्रश्न–त्यारे इश्वरनां लक्षण कहो.

प्रत्युत्तर–जेनामां रागद्वेष सर्वथा होतो नथी तेने इश्वर कहेछे' वळी इश्वरना चार प्रकारछे–नाम इश्वर, स्थापना इश्वर, द्रव्य इश्वर, अने भावइश्वर इश्वर एवुं गुणी वा निर्गुणीनुं इश्वर एवुं नाम स्थापवुं ते नाम इश्वर, तथा कोइ पण वस्तुमां इश्वरनो आरोप करवो ते स्थापना इश्वर–जे जीवमां इश्वरपणुं आविर्भावे वर्ते नहीं ते द्रव्येश्वर–जे जीवमां रागद्वेषना क्षयथी इश्वरत्व आविर्भावे वर्तेछे ते भावेश्वर, ए चार भेद इश्वरनाछे. तेमांथी पूर्वोक्त जे इश्वर भावइश्वर तरीके कथायछे. ते इश्वरनुं संसारमां पुनर्जन्मवुं थतुं नथी. जीव ते पण इश्वर सत्ताएछे. इश्वरपणुं कर्म्म आदिनपणे होवाथी कर्म सहीत संसारी जीव संसारमां जन्म जरा मरण करेछे अने चतुरशीति लक्ष जीवयोनिमां पुनः पुनः ग्र-

भ्रमण करेछे-जीव पोते कर्म करेछे अने तेनो भोक्ता पण पोते एकलोछे. कह्युंछे के-

गाथा.

एको करेइ कम्मं,फलमवि तस्सिक्कओ समणुहवइ
एको जायइ मरइय, परलोयं एकउजाइ ॥ १ ॥

भावार्थ सुगम होवाथी लख्यो नथी, व्यवहारनये जीव कर्मनो कर्ताछे-शुद्धनिश्चयथी स्वस्वरूपे रमतो जीव परनो एटले द्रव्यकर्म तथा भावकर्मनो कर्ता नथी.

ज्ञानी शुद्ध आत्मस्वरूपमां रमतो कर्मनो नाश करेछे-जे आश्रवना हेतुओ छे ते ज्ञानीने संवररूपे परिणमेछे. कह्युंछे के-

श्लोक.

यथा प्रकारा यावंतः संसारावेश हेतवः
तावंतस्तद्विपर्यासाः निर्वाणवेशहेतवः

कर्मना बे भेदछे. एक शुभाश्रव बीजो अशुभाश्रव. प्रथम शुभाश्रवने पुन्य करेछे, अने अशुभाश्रवने श्रीजिनेंद्रदेव पाप कहेछे. पुन्यनी बेंताळीस प्रकृतिछे अने तेम पापकर्मनी ८२ ब्यासी प्रकृतिछे. आत्माना शुभ परिणामथी पुन्य तथा अशुभ परिणामथी पापकर्म बंधायछे. रागद्वेषने भावकर्म कहेछे. रागद्वेषनो मंद करवो ए शुभ पुन्यनुं कृत्यछे. रागद्वेष जीत्या विना देवपणुं कहेवातुं नथी. अर्हंत परमात्मक लोकमां सर्व संसारी जीवोमां रागद्वेष व्यापी रह्योछे. महादेव वर्णवीया कह्युं छे के-

श्लोक.

रागद्वेषौ महामल्लौ, दुर्जितौ येन निर्जितौः
महादेवं तु तं मन्ये, शेषा वै नामधारकाः १

आ संसारमां दुर्जय रागद्वेषरूप महामल्लछे. तेवा महामल्लोने जेणे जीत्याछे तेने महादेव मानुंछुं, बाकीना तो नामना महादेवछे. रागद्वेषने जीतवाथी वीतरागता मगटेछे, सत्यतात्त्विक सुख वीतरागावस्थामांछे. रागदशाथी दुःखछे अने वीतरागदशाथी सुखछे. एम सर्वज्ञ वीरपरमात्मा सारमां सार कयेछे. श्रीवीरप्रभुए ध्याननी तीक्ष्णताथी रागद्वेषनो क्षय कर्योछे. श्रीप्रसन्नचंद्र राजर्षिए रागद्वेष प्रभुनो आत्मध्यानथी क्षय कर्यो. रागद्वेषज संसारनुं मूळछे. ज्ञान दर्शन अने चारित्रगुणनी क्षायिकभावे प्राप्ति रागद्वेषना क्षय विना नथी. द्वेष करतां पण रागनी सत्ता विशेषतः प्रवर्तेछे. कारण के जड वस्तुपर पण रागदशाथी ममत्वभाव उत्पन्न थायछे. आत्मिक ज्ञानयोगे मोहनीय कर्मनो उपशमभाव वा क्षयोपशमभाव वा क्षायिकभाव प्रगटेछे. ज्ञानावरणीय कर्मना, क्षयोपशमभाव वा क्षायिकभावना प्रादुर्भावने मोहनीय कर्म अटकावेछे.

कर्मबंधमां पण रागद्वेषनी प्राधान्यता समयमां वर्णवीछे. चार घातीकर्ममां पण मोहनीय कर्मनी सत्ता प्रबलपणे प्रवर्तेछे. देवगुरु धर्मनी श्रद्धा सम्यक्त्व पण मोहनीय कर्मना, उपशम, क्षयोपशम तथा क्षायिकभावथी थायछे, मोहनीय कर्म पण द्विधा प्रवर्तेछे. दर्शन मोहनीयना क्षयथी दर्शन प्रगटेछे अने चारित्र मोहनीयना क्षयथी चारित्र प्रगटेछे. वेदनीयकर्म, आयुष्यकर्म, गोत्रकर्म अने नामकर्म एह चार कर्म अघातीयांछे, ए चार कर्ममां औदयिकभाव फक्त प्रवर्तेछे. औदयिकभावे अघातियां चार कर्म भोगवीने आत्मा खेरवेछे. प्रत्येक भवमां द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भावथी औदयिकभावनी जीव जीव प्रति भिन्नता वर्तेछे. इंद्रिय, गतिकायनी अपेक्षाए औदयिकभावमां जीव जीव प्रति असंख्यभेदे भिन्नतानी तारतम्यता प्रवर्तेछे. औदयिकभावे चार अघातीयां कर्मनी कर्मबंधनमां निमित्त

पायछे अने वैराग्यथी चारित्र जीव आदरेछे, अने तेथी जीवकर्मनो क्षय करी मोक्षमां जायछे. माटे मुक्तिमार्गमां ज्ञाननी तथा तेनी साथे वैराग्यनी पण मुख्यताछे. शास्त्रमां कयुं छे के–

श्लोक.

ज्ञानस्यैवहि सामर्थ्यं, वैराग्यस्यैव वा किल;
यत्कोऽपि कर्मभिः कर्म भुंजानोऽपि न बध्यते. १

ज्ञाननुं एवुं सामर्थ्य छे के वा वैराग्यनुं खरेखर एवुं सामर्थ्य छे के जेथी कोइपण कर्मोवडे कर्म भोगवतो छतो पण कर्मथी बंधातो नथी. तात्पर्य के ज्ञान अने वैराग्यथी कर्म भोगवतां पण कर्मबंध थतो नथी.

माटे कहेछे के–

ज्ञानीको भोग सबि निर्जराको हेतु है.

ज्ञानीनो सर्वभोग निर्जरार्थछे. औदयिकभावे मास थएला पंचेंद्रिय विषयभोगोने भोगवता पण ज्ञानी कर्मनी निर्जरा करेछे, अने अज्ञानी उलटा बंधायछे. हुं ज्ञानीछुं एम मानी बेसवाथी कंइ ज्ञानीपणुं आवतुं नथी. वा कोइ एम कहेशे के आ ज्ञानी नथी एम कथवाथी ज्ञानीपणुं टळतुं नथी. ज्ञानीपणुं ज्ञानीगम्य वा ज्ञानीना अनुभवमां समजायछे.

ज्ञानना पण घणा भेदछे. आत्मज्ञान विना कर्म कलंक टळतुं नथी. ज्ञाननो महिमा अनंतछे.

कृष्ण अर्जुनने कहेछे के–

ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन.

हे अर्जुन ! ज्ञानरूप अग्नि सर्व कर्मने बाळी भस्म करेछे. ज्ञान विना चारित्र नथी अने चारित्र विना मुक्ति नथी. क्रिया पण ज्ञानिनी पासेछे. ज्ञान विना शुंतप, शुंक्रिया माटे आत्मतत्त्वनुं ज्ञान

करवुं श्रेयस्करछे. आत्मज्ञान विना कोइ तर्यो नथी अने तरछे पण नहीं, राजा, करोडाधिपति, आदि सर्व करतां ज्ञानीनी महत्ताछे. ज्ञानी सूर्य करतां पण मोटोछे. कारण के सूर्य बाह्य प्रकाश करेछे किंतु अंतर्प्रकाश करी शकतो नथी. अने ज्ञानी तो अंतर्प्रकाश करे छे. ज्ञानीनी सर्व क्रिया, वर्तन सापेक्षपणे वर्तेछे. अने अज्ञानीनुं वर्तन निरपेक्षपणा वर्तेछे. ज्ञानी अवश्य चोथागुणठाणे गणे तो होयछे अने अज्ञानी बी. ए. एल. एल. बी आदि पदवीओथी दुनीयादारीमां महा विद्वान् कहेवातो होय तो पण समकित विना पहेले गुणठाणे वर्तेछे. ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपशमभावथी वा क्षायिकभावथी ज्ञाननो आविर्भाव थायछे. सम्यक्तत्त्व श्रद्धान विना ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशमभाव पण मिथ्यात्वरूपे परिणमेछे. एम श्रीवीर प्रभुनुं कथनछे.

ज्ञानावरणीय कर्म पंचप्रकारेछे–मतिज्ञानावरणीय कर्म १, श्रुतज्ञानावरणीय कर्म २, अवधि ज्ञानावरणीय कर्म ३, मनःपर्यव ज्ञानावरणीय कर्म ४, केवल ज्ञानावरणीय कर्म ५.

ज्ञानावरणीय कर्ममां उपशम भाव नथी. ज्ञानावरणीय कर्मनो औदयिकभावछे. ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम विचित्र असंख्य प्रकारे तरतमयोगथी वर्तेछे. द्वादशांगीनुं गुंथन गणधरजी क्षयोपशमभावे करेछे.

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञानमां क्षयोपशम भाव लाभेछे. केवलज्ञान क्षायिकभावे उत्पन्न थायछे. ज्ञानावरणीय कर्म अष्ट कर्ममां प्रथमछे. तेनुं कारण के विशेषतः ज्ञानावरणीय कर्म आत्मानुं भान भूलवेछे. ज्ञान विना तत्त्वनुं भान थतुं नथी. माटे प्रथम तेनो निक्षेप कर्योछे. ज्ञान विना जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध अने मोक्षनुं स्वरूप जणातुं नथी,

षड्द्रव्य, सातनय, सप्तभंगी, प्रमाण निक्षेपनुं यथातथ्य स्वरूप ज्ञान विना समजातुं नथी. ज्ञान विना धर्म अधर्मनुं स्वरूप जणातुं नथी. ज्ञान विना चारित्र शुं छे तेनुं पण भान थतुं नथी.

मति ज्ञानावरणीय अने श्रुत ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम सर्व जीवोमां सरखो लागतो नथी. कोइएक वस्तुनुं स्वरूप विशेष समजेछे कोइ समजतुं नथी. त्यां मति ज्ञानावरणीयकर्मनी क्षयोपशमताज कारणीभूतछे. पूर्वभवमां जे प्रकारे मतिज्ञान अने श्रुत ज्ञाननुं आराधन कर्युं होयछे. ते प्रमाणे आ भवमां मनुष्य जन्म पामी शरीरनी रचना, मगजनी रचना ज्ञानतंतुनी प्रबलता आदि सामग्रीसाधन मतिज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपशमभावमां प्राप्त थायछे अने ते साधनोद्वारा उद्यम करवाथी मतिज्ञाननी वृद्धि थायछे.

मतिज्ञानना अष्टाविंशति अने ३४० त्रणसो चालीश भेद नंदिसूत्रमां मरूप्याछे. ज्ञाननी ब्राह्मी लीपी जे श्रुतज्ञान अक्षरस्वरूपेछे तेनी आशातना करवाथी ज्ञानावरणीय कर्म बंधायछे. आशातनाना हजारो भेदछे. ते गीतार्थने विनयथी पूछी समजण लेवी.

सुवर्णना प्यालामां जलनां जेटलां बिंदु पडेछे तेटलां कायम रहेछे. तेम योग्य संस्कारी जीव जेटलुं गुरुद्वारा श्रुतज्ञान मेळवेछे तेटलुं तेने शुद्धरूपे परिणमेछे अने तेनुं स्मरण रहेछे.

जेम तपावेला लोहना गोळा उपर जलबिंदु त्रण चार दश बार पडे तो कंइ तेनुं जोर चालतुं नथी. तेम मूढ अज्ञानी जीवना हृदयमां सद्गुरु वचनामृतनो वास थतो नथी उलटो तेनो नाश थायछे.

एक शिक्षक शिष्योने एकज वखते सरखी रीते कोइ विषयनो बोध आपेछे तेमां कोइ विद्यार्थिने तो बिल्कुल तेनी यादी रहेती नथी. कोइने यत्किंचित् रहेछे. कोइने पूर्ण यादी रहेछे त्यां श्रुत ज्ञानावरणीय कर्मनी क्षयोपशमताज कारणीभूतछे, कोइ एक श्लोक

भणीने स्मरणमां राखेछे. कोइ एक कलाकमां पांच श्लोक भणेछे.
कोइ पचीस श्लोक कोइ शतश्लोक कोइ सहस्रश्लोक एक कलाकमां
याद करेछे कोइ आखा दीवसनो एक श्लोक पण याद करी शकतो
नथी. त्यां श्रुतज्ञानावरणीयकर्मनी क्षयोपशमताज कारणीभूतछे. ज्ञा-
नना समयमां कोइ शतावधानी कोइ द्विशतावधानी देखवामां आवे
छे. तेनुं पण कारण मति अने श्रुतज्ञानावरणीय कर्मनी क्षयोपशम-
तानी विचित्रताछे. अने ते प्रमाणे प्रगतनी रचना ज्ञानतंतुनी प्रब-
लता अने अप्रबलतानी तारतम्यताए घटना थायछे. अने ते प्रमाणे
द्रव्य क्षेत्र कालभावथी प्रबल अप्रबल साधनोनी प्राप्ति थायछे. श्रुत-
ज्ञानना अभ्यासथी तथा श्रुतज्ञानीनो विनय भक्ति बहुमान करवाथी
श्रुतज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम थायछे. श्रुत अने श्रुतज्ञानीनी
आशातना करवाथी तथा उत्सूत्रभाषण करवाथी श्रुतज्ञाना-
वरणीय कर्मनो बंध थायछे. माटे भव्य जीवोए क्रोध लोभ मान
पूजा स्वार्थादिक आवेशथी उत्सूत्र भाषण करवुं नहि. उत्सूत्र
भाषणथी जमाली तथा मरीचिनी पेठे भवपरंपरानी प्राप्ति थायछे.
अल्पज्ञानयोगे उत्सूत्र भाषण थयुं होय तो ज्ञान थतां मिथ्या दुष्कृत
देवुं. पण मान पूजा लज्जादिकथी मिथ्यादुष्कृत देतां प्रमाद करवो
नहि. भवभीरु भाग्यवंत जीव अनेकांत पंथने समजी प्राणांते पण
मिथ्याप्ररूपणा करतो नथी. उत्सूत्र भाषण समान कोइ पाप नथी. माटे
करी अल्पज्ञपणाथी उत्सूत्र प्ररूपणा करवी नहि, कलियुगमां सूत्रोनी
प्ररूपणामां गुरुगम विरह, मान, पूजा, स्वार्थ, मतांधपणाथी, उत्सूत्रभा-
षण करी अज्ञानी जीवो अनेक प्रकारना मत उठावेछे अने कुमति
कुयुतयोगे कुतर्क करी भिन्न भिन्न पंथनी काली दृष्टि रागी जीवोने
समजावीने वीरप्रभुनां सत्य वचननो लोप करी आत्माना प्रमाण-
णाथी भवपरंपरानी वृद्धि करी जन्मजरा मरणनां दुःख विविध
योनिमां अवतार धरी भोगववा प्रयत्न करेछे.

सूत्रोमां कोइ वचन तो उत्सर्ग मार्गनां छे. कोइ वचन अपवाद मार्ग बोधकछे. कोइ भय वचनछे. कोइक तो व्यवहार मार्गने बोधेछे. कोइक तो निश्चयनय मार्गने बोधेछे. एवो सूत्र सिद्धांतरूपी श्रुत सागरनो सार–महाश्रुतज्ञानी विना कोण पामी शके. अलवत ज्ञानी पामी शके–कह्युंछे के–

गाथासूत्र.

विहिउज्जम वन्नय भय, उसग्ग ववाय तदुभय गयाइं;
सुत्ताइं बहुविहाइं, समइं गंभीर भावाइं ॥ १ ॥
एसिं विसयविभागं, अमुणंतो नाण चरणकम्मुदया,
मुझइ जीवोतत्तो, सपरसि मसग्गहं कुणइ ॥ २ ॥

जैनसूत्रो उत्सर्ग अपवादथी परिपूर्ण सदाकाल विजयवंत वर्तेछे. सप्तनयोनुं यथार्थ स्वरूप जाण्या विना धर्मोपदेश सम्यग् रीत्या देइ शकतो नथी. केटलांक सूत्रो उद्यमकथकछे, माटे अपेक्षा समज्या विना प्ररूपणा करवी नहि. भाग्यवंत जीवोए गीतार्थनुं शरण अंगीकार करवुं योग्यछे. दुःषम समयछे. माटे गीतार्थद्वारा अनेकांत मार्ग समजवो. श्रुतज्ञानिनी तथा श्रुतज्ञाननी आशातना करवाथी नरकादि गतिमां घणा जीवो गया अने घणा जशे.

णमो बंभलीवीए.

आ सूत्रनो सम्यग् अर्थ गुरु परंपरया केवी रीते थायछे. अने तेमां श्रुतज्ञाननो विनय बहुमान भक्तिनुं केटलुं रहस्य समायुंछे. हवे तेनो कुतर्कनी स्वच्छंदताए विपरीत अर्थ करवामां केटली विरुद्धता वर्तेछे. ते विद्वज्जनो माध्यस्थदृष्टिथी विचार करशे तो समजाशे. श्री यशोविजयजी उपाध्याय पोताना रचेला स्तवनमां सप्रमाण अनुभव सहित शुद्ध व्याकरण दोषरहित सम्यग् अर्थ दर्शावेछे. तेनो

धर्म श्रवणथी भेदज्ञान थायछे अन तेथी स्वपरनो विभाग करतां सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाशछे. तेमां श्रुतज्ञाननो महा उपकार समजवो, त्रिकाल सर्वज्ञ वीरप्रभुए केवलज्ञानथी सर्व पदार्थोने जोया अने वाणीथी ते पदार्थोनुं स्वरूप कथ्युं. ते भगवान्नी स्वपर प्रकाशक वाणीनेज श्रुतज्ञान सूत्रसिद्धांतरूप कयेछे हालपण भगवान्नी वाणी जयवंती वर्तेछे.

आसन्नभव्यो भगवद्वाणीरूपगंगा प्रवाहमां स्नान करी संसारना तापथी शांति पामेछे अने पामशे.

महाविदेह क्षेत्रमां अनादिकाळथी समकितश्रुत अने मिथ्याश्रुत वर्ते छे.

सुश्रुतनो हे भव्यो आदर करो वखत वही जायछे, वखत अमूल्यछे. गयो वखत पश्चात् आवनार नथी. भव्य जीवोए वारंवार श्रुतज्ञाननो अभ्यास करवो.

अवधिज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम थवाथी अवधिज्ञान उत्पन्न थायछे. अवधिज्ञानना षड्भेदछे. अने वळी असंख्यात भेदे प्रवर्तेछे. मनःपर्यवज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपशमथी मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न थायछे, मनपर्यवज्ञान बे प्रकारेछे.

केवलज्ञान क्षायिकभावे उत्पन्न थायछे. शुक्लध्यानना बीजो पायो ध्यावतां बारमे गुणठाणे केवलज्ञानावरणीयकर्मनो सत्ताथी पण सर्वथा क्षय थाय छे.

मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान परोक्षछे. अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञान देश प्रत्यक्षछे. केवलज्ञान सर्वथी प्रत्यक्षछे.

आ प्रमाणे ज्ञाननी प्राप्ति थतां आत्मा परमात्मस्वरूप बनेछे. ज्ञाननी प्राप्ति थतां दर्शनावरणीयादि कर्मनो सर्वथा क्षय थायछे. जे जे कर्मप्रकृतिनो जे जे गुणठाणे क्षय थवानो होयछे ते ते गुण-

टाले केवो लय थायछे. ज्ञानप्रकरणमां नंदिसूत्रमां हेतु न्याय पूर्वक दर्शावीछे. माटे आत्मार्थि जीवोए त्यांथी विशेष अधिकार समजवो अहा ज्ञाननी केवी शक्ति ! ! ! चक्षुद्वारा देखेला पदार्थोनो मनमां केवो विचार थायछे. बीजानामनना विचार पण ज्ञानथी जाणी शकाय छे. ज्ञाननी एकनी एकथी बीजा जीवमां विशेषता देखवामां आवेछे. केवलज्ञानमां सर्वज्ञाननो समावेश थायछे. संमतिकाळे ज्ञाननी क्षीणताछे. अने तेथी मतभेद घणा थया अने थशे जेम ज्ञाननी अल्पता तेम मतमतांतर विशेष अने ज्ञाननी वृध्धि तेम मतमतांतर अल्प जाणवां. मतभेदना कदाग्रह विना जे जे वांचवुं. सांभळवुं. मनन करवुं ते सफळछे.

क्षयोपशमभावे अधुना मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान समकिती जीवोने वर्तेछे. एम कथवुं अनुभवगम्य समजाणछे, मति अज्ञानी अने श्रुत अज्ञानी जीवो आ क्षेत्रमां विशेषछे. मति अने श्रुत ज्ञानी जीवो अल्प अने तेमां पण विरति पाम्या जीवो अल्प अनुभवगम्य सिद्धांतानुसारछे.

हे भव्य मति ज्ञान अने श्रुतज्ञाननो गहन विषयछे. अल्पज्ञपणाथी सूक्ष्म तत्त्वस्वरूप निगोद स्वरूप समजी शकाय नहीं तो तेमां ज्ञानावरणीय कर्मनो दोष समज. ग्रंथकर्त्तोने दोष आपीश नहीं सूक्ष्म तीक्ष्ण मति ज्ञान विना सूक्ष्म वातनो बोध थतो नथी. एम कहेवुं समजाणछे. केवलज्ञान अने केवल दर्शनथी जे पदार्थ स्वरूप जाणवा देखवामां आवे तेनुं स्वरूप मतिज्ञानथी यथार्थ साक्षात् कदी जाणी शकाय नहि. एम अनुभवथी ज्ञानीओ कथेछे. माटे शंका मनमां लावीश नहि. जिन प्रवचनपर आस्था राख. जिनेश्वरे जे वचनो कथ्याछे ते अन्यथा नथी. एम श्रद्धा कर. अने आत्मानुभव सद्गुरुद्वारा कर के जेथी मुक्तिमार्गनो अधिकारी थाय. पूर्वो-

दिनप्रतिदिन जीवो मोक्ष नगरीमां चाल्या जायछे.

धर्म राजाना सुभटो आपणी नगरीना जीवोने समजावी पोतानी नगरीमां खेंची जायछे. मुख्यताए तेमां मोटो भाग जीवोने मोक्ष नगरीमां लइ जनार तीर्थंकरोनोछे. अने तेमना कायदा प्रमाणे वर्तनार साधुओ एवा तो फावेलछे के–ते साधुओनी आगल आपणा क्रोधादिक शत्रुओनुं कंइ चालतुं नथी. आपणा सुभटोने पण हरावी जीवोने पोते मोक्ष नगरीनो मार्ग जणावी आपणी नगरी खाली करेछे. हाय, हवे शुं करुं. अरे ओ मोह प्रधान तुं जल्दी आपणा सुभटोने तथा मारा पुत्रने बोलाव, अने अविवेक सभामां कचेरी भर, मोहप्रधान कर्मराजानुं वचन अंगीकार करी सर्व सुभटोने बोलावी सभानी बेठक करी. कर्मराजा सभामां आवी ममता सिंहासन उपर विराजमान थया. हवे कर्मराजा पोताना सर्व सुभटोने तथा पुत्रपुत्रीओने नीचे मुजब वचनो कहेछे के–

अरे मारा मोह प्रधान तुं मारो प्रिय प्रधानछे. हिंसातो मारी बेनछे. निंद्रा मारी पुत्रीछे, अज्ञान मारो पुत्रछे, चउदराज लोकनुं राज्य आपणा तावामांछे. आपणुं राज्य अनादिकाळथी संसार नगरमां चालेछे. सर्व जीवोने आपणे पोताना वशमां राखी धर्म राजानी मोक्ष नगरीमां लेइ जवा देवा नहि. ते तमारी मुख्य फरजछे. आपणुं राज्य घटे नहि ते तमारे ध्यानमां लेवुं जोइए.

मारा सुभटो सांभळो ! आपणो मोटो शत्रु धर्म राजाछे. ज्ञान दर्शन चारित्र ए त्रण एना पुत्रछे. धर्म राजानो उपयोग रूप प्रधान छे, क्षांति,आर्जव,मार्जव,मुक्ति,संयम,सत्य, शौच, आकिंचन, ए दश धर्म राजाना अत्यंत बळवान सुभटोछे, समकित रूप धर्म राजानो पुत्र एवो तो बळवानछे के जेनाथी आपणो मिथ्यात्व सुभट रण संग्राममां भागी जायछे, पंच महाव्रत रूप जोद्धाओ एवातो बळवा-

नहि के अविरति नामना आपणा योद्धाने थरथरावेछे. आपणा नगरनो भंग करनार श्री चोवीस तीर्थंकरो तथा तेमनाथी उत्पन्न थयेला १साधु २साध्वी ३श्रावक ४श्राविका रुप चतुर्विध संघ आपणाथी छुटी पडी धर्म राजाना नगरमां जता उडयोछे. तीर्थंकरना भक्तो, साधु महाराजाओ, आपणा संसार नगरमां रहेनार संसारी जीवोने एवानो उपदेश आपेछे के:-ते उपदेश सांभळ्या पछी आपणा नगरमां ते जीवो रहेता नथी, अने संसारने ते स्मशान सरखो गणेछे, आपणी मायाना अने कुटुंब परिवारने बंधन समान गणेछे, मायाना पास छोडी वैराग्य रुप वस्त्र धारण करी संसारनो त्याग करेछे, अनादिकालथी आ प्रमाणे आपणा नगरमांथी जीवो मोक्ष नगरमां चाल्या जायछे. ते जोइ मने अत्यंत चिंता थायछे. धर्म राजानुं मोक्ष नगर आपणा संसार नगर करतां नानुंछे ते चौद राज लोकने अंते आवेलुंछे ते नगरमां रहेनारा जीवो अत्यंत सुखी होयछे मोक्ष नगरीमां गयेला जीवोने आपणाथी कशो भय रहेतो नथी.

मोक्ष नगरमां गया जीवो पाछा आपणा नगरमां आवी शकता नथी आपणुं तेमना उपर कशुं जोर चालतुं नथी. अरे मारी नगरीनी खराब अवस्था थइ गइ! तमो आळस्या तथा सुभटो छतां मारी आवी दशा थई, हवे मारे शुं करवुं,कोनी आगळ जइ पोकार करवो.

आ प्रमाणे धर्म राजानां वचनो सांभळी मोह प्रधान आत्मामना आपेछे.

हे धर्म राजा तमो केम चिंता करोछो, धर्म राजाथी तमारुं नगर कदी खाली था शकवानुं नथी. अनादिकालथी तमारी एवी सत्ता वेठेलीछे के प्रायः थोडाक जीव मोक्ष नगरीमां जइ शके. आपनो हुं प्रधान तथा अज्ञान नामनो पुत्र, एटली तो संसारी जीवो

उपर सत्ता चलावेछे के, विचारा जीवने संसार एज सार मान्या विना छुटको थतो नथी. कर्म राजाजी अमारां दरेकनां पराक्रम नीचे मुजबछे ते सांभळो.

हुं मोह मधान अनादि काळथी आपनी कृपादृष्टि तळे हाजरछुं. परभावरूपी झाळमां दरेक संसारी जीवोने में फसावी दीधाछे. एकेंद्रिय जीवो उपर पण मारी सत्ता व्यापेली छे, द्वीन्द्रिय जीवो उपर पण मारी सत्ता व्यापेलीछे, त्रीन्द्रीय जीवो उपर पण हुं सत्ता चलावुंछुं चतुरिन्द्रि जीवोपर पण मारा वशमांछे, पंचेंद्री जीवो चार मकारनांछे १ देवता २मनुष्य ३तीर्यंच ४नारकी ए चार मकारना जीवो पण मारा आधीनछे, देवताओ पण देवीओ उपर मोहना पासथी आशक्त रहेछे. आ मारी देवी, आ बीजानी देवी, एवी मोह धशा करावनारछुं. मारी उत्कृष्टि स्थीति मोहनीय, कर्मनी सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनीछे, नानुं बाळक तेनामां पण हुं व्यापिछुं. युवावस्थावाळा जुवान पुरुषोमां तो हुं निर्भय पणे व्याप्त छुं जो मोहना होय तो दरेक मनुष्यो संसारमां सार मानेनहीं, रात्री अने दीवस हुं दरेक जीवोनी साथे व्याप्तछुं, मोह मदथी घेला थयेला जीवो जाणी शकता नथी के अमो मोहना पाशमां छपडायाछीए-एवी मारी सत्ताछे जोगी जती, संन्यासी, गोसाइ, अतीत, फकीर विगेरे कहेछेके मोह खराबछे, मोह करना नहि एम बीजाने उपदेश आपेछे तेवा पुरुषोने पण हुं मारी मोह झाळमां फसावी दउंछुं.

फकीर फकीराइ लेइ बेठा होयछे तोपण धन स्त्रीनामां हुं मवेश करी तेने लटचावी संसारमां पाडुंछुं राजाओ के जे शूरवीरो कहेवायछे तेने पण स्त्री,धन, पुत्र, राज्य, विगेरेना मोहमां फसावी देउछुं. जे राजाओ सिंह समान शूरा होयछे, अने जे रणसंग्राममां हजारो मनुष्योने कापी नाखेछे. तेवाने पण हुं पुत्र मोहमां फसावी

रोवर.वुं छुं. सिंहसमानशूरा राजाओने पण मोहमां फसावी स्त्रीओना पगे लगाडुं छुं. हजारो सुभटोनां बाण वागतां पण जेनी चक्षुमांथी अश्रु आव्यां नथी. एवा राजाओनी चक्षुमांथी स्त्रीना मरणथी अश्रु कढावुंछुं. जो हुं राजाओमां व्यापी नहि रहुं तो तेओ आ संसार मांजीवनी हिंसा विगेरे केम कुकर्म करे? पृथ्वीना लोभथी परस्पर राजाओने हुं लडावुंछुं, स्त्रीना मोहथी परस्पर राजाओने लडावनार अने दुनीआमां जीवोनो नाश करनार हुं मोह प्रधान छुं. ज्यां मारो संचार होयछे त्यां क्रोधादिक सुभटो पण वास करेछे. मोक्ष नगरीमां जतां अगीयारमा गुणठाणा सुधी मारु प्रबल जोरछे. कोइ विरलो जीव माराथी बची जायछे. अरे नमो तीर्थंकरना भक्तो साधुओने पूछोके तमो कोनाथी बिशेष डरोछो. प्रत्युत्तर मळशे के—मोहथी अमो डरीए छीए. जुओ चकलो, चकली, मोर, पोपट, कबुतर, सिंह, शृंगाल, विगेरे तिर्यंच जीवो पण मोहावेशथी केवी स्थिति प्राप्त करेछे.

चकलो, चकली, पोतानां इंडांपर केवो मोहधारण करेछे. मयूर मयूरीनो विरह थतां केवुं आक्रंद करेछे. गौ महिषी पोतानां वाछांने जुओ मोहना आवेशथी केवां चाटेछेः कूकडो कुकडीयांने पोतानां मानी केवुं हेतधारण करेछे. वळी धनना मोहथी प्राणीओ मरी परभवमां मूषक सर्प विगेरेना अवतार धारण करेछे. पुत्रना मरणथी मातपिताने अत्यंत रूदन करावनार हुं छुं. स्त्रीना मरणथी तेना पतिने शोक करावनार हुं छुं. सत्यनेपण असत्य तरीके देखाडनार हुं छुं. मारा वशमां आवेला जीवोने चोराशीलाख जीवायोनिमां भटकावनार हुं छुं. मारा वशमां पतित प्राणीओ हिंसा करेछे. असत्य वदेछे. चोरी करेछे. परस्त्री सेवन करेछे. इत्यादि सर्व मारी सत्ताथी थायछे.

पृथुराजे स्त्रीना मोहथी जयचंद्र साथे भारे क्लेश कर्यो. पृथुराज उपर शाहबुद्दीन घोरी चढी आव्यो, तेमां अंते मृत्यु पाम्यो कर्णघेलाए स्त्रीना मोहथी राज्य खोयुं, मनुष्य परदेश भ्रमण करेछे, जन्मां मरेछे, इत्यादि सर्व मारुं कार्यछे. अनंत जीवोने हुं संसारमां अनादिकाळथी भटकावुं छुं. अने भटकावीश. धर्मराजानो विवेक रूपी योद्धो पण माराथी बीवेछे. कया जीवमां हुं व्यापी रह्यो नथी.

वीतरागदेवना साधुओने त्याग साथी मारा फंदमां फसावी दउछुं. जुओ मारी केवी शक्ति! जीवोने संसारमां सार देखाडी चारित्र लेवरावतो नथी. सर्व जीवोने संसारमां अनादिकाळथी फेरवुं छुं अने वळी फेरवीश अधर्मी बनावुंछुं. अनेक प्रकारनो वेषो करी जीवोनो हुं मारा फंदमां फसावुं छुं. कोइनामां व्यक्तपणेतो कोइनामां अव्यक्तपणे हुं वर्तुंछुं, सर्व संसारी जीवोने हुं पूतळांनी माफक नचावुं छुं, मारी घेनमां सर्व जीवो मुंझाणाछे. ज्यां त्यां हुं मोह व्यापी रह्यो छुं मोह पाशीनुं भेदन करवु महा दुष्करछे. एम दरेक महात्माओ पुस्तकमां लखेछे. दरेक जीवनुं भान भूलावनार अने परस्वभावमां रमण करावनार हुं मोह जीवोमां पेठो के ते बीचारा परवश थइ जायछे मारा आगळ सर्व जीवो कीटक समानछे, मारी शक्तिथी ज्ञानीओ पण गभरायछे, हुं सदाकाळ चोराशी लाख जीवयोनिमां रहेला जीवोनी पासे रहुंछुं. महादेव सरखाने पण पार्वतीना मोहमां फसावनार मारा विना बीजो कोण! देशाभिमानथी दुनीयानी प्रजाने परस्पर वैर करावनार मारा विना बीजो कोइ नथी. मोह गर्भित वैराग्यमां पण मारु अस्तित्वछे, मतमतांतर मिथ्यात्वादिनी वृद्धि माराथी थायछे. जुओ मारी शक्ति. !!!

आवां मोह सचिवनां वचन सांभळी कर्मराजाए मोह प्रधानने शाबाशी आपी कह्युं के धन्यछे मारा शूरा मोह प्रधान मारे तारा

जेवो बीजो कोइ निंघ नथी.

हवे कर्मनृपतिनो पुत्र अज्ञान स्वकीय स्वरूप सभा समक्ष कथेछे. अरे हुं मोहराजानो पुत्रछुं. अज्ञान मारुं नामछे. पंडित लोक मारा वैरीछे. पशुद राजलोक मारु स्थानछे. सर्व जीवोने में अंध कर्याछे. ज्ञानावरणीय कर्म करी हुं सर्व जीवोमां वसुछुं, धर्मराजा तथा मोक्षनगरीनुं भान हुं थवा देतो नथी. सत्यासत्यनुं स्वरूप जीवोने जाणवा देतो नथी, सत्यदेव गुरुधर्मनुं ज्ञान मारी सत्ताथी जीवो करी शकता नथी.

तीर्थंकरनां सूत्रो तथा तेमनी आज्ञा प्रमाणे मोक्ष नगरी प्रति-गमन करनार मुनिवरो पण मारा वशमां रहेला जीवोने समजावी शकता नथी. जे समजुछे तेने साधुओ समजावी शके, पण हुं ज्यां वसुं छुं त्यां तेओ गमे तेटलो उपदेश आपे तोपण उखरभूमां वर्षा-नीपेठे निष्फळ जायछे. घारगतिना जीवो मारा वशमांछे. पशुपंखी आदिजीवोनी में केवी अवस्था करीछे; माटे हे कर्मनृपति मारा जेवा पुत्रो छतां आपने चिंता करवी योग्य नथी.

अज्ञान पुत्र आ प्रमाणे कहीने मौन रह्यो, त्यारे कर्मनृपतिनी निंदा नामनी पुत्री सभासमक्ष कहेवा लागी के—

निंदाभाषण.

हे पिताजी ! हुं आपनी निंदा नामनी पुत्री छतां आप केम उदास थाओछो. सर्व जीवोने हुं वश करुंछुं. अदेखाइ नामनी मारी माताए जन्म आप्योछे. सर्व जीवोना गुणोने हुं तेमां पेसतां भस्म करुंछुं. ज्यां माता अदेखाइनो प्रवेश थयो. त्यां हुं त्वरित हाजरी आपी प्रवेश करुंछुं.

मुनियो पंडितो के जे अमृत सरखां वचन वदेछे तेना मुख-मांथी खराब वचनोरूपी विष्टा कढावुंछुं. जे मनुष्यो परपुरुषना

गुणनी प्रशंसारुप जळथी पोताना आत्माने पवित्र करेछे. ते पुरुषो मारा वशमां थवाथी परनिंदारुप कर्मकादवथी तेओने मलीन करुं छुं. निंदा चतुर्थ चंडालछे एम सर्व लोको जाणेछे छतां निंदा कर्या विना छूटको थतो नथी.

सामासामी एक बीजानी निंदा करावी परस्पर वैर करावुंछुं, लडावुंछुं, अने नरक निगोदमां जीवोने घसडी लेइ जाउछुं. लोको सर्वना करतां मने विशेष बळवान् गणेछे, कारण के परस्पर एक बीजानी निंदा करवाथी एक बीजानां मस्तकोने पण दडानी माफक मनुष्यो उडावी देछे, माटे हे कर्मराजाजी!!! तमारी पुत्री छतां तमो केम चिंता करोछो.

आवां निंदानां वचन सांभळी अदेखाइ नामनी कर्मराजानी स्त्रीनो पुत्र कुसंप नामनो हतो ते बोलवा लाग्यो के-हे पिताजी मारा जेवो आपणा सुभटो छतां धर्मराजाना सुभटोनुं कंइ चालवानुं नथी. चार गतिना जीवोमां हुं व्यापी रह्योछुं, मारा सरखुं कोइनुं बळ नथी, वकील वकीलने कुसंप, राजाराजाने कुसंप, मुनि मुनिने कुसंप, वेश्या वेश्याने कुसंप, भीखारी भीखारीने कुसंप, वेपारी वेपारीने कुसंप, कूतरा कूतराओने कुसंप. एम सर्व जीवोने मांहोमांहे कुसुंप करावनार हुं छुं, हे कर्मराजाजी हुं कुसंप नामनो महायोद्धो हिंदुस्तानना रहेवाशीओमां पेठो त्यारथी हिंदुस्तानना लोकनी दुर्दशा थइ गइछे.

जयचंद्र अने पृथुराजने लडावी मारनार पण हुंछुं. मुसलमानोए दिल्लीनी गादी लीधी ते पण मारा प्रतापथी. कारण के ज्यारे हिंदुस्तानना राजाओने मांहोमांहे कुसंप थयो त्यारे मुसलमानोए हिंदनुं राज्य सर कर्युं. मोक्षमार्गमां चालनार साधुओनो पण कुसंप करावी कुमार्गे चलावनार हुंछुं ज्यां पेठो कुसंप त्यां

मारा नहि संप, ए वचन हुं सत्य करुंछुं. कुसंपपक्षी मांहोमांहे मनुष्य लडेछे एक बीजानां मस्तक छेदेछे, एक बीजानी निंदा करेछे, क्रोध, मान, माया अने लोभ पण ज्यां हुं कुसंपछुं त्यां वासो करे छे, चोरासी लाख जीवयोनीना जीवोने हुं अनादिकालथी मारा वशमां राखुंछुं. हाल हिंदुस्थान देशनी नबली स्थीति करनार पण हुंछुं. ज्यां में प्रवेश कर्यो त्यांथी संप नामनो योद्धो पण पोबारा गणी जायछे, कोइ वखत कोइ देशमां वधारे रहुंछुं अने कोइ वखत कोइ देशमां थोडो रहुंछुं, जीवो बिचारा संप करवाने घणी महेनत करे, कोन्फरन्स भरेछे, सभाओ स्थापेछे अने बीजाओने कहेछे, के भाइओ संप करो पण मारुं मूळ काढवुं घणुं मुश्केलछे, ज्यांथी कुसंप काढवानी तैयारी संप योद्धाओनी होय त्यां तो कुसंप अपरहीन रहेछे. मोटा मोटा मुनिराजो आपणो आवीने थाक्या पण मारुं मूल कोइ उखेडी सक्युं नहि. वखते मुनिओमां पण हुं लाग जोइने पेसी जाउंछुं अने मुनि मंडळमां पण कुसंपनी सत्ता चलावुं छुं, जे जीवो मारा वशमांछे तेमने काष्टनी पुतळीनी पेठे चारगतिमां नचावुंछुं, मारी अदेखाइ माता विना हुं एकलो रही शकतो नथी.

अमेरिका इंग्लांड वगेरेमां कुसंप नथी तो ते लोको सुखीछे पण ज्यारे हुं त्यां पगलां भरीश त्यारे ते लोकोना बार वगाडीश, संपीने जीवो वर्ते ते मने सारुं लागतुं नथी. नबळा मनना माणस उपर हुं विशेष सत्ता चलवुंछुं. विशेष शुं. पर्वत उपर, रणमां, अग्नि विगेरेमां हुं जीवोने प्रवेश करावुंछुं. हे कर्मराजाजी मारा जेवो पुत्र छतां आप केम चिंता करोछो.

आवुं कुसंपनुं वचन सांभळी अदेखाइ नामनी तेनी माता सभासमक्ष आपण करवा लागी के, हे मारा मागधिश तमो मारा छतां केम चिंता करोछो.

अदेखाइ परस्पर कराववी ए मारो धर्मछे. गुणीना गुण देखी माणसो अदेखाइ करेछे. चारगतिना जीवोमां हुं आविर्भावे वा तिरोभावे वसुंछुं.

वेपारी वेपारीने, राजा राजाने, वकील वकीलने, साधु साधुने हुं मांहोमांहे अदेखाइथी कर्मबंध फळ प्राप्त करावुंछुं.

मारा वश थएला जीवो नरक निगोदमां जइ दारुण भोगवेछे इत्यादि अदेखाइना वचन सांभळी कर्मराजा खुशी थयो. तेवामां सभामां विराजमान मिथ्यात्व नामनो कर्मराजानो योद्धो बोली उठयो के, हे कर्मराजाजी मारा छतां आप केम चिंता करोछो. हुं मिथ्यात्व नामनो योद्धो संसारमां प्रख्यातछुं, कर्मबंध जीवोने करावनार मुख्यनायक हुं छुं, मारी सत्ता संसारी जीवोपर सारी रीते बेठेलीछे. मारु मुख्य काम ए छे के, भव्य जीवोने शुद्ध देव शुद्ध गुरु अने शुद्ध धर्मनी श्रद्धा थवा देवी नहीं, कोइ विरला प्राणी तीर्थंकरनो कहेलो सत्य मार्ग जाणी शकेछे, जुओ में केटला जीवोनी एवी तो बुद्धि करी नाखी छे के ते विचारा पंच महाभूत स्वरूप जीवछे ते थकी अन्य आत्मा नथी एवुं विचारा मानी चार्वाकमतरूप राक्षसना मुखमां प्रवेश करेछे

में केटलाक जीवोने एवा तो फसाव्याछे के- ते पामर जीवो जीव अजीव पुण्य पापने स्वीकारता नथी, मोक्ष मानता नथी. खावुं पीवुं, हरवुं, फरवुं इत्यादि कार्यमां धर्म मानेछे-केटलाक जीवोने एवा तो में फसाव्याछेके-अज्ञानदशामां सुख मानेछे. अने तेओ अज्ञानवादी कहावेछेके-अज्ञानमां सुखछे ज्ञानथी राग द्वेष उत्पन्न थायछे. एम मानी पामर चतुर्गति संसारमां अनंतशः परिभ्रमण करेछे.

वळी में केटलाक जीवोने एवातो फसाव्याछे के- वीर्य पर्व

कषायुंछुं सामासामी वेर करावुंछुं, माता, पुत्र, स्त्री विगेरनो निकट संबंध करावी आपनार हुंछुं संसारी जीवोने उपरना गुणठाणे चढवा देतो नथी. संसाररुपी वृक्षनुं बीज हुंछुं. हुं अनादिकाळथी संसारमां वसुंछुं कोइपण काळे संसारमांथी मारुं रहेठाण दूर थवानुं नथी. आ प्रमाणे कषाय सुभटनां वचन सांभळी कर्मराजा खुशी थयो. त्यारे योग नामनो सुभट बोल्यो के मारुं पराक्रम कोण नथी जाणतुं. हुं सर्व जीवोने पाप बंधावी चोराशी लाख जीवयोनिमां भटकावुंछुं हुं सूक्ष्म रीते दरेक जीवोने व्यापीने रहुंछुं हुं आत्मानी परमात्मदशा थतां विखूटो पडुंछुं, माटे हे कर्मराजाजी तमो जरा मात्र पण भय पामशो नहि. इत्यादि सुभटोनुं बोलवुं सांभळी कर्मराजाने जुस्सो चढयो. हिंमत आवी.

सर्व सुभटोने कर्म राजाए हुकम कर्यो के तमो हवे सर्व संसारी जीवोने वशमां राखो के जेथी धर्मराजाना सुभटोनुं कंइ पण चाली शके नहि. अने सर्व जीवोमां व्यापी संसारी जीवोने धर्म करतां अटकावो.

आवां कर्मराजानां वचन सांभळी सर्व सुभटो जुस्सामेर पोत पोतानुं कार्य बजाववुं तत्पर थया.

हवे आ वखते धर्म शुं करेछे ते नीचे मुजबः—

धर्मराजा

विवेकसभा, दयामाता, धैर्यपिता, शांतिस्त्री, उपयोगमंत्री, समकितसेनापति, क्षमापुत्री, ब्रह्मचर्यपुत्र, क्षमादिधर्मनृपतिनासुभटो, मुक्तिनगरी.

एकदीवस धर्मराजा विचार करेछे के—अहो हुं सर्व जीवोने मुक्तिनगरीमां क्यारे लेइ जइश. अनादिकाळथी हुं संसारी जीवोने मुक्तिपुरीमां लेइ जाउंछुं. तोपण अद्यापि पर्यंत पार आवतो नथी.

मारी शक्ति प्रगट थतां मोहादि शत्रुओ नाश पामेछे. जीवने क्षपक श्रेणि उपर हुं चढावुंछुं. क्षपकश्रेणि चढतां कर्मशत्रुनो नाश थायछे. मोक्षपुरीमां पण प्रत्येक आत्मानी साथे भिन्नाभिन्न स्वरुपे हुं वर्तुंछुं. माराथी दरेक आत्माओ स्वपरने जाणी शकेछे मारो नाश कोइथी थतो नथी. माटे हे धर्मराजाजी आप जरामात्र चिंता करशो नहि. आवां उपयोग मंत्रीनां वचनो सांभळी धर्मराजा खुशी थयो, त्यारे धर्मराजानीमाता दया सभा समक्ष बोलवा लागी के–हुं ज्यां सुधी विद्यमानछुं. त्यां सुधी कोइनुं कंइ चालनार नथी. हुं सर्व जीवोमां प्रथम वासकरुंछुं. हुं ज्यां छुं त्यां तारी हयातीछे. द्रव्य अने भावथी मारु बे प्रकारे वसवुं थायछे. दया, धर्मनी माता जगत्मां कहेवायछे. तुं मारो पुत्रछे हुं ज्यां छुं त्यां त्हारी हयाती कहेवायछे, माराथी हिंसा विगेरे कर्म राजानो परिवार दूर नाशेछे, सर्व प्राणीयोमां थाडी घणी स्थीति करुंछुं, अने मोक्षपुरी जीवो न पमाडुछुं, माटे हे पुत्र सुखेथी राज्यधुरा धारणकरो. इत्यादि दयाना वचनो श्रवण करी धर्मराजाना मनमां धैर्य स्फुर्युं. तेवामां धैर्य पिता धर्मपुत्र उपर स्नेहदृष्टि वर्षावतां वचनामृतनो वरसाद वरसाववा लाग्यो हे धर्मपुत्र धैर्यथी तारी उत्पत्ति छतां तमे केम अधीरा बनोछो. कर्मशत्रुओ साथे हुं हिंमतथी लडी जीवोने क्षपकश्रेणि प्राप्त करावी आपुंछुं. हे धर्म तारा सुभटोने धैर्य आपुंछुं अने रणसंग्राममां कर्मनो पराजय करुंछुं, कर्मराजानी साथे युद्ध थायछे, अने तेना नगरमांथी अनेक जीवोने मुक्तिनगरीमां लेइ जइए छीए. माटे धैर्य धारण करो. त्यारबाद शांति स्त्री पोताना स्वामी धर्मराजाने नम्रतापूर्वक विनयथी कहेवा लागी के–हे स्वामिनाथ आप चिंता केम करोछो, मारो हुं धर्म सदाकाल बजावुंछुं, हुं सर्व जीवोने मोक्ष नगरी तरफ खेंचुछुं. सर्व जीव कर्मना आधीन थया छे तोपण मारी संगत करवा चाहेछे. हुं तेमने शांति मेळववा लल-

घाती कर्म प्रपंचथी दूर रहेवा वारंवार मनोद्वारा करुंछुं जे जीवो संसारनी इच्छाथी दूर रहेछे अने संसारने पत्ना अग्नि समान गणेछे ते जीवोमां हुं वास करुंछुं अने ते जीवोने शाश्वत धाम करवामां सहायी थउंछुं. घणा जीवो मारी सहायथी मुक्तिनगरीमां गया जायछे अने जशे. माटे आप निश्चिंत रहो. त्यारबाद सकल धर्म सेनानो उपरी "सम्यक्त्व सेनापति" धर्मराजाजीने नमन करि मधुरवाणीथी सभाजनने आश्चर्य पमाडतो कहेवा लाग्यो के हे धर्मराजाजी आपनी सेनानो हुं उपरीछुं. मारो वास सकल भव्यात्माओमांछे. मारा विना कर्मना राजा योद्धाओ रणभूमिमांथी पाछा हठता नथी, सकलकर्म सैन्यनो हुं नाश करुंछुं. जे आत्मामां हुं उत्पन्न थाउंछुं त्यांथी मिथ्यात्व योद्धो नाशी जायछे. पछी भव्यात्मा सरलताए गमन करतो छतो मुक्ति नगरीमां पहोंचेछे. मिथ्यात्वनो नाश करवो एज मारुं मुख्य कामछे. जे जीवो मिथ्यात्वना जोरे दुनीया परमेश्वरे बनावीछे, पाछो प्रलयकालमां दुनीयानो नाश थायछे परमेश्वर जीवोने सुख दुःख आपेछे एम मानी चारगतिमां भटकनार जीवोने सुखदुःख आपेछे ते जीवोनो हुं उद्धार करुंछुं. हुं ते जीवोमां वास करी तेमनी सारी शुद्धि करुंछुं परमेश्वर जगत्नो बनावनार नथी, जगत् अनादिकालथीछे जीवो सर्व परमात्मा सरखाछे, कर्मनायोगे जुदी जुदी गतिमां भमेछे जीवोने कर्म अनादिकालथी लागुंछे. जीवो अनंतछे अनादिकालथीछे कर्म नाश थतां जीवनी मुक्ति थायछे. आ प्रमाणे जीवोनी सारी शुद्धि करी मिथ्यात्वनो संग दूर करावी मोक्षनगरीतरफ गमन करावुंछुं. केटलाक जीवो मिथ्यात्व योद्धाना संसर्गे भ्रम भ्रम स्वीकारी अन्यने माया नटीके करी भवब्रह्मांडमां भटकेछे. तेमने हुं शुद्धश्रद्धा अपि आत्महितार्थे आत्मा अने ``

पर्यायना पलटवे करी अनित्यछे नित्य अने अनित्य एवे स्वभाववाळो आत्माछे. तेने कर्म लागेछे कर्मबंध मिथ्यात्व अविरति कषाययोगे करी लागेछे ए कर्मनो नाश थतां आत्मा परमात्मपद प्राप्त करेछे ए माटे शुद्धज्ञान थवी साध्यमुक्तिअर्थे जीवोने मेळवुं. अने स्वस्वरूपने प्राप्त कराववुं केटलाक जीवो स्त्री पुत्र धन आदिथी पोताने सुखी मानेछे ते जीवोनी दृश्य क्षणिक पदार्थोमांथी सुखनी बुद्धि दूर करी अदृश्य आत्मस्वरूपमां सुखछे एम शुद्धबोध दइ आ क्षणिक पदार्थोमां मिथ्या भ्रम थयो दूर कराववुं अने काम क्रोध लोभ भय हास्य शोक विगेरेथी जीवोने पृथक् करी स्वस्वरूपे निष्ठा कराववुं.

अहितमां हितबुद्धि अने हितमां अहित बुद्धिरूप जे मिथ्यात्व तेनो हुं नाश करुंछुं दरेक जीवोने हुं सम्यक्ज्ञान अर्पुंछुं एम अनंत जीवोनुं भूतकाळे मुक्ति गति लक्ष दीधुं अने वर्तमानकाळे लक्ष दउंछुं अने भविष्यकाळे दईश हुं दरेक जीवशक्तिमां वसुंछुं मिथ्यात्व सैन्य माराथी नासभाग करेछे. जेम सूर्यनो उदय थतां अंधकारनो नाश थायछे अने ते अंधकार क्यां गयो ! तेनी जेम मालूम पडती नथी तेम सर्वमय मारा प्रकाशथी मिथ्यात्व भागी जायछे हुं भव्य जीवोमां सदा वसुंछुं. सम्यक्त्व विना कोइ माणस मुक्ति पामी शकतो नथी कर्मराजानुं सैन्य माराथी दूर नासेछे माटे हे धर्मराजाजी! तमो सुखेथी निश्चिंत रहो आं प्रमाणे सम्यक्त्व सेनापतिनां वचन बाद धर्मराजानी क्षमा नामनी पुत्री सविनय पिताजीने नमन करी मधुर भाषाए कहेवा लागी के हे धर्मपिताजी हुं एक आपनी नानी पुत्रीछुं आपनी पवित्र सेवा हुं दरेक आत्माओमां स्थिति करती प्रमाणुंछुं. हुं अनादिकाळथी भव्य जीवोमां वसुंछुं.

व्यवहारे करी द्रव्यक्षमा भावक्षमा उपकारक्षमा अपकारक्षमा इत्यादि रूपांतरे करी ओळखाउंछुं. तीर्थंकर महाराजाए मुक्तिमार्ग प्ररूप्यो तेमां मने यतिना गुणोमां मुख्य करी स्थापीछे पुल्लिंगताथी ओळखातो क्रोध नामनो सुभट माराथी नाश पामेछे.अनेक कर्मना योद्धाओ माराथी समूळा नाश पामेछे.जे जीवोमां मारो वासछे,त्यां क्रोध अहंकार अदेखाई हिंसा विगेरेनुं जोर चालतु नथी.दुनीयामां हुं सत्पुरुषोमां वास करुंछुं. अने माराथी दरेक जीवो प्रतिष्ठा पामी कर्मदल हणी क्षपकश्रेणि प्राप्त करी सम्यक्त्व सेनापतिद्वारा मुक्तिपुरीमां सुखे पहोचेछे.मुक्तिनगरीमां जवानी इच्छावाळा पहेलां मारुं सेवन करेछे अपराधी जीवोपर गुस्से थता नथी अने तेमना अपराधो माफ जीवो करेछे ते पण मारा प्रसादथीज समजवुं.क्षमा थकी जीवो शान्तिने पामेछे क्रोधनो नाश थायछे दरेक जीवो उपर दयाना आर्द्रभाव थायछे. परस्पर जीवोना वैर विरोधने हुं टाळुंछुं. दरेक मनुष्यनुं प्रसन्नमुख राखुंछुं. अने मुक्तिनगरीमां जवा माटे माराथी बने तेटलुं अवश्य करुंछुं.मारी सहायथी अनंता जीवो मुक्ति गया, जायछे अने जशे. माटे हे पिताजी! तमो हर्षाओ अने शोक त्यागो आ प्रमाणे क्षमा पुत्री बोलीने तुष्णीभावने पामी बाद ज्ञान नामनो महासत्त्ववान् राजधुरावाही यथायोग्य विनयपूर्वक पिताजीने नमन करी हर्षचित्ते प्रसन्नवदने गंभीर वाणीथी सभाने चमत्कृति पमाडतो बोलवा लाग्यो के-हे पिताजी! अने हे सभाजनो! हुं धर्मराजानो पुत्रछुं एम आ बाळगोपाळ सर्व जगत्निवासीओ जाणेछे.मारुं बळ केटलुंछे ते कंइ विशेष स्वमुखे कहेवाथी शुं? तोपण हुं स्वफरजनो केवी रीते अदा करुंछुं ते सभा समक्ष निवेदन करुंछुं, हुं दरेक जीवोमां आविर्भाव करी वा तिरोभावे

करी स्थिति करुंछुं. हुं अनादिकाळथी आत्मव्यक्तिओमां वर्तुंछुं,
ज्ञानावरणीय कर्मना घणा जोरथी पण नरकनिगोद तिर्यचादि भ-
वोमां हुं समूळ नाश पामी शकतो नथी. तेम हुं पण जेमां सदा-
काळ रहुंछुं. एवुं आत्म व्यक्तिरूपस्थान असंख्य प्रदेशी कदापि
नाश पामी शकतुं नथी. तेम आप पण आत्मस्थानमांथी नाश
पामता नथी. कान लब्धियोगे हुं ज्ञानावरणीयादि कर्मने हठावतो
मारुं शुद्ध स्वरूप तथा आत्मानुं शुद्ध स्वरूप समजी कर्मनो नाश
करुंछुं. आकाशस्थित सूर्यप्रकाशथी प्रत्येक वस्तुओ स्पष्टपणे भासे
छे. तेम मारी शक्तिथी लोकालोक स्पष्टपणे भासेछे. हुं प्रत्येक
वस्तुओनुं यथातथ्य स्वरूप जाणुंछुं अने मारी सत्ता थया बाद
कर्मना सुभटोनो समूळथी नाश करुंछुं. कर्म आठ प्रकारनांछे.
१ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५
आयुष्य, ६ नामकर्म, ७ गोत्रकर्म, ८ अंतरायकर्म. ए पूर्वोक्त कर्म
रागादिक योगे आत्मा आकर्षेछे. कर्म जडछे, चतुर्गति भ्रामककर्म
छे. जगत्मां आत्माओ अनंताछे प्रत्येक आत्मामां अनंति शक्ति
रहीछे, शाश्वत, अज, अमर, निर्लेप, निस्संग आत्मस्वरूपछे.

जीव तथा अजीव तत्वने हुं जाणी शकुं छुं. हुं व्यवहारे करी
मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ अवधिज्ञान ४ मनःपर्यवज्ञान ५ केवलज्ञान
आदि रूपांतरो पामुं छुं. मारु शुद्ध स्वरूपतो केवळज्ञान रूपछे.लो-
कालोकनुं स्वरूप पण हुं जाणुंछुं. कर्मनो नाश पण हुं करुं छुं.
स्याद्वाद धर्म आत्मामां रहेलोछे तेपण माराथी जणाय छे. मिथ्या-
त्व ने पण हुं जाणी तेनो त्याग करी आत्माने कर्म थकी छोडावुं
छुं. मिथ्यात्व,अविरति,कषाय,अने योग पण मारी प्रबळ सत्ताथी
नासेछे इच्छा: मोह, माया, काम, क्रोध, लोभ, पण माराथी

पण याद राखवुं के जे जीवो मने सेवेछे. तेओनां क्रोध, छिद्र देख्या करेछे. अकाम अने सकाम ए बे भेदे मारु प्रवर्तनछे. चार हत्याकारक जीवोनो पण माराथी उद्धार थायछे. अनंताजीवो कर्म खपावी मुक्तिपद पाम्या अने पामशे तेमां मारो प्रभाव जाणवो. माटे हे धर्मराजाजी! आप स्वस्थ थाओ. आपणुं सैन्य एवुंतो बळवान् छे के त्यां कर्मराजानुं कांइ चालवानुं नथी.

आ प्रमाणे धर्मराजाना सुभटोए पोतपोतानुं पराक्रम वर्णव्युं. त्यारे धर्मराजा अत्यंत हर्षायमान थयो अने मनमां समज्यो के मारु सैन्य प्रबलछे.

आ प्रमाणे अत्र धर्मनृपनी सभामां वृत्तांत चालेछे त्यारे कर्मराजानी सभामां ते प्रमाणे धामधूम चाली रहीछे. मिथ्या चेतना नामनी कर्म राजानी दासीए कर्मने धर्मनी सभामां बनेली सर्व हकीकत कही. त्यारे सम्यक् चेतना दासी धर्मनी अग्रे कर्म नृप सभामां बनेली सर्व हकीकत कही. परस्पर युद्ध कार्यनी सर्व सामग्रीओ तैयार थवा लागी. धर्मनृपे पोताना सुभटोने कह्युंके-मारा प्रिय सुभटो! तमो शत्रु सैन्यनो पराजय करो, मारुनाम अमर राखशो, वळी तमारा जेवा शूरा सुभटोनुं पराक्रम रण संग्राममां मालुम पडशे. माटे चतुराइथी युद्ध करवुं.

ते प्रमाणे कर्म राजाए पण सर्व सुभटोने वीर रसनां वाक्यो कथी शूर चढाव्युं. सुभटो पण परस्पर पराक्रम बताववा आतुर थइ रह्या-परस्पर युद्ध चाल्युं तेमां श्रद्धा रूपी सुभटे मिथ्यात्व रूपी योद्धाने हराव्यो. समकित सेनापतिए मोह प्रधाननी शक्तिनो नाश कर्यो, क्षमा पुत्रीए क्रोधनो नाश कर्यो, जीव चोथा गुणठाणा आदि गुणस्थानक चढवा लाग्यो. विरतिए अविरतिनी शक्ति नाश करी.



थायछे. शास्त्राभ्यासनो उद्यम करतां पंचप्रकारे स्वाध्याय करतां ज्ञानावरणीयकर्मनो क्षयोपशम थायछे. तेम प्रत्येक घातीकर्मनो नाश उद्यमथीछे. धर्मध्यान अने शुक्लध्यानरुप उद्यमथी ज्ञानीओ कृत्स्न कर्मनो क्षय करेछे. चारित्रनो खप करतां चारित्र मोहनीयनो पण नाश थायछे. माटे पंचमकाळमां पण भव्यजीवोए पुरुषार्थ करवो. पुरुषार्थना पण अनेक भेदछे. माटे सत्पुरुषार्थ ग्रहवो जोइए. समकितनी प्राप्ति विना सवळी परिणति थती नथी. अने समकित विना पुरुषार्थ निष्फल जाणवो. समकित मोक्षनगरनुं द्वारछे. समकितविना कोइ जीव मोक्षमां गयो नथी. अने जवानो नथी. समकित विना ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम पण अज्ञान तरीके लेखायछे. एटले मतिज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम मति अज्ञान तरीके गणायछे. श्रुतज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम श्रुतअज्ञान तरीके लेखायछे. अने अवधिज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम विभंग ज्ञान तरीके गणायछे. अने ज्यारे समकितनी प्राप्ति थायछे त्यारे तेनो क्षयोपशम सवळो परिणमेछे. अने ते मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधि ज्ञान तरीके गणायछे. समकित विना अभव्य जीव मुक्ति पामतो नथी. बाह्य चारित्र पाळीने अभव्य जीव नवग्रैवेयक पर्यंत जायछे किंतु समकितविना भावचारित्र पामी शकतो नथी अने तेथी ते चतुर्गतिमां पुनः पुनः परिभ्रमण करेछे, समकितनो महिमा अपूर्वछे, पंच प्रकारना मिथ्यात्वनो नाश थवाथी समकितनी उत्पत्ति थायछे. पंच प्रकारना मिथ्यात्वनो नाश जिनागम सांभळवाथी थायछे, सद्गुरुनी श्रद्धा भक्तिथी उपदेश श्रवण करतां मिथ्यात्व नाश पामेछे, समकितनी प्राप्ति माटे आगळ षट्स्थानक कहेवामां आवशे. समकितना पंचप्रकारछे.

१ उपशम समकित, २ क्षयोपशमसमकित, ३ क्षायिकसमकित,

४ वेदगसमकित, ५ सास्वादनसमकित, अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया अने लोभ तेमज समकित मोहनीय मिश्र मोहनीय, मिथ्यात्व, मोहनीय ए सात प्रकृति सर्वथा क्षय थतां क्षायिक समकितनी प्राप्ति थायछे.

श्री जिन वचनमां तत्त्वरूपथी वीतराग होवाथी एम सामान्य रुचिवाळा जीव ने द्रव्य सम्यक्त्व पणुं स्फुट थायछे. अने नय निक्षेप प्रमाणना विचारथी तत्त्व श्रद्धावाळा जीवने भाव सम्यक्त्व पणुं स्फुट थायछे माटे द्रव्य शब्दार्थ कारणना अने भाव शब्दार्थ कार्यना रूप जाणवो एम श्री हरिभद्रसूरि कहेछे.

श्री उत्तराध्ययन सूत्रानुसारे दशविध सम्यक्त्व कहेछे.

१ सत्य अर्थनी साथे संमतिवडे जीवाजीवादि नव पदार्थ संबंधी जे रुचि ते निसर्ग रुचि जाणवी.

२ परोपदेशवडे प्रयुक्त जीवाजीवादि पदार्थ विषयनी जे श्रद्धा ते उपदेशरुचि कहेवायछे.

३ रागद्वेष रहित एवा पुरुषने आज्ञा वडे धर्मानुष्ठानमां रुचि थाय तेने आज्ञारुचि समकित कहेवायछे.

४ सूत्रना अध्ययन तथा अभ्यासथी उत्पन्न थएला विशेष ज्ञान वडे जीवाजीवादि पदार्थना विषयमां रुचि थाय तेने सूत्र रुचि समकित कहेछे.

सूत्र रुचि उपर गोविंदाचार्यनुं दृष्टांत जाणवुं.

५ एकपद वडे अनेकपदतथा तेना अर्थना अनुसंधान द्वारा जळमां तेलना बिंदुनी जेम रुचि प्रसरि जाय तेबीजरुचि सम्यक्त्व कहेवायछे.

६ जेने सर्व सूत्रना अर्थनुं ज्ञान उत्पन्न थाय ते अभिगम रुचि सम्यक्त्व कहेवायछे. त्यारे अत्र शंका थशे के अभिगमं

अने सूत्रमां शोफेर–प्रत्युत्तरमां समजवानुं के–आ अभिगम रुचि अर्थ सहित सूत्रना विषयमां आवेछे. अने ते सूत्ररुचि केवळ सूत्रना विषयमांज आवेछे एटलो ते बन्नेमां भेदछे. केवल सूत्र मूल कथायछे.

७ सर्व प्रमाण तथा सर्व नयथी उत्पन्न थएल सर्व द्रव्य अने सर्व भावना विषयनी रुचिने विस्तार रुचि सम्यक्त्व कहेवायछे तेथी विशेष लाभ प्राप्ति थायछे.

८ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप अने विनय वैयावृत्य आदिना आचरण संबंधी रुचि ते क्रियारुचि कहेवायछे.

९ जेणे कुदृष्टिनो अभिग्रह कर्यो ना होय अने जे प्रवचनमां प्रवीण न होय तेवा पुरुषने मात्र निर्वाण पद संबंधी रुचि ते संक्षेप रुचि जाणवी जेम उपशम संवर अने।विवेक आ त्रण पदनी रुचि चिलाती पुत्रने थइ हती तेम समजवुं.

१० धर्मपद श्रवणथी उत्पन्न थएली जे धर्मपदवाच्य संबंधी रुचि ते धर्मरुचि कहेवायछे.

समकितरत्ननी प्राप्ति दुर्लभछे–समकित पाम्या पश्चात् संसार समुद्र चुलुक प्रमाण समजवो. आ संसारचक्रमां अनंतशः परिभ्रमण करी अनंतवार अनंतदुःख पाम्यो. अनेक देहो धारण कर्या. प्रत्येक भवमां अनेक दुःख भोगव्यां. जन्म जरा मरणादि दुःखोनो भोक्ता घणीवार थयो. पण पार आव्यो नहि. जीव पुनः पुनः परस्वभावमां रमण करी कर्म ग्रहेछे. आत्मस्वभावमां रमण करवाथी कर्म नाश पामेछे. कम्मपयडी आदि ग्रंथोमांथी विशेष स्वरूप जाणवुं. कर्मनो नाश करी मोक्षनगरमां जवानी इच्छा होय तो अनुभव ज्ञाननो खप करो. मतिश्रुत ज्ञाननुं उत्तर भावी अने केवलज्ञाननु पूर्वभावी अनुभवज्ञानछे. दृष्टांत जेम सूर्य केवलज्ञानछे

अने सूर्योदय थतां प्राक् जे अरुणोदयछे ते दृष्टांते अनुभवज्ञान जाणवुं. अनुभवज्ञान साक्षात् परमात्मपदनी प्राप्ति करावेछे. भव्यजीवो अनुभवज्ञानथी जाणेछे. अनुभवज्ञान साक्षात् सूर्य समानछे. शास्त्रोनुं अध्ययन करतां, ध्यान करतां अनुभवज्ञाननी प्राप्ति थाय छे. अनुभवज्ञानीओ उपयोग पोताना आत्माना असंख्यात प्रदेशे व्यापी पुद्गलत्वम्मुखं उवेछे. मारो शुद्ध आत्मस्वभाव तेज मारुं धनछे. बाकी आ बाह्य देखातुं धन मारु नथी. एम भिन्नता पाडी शुद्ध गुणमां परिणमेछे अनुभवज्ञानी सिद्धांतनो साररूप मकरंद पीवेछे. अनुभवज्ञानी समता भुवनमां सदा सुखमां म्हालेछे. अरूपी आत्माने दृष्टिगोचर करवानुं स्थान अनुभवज्ञानछे. माटे सम्यग् ज्ञानना अर्थी जीवोए पुनः पुनः सत्शास्त्र अने सद्गुरुनो परिचय करी अंतर्वृत्ति करी बाह्यवृत्तिनो त्याग करवो.

कह्युं छे के–

बाह्यवृत्तिए गुणठाणे चडवुं, ते तो जडना भांमा;
संयमश्रेणि शिखरे चडावे, अंतरंग परिणामारे. लोका भो-
ळवीया मत भूलो. १

ए उपरथी सार लेवानो के–बाह्यवृत्ति नाम बहिरात्मदशाथी गुणस्थानके चडवुं एम तो जडजीवोनी भ्रमणाछे, अंतरंग परिणामरूप अंतर्वृत्ति संयमश्रेणिना शिखरे चडावेछे. माटे भव्य लोको भोळवीया तमे भूलो नहीं सत्य तत्त्वमां रमण करो. अने ध्याननी इच्छा करो. आत्मगुणनी विचारणा करो. आत्माना स्वभावमां ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्यादि अनंतगुणछे, वळी गुण गुण प्रति भिन्न भिन्न स्वभाव आत्मामां रह्याछे,ज्ञाननो जाणवारूप स्वभाव, दर्शननो देखवारूप स्वभाव, चारित्रनो स्थिरतारूप अने वीर्यनो स्फुरणा शक्तिरूप स्वभाव एम अनंतगुणो आत्मामां निराधार रह्याछे पण

शक्तिभावथी आत्मानुं कार्य सरे नहिं. जेम अरणि काष्टमां शक्तिभावे रहीछे पण अरणिना काष्टने साथ भीडवाथी दाह नाश पामे नहि ते दृष्टांतना अनुसारे शक्तिभावे रहेलो आत्मानो धर्म ज्ञानथी जाणी वीर्यथी प्रगट करीए तो चतुर्गतिनां अनंतशः जन्म जरा मरण टळी जाय. आत्माना गुण पर्यायनुं व्यक्तिरूपे प्रगटवुं तेज स्वभाव लाभ जाणवो.

प्रश्न–घातीकर्मनो नाश शावडे त्वरित थाय.

उत्तर–ज्ञान अने ध्यानथी प्रमादना त्यागपूर्वक आत्मोपयोगे स्थिरताथी कर्मनो नाश थायछे. पर्वतनी गुफामां निबिड अंधकार होयछे तेनो नाश दीपकथी थायछे तेम अज्ञान तथा कर्मनो नाश पण आत्मज्ञानथी थायछे. मोटी तृणनी गंजी पण अग्निना स्वल्प कणीयाथी नाश क्षणमां पामेछे तेम अनंत भवोपार्जित घातीकर्मनो नाश पण आत्मज्ञानथी स्वल्पकाळमां थायछे. श्रीपाळना रासमां देशनानी ढाळमां कह्युं छे के–

श्री यशो विजय उपाध्याय.

क्षण अर्धे जे अघटले, तेन टळे भवनी कोडीरे,
तपस्या करतां अतिघणी, नहीं ज्ञान तणीछे जोडीरे.

ज्ञानी पुरुष अर्धक्षणमां जे पापनो नाश करेछे ते कोटी भव पर्यंत कठीन विचित्र छठ अठम मास बे मास विगेरेनी तपश्चर्या करतां टळे नहीं. माटे ज्ञाननी कोइ जोडी एटले ते समान कोइ नथी माटे आत्मज्ञाननी प्राप्ति करवा प्रयत्न करवो. ज्ञान रूपी अग्नि सर्व कर्मने बाळी भस्म करेछे. षड्द्रव्य सात नय तथा निक्षेप द्रव्यादिकना ज्ञानथी स्वपर विभाग थायछे अने पोताना घरमां प्रवेश करेछे अर्थात् असंख्य प्रदेशरूप जे घर तेमां आत्माउपयोगपणे परिणमी अशुद्धतानो परिहार करेछे, पोताना घरमां आवतां आ-

त्याए अनुभवदृष्टिथी मने निश्चय थोय त्यारे विचार्युं के-अहो में अनंत भवभ्रमण काळ अज्ञान रूप निद्रामां निर्गमाव्यो. मारी भूले हुं जन्म जरा मरणनां दुःख पाम्यो हवे भ्रांति भागी आ शरीररूप नगरीमां असंख्य प्रदेशी आत्मानो दर्शन थयुं. असंख्य प्रदेशीरूप आत्मा हुं अरूपी छुं. श्वेत, पीत, रक्त, कृष्ण, ए पुद्गलनुं रूप छे पण हुं तो पुद्गलथी भिन्न छुं माटे रूपातीत छुं. मारामां गंध स्पर्श नथी. शब्दथी मारु ज्ञान थाय छे पण हुं शब्दथी न्यारो छुं मारु कोइ नाम नथी. तेथी हुं अनामी कहेवाउं छुं.

हुं कीर्ति वा अपकीर्तिवाळो नथी-कारण के बहिरात्मदशामां कीर्तिनी वासना जीवने रहेछे अने तेथी ते अनेक प्रकारना कीर्ति माटे उपायो करेछे. पण तेथी कंइ कल्याण थतुं नथी. जेम वंध्याने स्वप्नानी अंदर पुत्रनो प्रसव थयो. अने ते पुत्रने मोटां थतां परणाव्यो. वंध्या बहु आनंद पामी. एटलामां वंध्यानो पुत्र मरण पाम्यो त्यारे वंध्या रोवा पीटवा लागी. केश तोडवा लागी. वंध्यानी आंख उघडी गइ अने जुवे छे तो कंइ नथी. मिथ्याभास थयो एम आत्मानुं तेम अज्ञानी जीव साधु वा गृहस्थना वा कोइपण अवस्थामां कीर्तिनी वासनाथी अनेक कार्यो करेछे. किंतु आंख मींचाया बाद कंइ पण तेमांनुं देखातुं नथी. माटे ज्ञानयोगी आत्मा कोइ कीर्ति करे वा कोइ अपकीर्ति करे तोपण समभावे रहेछे. कारण के-ज्ञानयोगी आत्मा जाणेछे के कीर्तिनाम कर्मना बंधनथी जगत्मां कीर्ति प्रसरेछे. अने अपकीर्तिनाम कर्मोदयथी अपकीर्ति प्रसरे छे-माटे ते कीर्ति अने अपकीर्ति बन्ने पौद्गलिकछे. कोइनी कीर्ति प्रसरवाथी ते धर्मी कहेवातो नथी. तेम अपकीर्ति प्रसरवाथी ते अधर्मी कही शकातो नथी. अंतरंग शुद्धात्म वृत्तिथी धर्मी कहेवायछे. अने अंतरंग अशुद्धात्म वृत्तिथी अधर्मी जाणवो. मान पूजा आदि वास-

नाओथी पण आत्मा भिन्नछे. कारण के मान अने अपमान ए बहिरात्मा दशावाळाने एटले जेणे दुनीयादारीमां सुखदुःखनी बुद्धि धारण करीछे तेवा जीवने वर्तेछे, पण जेणे शरीरथी भिन्न आत्मा निराकार ज्योतिमय जाण्योछे तेवा अंतरात्म दशावाळा जीवने माननी वासना रहेती नथी. शुद्धात्मा सदा मानवंतछे. पुद्गलरूप देह कंइ मान्य योग्य नथी. वळी कोइ अपमान करे तो समजे के-देहनुं अपमान के तेनी अंदर रहेला आत्मानुं अपमान नथी. देह तो जडछे अने आत्मा तो अदृश्यछे, तेथी तेनुं अपमान थइ शकतुं नथी माटे ज्ञानयोगी महात्माने मान अपमान बे सरखांछे. वळी ज्ञा योगीनी कोइ निंदा करे. वा कोइ वंदन करे तोपण ते समभाव वर्ते छे. कारणके ज्ञानी जाणे छे के-मारो आत्मा अलक्ष्यछे पोताना स्वभावे शुद्ध निर्लेपछे. एम उपयोगमां वर्ततो कोइना उप राग वा कोइना उपर द्वेप करतो नथी. कनक अने पाषाणने प ज्ञानी आत्मा सरखा जाणेछे, कनक अने पाषाण पृथ्वीकायन दळीयां पौद्गलिकछे. अने ते कनक पाषाणरूप अचित्त पुद्गल स्कंधरूपीछे. अने हुं आत्मा तो अरूपीछुं. कनक पाषाण पुद्गल स्कंध जडछे अने हुं आत्मा तो ज्ञान गुणमयछुं, मारी अने एन भिन्न जातिछे. वळी कनक पाषाणमां सुख नथी. तो ते उपर केम दृष्टि आपुं ? एम समजी ज्ञानी आत्मार्थी समभावमां रहेछे. अने शुद्धा त्म स्वरूपमां उपयोग दृष्टि आपेछे.

संसारना संसर्गमां आवतो पण ज्ञानी आत्मा जलमां कमलनी पेठे भिन्नपणे वर्तेछे, हर्ष शोक धारण करतो नथी. एम प्रमादस्थाननुं निवारण करतो विरतिव्रत अंगीकार करतो अंतरथी द्रव्यक्षेत्र का- ळभावथी आत्म स्वरूप विचारतो अने तेम आत्माना गुणपर्यायने भिन्नाभिन्नपणे विचारतो मति अने श्रुतज्ञानना क्षयोपशमे वीर्य श-

कि पोताना संयम श्रेणि आरोहण करतो घातीकर्मनो क्षय करी यावत् अघातीकर्मनो क्षय करी पंचम गति जे मुक्तिस्थान तेमां सादि अनंतमा भांगे विराजे छे. त्यां मुक्तिस्थानमां शरीरनो त्रीजो भाग टाळी बे भागनी अवगाहना रहेछे. मुक्तिमां स्वामी सेवकभाव नथी, मुक्तिमां गयेल आत्मा पश्चात् संसारमां आवतो नथी, अने तेथी जन्म जरा मरणनां दुःख पामतो नथी, आ प्रमाणे कर्मना नाशे मुक्ति पामेली पासेछे किंतु आत्मध्यानरूप पुरुषार्थमां प्रमाद थवाथी पुनः पुनः संसारमां परिभ्रमण करवुं पडेछे मन, वचन अने कायाना योगो स्थिर करी आत्म स्वरूपमां स्थिर थवुं अने बाह्य मार्गमां दृष्टि देतां आगळ वध्या करवुं. तेम करवाथी आनंदनी खुमारी प्रगट थशे अने स्थिरता योगे चारित्र मोहनीयनो नाश थशे, अने आत्मा मतिज्ञान अने श्रुतज्ञानना क्षयोपशमथी गे प्रत्यक्ष गुण स्थानकनी हदे विचित्र अनुभव प्रगट करतो देखाशे अने आत्मतत्त्वनो निर्धार भास थशे. आ अचळ सिद्धांतनी श्रद्धा तथा तेनो आदर जे आत्मा अल्पभवमां मुक्ति स्थानीछे तेने प्राप्त थायछे. अने परमपद प्राप्तिनी तीव्रेच्छा प्रगट थया विना तेना उपर लक्ष्य लागतुं नथी अने ते प्रति लक्ष्य ला-ग्या विना आत्म कल्याण नथीज. जे भव्यने जे वस्तुनी इच्छा होयछे ते प्रति तेनो उद्यम वर्तेछे. सर्व करतां शुद्ध स्वरूपनी इच्छा श्रेष्ट गुणावहा जाणवी. हवे ते आत्मगुणनी प्राप्तिकरवा मन शुद्ध करवुं जोइए. मननी शुद्धता थया विना सच्चिदानंद प्रति वलण थतुं नथी, प्रथमतो मन इंद्रियोना विषयमां भटकतुं होयछे तेने पाछुं वाळवुं अने आत्मरमणमां जोडवुं एम थवाथी राग द्वेषादिक श-त्रुओ तेनी मेळे नाश पामशे. आम वर्तन करवाथी गुणोनी प्राप्ति थायछे कोइ भव्यो बोलवामां एवुं बोले के–जाणे महा तत्त्वज्ञान

मीप्त थयुं पण अंतरमां कंइ होतुं नथी, माटे वर्तन आत्म स्वभावमां थवुं जोइए, एम करवाथी अनुक्रमे आत्मा कर्माष्टकनो नाश करी मुक्तिपद पामेछे. अतीत काळे अनंत जीवो मुक्ति गया जायछे अने जशे इति सप्तम विषय संपूर्ण.

८ अष्टमविषय.

संसारमां आत्मा क्यारथीछे-- ?

संसारमां आत्मा अनादिकाळथीछे. जेनी आदि होयछे ते उत्पत्तिमान पदार्थ होयछे. अने जे उत्पत्तिमान् होयछे ते कार्यरूप कहेवायछे, अने जे पदार्थ कार्यरूप होय ते समवाय निमित्तआदि कारणोनी सामग्रीद्वारा उत्पन्न थायछे अने तेथी ते कार्यरूप पदार्थ अनित्य कहेवायछे. अने जे पदार्थ अनित्य होयछे ते विनाश पामे छे. आत्माने कोइए उत्पन्न कर्यो नथी अने तेथी ते अनादि कहेवायछे.

जे पदार्थनी आदि नथी तेनो अंतपण नथी. ते प्रमाणे आत्मा अनादि छे अने अनंतछे. जे वस्तुनो कोइ बनावनार नथी ते वस्तु नित्य कहेवायछे. तेम आत्मा तेनो बनावनार कोइ नथी तेथी आत्मा नित्य कहेवायछे. जे नित्य वस्तु होयछे ते त्रण कालमां नाश पामती नथी. तेम आत्मा पण नित्यछे तेथी त्रणे कालमां नाश पामतो नथी, जे वस्तुउत्पन्न थायछे ते कारण पूर्वक होयछे, जेम घटवस्तु मृत्तिका दंड चक्र कुलालादि पूर्वकछे. अने जे वस्तुनो कोइ उत्पन्न कर्त्ता नथी. ते कारण विना स्वयं सिद्ध होयछे जेम आकाश ते प्रमाणे आत्मा पण कारण विनानोछे. अर्थात् ते कोइनाथी बन्यो नथी.



ब्रह्मथी एकांत भिन्न जगत् प्रपंच ब्रह्मस्वरूप थयो, त्यारे माया, गौ, पुरुष, सर्प, मित्र, आदि सर्व ब्रह्मरूप थयुं. त्यारे तेनाथी भिन्न वा तेथी दूर पदार्थज नथी. वळी अमो ब्रह्मवादीने पुछीए छीए के-ब्रह्म जे ते जगत् प्रपंचनुं उपादान कारणछे के निमित्त कारण ? प्रथम पक्षमां जो ब्रह्मने उपादान कारण मानवामां आवे तो कारण जेवुं होय तेवुं कार्य थाय जेम पटनुं उपादान कारण तंतु श्वेत होय तो पट पण श्वेत थायछे. तेम जो ब्रह्म सत्छे अने उपादान कारणछे तो उत्पन्न थनार जगत् प्रपंचरूप कार्य सत् थवुं जोइए. अने ते कदी नाश पण पामे नहि, पण जगत् प्रपंच सत् नथी एम प्रत्यक्ष विनाशादि भाव थती देखायछे वळी ब्रह्मने रूपी वा अरूपी मानतां विरोध दर्शावेछे. प्रथम पक्ष ब्रह्मने रूपी मानतां आगम विरोध आवेछे. द्वितीय विकल्पमां ब्रह्मने अरूपी मानतां ब्रह्मथी उत्पन्न थनार जगत् प्रपंच रूप कार्य अरूपी थवुं जोइए. पण घटपटादि वस्तुरूपी देखायछे ए पण महाविरोध आवेछे. वळी ब्रह्मने नित्यमान तो ब्रह्मथी उत्पन्न थनार जगत् प्रपंच पण नित्यपणे उत्पन्न थतो जोइए पण जगत् प्रपंच तेथी उलटो विनाश पामतो देखायछे. तेथी तेम मानतां पण विरोध माल थायछे, माटे जगत् उपादान कारणपणे मानेलुं ब्रह्म नित्यपणे पण कहीशकातुं नथी. ब्रह्मने अनित्य मानतां आगम विरोध आवेछे वळी ब्रह्मने एक अने ते सर्वत्र व्यापकछे एम मानवाथी जीवोनो बंध मोक्ष मानवो असत् ठरेछे. तेम सुख दुःख पण असत् ठरशे. इत्यादि विकल्पोथी ब्रह्मनी सिद्धि पण थती नथी. तो वळी ब्रह्ममांथी जीवो उत्पन्न थया तेम मानवुं ते तो सर्वथा असत्य ठरेछे.

प्रश्न–आनंद ब्रह्मनो विद्वान् नहिंतहि कुतश्चन–ब्रह्मना आनंदने जाणनार पुरुष कदापी भय पामतो नथी. एम श्रुति आर-

ण्यक तथा तैत्तिरीय श्रुतिमां कह्युंछे तेनुं केम ?

उत्तर–ब्रह्म शब्दार्थनुं सम्यग् ज्ञान न थवाथी तत्त्वनी प्राप्ति थती नथी. केटलाक वादीओ ब्रह्म विषे सर्व जीवोनो लय थायछे. अने वळी ब्रह्ममांथी सर्व जीवो उत्पन्न थायछे एम समजी तत्त्व पामी शकता नथी कारणके–सम्यग् ज्ञान विना सम्यग् क्रिया थइ शकती नथी. अने ते विना भवांत थतो नथी. अर्थात् कर्मनो नाश करी मुक्तिपद पमातुं नथी. पण आत्मारूप ब्रह्मनो भावार्थ ज्ञानथी सम्यक समजनार कशाथी भय पामतो नथी. माटे सम्यग्दृष्टिपणुं प्राप्त थतां एकांत हठ टळेछे.

प्रश्न–श्लोक भिद्यते हृदयग्रंथीः छिद्यंते सर्व संसयाः

क्षीयंते चास्य कर्माणि, तस्मिन् दृष्टे परावरे. १

ब्रह्मने साक्षात्कार जाणवाथी हृदय ग्रंथी भेदायछे. अने सर्व संशयो छेदायछे. कर्मो नाश पामेछे. ते ब्रह्मने देखतां–आम मुंडकोपनिपद् विगेरेथी जणायछे तोब्रह्मने असत्य केम कहेवाय?

उत्तर-हेभव्यजीव हजी अमारु कथन तमाराथी समजायुंनथी— ब्रह्मशब्दनो अर्थ ज्ञानवान् आत्मा अनेते ज्ञानीजीव प्रतिशरीर भिन्नभिन्न-तेमज कर्मरहीत ज्ञानीजीवो–व्यक्तिथी भिन्नभिन्नछे तेवारुपे अमो ब्रह्मने सत्य मानीएछीए—पणजे एक ब्रह्म अने तेमांथी जगत् पेदाथवुं तेवा ब्रह्मशब्दना अर्थने अमो सत्यरुपे मानतानथी. तेनासंबंधे अत्रसंभाषण थायछे —अत्रसमजवानुंके–सर्वत्र ब्रह्मछे, ब्रह्मथकीअन्य कोइपदार्थ नथी एम मानवुं ते ज्ञानविरुद्धछे-अने एम कोइमानेतो तेमां अन्यतुं जोरनथी–पण समजवानुंके—उपरना श्लोकथी द्वैतपणानी एटले बे तत्त्व–जीव अने अजीव तेनी सिद्धि थायछे—अस्य

र्थी छे. आत्मा अने कर्म बे सीरनीरवत् परिणामीछे, आत्मा ज्यारे स्वस्वभावमां रमण करेछे. त्यारे कर्मरूप पुद्गलो आत्माना प्रदेशोथी विखरेछे, अने आत्मामां रहेलुं अनंतज्ञान आविर्भावे प्रकाशेछे. अने आत्मा परमपद पामतां अचल थायछे. जन्म जरा मृत्युनो नाश करी अजरामर पद पामेछे तेथी नपुनरावृत्तिः शिव अर्थात् मोक्ष पामेला जीवो संसारमां पाछा आवी जन्म धारण करता नथी. वळी सर्व जीवो ब्रह्मना अंशछे एम मानीएतो पुण्य पाप बंध मोक्ष आदि घटी शकतुं नथी कारण के–सर्वस्य ब्रह्मस्वरूपत्वात् सर्व पदार्थने ब्रह्मस्वरूप मान्याथी धर्म अधर्म मुक्ति विगेरे असत्य ठरेछे. तेमां आ वाक्य प्रयोग षष्ठीना बहु वचननोछे, तेथी आत्मा अनंतछे एम प्रतिपादन कर्युंछे. ने फरीथी संसारमां आवता नथी. एम कहेवाथी प्रलय काळ थया बाद केटलाक मानेछेके मुक्तिमांथी संसारमां जीव पाछा आवेछे तथा दयानंद सरस्वति जे आर्य समाजनो प्रकाशकछे ते स्वकल्पनाथी एम मानेछेके मुक्तिमांथी जीव संसारमां पाछो आवेछे. एम ते वादियोनुं मानवुं असत्य ठरेछे. अने ते मिथ्या ज्ञानछे एम सिद्ध कर्युं. वळी नीचेनी वेदश्रुतियो पण सम्यग्ज्ञान विना असमंजस भासेछे.

तथाच

इदं सर्वं यदयमात्मा, सर्वं खल्विदं ब्रह्म ॥
अयमात्मा ब्रह्म, अहं ब्रह्मास्मि ॥

इत्यादि वेद श्रुतियोपण सम्यग्ज्ञान विना प्रमाणीभूत नथी. सर्व एटले सर्व खलु एटले निश्चयथी आ ब्रह्मछे. घट, पट, दंड, चक्र, वृक्ष, सर्प, जगत् सर्व ब्रह्मछे तो सिद्ध थयुं के स्त्री पण ब्रह्मस्वरूप. माता पण ब्रह्मस्वरूप. पुत्री पण ब्रह्मस्वरूप.पोते वक्ता पण ब्रह्मस्वरूप. त्यारे कोने नमस्कार करवो ? कोनुं स्मरण करवुं? अने वळी स्मरण करवानुं शुं प्रयोजन ?. तेनी सिद्धि ठरती नथी. त्या पण

ब्रह्मस्वरूप, अने विष्णु पण ब्रह्मस्वरूप. सर्व पण ब्रह्मनो प्रत्येकने नमस्कार करवो जोइए. पण ब्रह्मवादी पण सर्वने ब्रह्मस्वरूप मानी भेदभाव राखेछे ते आकाश जेवडी मृषा गणाय. माटे ब्रह्मने एक मानतां पूर्वोक्त दूषण प्राप्त थायछे. सम्यग्दृष्टि तेवोज अर्थ सम्यग्पणे ग्रहण करेछे. आ सर्व जगत् अनंतजीवोथी परिपूर्ण व्याप्तछे, अने जे आ शरीरमां छे ते आत्माछे, अने आत्मा ज्ञानमयछे. दुनीयानी सर्व वस्तुओ ज्ञानमां विषयीभूत थायछे. अनंतज्ञेयनो ज्ञाता अनंत ज्ञानमय आत्माछे तेने ब्रह्म कहो वा चैतन्य कहो. वा परमात्मा कहो, नामभेद पण अर्थनो एकनो एकछे–सिद्ध परमात्माओ सदृश शरीरमां रहेलो आत्मा पण सर्व रुद्धिमयछे पण कर्मावरणथी सर्व रुद्धि तिरोभावेछे–आत्मा अजछे. अविनाशीछे. अनादि अनंत, अक्षय, अक्षर, अनक्षर, अचल, अटल, अमल, अगम्य, अरूपी, अकर्मी, अबंधक, अनुदय, अनुदरीक, अयोगी, अभोगी, अरोगी, अभेदी, अवेदी, अछेदी, अलेपी, अखेदी, अकषाइ, अलेशी, अशरीरी, अणाहारी, अव्याबाध, अनवगाही, अगुरुलघुपरिणामी, अप्रमाणी, अयोनि, असंसारी, अमर, अपर, अपरंपर, ज्ञानगुणापेक्षाए व्यापक अनाश्रित, अकंप, अनाश्रव, अशोकी, असंगी अनाहारी लोकालोक ज्ञायक, अनंत सुखमय, आदि गुणोथी विराजमान प्रत्येक शरीरमां रहेला आत्माओ छे. किंतु कर्मनायोगे सर्व रुद्धि ढंकाणी छे, आ शरीरमां पण कर्मथी बंधाएल हे आत्मातुंछे. जेवा सिद्ध भगवान् छे तेवो तुं छे. एम सम्यग् अर्थ ग्रही प्रयत्न करायतो मुक्तिपद पामी शकाय. पण सम्यग्ज्ञान विना संसारी जीवो मोहमायामां मस्तान थइ संसारमां परिभ्रमण करेछे. माटे सत्य तत्त्वनी प्राप्ति करवी. एज मोक्षमार्ग जाणवो. श्री सर्वज्ञ प्रभुए धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, जीव द्रव्य

अने काळ आ षड्द्रव्य कथन कर्यांछे. केवळज्ञानमां जेवुं जाण्युं तथा केवल दर्शनमां जेवुं सामान्योपयोगथी देख्युं. ते प्रमाणे पदार्थोनुं प्रतिपादन कर्युंछे. तेनुं ज्ञान थवाथी सत्य आत्मतत्त्वनी प्राप्ति थायछे. मिथ्याज्ञानथी मिथ्यात्वनी वृद्धि थायछे.-यत उक्तं

श्लोक.

नमिथ्यात्वसमः शत्रु, र्नमिथ्यात्वसमंविषं ॥
नमिथ्यात्वसमोरोगो, नमिथ्यात्वसमंतमः ॥ १ ॥
द्विषद्विषतमो रोगै, र्दुःखमेकत्र दीयते ॥
मिथ्यात्वेन दुरंतेन, जंतोर्जन्मनिजन्मनि ॥ २ ॥
वरं ज्वालाकुले क्षिप्तो, देहिनात्मा हुताशने ॥
नतु मिथ्यात्वसंयुक्तं, जीवितव्यं कदाचन ॥ ३ ॥

मिथ्यात्व समान कोइ शत्रु नथी. कारणके मनुष्यरूप शत्रुओ धनरद्धि वा प्राणनो नाश करेछे. अने मिथ्यात्वरूप शत्रु तो आत्मानी अनंतरिद्धिनो नाश करेछे. अने मिथ्यात्व समान कोइ बीजुं विष नथी. अने मिथ्यात्व समान कोइ रोग नथी. अने मिथ्यात्व समान कोइ अंधकार नथी. ज्वालाथी देदीप्यमान अग्निमां बळी मरवुं ते सारु किंतु मिथ्यात्वपणाथी जीववुं सारु नथी. वळी उपरना बीजा श्लोकमां जणाव्युं के-शत्रु विषरोग तेथी तो एकवार दुःख थायछे अने दुःखे करी जेनो नाश थायछे एवा मिथ्यात्वथी तो भवोभव दुःखनी परंपरा प्राप्त थायछे, माटे सम्यग्ज्ञाननी प्राप्ति माटे प्रयत्न करवो, श्रीवीरप्रभुए जीवो अनादिकालनाछे एम केवलज्ञानथी जाणी प्ररूपणा करीछे ते सत्य मानवी. श्रद्धा करवी.

९ नवमविषय.

आत्मा निर्मलपद (मोक्ष) शाथी पामे:

ज्ञान दर्शन चारित्राणि मोक्षमार्गः ज्ञान दर्शन अने चारित्र मोक्षनो मार्ग छे. श्रीतत्त्वार्थसूत्रमां ज्ञान दर्शन चारित्रनुं विशेषतः प्रतिपादन कर्युं छे. त्यांथी जिज्ञासुओए तेनुं स्वरूप गुरुगमद्वारा जाणवुं. अत्र ए बन्नेनो विशेष विस्तार करवाथी ग्रंथ गौरवता वृद्धि पामे माटे कर्यो नथी. पूर्वे ज्ञाननुं सामान्यतः वर्णन कर्युं छे. दर्शननुं पण वर्णन कर्युं छे. चारित्रनुं पण सामान्य स्वरूप मालम करवाने जणावे छे. अष्टकर्मना समूहनो जे नाश करे तेने चारित्र कहे छे. चारित्रना बे भेद छे. व्यवहार चारित्र द्वितीय निश्चय चारित्र तेमां व्यवहार चारित्रना बे भेद छे. १ देशविरतिरूप-द्वितीय सर्व विरतिरूप.

तेमां श्रावकनां बारव्रत अंगीकार करवां. तथा तेनुं पालन करवुं तेने देशविरति चारित्र कहे छे.

सर्वथी पंचमहाव्रतनो आज्ञापूर्वक स्वीकार करवो अने वीतराग आज्ञा प्रमाणे वर्तन करवुं तेने सर्वथी चारित्र कहे छे-सर्व विरतिरूप भागवती दीक्षाथी कर्मनो नाश थायछे-भागवती दीक्षानुं बहु माहात्म्य कहुं छे.-तथाच

श्लोक.

सर्वेषामपि पापानां, प्रव्रज्या शुद्धिकारिका ॥
जिनोदिता ततः सैव, कर्तव्या शुद्धिमिच्छता ॥१॥
ददति ब्राह्मणादिभ्य, एके पाप विशुद्धये ॥
गोदानं स्वर्णदानंच, भूमिदानान्यनेकधा ॥ २ ॥

आत्मशुद्धयर्थमेवान्ये, कारयंति व्रतानपि ॥
जुहत्यमौ पशूंस्तत्र, अश्वादींश्च सहस्रशः ॥ ३ ॥
अमेध्यभुग् गवामेके, पृष्ठभागं स्पृशंतिच ॥
गवां मूत्रं पिबंत्यन्ये, अन्ये पंचगवं तथा ॥ ४ ॥
शुद्धयर्थं स्नांति तीर्थेषु, प्रविशंत्यन्ये हुताशने ॥
तथापि नैवशुध्यंति, विनादीक्षां जिनोदितां ॥५॥
किंच शौचं विनाशुद्धि, र्जायते न कदाचन ॥
सत्वाहिंसादिकं तच्च, यतः प्राहुर्मनीषिणः ॥ ६ ॥
सर्वजीवदयाशौचं, शौचं सत्यप्रभाषणं ॥
अचौर्यं ब्रह्मचर्यंच, शौचं संतोष एवच ॥ ७ ॥
कषायनिग्रहः शौचं, शौचमिंद्रियनिग्रहः ॥
प्रमादवर्जनं शौचं, ध्यानं शौचं तथोत्तमं ॥ ८ ॥
दुष्टयोगजयः शौचं, शौचं वरविवेकिता ॥
तपो द्वादशधाचैवं, शौचमाहुर्मनीषिणः ॥ ९ ॥
सर्वज्ञोक्तदीक्षायां, एतत् सर्वदयादिकं ॥
शौचं संपूर्ण मेवास्ति, सदांतरात्मशुद्धिकृत ॥१०॥

भावार्थ—सर्व पापोनी शुद्धिकारिका दीक्षाछे. माटे जिनेश्वरे करेली दीक्षा आत्मशुद्धि इच्छनारे अंगीकार करवी. दीक्षा अंगीकार करवाथी सर्वथा प्रकारे कर्मनो नाश थायछे.

केचित् जीवो ब्राह्मण विगेरेने स्वर्णदान गोदान भूमीदान विगेरे आपेछे अने केटलाक आत्मानी शुद्धिने माटे व्रतो करेछे अने

करावेछे. अने होममां पशुओने होमेछे. केटलाक आत्मकल्याण माटे गायनुं अमेध्य भक्षण करेछे, तथा तेना पृष्ट भागने स्पर्शेछे अने वळी गायनुं मूत्र पीवेछे, तथा पंचगव्यनुं भक्षण करेछे. केटलाक आत्मशुद्धि माटे गंगा यमुना आदि तीर्थोमां स्नान करेछे. केटलाक अग्निमां प्रवेश करेछे, परंतु ते अज्ञानपणाथी आत्मशुद्धि मात्र करता नथी. पण ज्यारे वीतराग सर्वज्ञ कथेली भागवती दीक्षा अंगीकार करवामां आवेछे त्यारे आत्मा निर्मल थायछे.

वळी ते भागवतीदीक्षामां शौचविना शुद्धि थती नथी. हवे ते शौच दर्शावेछे. सर्वजीवदयाशौचं-सर्व जीवोनी दया करवी तेने शौच कहेछे. दया विना धर्म होतो नथी. अहिंसा परमोधर्मः अहिंसा मोटो धर्मछे. अने शास्त्रमां पण कहुंछे के-

नय तिहुअणेवि पावं, अन्नं पाणाइवायओ गरूयं ॥
जं सव्वेविय जीवा, सुहेसिणो दुक्खभीरूय ॥ १ ॥

त्रणलोकमां हिंसा करतां मोटुं कोइ पाप नथी. सर्वे जीव सुख इच्छेछे. अने दुःखथी बीवेछे.

श्लोक.

नसादीक्षा नसाभिक्षा, नतद् दानं नतत्तपः ॥
नतज्ज्ञानं नतद्ध्यानं, दयायत्र न विद्यते ॥ १ ॥

भावार्थ-एवी कोइ दीक्षा, भिक्षा, दान, तप के ध्यान नथी के-जेमां दया नहीं होय.

श्लोक.

अहिंसैव मता मुख्या, स्वर्गमोक्ष प्रसाधनी ॥
अस्याः संरक्षणार्थंच, न्याय्यं सत्यादिपालनं

स्वर्ग अने मोक्ष आपनारी दयाज (अहिंसा) दयाज मुख्यपणे मनायलीछे. अने एने राखवा माटेज सत्यादिकनुं पालन व्याजवी गणायछे. वळी आचारांग सूत्रमां कहुंछे के-तथाच पाठः

सेबेमि जेअइया जेय पडुपन्ना जे आगमिस्सा अरहंता भगवंतो ते सव्वे एव माइक्खंति, एवंभासंति, एवंपन्नवंति, एवंपरूवंति, सव्वेपाणा, सव्वेभूया, सव्वेजीवा, सव्वेसत्ता, नहंतव्वा, नअज्जावियव्वा, नपरितावेयव्वा, नउद्दवेयव्वा, एसधम्मे सुद्धे निइए सासए समिच्चलोयं खेयन्नेहिं पवेइयं.

आचारांगसूत्र भावार्थ

हुं कहुं छुं के जे तीर्थंकर भगवान थइ गया अने जे हाल वर्ते छे, अने जे आवता काळमां थशे ते सर्व आ रीते कहेछे जणावेछे तथा वर्णवे छे के सर्वप्राण, सर्वभूत, सर्वजीव, अने सर्व सत्वने हणवा नहि, तेमना उपर हकुमत चलाववी नहि, तेमने कबजे करवा नहि, तेओने मारी नाखवा नहि, अने तेओने हेरान करवा नहि, आवो पवित्र अने नित्य धर्म लोकोना दुःखने जाणनार भगवाने बताव्योछे.

अने वळी कहुं छे के-

जयंचरे जयंचिठे, जयमासे जयंसए ॥
जयं भुजंतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधइ ॥ १ ॥

श्री शय्यंभवसूरि कहेछे के यतनाथी चालवुं. जीवनी दया सचवाय तेम उभा रहेवुं, यतनाथी बेसवुं, अने यतनाथी सूवुं, अने यतनाथी बोलवुं, एम करतां पाप कर्म बंधाशे नहि. वळी कहुंछे के-

गाथा.

मल मइल पंक मइला. धूली मइला न ते नरा मइला

जे पावपंक मइला, ते मइला जीवलोयंमि ॥ १ ॥
खणमित्तं मल्लिलेहिं. सरीरदेसस्स शुद्धिजणगंजं
कामंगंति निसिद्धं. महेसिणंतं नणु सिणाणं ॥२॥

भावार्थ=मलथी मेला, कादवथी मेला थएला, अने धूलथी मेला थएला माणसो मेला नहि गणाय. पण जे पापरूप कादवथी मेला थएला होय ते जीवो आ लोकमां मेला जाणवा–

वळी स्नानमां जलवडे फक्त शरीरना बहिर्भागनी शुद्धि थायछे, अने जे जल स्नान कामनुं अंग गणायछे ते जलथी महर्षियोने स्नान करवानो निषेधछे—

उक्तंच श्लोक.

स्नानं मददर्पकरं, कामांगं प्रथमं स्मृतं ॥
तस्मात् कामं परित्यज्य, नैव स्नांति दमे रताः १

स्नान ए मद अने विषयाभिलाषनुं कारण होवाथी कामनुं पहेलुं अंग गणायछे. माटे कामने त्याग करनार अने इंद्रियोने दमवा तत्पर थएला यतिजनो कोइपण स्नान नथी करता. केटलाक लोको समज्या विना एम बोलेछे के जैनना मुनियो स्नान करता नथी. तेमने कहेवानुं के जैनना साधु शास्त्राज्ञा मुजब वर्तेछे तेथी विषयाभिलाषजनक स्नाननुं तेमने कंइ प्रयोजन नथी. ब्रह्मचारी सदाशुचिः ब्रह्मचारी पुरुष सदा पवित्रछे. तेने कारण स्नाननी कंइ जरूर नथी वळी श्रीकृष्ण, पांडु पुत्रने नीचे मुजब उपदेश आपेछे.

श्लोक.

आत्मानदी संयमतोयपूर्णा, सत्यावहा शीलतटा दयोर्मिः
तत्राभिषेकं कुरु पांडुपुत्र, नवारिणा शुद्ध्यति चांतरात्मा१

भावार्थ-आत्मारूपी नदीछे तेमां संयमरूपी पाणीपरिपूर्ण भरेलछे, त्यां सत्यरूप शीलरूप तेना तटछे, त्यां दयारूप तरंगोछे माटे हे पांडुपुत्र तेमां स्नान कर. कारण के शरीरनी अंदर रहेलो अरूपी आत्मा कंइ पाणीथी शुद्ध थतो नथी हवे त्यारे पवित्र कोण कहेवाय ते जणावेछे.

गाथा.

अखंडिय वयनियमा, गुत्ता गुत्तिंदिया जियकसाया·
अइशुद्ध वंभचेरा, सुइणो इसिणो सयानेया ॥ १

भावार्थ-अंगीकार करेलां व्रत अने नियमने अखंडित पालनारा अने जेणे पोतानी इन्द्रियो वश करीछे तथा वळी क्रोध, मान, माया, लोभ, ए चार कषायोने जीतनारा तथा निर्मल ब्रह्मचर्य पाळनार मुनियो (ऋषियो) सदा पवित्र जाणवा.

तथा वळी कहुंछे के—

श्लोक.

नोदकक्लिन्नगात्रोऽपि, स्नात इत्यभिधीयते;
स स्नातो योदमस्नातः स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥ १

भावार्थ-पाणीथी भींजायल शरीरवाळो कंइ न्हाएलो नहि कहेवाय. किंतु जे पोतानी पांच इंद्रियोनो वश करनारो यइ अभ्यंतर अने बाह्यथी पवित्र होय तेज न्हाएलो कहेवाय. वळी कहुंछेके–

श्लोक.

चित्तमंतर्गतं दुष्टं, तीर्थस्नानैर्न शुद्ध्यति;
शतशोऽपिजलैर्धौतं, सुराभांडमिवाशुचिः ॥ १

भावार्थ—अंतरनुं दुष्ट चित्त कंइ तीर्थ स्नानथी शुद्ध थतुं नथी केमके मदिरानुं वासण सेंकडो पाणीथी धोइए तोपण ते अपवित्र ज रहेछे. माटे सारांश के—जलथी मात्र स्नान कर्याथी पवित्रता प्राप्त थती नथी. परंतु दयारूप शौचथी पवित्रपणुं प्राप्त थायछे. माटे दीक्षा अंगीकार करी प्रथम अहिंसा व्रतनुं पालन करवुं जोइए. कोइ पण जीवनी हिंसा करवी नहि. मुनिने वीस वसानी दया होयछे. अने श्रावकने सवावसानी दया होयछे. मांसनुं भक्षण करनार, मांस वेचनार, जीवो, पापी जाणवा संसारनो त्याग करनारा मुनीश्वरो अहिंसा व्रतनुं पालन करी शिव पाम्या अने पामशे. जीवनी हिंसा करवाथी थएल दारुण दुःख यशोधर चरित्रथी जाणवुं. हवे दीक्षा अंगीकार करी बीजुं सत्य बोलवुं, मृषावाद एटले जूठुं कदी बोलवुं नहिं. तद्रूप सत्यव्रतनुं परिपालन करवुं. त्रीजुं महाव्रत अंगीकार करी कोइनी नजीवी वस्तु पण कया विना लेवी नहीं. पोतानी वा पारकी सर्व स्त्री वर्गनो त्याग करवो. मनमां पण भोग भोगववानी इच्छा करवी नहीं. स्त्रीना सामुं सराग दृष्टिथी जोवुं नहि. नव प्रकारे ब्रह्मचर्य व्रतनी गुप्ति पाळवी अने मैथुननो सर्वथा त्याग करवो तेने चोथुं ब्रह्मचर्यव्रत कहेछे. सर्व व्रतो नदीओ समान छे अने ब्रह्मचर्यव्रत समुद्र समानछे, ब्रह्मचारी पुरुषोनी कीर्ति वधेछे. ज्यां जायछे त्यां तेने मान मळेछे. देवताओ पण ब्रह्मचारी पुरुषोने साहाय्य करेछे. मंत्रनी सिद्धि पण शीलव्रत पाळनारने तुरत फळेछे. देवताओ, यक्षो, राक्षसो पण ब्रह्मचारी मुनिने नमस्कार करेछे. ब्रह्मचारी मुनीश्वरने वचन सिद्धि संप्राप्त थायछे, ब्रह्मचारी पुरुषनो संकल्प सिद्ध थायछे. कोइ मनुष्य सुवर्णनां मोटां देरासर करावे अने कोइ ब्रह्मचर्यव्रत अंगीकार करे तो पण ब्रह्मचारी पुरुषनी बरोबर सुवर्णनां देरासर

करावतारने फल थतुं नथी. चारित्रनुं मूळ ब्रह्मचर्यव्रतछे ज्यां ब्रह्मचर्यव्रत नथी त्यां चारित्रनी शुद्धि क्यांथी अर्थात् ब्रह्मचर्यविना चारित्र नथी. ग्रहस्थ पुरूष पण पोतानी स्त्री विना अन्य स्त्रीनो त्याग करेछे. ब्रह्मचर्यमां घणा गुण समायाछे, सुदर्शनशेठने शूळी पण सिंहासनरूपे थइ तेमां ब्रह्मचर्यनुं माहात्म्य जाणवुं. नवनारद ब्रह्मचर्यना प्रतापथी सत्य सुखलीला पाम्या. वळी पारकी स्त्रीना उपर राग करनार रावणने लक्ष्मणे मार्यो, अने रावण मरीनरकमां गयो. अने सीता सतीनो यश जगत्मां गवायो. विषय लंपटी जीवो सदाकाल आकुल व्याकुल दुःखी रहेछे. लंपटी जीवो आ भवमां पण दुःख पामेछे. अने परभवमां पण दुःख पामेछे. लंपटी जीवोनी जगत्मां अपकीर्तिथायछे अने विषयलंपटी जीवो पकडाय छे तो सरकार तेनो मोटो दंड करेछे. अने जगत्मां तेनुं अपमान थायछे. विषय लंपटी जीवो एवा तो आंधळा होयछे केजेमने धर्म वा अधर्मनी समजण पडती नथी. माटे भव्य जीवोए ब्रह्मचर्यव्रतनुं सम्यक् परिपालन करवुं. वारंवार मनुष्य जन्म मळनार नथी. स्त्रीनुं शरीर सात धातुथी भरेलुंछे तेना शरीरमां लोही मांस, हाडकां, मेद, मज्जा, मूत्र, विष्टा भरेलीछे. नाकमांथी लींट वया करेछे. आंखमां पीयाना थोक वाजेछे. केशमां जुओ, लीखो-ना समूह पड्या करेछे. शरीरद्वारोथी अशुचि वहा करेछे. वळी जुवान अवस्था उतर्या बाद वृद्धावस्था थायछे. त्यारे शरीर खराब लागेछे. शरीरनो रंग उतरी जायछे. अरुसन तेना सामुं पण जोवानुं मन थतुं नथी एवी स्त्रीना शरीरमां शो मारछे के तेना उपर राग थाय. वळी स्त्री जाति कपटथी भरेलीछे. भर्तृहरि जेवा राजाने मूकी तेनी राणी पालकनी साथे संसारसंबंधी थइ हती. ते वात ज्यारे भर्तृहरिराजाए जाणी त्यारे मनमां घणो

खेद थयो अने विचारवा लाग्यो के-अहो जे पिंगलाने हुं पटराणी तरीके मानतो हतो अने जे मारी मानीनीया हती. अने हुं जेना उपर पूर्ण विश्वास राखतो हतो ते पिंगलाराणी पण अंते मारी थइ नहि. अने तेणीए कामना आवेशथी नीचनी साथे संबंध कर्यो माटे तेने धिक्कार थाओ. अहो जगत्‌ना जीवो कामावेशथी पुन्य पाप गणता नथी. एवा कामने पण धिक्कार पडो अने आ संसारमां हुं जेने सारभूत मानतो हतो एवी पिंगला पण मारी थइ नहि. अहो ज्ञानीओए संसारने असार कह्योछे तेमां जरा मात्रपण असत्य नथी. एम चिंतवी तापसी दीक्षा अंगीकार करी पर्वतनी गुफामां चाल्यो गयो, अने तेमणे भर्तृहरि शतककी रचना करी. माटे संसारमां सारभूत धर्म विना अन्य कशुं जणातुं नथी. माटे भव्यजीवोए पण सांसारिक मोहमायाथी दूर रही आत्मिक धर्माराधनमां तत्पर थइ धर्माराधन करवुं, अने स्त्रीविषयाभिलाषनो त्याग करवो. शास्त्रमां विषयने विषनी उपमा आपीछे त्यारे वळी एक महात्मा कहेछे के, विषयने विषनी उपमा आपवी ते योग्य नथी. कारण के, विष तो एक भवमां भक्षतां प्राण हरी दुःख आपेछे अने विषयो तो अनेक भव पर्यंत परिभ्रमण कराबी दुःख आपेछे. माटे विषना करतां पण मोटी उपमा आपवी जोइए. विषयथी थतुं सुख स्वप्नसुख समान मिथ्या कल्पना मात्रछे.

तथाच श्लोक.

स्वप्ने दृष्टं यथापुंसः क्षणमात्रं सुखायते
प्रबुद्धस्य नततकिंचित् एवं विषयजं सुखं. १

स्वप्नमां देखेलो पदार्थ पुरुषने क्षणमात्र सुख आपेछे अने ज्यारे ते मनुष्य जागेछे त्यारे कंइपण देखातुं नथी ए प्रमाणे विष-

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पर्यु. त्यां वेश्याए पोतानुं शरीर देखाय अने विषयाभिलाष थाय तेम नाच कर्यो, कामोत्पादक अनेक प्रकारनां गायनो गायां. तो पण मुनिवर्यथी स्थुलीभद्र जरा चलायमान थया नहीं अने विषयमां रागी एवी वेश्याने पण वैरागी बनावी. अने ते वेश्याने श्रावकनां बार व्रत उचराव्यां. अहो आश्चर्यनी वात छे के, कामनो नाश करवा महामुनियो पर्वतनी गुफाओमां तथा एकांत जग्याओमां गया, केमके त्यां काम आवी शके नहि माटे. त्यारे स्थूलिभद्र मुनिवर तो कामना गृहमां प्रवेशी कामनो नाश कर्यो. अहो केटलुं तेमनुं सामर्थ्य ! एवी रीते भव्यजीवोए उत्तम चरित्र श्रवण करी विषय, काम, मोहनो नाश करवो अने ते प्रति जरा मात्र पण इच्छा करवी नहीं अने मन, वचन, कायाथी शुद्ध ब्रह्मचर्य व्रत पाळवुं.

हवे पांचमुं सर्वतः परिग्रह परिमाण विरमण व्रत कहेछे. श्री मुनीश्वर महाराजा धनधान्यादिक नव विध परिग्रहनो त्याग करे छे, कारण के विकल्पसंकल्पनुं कारण परिग्रहछे. परिग्रहथी क्रोध, मान, माया, लोभनी उत्पत्ति थायछे. जेम वहाण अतिशय भारथी समुद्रमां बुडेछे परिग्रहनी वृद्धिथी रागद्वेषनी वृद्धि थायछे. परिग्रहथी दुनीयामां मनुष्य एटली बधी गुंचवणमां आवी पडेछे के तेने जरामात्र पण शांति मळती नथी. वळी धनधान्यादिकनी वृद्धि थी मोटाइ वधेछे. मनमां मान आवेछे. वळी अदेखाइ पण प्रगट थायछे. वळी परिग्रहनी प्राप्तिना कारणथी प्राणातिपात, असत्य, चोरी, आदि पापस्थान कोनुं सेवन करी कर्मार्जन करी जीव अधोगतिमां अवतरी त्यां छेदन भेदन ताडन तर्जन शोक, वियोग क्षुधा, तृषा, आदि विविध दुःखो भोगवेछे. वळी परिग्रहथी अज्ञानीजीव धर्म साधन करी शकतो नथी परिग्रह मेळववामां

दुःखज समायुंछे. वळी परिग्रह धन उपर ममता भाव राखी मनुप्य मरण पामी सर्प, उंदर, गीरोलीना अवतार पामेछे. वळी परिग्रहनी ममताथी मातपिता भाइ परस्पर लडी मरेछे. वळी परिग्रह धनरूप वृद्धि पामेछे त्यारे तेने साचववानी पण चिंता रहेछे. रखेने चोर विगेरे लइ जाय एवी चिंता तेना मनमां रहेवाथी सुखे करी उंघपण आवती नथी, परिग्रहथी आरंभ, समारंभ करी कर्मोपार्जन जीव करेछे. परिग्रहधारी खरेखर जडवस्तुने पोतानी मानी छेतरायछे. माटे वैरागी आत्मार्थी जीवो परिग्रहनो त्याग करी दीक्षा ग्रही पंचमहाव्रत अंगीकार करेछे. अने पुत्र स्त्री मातपिता विगेरे संसारी कुटुंबनो संबंध छोडेछे अने स्वस्थ चित्ते हुं एकलो छुं. आत्माथी अन्य मारू नथी अने हुं कोइनो नथी एम अदीन मना थइ आत्माने शिखामण आपेछे. सद्गुरूने धारण करेछे. संयमनी रक्षा अर्थे वस्त्र, पात्र, पुस्तक, रजोहरण, मुखवस्त्रिका, धारण करेछे. संयमनां उपकरण राखवाथी परिग्रह कहेवानो नथी. कयुंछे के

मुच्छापरिग्गहोवुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा;

श्री ज्ञानपुत्र वीरप्रभुए मूर्च्छाने परिग्रह ग्रयोछे. माटे हठ कदाग्रह करवो नहीं. एम मुनीश्वर परिग्रहनो त्याग करी निर्विकल्प मन करी आत्मज्ञानमां मग्न रहेछे, अने मुनीश्वर विचारे के आ बाह्य परिग्रह त्यागी मुनि आत्मानी रुद्धि तरफ लक्ष आपी जुवेछे तो त्यां अनंतज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, आदि रुद्धि भरेली छे अने ते रुद्धि अविनाशीछे. पोतानाथी कदी जुदी पडवानी नथी अने ए रुध्धि प्राप्त थवाथी सहज शांति अनुभवायछे, एम आत्मा ए जाण्युं त्यारे आ बाह्य जड रुध्धिरूप परिग्रहनो त्याग कर्यो. अने आत्मिक रुध्धि मेळववा प्रयत्न करवा लाग्या, ध्यानादिकनो अभ्यास करवा लाग्या, ए पांचमुं परिग्रह विरमणव्रत दी-

क्षा अंगीकार करी मुनिवर्यो मनवचन अने कायाथी परिग्रह धारण करवो नहीं परिग्रह धारण करावबो नहीं. अने परिग्रह धारण करता होय तेनी अनुमोदना करवी नहीं.

छट्ठं रात्रीभोजन विरमणव्रत करेछे. रात्रीना समयमां मुनीश्वर अशनपान, खादिम अने स्वादिम ए चार प्रकारना आहारनो त्याग करेछे. श्रीवीरप्रभुए रात्रीभोजनमां महा दोष कह्योछे, माटे आत्मार्थी जीव रात्रीभोजन करे नहि. योग शास्त्र, वर्धमान देशना, आदि ग्रंथोमां तथा सूत्रोमां रात्रीभोजन करवाथी महादोष बताव्याछे. वळी अन्य दर्शनीओना शास्त्रमां पण रात्रीभोजन करवाथी दोष बताव्याछे. माटे मुनिवर्यो दीक्षा ग्रही रात्रीभोजननो त्याग करेछे. ए रीते पंच महाव्रत अने छट्ठं रात्रीभोजन विरमणव्रतनुं अत्रनो संक्षेपथी स्वरुप प्रसंगोपात देखाड्युं. आ प्रमाणे मूल व्रत अंगीकार करे, अने चरण सित्तरी करण सित्तरीरुप उत्तर भेदनुं आराधन निर्ग्रंथ मुनिवर्य करे. श्रीसिद्धसेन दिवाकरसूरिकृत प्रवचन सारोद्धारमां चारित्रना मूळ भेद उत्तरभेदनुं तथा चारित्रना उपकरणोनुं विशेषतः वर्णन कर्युंछे त्यांथी जिज्ञासुए विशेष अधिकार जाणवो. हवे दीक्षा अंगीकार करी कषायना निग्रहरूप शौच मुनीश्वर धारण करेछे. क्षमाथी क्रोधनो पराजय करेछे. अने नम्रताभावथी माननो पराजय करेछे अने सरलताथी मायानो नाश करेछे. अने संतोषथी लोभनो नाश करेछे. वळी पांच इंद्रियोना विषयो जीतवारुप शौच मुनीश्वर धारण करेछे. प्रमादनो त्याग करवो ते रूपशौचने दीक्षा अंगीकार करी धारण करेछे. प्रमादथकी चौद पूर्वी पण संसारमां पड्या माटे आलस्य, निद्रा, विकथा, पारकी निंदा आदि प्रमादनो नाश करी मुनीश्वर अप्रमत्तपणे रहेछे. वळी मुनीश्वर ध्यानरूप शौच जे

सर्व शौचोमां उत्तमछे तेने धारण करेछे. धर्मध्यान अने शुक्लध्यान ए बे ध्यान आत्मकल्याणकारीछे. तेमां शुक्लध्यान मुक्ति प्रदाताछे. मन वचन अने कायाना दुष्ट योगनो जय करवो तेने शौच कहेछे वळी हेय, ज्ञेय अने उपादेयनो विवेक तेने उत्तम विवेक कहेछे. ते शौचने दीक्षा अंगीकार करी मुनिवर्यो धारण करेछे. बारप्रकारे तप करवो ते पण शौच जाणवो, श्री सर्वज्ञ कथित दीक्षामां दयादिक सर्व कृत्य शौचरूप शरीरनी अंदर रहेला आत्मानी शुद्धि करनारछे. निश्चय चारित्र आत्मस्वभावमयछे एटले आत्माथी भिन्न नथी ते चारित्रनी प्राप्ति माटे व्यवहार चारित्रकारणीभूतछे.

आ संसारमां केटलाक जीवो धर्मनुं नाम पण जाणता नथी अने तदनुकूल प्रयत्न पण करता नथी. संसारमां मोटा कहेवाणा एटले पोताने धन्य मानेछे. पण पोते जीवादिक तत्त्व जाणता नथी अने सांसारिक कार्योमां अहर्निश गुंथाया रहेछे, पण धर्माराधन परायण थता नथी. धर्मनुं आराधन करी आत्माने कर्मबंधनथी छोडाववो एज उत्तम पुरुषोनुं लक्षण छे. बाकी धन, पुत्र, लक्ष्मीनी वृध्धिथी पोतानी वृध्धि मानी अहंभावमां वर्तवुं ते तो अधम पुरुषोनुं लक्षणछे. श्री भरतराजा, राम, पांडवो विगेरेए अंते आ संसारने असार समजी आत्महितमां प्रवृत्ति करी तेम भव्य जीवोए पण अधुना सारमां सार दीक्षानुं अवलंबन करवुं जोइए. दीक्षा ग्रहा विना आश्रवमार्गनो रोध थतो नथी. आ संसारने ज्ञानी पुरुषोए बळता अग्नि समान कह्योछे, बाजीगरनी बाजी जेवुं आ संसारनुं स्वरुप जाणी विवेकी मनुष्य चारित्रमार्ग ग्रहण करेछे. मारु मारु मानता एवा अनेक जीवो मायाना वश ज्ञानलक्ष्य मत्व आत्मस्वरुप भूली यमराज वश थया अने थायछे. जेम समुद्रमां पाणीना अनेक तरंगो उत्पन्न थायछे अने पश्चात् विलय

पामेछे तेनी पेठे अनादिकालथी आसंसारसमुद्रमां देव मनुष्य तिर्यंच अने नारकीनांगे करी जीव अनेकशः शरीर छोडतो अने अनेकशः शरीर धारण करतो वर्तेछे. पण अज्ञान दशाथी पामर जीवनी मुक्ति थइ नहीं. पण ज्यारे आत्मानुं स्वरूप जाणवामां आवेछे त्यारे आत्मा संयममार्गयोगे धर्मना आविर्भाव अर्थे प्रयत्न करेछे, ज्यारे चारित्रमोहनीय प्रकृतिनो क्षय थायछे त्यारे चारित्र आत्मामां प्रगटे छे. कोइ जीव चारित्र मोहनीयने उपशमावेछे. कोइ चारित्र मोहनीयनो क्षयोपशम करेछे. कोइ जीव क्षायिकसमकितयोगे आठमा गुणठाणाथी क्षपकश्रेणि आरोहण करी चारित्र मोहनीयनो क्षायिक भाव करेछे. कोइ जीव उपशम श्रेणि चढी चारित्र मोहनीयकर्मनी प्रकृतिने अगीयारमा गुणठाणे उपशमावेछे अने त्यांथी पाछा पडे छे. अने यावत् मिथ्यात्व गुणठाणा सुधी आवेछे.

कोइ उपशम समकित पामी आठमागुणठाणाथी उपशमश्रेणिए चढेछे अने कोइ क्षायिक समकित पामी आठमा गुणठाणाथी उपशम श्रेणि चढी अगीयारमे गुणठाणे जइ मरे तो अनुत्तर विमानमां जायछे. अने कोइ उतरता गुणठाणे पण मरण पामेछे. अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया अने लोभ तेमज समकित मोहनीय अने मिश्रमोहनीय अने मिथ्यात्वमोहनीयनो क्षायिकभाव कर्या पूर्वे आवता भवनुं आयु बांधी पाछळथी क्षायिक समकित पाम्यो होय ते जीवने बद्धायुक्षायिक समकित जाणवुं. आयुष्य बंधनी अपेक्षाए आवुं क्षायिक समकित कहुंछे, तत्त्ववात बहुश्रुतवा केवली जाणे. ते अशुद्ध क्षायिक समकिती जीव उपशम श्रेणि करे एम कहेवायछे. क्षायिक समकित जीव दशमा गुणठाणे यथाख्यात चारित्र पामी बारमा गुणठाणे ज्ञानावरणीय,दर्शनावरणीय,अने अंतरायकर्मनो क्षायिकभाव करी अनंतज्ञान,अनंतदर्शन,अनंतवीर्यअने . [illegible]

पंचलब्धि पामेछे. ते नीचे मुजब, अनंतदानलब्धि,अनंतलाभलब्धि, अनंतभोगलब्धि, अनंतउपभोगलब्धि अने अनंतवीर्यलब्धि संप्राप्त थायछे. अंतरायकर्म क्षय थयुंछे एवा परमपरमेश्वर पुरुष सदा सुखी छे. मुख्यपणे तो ते लब्धियोनी प्राप्ति आत्मस्वभावेछे. केमके तेनी क्षायिकभावे प्राप्तिछे. अने जे अनंत सामर्थ्य आत्मामां अनादिथी शक्तिरूपे हतुं ते व्यक्तिरूपे थइ प्रकाशेछे, अने आत्माना अनंत-गुणोनो आविर्भावतेरूप दान, आत्मा पोते पोताने आप्युं ते दान-लब्धि जाणवी. तेमज अनंत आत्म सामर्थ्यनी संप्राप्तिमां किंचित् मात्र वियोगनुं कारण रह्युं नथी. तेथी अनंतलाभ लब्धि कहेवायछे.

वळी अनंत आत्मसामर्थ्यनी संप्राप्ति संपूर्णपणे परमानंद स्वरूपे अनुभवायछे. तेमां किंचित् मात्रपणे वियोगनुं कारण रह्युं नथी तेथी अनंतभोगलब्धि जाणवी.

तथा अनंत आत्म सामर्थ्य संपूर्णपणे परमानंद स्वरूपे समये समये परिणमेछे तोपण तेमां किंचित् मात्र पण वियोगनुं कारण रह्युं नथी. तेथी अनंत उपभोगलब्धि कहेवा योग्यछे. तेमज अनंत आत्मसामर्थ्यनी प्राप्ति संपूर्णपणे थया छतां ते आत्मसाम-र्थ्यना योगथी आत्मशक्ति थाके के तेनुं सामर्थ्य न झीली शके, वहन न करी शके,एम छेज नहीं. सदाकाल ते सामर्थ्यछे तेमां जरा मात्र पण न्यूनाधिकपणुं थवानुं नथी. एवी जे वीर्य शक्ति त्रिकाल संपूर्णपणे वर्तेछे ते अनंतवीर्यलब्धि कहेवा योग्यछे.

क्षायिकभावनी दृष्टिथी जातां उपर कह्या प्रमाणे ते लब्धिनो परमपुरुषने उपयोग होयछे. वळी ए पांचलब्धि हेतु विशेषथी सम-जावा अर्थे जुदी पाडीछे नहीं तो अनंतवीर्यलब्धिमां पण ते पांचेनो समावेश थइ शकेछे. एम तेरमा गुणठाणे क्षायिकभावनी नवलब्धि भोगवतो परमपुरुष शैलेशीकरण करी चउदमा गुणठाणे अया-

चौदमेनी ते गुणठाणे खपाववा योग्य जे प्रकृतियो बाकी रही हती ते चउदमा गुणठाणे खपावी सिद्धशिलानी उपर एक योजनना चोवीश भाग करीए तेना त्रेवीश भाग नीचे मूकी चोवीसमा भागे अवगाहनाए संयुक्त ते मोक्षस्थानमां आदिअनंतने भांगे विराजमान थायछे, चारित्रथी पूर्वोक्त मोक्षस्थाननी प्राप्ति थायछे.

अथ दशमविषय.

१० कर्मनो कर्ता तथा भोक्ता आत्मा, कर्मनो नाश शी रीते करे ?

प्रत्युत्तर–आत्मा स्वरूपमां रमण करे तो कर्मनो नाश थायछे,

परभावमां रमण करतो आत्मा कर्म बांधेछे अने, स्वस्वभावमां रमण करतो कर्मनो नाश करेछे, अनंतजीवोए भूतकाळमां कर्मनो नाश कर्यो अने अनंतजीवो भविष्यकाळे करशे, जीव बे प्रकारनाछे. १ भव्यजीव २ अभव्यजीव.

जेनामां मोक्ष जवानी योग्यताछे तेने भव्यजीव कहेछे. अने जेनामां बिलकुल मोक्ष जवानी योग्यता नथी तेने अभव्यजीव कहेछे. अभव्य जीव कदी मोक्ष पामी शकतो नथी.

आत्मा कर्मनो नाश शी रीते करे तेनुं घणुंखरुं विवेचन पूर्वे प्रायः कथ्युंछे तेथी अत्र स्पष्ट विशेष विवेचन कर्युं नथी. हवे विचारोके–मोक्षतत्त्व बंधविना संभवे नहिं. अने जेवडो बंध ते कर्म एम आत्मा अने कर्मनो संबंध जेवो जिनदर्शनमां घटेछे. तेवो अन्यत्र घटतो नथी. कर्मथी मुक्त आत्मा सिद्धस्थानमां सादि अनंतभंगीए रहे छे, त्यां परमात्मपणे समये समये अनंतसुखनो भोक्ता आत्मा बनेछे. कोइ दर्शनी दुःखाभावनामावरूप मुक्तिमानेछे पण तेम नथी. आत्माने कर्मनायोगे दुःख थायछे. ते विभाविकछे

एटले विभाविक वस्तु स्वरूप जे दुःख ते आत्माथी दूर थायछे अने आत्मामां सुखछे ते स्वभाविकछे. स्वभाविक वस्तु कदी टळत नथी. तेम आत्मामां जे सुखछे ते स्वभाविकछे एटले आत्मानो मुख्य शुद्धगुणछे अने आत्मागुणीछे. माटे तेनाथी दूर थतो नथी. को वादी जडस्वरूप मुक्ति मानेछे मुक्तदशामां आत्माने कोइप वस्तुनुं भान नथी. आम ते वादीनुं मानवुंछे ते अज्ञान विशिष्टछे कारणके-जडस्वरूप मुक्ति होय तो कोइ मुक्ति पामवानी जराप पण इच्छा करे नहीं. परंतु स्याद्वाद सत्यदृष्टिथी समजो के मुक्तिप पामेलो आत्मा केवलज्ञानथी दरेक पदार्थने जाणेछे. समस्त वस्तु ज्ञान सिद्धात्मामां समये समये प्रवर्तेछे, वळी सामान्य उपयोगरू केवलदर्शनथी सिद्धात्मा सर्वजगत्ने देखेछे. अने मुक्तात्मा अव्या बाधगुणथी अनंत सुख भोगवेछे, माटे जडस्वरूप मुक्ति नथी. ज्ञा स्वरूप जे आत्मा ते जडरूप बनी जाय तो ते मुक्ति कहेवाय नहीं वळी आत्मा ज्ञानगुणथी भिन्न थाय नहिं. कारणके-आत्मानो स्व भाविक ज्ञानगुणछे. ते ज्ञानगुण आत्माथी त्रिकाले पण जुदो पडे नहीं.

वादी—जो मुक्तिमां आत्माने ज्ञानगुणवाळो मानीए तो मुक्तात्मा ज्ञानथी सर्व जगत्जीवोने थतुं दुःख जाणे, त्यारे ते दुःख मुक्तात्माने थाय, माटे ज्ञानगुण मुक्तिमां मानवो अयुक्तछे.

सुगुरु—हे सत्य तत्त्वाकांक्षी भव्य-जरा विचार करशो तो मालुम पडशे के-मुक्तात्माने अनंतज्ञानथी तेमां किंचित विकार भासतो नथी. जेम दृष्टांत-कोइ मनुष्य कोइस्थाने पडेलुं नालु- टविष जाणे अने तेने देखे तथी तेने कंइ दुःख थतुं नथी. तेम सिद्धपरमात्मा केवली भगवानने पण जगतना जीवोने दुःखी जाणवाथी ते दुःख पोताने लागतुं नथी. तेम जगतना जीवोमां शातावेदनी जोर, पोर शातावेदनीय कंइ सिद्धस्वरूपना

आत्माने त्यागती नथी-कारणके वस्तुओ थकी पोतानो आत्मा न्यारोछे, तेथी ते विरोध सिद्धभगवान्मां घटतो नथी.

आशंका-सिद्धात्माओ अनंत सुख समये समये भोगवेछे ते केवल ज्ञानथी के, केवल्दर्शन गुणथी-

समाधान-सिद्धात्माओ केवलज्ञानथी सर्व वस्तु जाणेछे अने केवल्दर्शनथी सर्व पदार्थोने देखेछे. अने सिद्धात्माओ सुख भोगवेछे ते अव्यावाध नामना गुणथी भोगवेछे तेथी पूर्वोक्त विरोधनो सर्वथा नाश थायछे.

ते उपरथी सिध्ध स्पष्ट भासेछे के जडस्वरूप मुक्ति नथी परंतु शुद्ध चैतन्य स्वरूप मुक्तिछे.

कोइवादी आकाशनी पेठे सर्वत्र व्यापिनी मुक्ति मानेछे ते पण यथार्थ घटना बहिर् छे. कारणके, मुक्तआत्मा आकाशनी पेठे सर्वत्रव्यापक नथी. सर्वत्रव्यापक आत्माने मानतां बंध मोक्ष व्यवस्था घटती नथी. जेम आकाश सर्वत्र व्यापक छे तो ते कोइनाथी बंधाय पण नहीं अने बंधावाना अभावे मोक्ष पण घटे नहीं. तेम आत्माने कर्मपण सर्वत्र व्यापक मानवाथी बंधाय नहीं अने बंधाभावे मोक्ष पण कहेवाय नहि एम दोष स्पष्ट भासेछे, माटे सर्वत्र व्यापिनी मुक्ति सिद्ध ठरती नथी. सर्वव्यापिनी मुक्ति मानतां प्रथम सर्वत्रव्यापक आत्मा मानवो पडशे. अने सर्वत्रव्यापक एवा आत्माने बंध मोक्ष घटतो नथी. वळी सर्वत्रव्यापिनी मुक्ति मानवामां अनेक विरोध आवेछे, माटे त्रिकालज्ञानये श्री सर्वज्ञमहावीरे प्ररूपेली मुक्ति यथातथ्य सत्य छे. अने ते प्रमाणे मानवामां कोइ जातनो विरोध आवतो नथी.

वळी कोइ मतवादी मुक्तिमां स्वामी सेवक भाव स्वीकारेछे ते पण युक्तिहीनछे, कर्म खप्याथी सर्व आत्माओ मुक्तिमां सरखा

छे. सर्व आत्माओ पोतपोताना स्वरूपे परमानंद सुखविलासी छे. सर्व सिद्धात्माओमां केवलज्ञान अने केवलदर्शन छे. कोइ नानुं मोटुं नथी. अष्टकर्म खप्याथी अष्टगुण सिद्धना जीवोमां प्रगटया छे. पोताना गुणना कर्त्ता प्रत्येक सिद्ध भगवान् छे. विभावदशाथी रहित स्वस्वभावभोगी थयाछे माटे परनुं कर्त्तापणुं लेश मात्र नथी. वळी सिद्धना जीवोने शरीर नथी, लेश्या नथी, मन नथी, काया नथी, एक पुद्गल परमाणु सरखो पण सिद्धना जीवोमां रह्यो नथी अलेशी, अशरीरी, अचल, सिद्धना जीवोछे.

एम मानेछे के, मुक्तिमां केटलाक वर्ष पर्यंत रहीने जीव पाछो संसारमां आवेछे. पण ते योग्य नथी. कारणके कर्मनो नाश थतां सिद्ध स्वरूपना प्रगटे छे ते अवस्था सादि अनंतमें भांगेछे. एटले सिद्धमां गयानी आदि छे पण अंत नथी अर्थात् सिद्ध थया पछी संसारमां आवना नथी. संसारमां आववानुं कारण कर्म छे ते कर्मनोतो प्रथमथीज नाश करी मुक्ति गयाछे माटे संसारमां अवतार लेवानुं काम बिलकुल नथी. वळी कोइ कहेछेके, सिद्धना आत्माओने नवां कर्म लागे ते पण ज्ञानहीन वचनछे कारणके, कर्म लागवानुं कारण आत्माने राग अने द्वेष छे अने रागद्वेषनो सर्वथा नाश करी सिद्धात्मा थया छे माटे नवां कर्म पण सिद्ध परमात्माने लागतां नथी. सदाकाल शुद्ध स्वरूपे निज भोगवेछे, तेथी सिद्धना आत्माओ कदापि काले संसारमां पाछा जन्म धारण करता नथी. सिद्धना जीव अनवतारी छे. कोइ एम कहेछेके, ज्यारे ते परमात्मा थया अने सिद्ध निवा-नी उपर सिद्ध क्षेत्रमां ग्याछे अने त्यांथी पाछा दुनीयामां आववाना नथी. अने जगतना लोकोने दुःखमांथी बचावता नथी त्यारे तेमने शो परोपकार कर्यो कहेवाय? तेना उत्तरमां समजवानुं के,

द्धात्मा थे महात्माओ. एम केवलज्ञान संपादन करी आयुष्य वि-शेषे रहेता अने बीजा चतुर्थ गुणस्थानक स्पर्शी सिद्ध स्थानकमां गयेला. हवे तेमना गुणस्थानकवर्ती केवलज्ञानी महात्माओ मारा वर्तमानना पुरुषार्थयोगे उपदेश आपी यथायोग्य समभावी जगज्जी-वोनुं कल्याण करेछे. अने सिद्धमां गया बाद सिद्धस्वरूपे थतां जगत् जीवो सिद्धनुं ध्यान करी यथायोग्य समतारूप एटले तेमां एम कल्याण मानिने जगज्जीवोप्रति सिद्ध परमात्मा निमित्त कार-णीभूत छे, ते विना द्रव्यद्वारा उपकार करवा अर्थे ते सिद्ध प-रमात्मानी स्वाभाविक शक्ति नथी कारणके ते वीतराग थयाछे, सर्वजीवना कल्याणमां उपादान कारणनी अपेक्षाएतो पोतेज कारणछे. अन्य तो तेमां निमित्त कारण छे. आ वात गुरुगमदृष्टिथी सद्गुरु पासे समजतां यथातथ्य समजाशे.

कोइ जीव तो इंद्र आदि देवगतिरूपे थवुं तेनेज मुक्ति मानेछे. कारण के तेनाथी आगळ सूक्ष्म ज्ञानदृष्टिथी जोवायुं नहि तेमकारण छे, जेम के इशुख्रीस्त आदि मतवाळा एम मानेछे के परमेश्वर मु-क्तना सिंहासन उपर बेठोछे अने तेना मस्तके मुकुट विगेरेछे एम करेवाथी समजायछे के ते देवयोनि पैकी कोइ देवने परमेश्वर मानी विश्वासयोगे एममाने छे. कारण के पूर्व भवनो रागी अने संबंधी कोइ देव आ प्रमाणे करी शके अने तेथी भ्रांतिमां फसावुं पडे. एम ख्रीस्ति धर्ममां होय तो ते अप्रमाण करी शकाय नहीं, माटे सर्वथी परिपूर्ण अनुभवगम्य जिनदर्शनमां जे मुक्तिस्वरूपछे ते सत्यछे.

मुक्तिमां अनंत सिद्धोनी अवगाहना भेगी होयछे.
शिष्य—हे गुरो ! अवगाहनानुं शुं स्वरूपछे अने ते अवगाहनारूपी छे के अरूपी ?

गुरु-हे विनयशिष्य ! आत्मा ज्यारे शरीर त्यागीने मुं
छे त्यारे शरीरना त्रण भाग करीए तेमांथी एक भाग
३ प्रमाणमान आकाशप्रदेशमां आत्मा असंख्य प्रदे
शोने रहेछे ते अवगाहना जाणवी. अने ते अवगाहना

शिष्य-एक सिद्धक्षेत्रमां अनंत आत्माओ केम करी सम

गुरु-एक ओरडामां एक दीपक करीए छीए तो पण ते
समायछे. तेम हजारो दीपक कर्या होय तो ते
ज्योति (प्रकाश) पण समायछे. तेमां कंइ हरक
नथी. वळी दीपकना प्रकाशनां पुद्गलरूपीछे तो
जायछे तो अरूपी एवा अनंत आत्माओ सिद्धक्षेत्र
तेमां किंचित् पण विरोध जणातो नथी.

शिष्य-त्यारे सिद्धात्मा त्यांथी अलोकमां केम जइ शकतं

गुरु-सिद्धात्मा अक्रियछे. गमनागमन क्रियाथी विराम
तेथी उपर जइ शकता नथी. कारण के अक्रियप
अलोकमां धर्मास्तिकाय पण नथी. माटे सिद्ध त्मा
नथी. धर्मास्तिकाय तो फक्त गमनमां प्रवर्तेला पद
हाय्य आपी शकेछे.

शिष्य-त्यारे आ आधिव्याधिउपाधिमय जगतमां थं
शाथी अनंत दुःख नाश पामे ?

गुरु-शिवपद आराध्य, जगत्मां समजवुं. अने तेज सा
लायकछे. ते पदनी प्राप्तिथीज सर्व अखंड शाश्व
प्राप्ति थायछे. श्री गुणस्थानक क्रमारोहमां कह्युं छे.

श्लोक.

यदाराध्यं चयत्साध्यं, यद्धयेयं यचदुर्लभं;

भावार्थ—जे शिवपद आराध्य, साध्य, ध्येय, दुर्लभछे, ते पद ने ज्ञानीओए शुक्लध्यानथी प्राप्त कर्युछे.

आत्मा तेज ब्रह्मस्वरूपछे. आत्माज शिवस्वरूपछे, आत्माज परमात्मरूपछे. सिद्धत्वपणुं आत्मानो शुद्ध पर्यायछे, सम्यग् मोक्ष स्वरूप वीतराग वचनोथी मर्जीन थायछे, ज्यारे बंधतत्त्वनो नाश थायछे. त्यारे मोक्षतत्त्वनी उत्पत्ति थायछे. मोक्षतत्त्वथी आत्मा भिन्न नथी. मोक्षमयी आत्माछे. ज्ञान, दर्शन अने चारित्रथी मोक्ष प्राप्तिछे. ज्ञान, दर्शन अने चारित्र गुणमय आत्माछे.

अज्ञानी जीव आत्मानो शुद्ध स्वभाव नहीं जाणतो छतो राग द्वेषादि करेछे, त्यारे ज्ञानी जीव आत्मस्वभाव जाणतो छतो राग द्वेषनो त्याग करी कर्मथी रहीत थइ मोक्षपद प्राप्त करेछे. ज्ञानी आत्माना स्वरूपमां सदाकाळ रमण करी अखंडानंदानुभव प्राप्त करेछे. जेम हंसने मान सरोवरमां रतिछे तेम आत्मज्ञानीने आत्मस्वरूपमां रति होयछे. जेम चकोर चंद्रमांज प्रीति धारण करेछे. तेम आत्मज्ञानी आत्मस्वभावरमणतामां प्रीति धारण करेछे. सीतानी जेम राममां प्रीति तेम आत्मार्थीनी आत्मस्वरूपमां प्रीति रमणता भासनता वर्तेछे. आत्मज्ञानीने शास्त्रकर्ता श्रमण कथेछे. श्रीआनंदघनजी महाराज पण कहेछे के—

आतमज्ञानी श्रमणकहावे, बीजा तो द्रव्यलिंगीरे.

वळी श्रीयशोविजयजी उपाध्याय कहेछेके, समाधिशतकमां—

यथा

केवल आतम बोधहे, परमारथ शिवःपंथ
तामे जिनकुं मगनता, सोहि भाव निर्ग्रंथ.

परमार्थ शिवनो पंथ केवळ आत्मज्ञान छे तेमां जे भव्यात्माने मग्नताछे ते भाव निर्ग्रंथ जाणवा. निक्षेप भेदथी निर्ग्रंथ चार प्र-

फारनाछे. १ नाम निर्ग्रंथ. २ स्थापना निर्ग्रंथ. ३ द्रव्य निर्ग्रंथ. ४ भावनिर्ग्रंथ. पूर्वोक्त चार निर्ग्रंथमां भाव निर्ग्रंथसर्वतः मोक्षसाधक जाणवा. कारणके, भावनिर्ग्रंथपणानी प्राप्ति विना कदापि काळे मोक्षपदनी प्राप्ति थती नथी. सर्वपर वस्तु विषयोथी मनने खेंची आत्मस्वरूपना ध्यानमां मनने स्थिर करे. श्वासोश्वासे आत्मानुं स्मरण करी भव्य जीवो कर्म खपावी परमात्मपद प्राप्त करेछे. ज्ञानी पुरुष आत्ममांज स्थिरता करे. अने आत्मभावना सदाकाल भावी अनंत सुखमय पोताने लेखे नीचे प्रमाणे आत्मभावना भावे.

गाथा.

एगो मे सासउ अप्पा, नाण दंसणं संजुओ,
सेसामे बाहिराभावा, सव्वे संजोग लरकणा,

भावार्थ–एक मारो आत्मा शाश्वत छे. त्रिकालमां पण आत्मानो नाश थतो नथी. वळी आत्मानुं स्वरूप दर्शावेछे. ज्ञानदर्शन संयुतः ज्ञान अने दर्शनादि अनंतगुणमय आत्माछे.

आत्माथी दृश्यमान सर्व पदार्थो भिन्नछे. सर्व पौद्गलिक पदार्थो संयोग विनाशी धर्मवाळाछे. ते पौद्गलिक पदार्थमां मारापणुं कंइ नथी. रूपीपदार्थथी भिन्न हुं आत्मा शुद्धचैतन्यमय लक्षण लक्षितछुं. आत्मानो प्रकाश करवाने अन्य पदार्थनी जरुर नथी. आत्मा पोतानी मेळे पोताना स्वरूपनो प्रकाश करेछे. कंचुकना त्यागथी जेम सर्प नष्ट थतो नथी. तेम शरीर नाशथी आत्मा नष्ट थतो नथी. त्रिकालमां आत्मा पोताना शुद्ध स्वरूपथी भ्रष्ट थतो नथी.

मूर्ख मूढ मनुष्य शुक्तिमां रजतनी भ्रांति धारण करी जेम मिथ्याभयास धारण करेछे तेम बहिरात्मा, परपुद्गलवस्तुमां आत्मत्व बुद्धिथी भ्रांति धारण करी मिथ्या चतुर्गति भ्रमणस्य ह्रेश पात्र बनेछे.

सहज स्वाभाविक आत्मिक गुणानंतनी आविर्भावतारूप सिद्धतानुं हेतु सम्यग्ज्ञानछे. सम्यग्ज्ञाननी प्राप्ति विना भवसंततिनो उच्छेद थनो नथी. तेम सम्यग्दर्शननी प्राप्ति विना सम्यग्ज्ञान कही शकातुं नथी. अनेकांत स्याद्वाद सत्तामय आत्मस्वरूपादि पदार्थोनुं यथार्थ भासनपणुं, श्रद्धानपणुं थाय त्यारे समकित कथायछे अने समकित पूर्वक जे जाणपणुं ते सम्यग्ज्ञान कहेवायछे. सम्यग्ज्ञाननी प्राप्ति रूपसूर्य जे भव्यजनना हृदयमां प्रगटथोछे तेने मिथ्यात्वरूप अंधकार आच्छादन करी शकतुं नथी. ज्ञानरूप सूर्योदयथी सर्व पदार्थोनो भास थायछे. त्यारे मोक्षमय आत्मा स्वयमेव प्रकाशेछे. अने कर्मनो नाश थायछे. नवतत्त्वमां जीवतत्त्व आदेयछे, संवर निर्जरा मोक्ष ए त्रण तत्त्व उपादेयछे, पुद्गल द्रव्य अजीवछे. पुण्य पाप पुद्गल स्कंधोछे. ते पुद्गल स्कंधोने आत्मा पोताना स्वरूपमां रमतो दूर करेछे. ज्यारे आत्माना असंख्यप्रदेशोनी साथे कर्मरूप पुद्गल स्कंधोनो एक परमाणु सरखो पण रहेतो नथी. त्यारे आत्मा निरावरण निर्मलपद प्राप्त करी सादि अनंत स्थिति पामेछे. एक समयमां गुणस्थानातीत थएल आत्मा आकाश प्रदेशनो समश्रेणिए अन्यप्रदेशोने स्पर्शविना सिद्धिस्थानमां विराजेछे. त्यां सिद्धमां किंचित् दुःख नथी. दुःख सर्व पुद्गलना संयोगथीछे. निर्मल परमात्माने परमाणु मात्रनो संबंध नथी. तेथी त्यां लेश पण दुःख नथी. आधि व्याधि अने उपाधि ए त्रण प्रकारनां दुःखथी रहित आत्मा अनंत सुखमय वर्तेछे. सर्वथा प्रकारे दुःखनो अभाव मुक्तिस्थानमां छे. अनंत सिद्धजीवो लोकना अग्रभागे विराज्याछे. अने तेओ सदाकाल आत्मस्वभावमां रमण करेछे. अनंत ज्ञानदर्शन चारित्ररूप रत्नत्रयीनी लहेरमां स्वगुण भोगवेछे, त्यांथी कदापिकाळे संसारमां पाछा आवी जन्म मरण धारण करता नथी, सर्व जगत्ने ज्ञानथी

जाणेछे पण तेथी ते सिद्धना जीवो सदाकाल न्यारा प्रवर्तेछे.

प्रश्न—सिद्ध भगवान् कोइ दुःखीने देखी दया मनमां लावे के नहीं ?

उत्तर—सिद्ध भगवानने मन नथी. दुःखी मनुष्यादि सर्वने जाणेछे पण तेओ कर्मथी रहीत थवाथी अक्रिय थयाछे. तेथी कंइ पण कार्य करता नथी. अने दुःखी मनुष्यनुं दुःख दूर करवा संसारमां आवता नथी. सर्व जीव पोताना करेलां शुभाशुभ कर्मथी सुखी दुःखी थायछे, कोइनुं दुःख दूर करवा कोइ समर्थ नथी. करेलां कर्म पोतानेज भोगववां ज पडेछे. केटलाएक मतवादी एम कहेछे के, सिद्ध परमात्मा अन्य जीवोनां दुःख दूर करवा संसारमां अवतार लेछे एम तेमनुं कथनछे. निरंजन निराकार परमात्मा गमनागमननी क्रिया रहित थयाछे. कर्मनो नाश करवाथी. माटे परमात्मा अवतार ग्रहण करेछे एम जे कोइ कहेछे ते अज्ञानी जाणवो. सिद्धना जीवो पोतानी अवगाहना लेइ सदाकाल अनंत सुखमां मग्न रहेछे, निश्चय चारित्र सिद्धना जीवोमां स्थिरतारूप समये समये अनंत छे. सिद्धता विना सांसारिक दशामां परस्वभावमां रमणता करवाथी किंचित् पण सुख नथी कह्युंछेके—

हुं एनो ए माहरो, ए हुं एणी बुद्धि;
चेतन जडता अनुभवे, न विमासे शुद्धि. आतम॥१॥

सांसारिकभाव एज हुं छुं, अने ते माराछे. आ बाह्य पदार्थो तेज हुं एवी बुध्धिथी चेतन जडनो संगी थइ जडता अनुभवेछे अने पोताना आत्मानी शुद्धि विमासतो नथी. एवी संसार दशामां राग, द्वेष, कलह, ममतानो संगी थएलो जीव कंइ पण सुख पामी शकतो नथी. कोइपण जीव बाह्य पदार्थोथी सुख पाम्यो नथी. अने पामवानो नथी. आ प्रमाणे आत्मार्थी पुरुषो समजी दृढ नि-

स्वरूपी आत्मध्यान निरालम्ब समाधिमां लीन थायछे. कोइ योगी ध्यानारूढ थयां तेना ध्यानमांथी मन भटकी जइ आदुं अवळुं जावुं जायछे तो तेने शिक्षा आपतां योगी कहेछेके-

श्लोक.

मनः कृत्नोयोगः सपदि वदमेगम्यपदवीं ॥
नरत्वं नार्यांवा गमनमुभयत्राप्यनुचितम् ॥
यतस्ते क्लीवत्वं प्रतिपदमदो हास्यजनकं ॥
जनस्तोमे मागा स्त्वमनुसरहि ब्रह्मपदवीम् ॥ १ ॥

हे मन नारी थवां नरनी इच्छाछे. नारे उत्तां जवानुं होय ते मने कथन कर. नरमां जवुं छे के नारी विषयमां जवुंछे. नर वा नारी ए बे ठेकाणे जवुं पण अयोग्यछे. कारण के तारु क्लीवत्वपणुं छे माटे पदपदमांते नर वा नारीना विषयमां तारु गमन हास्य उत्पन्न करावनारछे. पुल्लिंग वा स्त्री जातिमां तुं नपुंसक थइने जाय छे ते योग्य नथी माटे मनुष्यना समूहमां मा भटक, तुं नपुंसक तेवुं ब्रह्म पण नपुंसकछे माटे तुं ब्रह्मपदने अनुसर अथवा ब्रह्मपदमां लीन था. बळीपरमात्मतत्त्व रमणतामां योगी लीन थइ समाधिभावने पामेछे. परमात्मतत्त्व आनंदरूपछे ते दर्शावेछे. परमानंद पंचविंशत्यां

श्लोक.

आनंदरूपं परमात्मतत्त्वं, समस्तसंकल्पविकल्पमुक्तं;
स्वभावलीना निवसंतिनित्यं,जानाति योगी स्वयमेवतत्त्वं
परमाल्हाद संपन्नं, रागद्वेषविवर्जितम् ॥
सोऽहंतुदेहमध्येऽस्मिन्, योजानातिसपंडितः ॥ २ ॥

भावार्थ-परमात्मतत्त्व स्वाभाविक सदाकाल आनंदरूपछे. वळी शुद्ध निश्चयनयथी जोतां परमात्मतत्त्व केवा प्रकारनुंछे ते जणावे छे के-समस्त प्रकारना संकल्प अने विकल्पथी रहितछे, एवा परमात्मतत्त्वमां सहज स्वरूपमां लीन थएला भव्यो सदाकाल वसेछे, एवुं परमात्मतत्त्व योगी पोतानी मेळे अनायासे जाणेछे. उत्कृष्ट आल्हादथी संपन्न अने रागद्वेषरहित आत्मा आ शरीरमां वस्योछे तेज हुं परमात्माछुं एम जे जाणेछे ते पंडित जाणवो. परमात्मस्वरूप एवो आत्मा संसारमां परिभ्रमण करेछे तेनुं शुं कारण छे ते दर्शावेछे.

गाथा.

आया नाणसहावी, दंसणसीलोविसुद्धसुहरूवो ॥
सो संसारे भमइ, एसो दोसो खु मोहस्स १

आत्मा ज्ञानस्वभावी अने अनंत दर्शनगुणमयछे वळी ते निश्चयथी विशुध्ध तथा अनंत सुखवान् छतां संसारमां परिभ्रमण करेछे तेमां मोहनो दोषछे. माटे आत्मार्थी भव्य जीव मोहनो जय करे. मनमां विचारे के आ दुनीयामांनी सर्व जड वस्तुओ मारी नथी अने हुं तेनो नथी एम भावतां मोहरिपुनो जय करी शकाय छे. त्यारे हवे मारुं शुं एम जिज्ञासा शिष्यने थतां गुरु महाराज कहे छे के-

श्लोक.

शुद्धात्मद्रव्यमेवाहं, शुद्धज्ञानगुणो मम
नान्योऽहंमिद्धबुद्धोऽहं, निर्लेपोनिष्क्रियः सदा ॥१॥

सकल पुद्गलना आश्लेषथी रहित ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, अव्याबाधादि अनंत गुणपर्यायमय असंख्य प्रदेशीशुद्ध

आत्मद्रव्य हुं छुं. सूर्य चंद्रादिकनी सहाय विना मारो शुध्ध ज्ञानरूप प्रकाश समये समये वर्तेछे. वण लोकना पदार्थनी उत्पादव्यय ध्रौव्यतानी अनंतता मारा शुध्धज्ञानमां ज्ञेय स्वरूपे परिणमी समये समये भासेछे, ते ज्ञानगुण मारोछे. हुं ज्ञाननुं पात्र छुं. धर्मास्तिकायादिकथी हुं भिन्न छुं. तनु-धनादिक पदार्थो माराथी भिन्नछे. स्वद्रव्यादिकथी युक्त रत्नत्रयीनो स्वामी आत्मा तेज हुंछुं. आवुं भेद ज्ञानरूप अस्त्र मोहनो नाश करेछे माटे सर्व परभावथी भिन्न एवा आत्मामां रमणता करवी. वळी जे भेदज्ञानीछे ते औदयिक भावमां लेपातो नथी. जेम आकाश कादवथी लेपातुं नथी तेम अत्र समजवुं.

वळी अध्यात्म बिंदु ग्रंथमां कहुं छे के—

श्लोक.

स्वत्वेनस्वं परमपिपर त्वेनजानन्समस्ता
न्यद्रव्येभ्यो विरमणमिति चिन्मयत्वं प्रपन्नः
स्वात्मन्येवाभिरतिमुपनयन् स्वात्मशीली स्वदर्शी ॥
त्वेवंकर्त्ता कथमपिभवेत् कर्मणो नैपजीवः ॥ १ ॥

जेणे आत्मामां आत्मपणुं जाण्युंछे. अने पुद्गलादिकमां परपणुं जाणी समस्त अन्य पदार्थोथी विराम पाम्योछे अने ज्ञानमयपणाने पाम्योछे. पोताना आत्मामां आनंद पामी स्वस्वरूपनो दर्शी थयोछे एवो आत्मा शी रीते कर्मनो कर्ता बनी शके? अर्थात् एवी अध्यात्मदशामां रमण करनार जीव कर्मनो कर्ता बनतो नथी. पण पोताना आत्मस्वभावनो कर्ता थायछे. आत्माना स्वरूपमां रमण करनार योगीश्वरने जे सुख थायछे ते अनवधि सुख जाणवुं. परस्वभावथी रहित एवा इर्गीश्वरने जगत् ईश्वर जाणवुं. अर्थात्

मुनीश्वरने जगत् निस्सार लागेछे. अने आत्मस्वरुपमांज सार लागेछे. कह्युं छे के–ज्ञानसारमां देवचंद्रकृत टीकामां

गाथा.

तिणसंथारनिसिन्नो, मुणिवरो भठरागमयमोहो ॥
जंपावइ मुत्तिसुहं, कत्तो तं चक्कवट्टीवि ॥ १ ॥

भावार्थ–नष्ट पाम्याछे राग, द्वेष, मद, मोह, ते जेना एवा मुनिवर्य तृणना संथारमां बेठा छता जे सुख पामेछे ते सुख चक्रवर्तिने पण क्यांथी होय, अर्थात् मुनिवर्यने आत्मस्वभावे रमण करतां जे सुख थायछे ते सुखनो लेश मात्र चक्रवर्तिने नथी. परभावमां रमण करनार चक्रवर्ति सुरपतिने आत्मिक सुख प्राप्त थतुं नथी. कह्युं छे के–ज्ञानसारमां देवचंद्रकृत टीकामां.

गाथा.

जेपरभावे रत्ता, मत्ताविसयेसुपाव वहुलेसु ॥
आसापासनिवद्धा, भमंति चउगइ महारन्ने ॥

जे भव्यो परभावमां मग्नछे. पंचेंद्रियना विषयोमां जे मत्त थया छे, अने आशापाशथी जे बंधायाछे ते चतुर्गतिरूप महाअरण्यमां परिभ्रमण करेछे, परभावमां आसक्त जीवो समये समये सात वा आठ कर्म ग्रहण करी पुनः पुनः पुनर्जन्म धारण करेछे. माटे परभावमां रमवुं ते आत्माने योग्य नथी. जडवस्तुमां किंचित् पण सुख नथी. परमां थतो रागभाव तेने परिहरी पोताना आत्मामां जे खोज करेछे ते परम सुख पामेछे. यथा समाधिशतक–

रागादिकजवपरिहरी, करे सहजगुणखोज;
घटमें भी प्रगटे तदा, चिदानंदकी मोज " १ ॥

वळी भव्यपुरुषोए समजवुं के-अहं अने ममपणुं पोताना आत्मामां नथी. ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप रत्नत्रयीनो स्वामी हुंछुं अन्य किंचिद् वस्तु मारी नथी. आत्मिक धन तेज मारुछे. अन्य मारु नथी. आत्मस्वरूप जडमां कल्पे तो जन्मनी वृध्धि थायछे. अने आत्मस्वरूप आत्मामांज धारी निश्चय करे, स्वस्वभावमां रमे तो मोक्षनी प्राप्ति थायछे. यथा समाधिशतक-

आपभावना देहमें, देहंतरगति हेत ॥
आपबुद्धि जो आपमें, सोविदेहपददेत ॥ १ ॥

भावार्थ-सारमां सार के-आत्मना स्वद्रव्यादिक चतुष्टयमां आत्मत्वपणुं धारण करी एक चित्तथी आत्मध्यान करे ते संसार चक्रमांथी छूटेछे. आत्मा पोतेज परमात्मरूप बनेछे. ते बतावेछे.

समाधिशतक.

भविशिवपददे आपकुं, आपहि सन्मुखहोइ ॥
तातेंगुरुहे आतमा, अपनो ओर न कोइ ॥ १ ॥

आत्मा पोते पोताना सन्मुख थायछे, त्यारे पोते पोताने शिवपद आपेछे. ते माटे निश्चय नयथी जोतां आत्मा पोते पोतानो गुरु छे, आत्मानो अन्य कोइ गुरु नथी. निश्चयनयथी पोतानो गुरु आत्मा छे, पण तेवुं समजीने व्यवहारथी परमोपकारक सद्गुरुनुं आलंबन मूकवुं नहि. पोतानी साध्यदशामां सद्गुरुनुं आलंबन पुष्टिनिमित्त कारणछे. सद्गुरुना आलंबनथी आत्मानी शुध्धपरिणति थायछे. राग द्वेषमां परिणमवुं ते परपरिणति छे. बहिरात्मा परपरिणतिने पोतानी करी मानेछे. संयम अंगीकार करीने पण जे भिक्षु रागद्वेष परिणामयुत परपरिणतिमां रावेछे, माचेछे ते द्रव्यसाधु जाणवो. कह्युंछेके-

रेछे, ज्यांसुधी बाह्य पौद्गलिकसुखनी इच्छा हृदयमांप्रगटेछे त्यां सुधी समकितनी प्राप्ति थती नथी. ज्ञानीओ बाह्यभावने स्वप्नवत् भ्रांति समान जाणी सत्यआत्मिकसुखने माटे प्रयत्न करेछे. परपुद्गलवस्तुमां आत्मिकधर्म नथी. स्वस्वरूपमां रमणता करवी तेमांज लयलीनता करवी, मनवचन अने कायाना योगनी प्रवृत्ति परवस्तुमां थायछे ते निवारवी, अने बहिर्वाचा अने अंतर्वाचानो त्याग करी भव्यो मुक्ति पामे माटे आत्मिकधर्मनुं स्वरूप प्राप्त करवुं जोइए. ज्ञानथी आत्मिकधर्मनो पूर्ण राग प्रगटेछे ते संबंधी कहेछे.

॥ दुहा. ॥

लाग्यो चोल मजीठनो, रंग ते कदु न जाय;
धर्म रंग लाग्यो थको, कदी न दूरे थाय ॥ १३९ ॥

भावार्थ-ज्ञानदर्शन चारित्र सहित आत्मानुं स्वरूप समजतां परपुद्गल वस्तु उपरथी राग उतरी जायछे, अने आत्माना स्वरूपपर राग थायछे. आत्मा विना कोइपण वस्तु प्रिय लागती नथी. आत्माना गुण पर्यायमांज रंगावानो राग थायछे. एम आत्मानी ज्ञानदृष्टि स्वस्वरूपने योग्य गणेछे ने परवस्तुने हेय गणेछे. आवी दशा थतां आत्मा परवस्तुओमां अहंममत्व भावथी छुटेछे. विरति सन्मुख थएलो आत्मा गुणस्थानकपर चढेछे. दशमा गुणठाणाए राग पण छुटी जायछे अने तेरमा गुणठाणाए केवलज्ञान दर्शन चारित्रनो भोगी बनेछे अने अन्ते सिद्धबुद्ध बनेछे. आवी परमात्मदशानुं स्वरूप देखाडनार सद्गुरू महाराजछे. माटे सर्व उपकारीमां मुख्य एवा गुरूना उपर प्रीति धारण करवी जोइए ते दर्शावेछे.

"दुहा."

पुत्र पुत्रीदारा थकी, अधिको सद्गुरु प्यार;
प्राणाधिक गुरुप्रेम जास, ते भवजल तरनार ॥१५०॥
एकज देव गुरु पिता, तेमां नही संदेह;
धर्मगुरु ते एकछे. अन्य मुनि गुणगेह. ॥१५१॥
धर्मगुरुनी वांदना, धर्मगुरुनी भक्ति;
धर्मगुरु हृदय धरो, सेवो निजनिज शक्ति ॥१५२॥
सेवे शाश्वत संपदा, देखे दळदर दूर ॥
वंदे वंदपणुं वरे, गिरुआ गुरु जरूर. ॥१५३॥

भावार्थः—पुत्र पुत्री अने स्त्री उपर मनुष्यने घणो प्यार होयछे तेना करतां पण अत्यंतराग सद्गुरुपर धरवो जोइए. पोताना प्राण करतां पण सद्गुरु उपर अत्यंत प्रेमधारण करे. हृदयमां गुरु शब्द स्मरणनो मंत्र जाप करे. गुरुनी आज्ञा शीर्षपर धारण करे. एवो भव्यधर्मीजन जन्म जरा मरणथी पूर्ण समुद्र तरी शकेछे. अने मुक्ति पुरी प्राप्त करेछे. भव्यजीवोए समजवानुं के पिता एक होयछे सद्देव पण एक होयछे, तथा सम्यक्त्वप्रदधर्माचार्य सद्गुरु पण एक होयछे. सम्यक्त्वप्रदधर्माचार्य मुनिनो जे उपगार छे तेना तुल्य अन्य मुनिओनो उपगार नथी. अन्य मुनिओनो यथायोग्य भक्ति विनय साचववो. धर्म गुरुना सिवाय आचार्य उपाध्याय पण आत्माना मुख्य उपगारी नथी, माटे धर्मगुरु उपर विशेषतः भक्ति प्रीति धारवी. अने तेमनुं बहुमान करवुं. स्वकीय शक्तितः धर्मगुरुनुं आराधन कर गुरुनी सेवाथी त्वरित शाश्वत शिवसंपदानी प्राप्ति थाय देखवाथी दारिद्र

रेछे, ज्यांसुधी बाह्य पौद्गलिकसुखनी इच्छा हृदयमां प्रगटेछे त्यां सुधी समकितनी प्राप्ति थती नथी. ज्ञानीओ बाह्यभावने स्वप्नवत् भ्रांति समान जाणी सत्यआत्मिकसुखने माटे प्रयत्न करेछे. परपुद्गलवस्तुमां आत्मिकधर्म नथी. स्वस्वरूपमां रमणता करवी तेमांज लयलीनता करवी, मनवचन अने कायाना योगनी प्रवृत्ति परवस्तुमां थायछे ते निवारवी, अने बहिर्वाचा अने अंतर्वाचानो त्याग करी भव्यो मुक्ति पामे माटे आत्मिकधर्मनुं स्वरूप प्राप्त करवुं जोइए. ज्ञानथी आत्मिकधर्मनो पूर्ण राग प्रगटेछे ते संबंधी कहेछे.

॥ दूहा. ॥

लाग्यो चोल मजीठनो, रंग ते कयु न जाय;
धर्म रंग लाग्यो थको, कदी न दूरे थाय ॥ १३९ ॥

भावार्थ-ज्ञानदर्शन चारित्र सहित आत्मानुं स्वरूप समजतां परपुद्गल वस्तु उपरथी राग उतरी जायछे, अने आत्माना स्वरूपपर राग थायछे. आत्मा विना कोइपण वस्तु प्रिय लागती नथी. आत्माना गुण पर्यायमांज रंगावानो राग थायछे. एम आत्मानी ज्ञानदृष्टि स्वस्वरूपने योग्य गणेछे ने परवस्तुने हेय गणेछे. आवी दशा थतां आत्मा परवस्तुओमां असंगपणे भावथी छूटेछे. विरति मनुष्य थएलो आत्मा गुणस्थानकपर चडेछे. दशमा गुणठाणाए राग पण छूटी जायछे अने तेरमा गुणठाणाए केवलज्ञान दर्शन चारित्रनो भोगी बनेछे अने अन्ते सिद्धबुद्ध बनेछे. आवी परमानन्ददशानुं स्वरूप देखाडनार सद्गुरु महाराजछे. माटे सर्व उपकारीमां मुख्य एवा गुरुना उपर प्रीति धारण करवी जोइए ते दर्शावेछे.

"दुहा."

पुत्र पुत्रीदारा थकी, अधिको गुरुपर प्यार;
प्राणाधिक गुरुप्रेम जास, ते भवजल तरनार ॥१४०॥
एकज देव गुरु पिता, तेमां नहीं संदेह;
धर्मगुरू ते एकछे, अन्य मुनि गुणगेह. ॥१४१॥
धर्मगुरुनी चांहना, धर्मगुरुनी भक्ति;
धर्मगुरू हृदय वदो, सेवो निजनिज शक्ति ॥१४२॥
सेवे शाश्वत संपदा, देखे दव्दर दूर ॥
वंदे वंद्यपणुं वरे, गिरुआ गुरू जरूर. ॥१४३॥

भावार्थः—पुत्र पुत्री अने स्त्री उपर मनुष्यने घणो प्यार होयछे तेना करतां पण अत्यंतराग सद्गुरुपर थवो जोइए. पोताना प्राण करतां पण सद्गुरु उपर अत्यंत प्रेमधारण करे. हृदयमां गुरुशब्द स्मरणनो मंत्र जाप करे. गुरुनी आज्ञा शीर्षपर धारण करे. एवो भव्यजीव जन्म जरा मरणथी पूर्ण समुद्र तरी शकेछे. अने मुक्ति पुरी प्राप्त करेछे. भव्यजीवोए समजवानुं के पिता एक होयछे सद्देव पण एक होयछे, तथा समकितप्रदधर्माचार्य सद्गुरु पण एक होयछे. समकितप्रदधर्माचार्य मुनिनो जे उपगार छे तेना तुल्य अन्य मुनिओनो उपगार नथी. अन्य मुनिओनो यथायोग्य भक्ति विनय साचववो. धर्म गुरुना सिवाय आचार्य उपाध्याय पण आत्माना मुख्य उपगारी नथी, माटे धर्मगुरू उपर विशेषतः भक्ति प्रीति धारवी. अने तेमनुं बहुमान करवुं. स्वकीय शक्तितः धर्मगुरुनुं आराधन करवुं. धर्मगुरुनी सेवाथी त्वरित शाश्वत शिवसंपदानी प्राप्ति थायछे. सद्गुरुने देखवाथी दारि-

दूर थायछे. सद्‌गुरुने वांदवाथी आत्मामां वंद्यपणुं प्रगटेछे. गुरुनी गुरुता अलौकिकछे. गुरुनी गुरुता वर्णी शकाय तेम नथी. भव्य जीवो गुरुनी सेवा करतां गुरुनी गुरुता प्राप्त करेछे. श्री सद्‌गुरु कथित अनंतगुणधामभूत चेतनमां सदाकाल रमवुं ते दर्शावेछे.

दुहा.

अज अविनाशी जीवछे, अखंड आनंद पूर;
अंतर्दृष्टि देखतां, चेतन नहींछे दूर. ॥१४४॥
चेतनगत तुज धर्म देख, बाहिर क्यां कर ख्याल;
बाहिर्दृष्टि देखतां, भवनी अरहट्ट माल. ॥१४५॥
ध्यान धारणा धारीने, देखो आत्मस्वरूप;
बहिरूपाधि त्यागतां, शिवशाश्वतचिद्रूप ॥१४६॥
मूढ बन्यो मानव कहे, ओ जाणे जगमूढ ॥
आतम ज्ञानी सुख लहे, ए अंतरनुं गूढ. ॥१४७॥
रागद्वेष परिणामनी, ग्रंथि त्यां छेदाय ॥
शून्यदशा पुद्‌गलतणी, सहेजे शांति पाय. ॥१४८॥

भावार्थ–अज अने अविनाशी एवो आत्माछे. आत्मा अनादि कालथीछे माटे ते अज कहेवायछे. अने अनंतछे माटे अविनाशी कहेवायछे. अखंड अने आनंदथी परिपूर्ण आत्माछे यत्र आनंदछे तत्र आत्माछे. आनंदनो ज्ञाता तथा आनंदनो भोक्ता आत्माजछे. अंतर्दृष्टिरूप ज्ञानदर्शनथी देखतां आत्मा शरीरमांज रहेलोछे. पोतानाथी दूर नथी. आत्मानी शोधखोळ माटे परदेश जवा जरुर नथी. शरीरमांज व्यापी रहेलो आत्मा ज्ञानदृष्टिथी

जीवनां जणायछे. बाह्यदृष्टिथी देखतां जडवस्तु जणायछे. अने जडवस्तुमां आत्मत्वं नथी. जडवस्तुथी भिन्न अरूपी आत्मानो निर्धार कर्यो स्वस्वभावमां रमवुं दोह्यलुं. जडवस्तुनो धर्म परिणमीने आत्मानो धर्म देखवो जे इष्ट. मनवाणी अने कायाना वेपारमां आत्म धर्म नथी. आत्मानो धर्म विवेकनी विचारणा तथा अनुभवथी जण यछे. धारणा तथा ध्यानरूप संयम अनुभवीने हे सच्चिदानंद आत्मानुं स्वरूप देख. संयममां विरतिभूत धारणादि परिणमीने स्वस्वरूपनो रसनो आस्वादनथी ज्ञानरूप आत्मा थायछे. आत्मज्ञानी आत्मामां रमणताछे त्यारे तेने बाह्यवस्तु भ्रांतिरूप लागेछे. तेथी तेने बाह्य वा देहादिमां आधारमां भेद रहेतो नथी तेथी जगत् लोको आत्मज्ञानीने (उन्मत्त) गांडो थई गयो एम जाणेछे, त्यारे आत्मज्ञानी एम जाणेछे के जगत्ना लोको आंधळाछे. लोकोनी दृष्टि आत्मामां नहीं होवाथी जडवस्तुमां रातीमाती रहेछे. अरे तेवा अज्ञानी जीवो जन्मजरा मरणनां दुःख पामे तेमां शुं आश्चर्य ? एवं ज्ञानीने अज्ञानीनी दृष्टिमां भेद पडेछे, अने एक बीजाने भिन्न दृष्टिथी देखेछे. आत्मज्ञानी अनंत ज्ञान दर्शन चारित्रनो धामभूत आत्माने मानतो आत्मामांज स्थिरउपयोगथी रमणता करी क्षणेक्षणे अनंतानंद भोगवेछे. आवी शुद्धदशामां रागद्वेषना परिणामनी जडो छेदायछे, अने रागद्वेषना अभावे शून्यपणुं वर्तायछे. अने आत्मानी सहजशांति प्रगट थायछे. ज्ञानीने आवी सहज शांतिदशामां जे भान वर्तेछे ते जणावेछेः—

" दुहा. "

भासे एकज आतमा, सोऽहं सोऽहं ध्यान;
तत्त्वमसि आकारमां, चिदानंद भगवान्   ॥१॥

आत्मदशा तेवी थइ, थिरता निज गुणमांहि;
वश वर्त्यु मन मांकडुं, दुःख देखे नहि क्यांहि.१५०

भावार्थः–उत्कृष्टनिर्मलध्यानदशामां शुद्ध आत्मस्वरूप भासे छे. सोऽहं शब्दथी आत्मध्यान करायछे. आत्मा तेज हुं इत्येवंसोऽहं शब्दनो परमार्थछे ते ज्ञानदर्शन चारित्रमय तेज तुं आत्माछे. बीजो नथी. एम तत्त्वमसि शब्दनो परमार्थछे. सोऽहं अने तत्त्वमसि वाक्यथी अनेकांतधर्ममय चेतननुं ध्यान धरतां आत्मा केवलज्ञान अने क्षायिक सुख प्रगटावेछे, अने त्रण जगतमां पूज्य थायछे. सोऽहं अने तत्त्वमसिना ध्यानमां पोतानो आत्माज चिदानंद भगवान्रूप भासेछे. निर्मलध्यानमां शुद्ध आत्मदशा थतां आत्माना गुणोमां स्थिरता थायछे अने मनमर्कटनी चंचलतारूप संकल्पविकल्प बंध पडेछे. अर्थात् मन वशमां थायछे. तादृशीध्यानदशामां दुःखना ओघ विलय पामेछे. कोइ ठेकाणे तेने ते काले दुःख देखातुं नथी. भव्यजीवोए निर्मलध्यानदशामां स्वजीवन गाळवुं जोइए. अंतर्दृष्टि थया विना जे जीवो बाह्य आचारमां धर्म मानेछे अने आत्माना धर्म तरफ लक्ष राखता नथी ते पोते धर्म पामी शकता नथी, ने बीजाने धर्म पमाडी शकता नथी.

" दुहा "

रागे वाह्या जीवडा, आप मतीला मुंड;
धूर्ते ढोंगी पापीया, लेइ साधुनुं झूंड. १५१
खावुं पीवुं पेहरवुं, वेशे माने धर्म;
सत्य धर्म नवि दाखवे, बांधे उलटां कर्म. १५२
सत्य देव नवि ओळखे, दे मिथ्या उपदेश;
पेटभरु कदाग्रही, कुगुरु पामे क्लेश. १५३

मनमाया मूके नहीं, पहेरे त्यागी वेष;
भगवा वस्त्र ओढ़ीने, लोको देशो देश. १५४
धननी आशा राखता, ठगे ठगारा लोक;
टीलां टपके धर्म क्यां, आत्म विना सहु फोक. १५५

भावार्थ—अहंममत्वमां तल्लीन बनेला केटलाक, आत्मा अने परमात्मानुं स्वरूप नहि जाणनार ढोंगी पापिजीवो साधुनुं वृन्द लेई गामोगाम फरी पत्र उपरावी दुनियाने ठगेछे, पण वस्तुतः जोतां बिचारा ते ठगायछे. केटलाकतो खावामां; पीवामां अने वस्त्रवेषमांज एकांते व्यवहार निश्चयनय अवबोध्या विना धर्म माने छे. धर्मनुं शुं स्वरूप छे ते सापेक्षदृष्टिथी पोते जाणी शकता नथी तो अन्यने शी रीते जणावी शके. धर्मना नामे ढोंग करी मिथ्या उपदेश आपी पोते बुडेछे. अने अन्य जनोने पण संसाराब्धिमां बुडाडेछे. अष्टादश दोषरहित सत्य देवने ते जाणी शकता नथी. सत्यज्ञानना अभावे स्वच्छंदताथी मनमां जेम आवे तेम मिथ्या उपदेश आपेछे. एतादृश उदरपूर्तिस्वार्थसाधक अज्ञान कुगुरुओ बहिरात्मभावथी भवपरंपरा ग्रही क्लेश पामेछे. मनमां रहेलुं मिथ्या वस्तुओनुं ममत्व मूके नहि अने त्यागनो वेष पहेर्यो तेथी शुं थयुं. बाह्यत्याग अने अन्तर् त्याग ए बे त्यागनी जरुरछे. उपरना फक्त बाह्य त्यागथी त्यागीपणुं कहेवातुं नथी. तेमज ज्ञानगर्भितवैराग्य विना केटलाक परिग्रहादिक उपाधिमां रक्त होय छतां बाह्यत्यागनो अनादर करी अन्तर् त्यागी केहवाये ते पण अनेकान्तनय विरुद्ध छे. माटे प्रायथी फक्त देखाता त्यागी भगवां वस्त्र पहेरी कुपंथनी जाळमां लोकोने फसावेछे. धननी आशा धारक कुगुरुओ अलौकिक ठग जाणवा. आत्मज्ञान थया विना उपरनां टीलांटपकां मायाथी.

करवामां आवेतो तेथी कंइ आत्मानी रुद्धि मात्र थती नथी, तेमज जन्मजरा मरणना बंधनमांथी छूटातुं नथी. सातनय अने चारनिक्षेप पूर्वक आत्मज्ञान थायतो मिथ्यात्व देवगुरु धर्मना असद् विचारोनो नाश थाय. सत्यज्ञान थतां आत्मज्ञानिनी केवी दशा थायछे ते जणावेछे.

" दोहा. "

फोक करीने लेखवे, सघळो दुनिया खेल;
योगाभ्यासी थइ खरे, टाळे सघळो मेल. १५६
टळे कर्मनो मेल सहु, करतां निजगुण खोज;
निजघटमा प्रगट तदा, चिदानन्दनी मोज. १५७
अन्तर ऋद्धि ज्ञानथी, प्रगटपणे निरखाय;
बाहिर रुद्धि बापडा, भोळा जन भरमाय. १५८
तनु धन यौवन कारमुं, विद्युत्‌ना चमकार;
परभव साथ न आवतुं, मोह्या मूढ गमार. १५९
राची रुद्धि कारणे, जीव हणे केइ लाख;
जीवन तेनुं धूळसम, जाणो छेवट राख. १६०

भावार्थ—आत्मज्ञानिसन्त सांसारिक मोहक पदार्थोनी रचनाने मिथ्या जाणेछे. मोहक जड पदार्थोमां आत्मत्व लेश मात्र नथी. एवं सत्य निश्चय करी योगाभ्यासमां प्रवृत्त थायछे. यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान अने समाधिथी अष्टकर्मरूप मलिनतानो नाश करेछे, ध्यान अने समाधिद्वारा शोध करतां आत्मा पोतेज परमात्मा बनेछे, परमात्मा बनतां अनन्तगुण

आविर्भाव थायछे. केवलज्ञानथी सर्व ऋद्धि मनुष्य देखायछे एम आत्मज्ञानिमां परिपूर्ण निश्चय थायछे. आत्मज्ञानी विचारेछे के अज्ञानि पामर जीवोने उत्तमिमव गुणगोदिक वायलदिनो आनंद होयछे. एवं सत्य अने असत्यनो ज्ञानी निर्णय करेछे. सम्यक्त्व जरवस्तुओ जेवीके मनु धन यौवनपणुं आदिने विद्युतना चमत्कारनी पेठे क्षणिक गणेछे. परभव तेमांनुं कंइ साथे आवतुं नथी. अरे मोहमग्नमूर्खजीवो ! जडवस्तुओमां राची रहोछो. जे वस्तुओपर राग धारण करोछो ते वस्तुओ मृत्युबाद पछी साथे आवनी नथी. ज्यारे आ ममाणे छे तो आत्मानी ऋद्धिविना बाप जड ऋद्धिमां केम मूर्छी पेठे राचीमाची रहुं. अत्रवत तेमां मूर्छा पारवी ते योग्य नथी एम ज्ञानी निश्चय करेछे, अज्ञानी पामर जीव पाप लक्ष्मीनी प्राप्ति माटे अनेक प्रकारना हिंसक व्यापारोमां त्रस जीवोनो नाश करेछे. अज्ञानी जीव मत्स्य, सूकर, पशु, पंखीना जीवोनो आ जीविका माटे नाश करेछे. आरम्भअज्ञानिजीवोनुं जीववुं पाप माटे जाणवुं. एवाहज पापी जीवो मृत्यु पामी नरकादि दुर्गतिमां जायछे. तेवा पापी जीवोनुं जीवन भूंडु करतां अनिष्ट पृथ्वीमां भारभूत जाणवुं. तेवा पापिजीवो उपर करुणादृष्टिथी जोवुं योग्यछे. उपदेशा दिकथी पापियोनो उद्धार करवो जोइए. रात्रमां पहेलुं पूत यथा नरामुं छे तद्वत् पापिजीवोनुं आयुष्य स्वपरापेक्षाए तेवी पापदशा वर्ते त्यावत् पर्यंत नकामुं जाणवुं. बाल्यमांज मुग्धनी बुद्धि धारण करनाराओनी अशुभ मदनि दर्शावेछे.

" दुहा. "

अमत्य वाणी वोलीने, जन वंचे धन हेत;
अशुभ कर्म पोठी भरी, जन्म जन्म दुःख लेत. १६१
चोरी चाडी चुंगली, परनिन्दा अपमान;

स्वार्थिक जन संसारमां, नरक गति मेमान. १६२
आत्म प्रशंसा दाखवे, करे घणो अभिमान;
धर्म मर्म पामे नहीं, पापी जन नादान. १६३
परापकर्षे चित्तडुं, परने देवे आळ;
पापारंभ करे मुदा, देवे क्रोधे गाळ. १६४
पाप पुण्य समजे नहि, ले नहि सद्गुरु बोध;
नास्तिक वादी जीवडा, करे शुं चेतन शोध. १६५
मत एकान्ते जे ग्रहे, ते अज्ञानी जीव;
भ्रमण करे भवमां अरे, ले नहि शाश्वत शिव. १६६

भावार्थ–अज्ञानी मोही जीव, असत्य वचन वदीने धनादिक माटे मनुष्योने छेतरेछे, चोरी, चाडी, चुगली करेछे. पापाचरणोथी पापकर्म ग्रहण करेछे, परजीवोनी निन्दा करेछे, परनुं अपमान करेछे. स्वार्थिक मनुष्य संसारमां अनेक जन्म दुःख परंपरा पामे छे, बाह्यदृष्टिधारकजीव स्वकीय प्रशंसा करेछे. अज्ञानी बाह्य धन सत्तादिकथी मनमां अत्यंताभिमान धारण करेछे, बाह्यदृष्टिजीव जडमांज धर्म मानेछे तेथी आत्मधर्मनो मर्म समजतो नथी. मनुष्यजन्म पामी जे आत्मतत्त्वनी शोध करतो नथी अने मोहक पदार्थोमांज अहंममत्व धारण करेछे एवो जीव मोक्षथी पराङ्मुख रहेछे, आत्मधर्मनी प्राप्ति दुर्लभछे, नवतत्त्वनुं सूक्ष्मज्ञान थया विना आत्मज्ञान थतुं नथी, बाह्यदृष्टिजीव अन्यने नीचो पाडवा प्रयत्न करेछे. तेमज कृत्याकृत्य विवेक पराङ्मुख थइ परजीवने आळ चढावेछे. परजडवस्तुमां ममत्वथीबंधाइ अनेक प्रकारना पापारंभ करेछे. क्रोधथी परने गाळी देछे, अज्ञानी जीव पाप पुण्यना समजतो नथी.

तेपरमेश्वरथकी सद्गुरुनो उपदेश श्रवण करतो नथी. सद्गुरूपदेश श्रवण करनारने श्रेष्ठ मानतो नथी, मिथ्यात्वमां अंध थएला जीवो आत्मानी शोध करी शकता नथी. नास्तिकवादी एकान्तमत धारण करेछे. एकांतो होइ सिद्धतां, एकांतपणाथी मिथ्यात्वछे. मिथ्यात्वी (अज्ञानी) मिथ्यात्वना योगे भवमां परिभ्रमण करेछे, सम्यग्दृष्टि थया विना सम्यक्चारित्रमार्ग प्राप्त थतो नथी. सम्यग्दृष्टिजीव सम्यक् चारित्र पामी शिवसुख संपत्ति प्राप्त करेछे. मिथ्यात्वीजीव वस्तुने यथार्थपणे जाणतो नथी. ईश्वरने मानेछे तोपण ते विपरीत पणे जाणीने मानेछे ते प्रसंगतः जणावेछे, तेमां केटलाक तो ईश्वर जगत्नो बनावनार मानेछे तेनो मत प्रथम दर्शावेछे.

॥ दुहा. ॥

कर्ता ईश्वर मानता, जगमां केइक लोक;
सुखदुःख इश्वर आपतो, ए पण वाणी फोक ?६७

भावार्थ-जगत्मां केटलाक मनुष्यो जगत्नो बनावनार ईश्वर मानेछे, केटलाक मनुष्यो खुदाने जगत्नो बनावनार मालीक मानेछे, त्यारे ख्रीस्तियो ते खुदानी मान्यता नहीं स्वीकारतां इशुनो परमेश्वर जगत्नो बनावनारछे एम स्वीकारेछे. ख्रीस्तियोकोनी आवी मान्यताथी विरुद्ध पडी केटलाक हिंदुस्थानना हिंदुओ ब्रह्माने जगत्नो बनावनार मानेछे त्यारे केटलाक ते पक्षथी विरुद्ध विष्णुभगवान् जगत्नो बनावनारछे एम मानेछे. त्यारे केटलाक ते पक्षथी विरुद्ध पडी महादेवने जगत्नो रचनार स्वीकारेछे. त्यारे केचित् शक्तिथी जगत् बन्युंछे एवं स्वीकारेछे. ख्रीस्तियो दुनिया सातहजार वर्ष लगभगनी बनेली मानेछे. त्यारे मुसलमानो तेथी विशेषवर्ष कहेछे. ब्रह्मा जगत्कर्तावादी तेथी भिन्न रीते कहेछे. शक्तिपंथवाळा तेथी भिन्नपणुं स्वीकारेछे. आर्यसमाजीओ जगत् अनादिछे एम

मानीने पुनः जगत्‌नो बनावनार ईश्वर सर्वथी भिन्नरीत्या कथेछे, ख्रीस्ति मुसल्मान अने हिंदुओ जगत्‌नो बनावनार भिन्न भिन्न स्वीकारेछे, सर्व पोतपोताना पक्षने सत्य मानी अन्यपक्षनुं खंडन करेछे. मुसल्मानो पूनर्जन्म स्वीकारता नथी. पशुपंखीमां खुदानीरु (जीव) छे एम मानेछे त्यारे ख्रीस्तिधर्मवाळाओ तो पुनर्जन्म मानता नथी. तेमज पशुपंखीमां आत्मा नथी एम मानेछे. पशुपंखीने मार्यामां ख्रीस्तियो दोष मानता नथी. हिंदुधर्म पाळनाराओ पुनर्जन्म मानेछे तेमज पशुपंखीमां आत्मा मानेछे अने पशुपंखी मार्यामां पाप गणेछे, जैनधर्म पाळनाराओ पुनर्जन्म मानेछे अने एकेन्द्रियादिक सर्व जीवोनी दया पाळवी तेने मुख्य धर्म स्वीकारेछे. हिंदुओमां केटलाक वेदनो बनावनार ईश्वरछे एम मानेछे. त्यारे केटलाक कहेछेके वेदनो बनावनार कोइ नथी एम पौरुषेय अने अपौरुषेयनो विवाद चाली रह्योछे. केटलाक हिंदुओ कर्मकाण्डने मुख्यधर्मः तरीके गणेछे. त्यारे केटलाक ज्ञानकाण्डने मुख्य गणेछे. वेदमाननाराओ पैकी केटलाक जगत् स्वप्न समान भ्रांतिरुप मानी तेनो कर्ता ईश्वरछे एम मानता नथी. त्यारे केटलाक जगत्‌नो कर्ता ईश्वरछे एम मानेछे. ज्ञानकाण्डमां पण अद्वैतवाद माननाराओ जगत् अनादि मानेछे. अर्थात् तेनो बनावनार कोइ मानता नथी. जे वस्तुनी आदि नथी अर्थात् अनादिछे तेनो बनावनार कोइ नथी. जेनो कोइ बनावनारछे ते वस्तु अनादि कहेवाती नथी. ज्यारे जगत् अनादिकाळथी छे एम मान्युं तो ईश्वर कर्तृत्ववाद रहेतो नथी. वेद पश्चात् उपनिषदो बनी एम मानवामा आवेछे. पश्चात् व्यासऋषि तेमणे तथा भगवद्गीता तथा अष्टादश पुराण बनाव्यां एवं केचित् मानेछे. आर्यसमाजीओ अढार पुराण व्यासजीनां बनावेलां मानता नथी. आधुनिक बनेलां मानेछे. एम पुराणो संबंधी चर्चा चाली रहीछे. सना-

श्लोक.

कृत कर्मक्षयो नास्ति, कल्पकोटीशतैरपि;
अवश्यमेव भोक्तव्यं, कृतं कर्म शुभाशुभं. ॥ १ ॥

कोटी कल्पशते पण पुण्य पापरूप जे कर्म कर्याछे ते भोगव्या विना छुटको नथी. त्यारे ईश्वर जीवोनुं पाप पोते शी रीते ग्रहण करे, ईश्वर जीवोना पापपुण्य लेतो नथी. जीवो शुभ कर्म अने अशुभ कर्म करी स्वयं कर्मना उदयथी तेनुं फल भोगवेछे, ईश्वर पेदा करेछे. ईश्वर संहरेछे एम अज्ञानथी आच्छादित दृष्टिवाळा जीवो मानीने मुंझायछे, जगत् कर्ता ईश्वर आ प्रमाणे जोतां सिद्ध थतो नथी. अन्यत्र पण भगवद्गीतामां ईश्वर अने प्रकृति (जगत्) अनादिकालथी छे एम कहुंछे ज्यारे ये अनादिकालथी छे त्यारे प्रकृतिनो कर्त्ता ईश्वर शी रीते सिद्ध ठरे: अर्थात् सिद्ध ठरतो नथी. तत् पाठः भगवद्गीता अध्याय १३ त्रयोदश—

श्लोक.

प्रकृतिं पुरुषं चैव, विद्धयनादी उभावपि;
विकारांश्चगुणांश्चैव, विद्धि प्रकृतिसंभवान् ॥ १९ ॥

पुरुष (परमात्मा) प्रकृति (जगत् आवे अनादिकाळथीछे एम जाण. सत्व रजो अने तमोगुण तथा विकारो प्रकृतिज छे एम जाण आ उपरथी पण सिद्ध थायछे के अनादिकालथी आत्मा अने कर्मछे. तेम जगत् पण अनादिकाळथी छे. अद्वैतवादी ब्रह्मसत्यं जगत् मिथ्या एक अद्वितीय ब्रह्मज मानेछे. ते जगत्नो कर्त्ता ईश्वर अन्य मानतो नथी आ जगत् देखायछे ते भ्रांति मात्रछे. त्यारे तेनो बनावनार ईश्वर केम कहेवाय: एम अद्वैतवादियो मानेछे. जैनदर्शन जगतने जगत स्वरूपे सत मानेछे, पण जगत अनादिथीछे, सत्वात्

सद्रूपथी जे वस्तु सत् होयछे ते अनादिथी छे. जेम षड्द्रव्य. जिनदर्शनमां षड्द्रव्य सत्छे. हवे मूळ विषय जगत् कर्त्ता ईश्वर संबंधी निराकरणनोछे. वेदांत प्रभाकर लोको पण केटलेक स्थाने ईश्वर कर्तृत्व स्वीकारेछे. अने केटलेक ठेकाणे जगत्नो बनावनार ईश्वर नथी एम स्वीकारेछे. अन्य दर्शनवाळा जिन दर्शनना सिद्धांतनो केटलाक अंशे अनुसरेछे. हवे जिनदर्शनमां जगत्कर्तृत्व ईश्वर संबंधी केवी मान्यता छे ते बतावेछे.

" दुहा. "

ईश्वरना बे भेदछे, जीव सिद्ध बे जाण;
कर्त्ता निज निज कर्मना, जीवो मनमां आण ॥१६८॥
निजने सुखदुःख आपतो, जीवज करी नवकर्म;
कर्त्ता भोक्ता जीवछे, ईश्वर कर्त्ता मर्म. ॥१६९॥
चेतन ईश्वर जाणीए, नय व्यवहार प्रमाण
अशुद्ध नय ईश्वर कथ्यो, सापेक्षा मन आण. ॥१७०॥
कर्त्ता परपरिणामथी, चेतन ईश्वर जोय;
शुद्ध निश्चय नयथकी, कर्म करे नहि सोय. ॥१७१॥
सुख कर्त्ता निज भावथी, दुःख कर्त्ता परभाव;
परपरिणतिना नाशथी, कर्त्ता निजगुण दाव. ॥१७२॥
सापेक्षा समजे नहीं, पक्ष ग्रहे एकांत;
ईश्वर कर्त्ता मानता, निरपेक्षाथी भ्रान्त, ॥१७३॥
कर्म मेल जेने नहीं, निराकार भगवान्;
कर्युं प्रयोजन ईशने, कर निश्चयथी ज्ञान. ॥ ॥

परमप्रभु शिव सिद्धमां, इच्छा नहीं अभिमान;
शुं ते कर्त्ता सृष्टिनो, माने भूली भान. ॥१७५॥
उपादान जेवुं अहो, तादृश कार्य कहाय;
निराकार ईश्वरथकी, जडसृष्टि न रचाय. ॥१७६॥
उपादान कारणथकी, जाणो कार्य अभेद;
उपादान ईश्वर कहो, सृष्टिरूप ते खेद. ॥१७७॥
निमित्त हेतु इशजो, उत्पत्तिमां होय;
ईश्वरशक्ति नित्यके, अनित्यते अवलोय. ॥१७८॥
उपादान कारण विना, निमित्तथी शुं थाय;
उपादान कोने कहो, ज्ञाने सत्य जणाय. ॥१७९॥
कार्य पूर्व तो होयछे, कारणनो सद्भाव;
उपादान कारण विना, बने न एह बनाव. ॥१८०॥
उपादानथी भिन्नछे, निमित्त कारण भाइ;
भिन्न भिन्न शक्तितणी, क्यांथी एक सगाइ. ॥१८१॥
सृष्टिनुं कारण कदा, ईश्वर नहीं कल्पाय;
नाहि तो रासभ पण कहो, सद्युक्तिथर न्याय ॥१८२॥
पृथ्व्यादिक परमाणुओ, ग्रही सृष्टि निर्माय;
ईश्वरमां यदि मानीए, चेतन क्यांथी आय. ॥१८३॥
परमाणु समुदायथी, जडनुं कार्यज थाय;
चेतन तेथी भिन्नछे, अरणि वन्हि न्याय, ॥१८४॥

पुद्गल द्रव्य अनादिछे, तथा जीव पण जाण;
निश्चयथी बे भिन्नछे, भिन्नशक्ति पण आण ॥१८५॥
जडमां चेतन परिणमे, जाणो नय व्यवहार;
अनेकान्तमत ज्ञान वण, लहो न सम्यक्सार. ॥१८६॥
काल अनादि द्रव्य षट्. कर्त्ता ईश्वर केम:
ईश्वरशक्ति नित्यवा, अनित्य शुं त्यां एम. ॥१८७॥
कर्तृत्वशक्ति नित्य तो, नित्य जगत् निर्माय,
कर्त्ता शक्ति अनित्य तो. क्षणमां विणशी जाय ॥१८८॥
कर्तृत्वशक्ति यादृशी. तादृश कार्यज थाय:
नित्यानित्य विकल्पथी. बे पक्षे दूषाय. ॥१८९॥
ईश्वर साकारी कहो. तोपण दोषित थाय,
पूर्वापर विचारतां, दोषो बहुला आय. ॥१९०॥
नैयायिकवादी कहे, कर्त्ता ईश्वर सत्य:
पण युक्तिथी लेखतां, लागे तेह असत्य. ॥१९१॥
ईश्वर इच्छाथी कदा. सृष्टि नहीं निर्माय;
निमित्त इच्छा जो कहो. केम स्वभाव न थाय. ॥१९२॥
का विनिगमना त्यां लहो, करो कदाग्रह दूर;
स्वभावयुक्तिथी ग्रहो, तो नहि दोष जरूर ॥१९३॥
उपादान मध्ये रही, तिरोभाव जे शक्ति,
तेनी आविर्भावता. परिपूर्ण निजव्यक्ति. ॥१९४॥

शुद्धशक्तिछे वस्तुमां, वर्ते काल अनादि;
आविर्भाव कराववा, निमित्तहेतु उपाधि. ॥१९५॥
आविर्भाव जे धर्मनो, कार्यरूप ते थाय;
घटनुं कारण मृत्तिका, अनन्य कार्य कहाय. ॥१९६॥
घटनो नाश कर्याथकी, होय न कारण नाश;
कारण नित्यपणे रहे, मृत्तिकारूप खास. ॥१९७॥
काल स्वभावने नियति, कर्म उद्यम ए पञ्च;
कार्य प्रति कारण सदा, धरो न मनमां खंच. ॥१९८॥
राग दोष जेने नथी, ते ईश्वर कहेवाय;
तेने इच्छा जो कहो, तो ईश्वरता जाय. ॥१९९॥
कृत्य कृत्य ईश्वर थया, तेथी शुं इच्छाय;
इच्छा ज्यां त्यां रागद्वेष, रागदोष दुःख पाय. ॥२००॥
रागदोष सहचारिणी, इच्छा भवनुं मल;
ईश्वरने इच्छा कहो, हृदा मोह प्रतिकूल. ॥२०१॥
इच्छा नहीं त्यां सुखशुं, कहेशे जन जो कोय;
शर्म अनंतु समाधिमां, इच्छा त्यां नहि होय. ॥२०२॥
जडवस्तुज ईश्वरथकी. बने नहि कोइ काल;
जड स्वभाव न इशमां, धर मनमांहि ख्याल. ॥२०३॥
ईश्वर शक्ति अनन्तछे, जडनी शक्तिज लेश;
सृष्टि बनेछे इशथी, युक्ति लहो ए वेश. ॥२०४॥

ईश्वर कर्त्ता वादिनुं, वदवुं युक्ति हीन;
जड ईश्वरना धर्म बे, वर्ते निशदिन भिन्न. ॥२०५॥
भिन्न धर्म बेना सदा, भिन्नधर्मी पण होय;
निराकार साकार एक, रूपी अरूपी जोय. ॥२०६॥
चेतन शक्ति अनन्त छे, पुद्गलशक्ति अनन्त;
चेतनशक्ति ज्ञातृता, जडता पुद्गलतंत. ॥२०७॥
निजस्वभावे शक्ति त्यां, कोइ नहीं परतंत्र;
निश्चयनयथी जाणीए, ज्ञानी एम वदंत. ॥२०८॥
अनन्त शक्ति अस्तिता, निज द्रव्ये वर्ताय;
पर अपेक्षाए ग्रही, नास्तिता एम थाय. ॥२०९॥
अनन्त शक्ति अस्तिता, नास्तिताज अवलोय;
षड्द्रव्ये व्यापी सदा, निश्चयथी ए जोय. ॥२१०॥
चेतनथी जड जो बने, तो खरशृंग जणाय;
स्वप्न सुखलडी सत्यरूप, सत्य विचारो न्याय. ॥२११॥
अनन्त शक्ति इशनी, ईश्वरमांहि समाय;
कूपनी छाया कूपमां, तद्वत् जाणो न्याय. ॥२१२॥
जडनी शक्ति अनन्त छे, पुद्गल धर्म जोय;
वर्णादिक तेमां रह्या, अन्य न कर्त्ता कोय. ॥२१३॥
आत्मापेक्षायी अहो, जडनी शक्तिज लेश;
सापेक्षा अवबोधीने, लहो न मनमां क्लेश. ॥२१४॥

तालपूट विष लेशथी, हस्ती प्राण हणाय;
निजनिजना धर्मे वडुं, अनेकान्तमतन्याय. ॥२१५॥
ईश्वरथी सृष्टि बने, कदी नहीं कहेवाय;
समजु समजे सानमां, सद्युक्ति मन लाय. ॥२१६॥
जीव कहो चेतन कहो, अर्थ एकनो एक;
ईश्वरसम छे आतमा, कर्त्ता इम न टेक ॥२१७॥
लक्ष चोराशी योनिमां, अटतो जीव अनन्त;
कर्माष्टकना योगथी, पामे दुःख अनन्त. ॥२१८॥
काल अनादिथी ग्रही, जीवे कर्मनी राश;
बांधे छोडे कर्मने, करतो परनी आश. ॥२१९॥
भवितव्यतायोगथी, थावे कर्म विनाश.
अविचल आतमस्वरूपनो, सहेजे थाय विकास.॥२२०॥
इशु विभु परब्रह्म छे, परमेश्वर सुखधाम;
सोऽहं सोऽहं पद लह्युं, तेने करुं प्रणाम. ॥२२१॥
जीवो कर्म क्षपणथकी, अनन्त ईश्वर थाय;
एकाऽनेक सिद्धात्मनी, ज्ञानी कुंची पाय; ॥२२२॥
कर्म खप्याथी सारिखा, समजे ज्ञानी विवेक;
व्यक्ति स्वरूपे भिन्नता, गुणव्यपेक्षा एक. ॥२२३॥
रागद्वेष जेने नथी, नहि रमता परभाव;
अनन्त आतमस्वरूपमां, रमता शुद्ध स्वभाव ॥२२४॥

परम प्रभुसम ध्यानथी, स्वकीय चेतन धार;
ध्याता ध्याने ध्येयरूप, सिद्ध बुद्ध निर्धार. ॥२२५॥

तादृक् ईश्वर सिद्धने, वन्दु वार हजार;
तेना सम्यग् ज्ञानथी, तरिये भवजलपार ॥२२६॥

सम्यग् ज्ञानक्रियावडे, मोक्ष न होय परोक्ष;
आत्मज्ञान ध्यानादिथी, त्वरित पामो मोक्ष. ॥२२७॥

भावार्थ—ईश्वरना बे भेदछे. अष्टकर्मसहित संसारि जीव ते पण अपेक्षाए ईश्वरछे, अष्टकर्मनो संपूर्ण नाश करी जे मुक्ति पाम्या ते सिद्ध परमात्मा ईश्वर कहेवायछे, जीवो कर्मरूप सृष्टिना कर्त्ता परपरिणतियोगे जाणवा, शाता अने अशाता वेदनीय कर्म ग्रही आत्माज पोताने सुख दुःख आपेछे. कर्मसृष्टिनो कर्त्ता तथा तेनो भोक्ता जीवरूप ईश्वर जाणवो. जीवरूप ईश्वर संसारिकअवस्थामां कर्मसृष्टिनो कर्त्ता जाणवो. सृष्टिकर्तृत्व जीवरूप ईश्वरने परभाव रमणतानी अपेक्षाए घटेछे एम रहस्य अनुप्रेक्षा करवा योग्यछे. जीवरूप ईश्वर, कर्मरूप सृष्टिनो कर्त्ता व्यवहारनयथी जाणवो. अशुद्धनयथी जीवरूप ईश्वर परवस्तुनो कर्त्ता निमित्तपणे जाणवो. हे भव्य आवी अपेक्षाथी ईश्वर कर्तृत्वरहस्य हृदयमां धारण कर. शुद्ध निश्चयनयथी कर्मरूप सृष्टिनो कर्त्ता ईश्वर नथी. आत्मिक सहज सुखनो कर्त्ता अशुद्ध स्वभावथी आत्माछे. दुःखनो कर्त्ता परस्वभावथी आत्माछे. ज्यारे संपूर्ण अशुद्ध परिणति (परपरिणति) नो आत्मध्यानथी नाश थायछे त्यारे आत्माना अनंतगुणनो आत्मा स्वयं कर्त्ता थायछे.

जे भव्यो सापेक्षता समजता नथी. अने एकांत पक्ष ग्रहण

करेछे ते शुद्ध परमात्मारुप ईश्वरने जडवस्तुनो कर्त्ता मानी भ्रांतिमां पडेछे. कर्मरूप मलिनता जेनामां नथी एवा सिद्धबुद्ध परमात्माने शुं प्रयोजनछे के सृष्टिनी रचना करे. हे भव्य पक्षपात त्यजी माध्यस्थ दृष्टिथी अवबोध.

परमप्रभु, परमब्रह्मरूप ईश्वरमां रजोगुण, तमो गुणादि नथी. इच्छा नथी, अभिमान नथी, वेदांतमा पण कह्युंछे के–न च स पुनरावर्तते मुक्तिमां गएला आत्माओ शुद्धबुद्ध थइ पश्चात् संसारमां जन्म लेता नथी. रागद्वेषरहित सिद्ध (ईश्वर) जडसृष्टिनो कर्त्ता कदा बनी शकतो नथी. जडसृष्टि रचवानो सिद्धबुद्धमां स्वभाव नथी ते माटे.

प्रश्न–सिद्ध परमात्मा जडसृष्टिना कर्त्ता नथी मानता त्यारे अन्य कोइ सृष्टिना कर्त्ता छे के नहीं.

उत्तर–सिद्ध परमात्मा–ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, सुख आदि आत्माना अनंत शुद्ध गुणरुप सृष्टिना कर्त्ताछे. क्षायिकभावे आत्माना शुध्धरुप सृष्टिना कर्त्ता सादि अनंतमा भंगेछे. परमाणु आदि जडसृष्टित्व स्वभावना बीलकुल कर्त्ता नथी. जे आत्माना शुध्ध क्षायिक धर्मना कर्त्ता थया ते कर्मरुप सृष्टिना कर्त्ता कदी थता नथी.

माटे विवेकदृष्टिथी भव्यात्मन सत्यतत्त्व विचार,

यादृक् उपादान कारण होयछे तादृक् कार्यनी उत्पत्ति थायछे, जेम मृत्तिकारुप उपादान कारण जेवुं होयछे तेवुं घटरुप कार्य बनेछे. उपादान कारण कार्यरूप बनेछे. घटकार्यमां कुंभकार निमित्त कारणछे. घटरुप कार्यमां उपादानकारण मृत्तिकाछे. अने निमित्तकारण कुंभकार. दंडचक्र वगेरेछे. तेम जो कर्मरहित परमात्माए जगत् बनाव्युं एम कोइ माने तो तेमां उपादान अने निमित्त

कारण कोन ? निराकार ईश्वरने जगतनुं उपादान कारण मानतां जगत्रूप ईश्वर बन्यो. ए पन महादूषन आवेछे. सिध्धान्त एवो छे के निराकारथी साकारनी उत्पत्ति थती नथी. माटे निराकारथी जडसृष्टि रचाती नथी एम सिध्ध ठरेछे.

वली नियम एवोछे के उपादान कारणथी कार्यनो अभेदछे, जेम मृत्तिकारूप उपादानथी घटरूप कार्यनो अभेदछे. मृत्तिकाथी घट भिन्न नथी. तेवीज रीतिथी निराकार ईश्वरथी जड सृष्टि मानवामां आवे तो जगत्रूपज ईश्वर बन्यो, सृष्टिरूप कार्यथी ईश्वरनो अभेद थयो माटे जडसृष्टिरूप ईश्वर मानवामां आवे तो अनेक दूषनरूप खेदनी प्राप्ति थायछे,

सृष्टिकार्यमां ईश्वरने निमित्त हेतु मानतां बे विकल्प उत्पन्न थायछे, ईश्वरनी शक्ति नित्यछे के अनित्यछे ? उपादान कारण विना एक निमित्तकारणथी कोइ कार्य बनतुं नथी. कार्यनी पूर्वे उपादान तथा निमित्तनो सद्भावछे. उपादान विना निमित्तभूत ईश्वरथी सृष्टिरूप कार्य बनी शके नहीं, ईश्वरनी इच्छा निमित्त हेतु कोइ माने तो ते पन योग्य नथी, कारण के ईश्वरनेइच्छा होती नथी. अपूर्णने इच्छा होयछे. कृतकृत्य परमात्माने अंशमात्र पन इच्छा होती नथी. समान युक्ति अनुभवथी विरुद्ध सृष्टिहेतु ईश्वर कल्पातो नथी. तेम छतां यदि ईश्वर मानवामां आवे तो गासभने केम मानवामां न आवे ? पृथिवीआदि परमाणुओनुं ग्रहण करीने ईश्वर सृष्टि रचेछे एम जो मानवामां आवे तो जीवो क्यांथी आव्या. जीवो अनादिकालनाछे एम कहेवामां आवे तो सृष्टिपन अनादिकालथीछे एवं केम मानता नथी. अनादिकालना जीवो सृष्टि विना अन्यत्र रही शकता नथी माटे सृष्टि पन अनादिकालथी छे एम स्पष्ट भासेछे.परमाणुओना कार्यथी चेतन (आत्मा) भिन्नछे माटे अग्निमां वन्हि रहेछे तेवी रीते आत्मा

पण देहमां रहेछे पण पंचभूतथी भिन्नछे. जड अने चेतन ए बे वस्तु आ प्रमाणे विचारतां अनादिकालथी छे एम सिद्ध थायछे. जीव अने जडनी परस्पर शक्तियो पण भिन्नछे. जडवस्तुमां चेतन कर्मनावशे परिणमेछे ते व्यवहारनयथी जाणवुं. निश्चयथी जडमां चेतन परिणमतो नथी, आ प्रमाणे अनेकान्तनयज्ञान थया विना तत्त्वनुं यथार्थ भासन थतुं नथी.

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल अने जीव एम षड्द्रव्यथी जगत् कहेवायछे. अनादिकालथी षड्द्रव्यछे. ते षड्द्रव्य, द्रव्यार्थिकनयथी नित्यछे अने पर्यायार्थिकनयथी अनित्यछे. ते षड्द्रव्यथी भिन्न कोइ वस्तु नथी. तो षड्द्रव्यनो कर्त्ता ईश्वर केम मानी शकाय. अर्थात् न मानी शकाय. हवे बे विकल्प करवामां आवेछे. जगत्कर्तृत्व शक्ति ईश्वरमां नित्य छे के अनित्यछे ? जगत्कर्तृत्व शक्ति नित्य मानवामां आवे तो ईश्वर सदाकाल जगत् बनाव्या करशे. एवं महादोष आवेछे, तेमज जगत्कर्तृत्व शक्ति अनित्य मानवामां आवे तो जगत्कर्तृत्व शक्ति क्षणमां अनित्य होवाथी विणशी जतां सृष्टि पण क्षणमां नाश पामी जाय. पण तेम प्रत्यक्ष अनुभव विरुद्धछे माटे बे पक्षथी ईश्वरशक्ति जगत् कर्तृत्वमां सिद्ध थती नथी. एम नित्यानित्य पक्षथी ईश्वरशक्ति दूर थायछे.

जगत् कर्त्ता ईश्वरने साकारी मानवामां आवे तो अनेकदोषो उत्पन्न थायछे. साकार ईश्वर एकदेशावस्थित होवाथी सर्वत्र सृष्टि बनावी शके नहीं साकारकुंभकारवत् साकारकुंभकारनी पेठे कर्म विना देह होय नहीं. अने देहवडे ईश्वर साकार देवतानी पेठे कहेवाय तो कर्म सहित ठर्यो. सकर्माईश्वर ठरवाथी अन्य जीवोनी पेठे कर्मना परतंत्र रह्यो, अने स्वतंत्र थयो नहीं. त्यारे ते जगत् बनाव-

वामां कयं समर्थ थाय.

नैयायिक कहेछे के सृष्टिनो कर्त्ता ईश्वर सत्य छे पण ते पूर्वोक्त युक्तिथी विचारतां सत्य नथी. ईश्वरनी इच्छाथी जगत् उत्पन्न थयुं एम मानवामां आवे तो अनादिकालनी जड अने चेतन वे पदार्थ छे. एम अनादिस्वभाव केम न मानवामां आवे, अर्थात् तेमां एकज पक्षपातिनी युक्ति शा छे के अनादिकालनो स्वभाव न मानवामां आवे अने इच्छाज मानवामां आवे. इच्छा मोहरूप छे. ईश्वरने इच्छा कहेतां साधारण मनुष्यनी पेठे ईश्वर पण मोटी ठर्यो त्यारे तेनुं ईश्वरपणुं रहेतुं नथी. माटे ईश्वरनामां इच्छा मानवी ते शसशृंगवत् असत्य छे. आत्मानी परमात्मदशामां ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, सुखादि गुणो उपादान कारणछे. तेनो परिपूर्ण आविर्भाव तेज परमात्मपणुं जाणवुं. अनन्तधर्मनी शुद्धि प्रगटाववा निमित्त हेतुनी जरुरछे, आत्माना धर्मनो आविर्भाव तेज कार्य जाणवुं. घटनुं कारण जेम मृत्तिका अनन्य कारण कहेवायछे तेम परमात्मदशारूप कार्यमां ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप अनन्य कारण उपादानछे. घटनो नाश थवाथी मृत्तिकानो नाश थतो नथी. अर्थात् कारण सदाकाल वर्तेछे. अत्र काल, स्वभाव, नियति, कर्म, अने उद्यम पंच कारणथी कार्योत्पत्ति थायछे. पंच कारणमांथी एक कारणनी उत्थापना करतां मिथ्यात्व प्राप्त थायछे. आ बाबतमां लेशमात्र पण शंका करवी योग्य नथी.

राग अने द्वेषनो सर्वथा जेणे क्षय कर्योछे ते ईश्वर परमात्मा कहेवायछे. एवा शुद्ध परमात्माने जो इच्छा कहेवामां आवे तो ईश्वरतानो नाश थायछे. सर्व प्रकारनी इच्छानो जेणे नाश कर्योछे एवा ईश्वरने जगत् करवानी इच्छा क्यांथी होय. अलबत कदी होय नहीं, रागद्वेषसहचारिणी इच्छाज संसारनुं मूलछे. अने तेवी इच्छा

ईश्वरने कहेवी ते मोहचेष्टित जाणवुं. अहो अज्ञानननी केटली शक्ति.

कोइ एम कहे के–ज्यां इच्छा नथी त्यां शुं सुख ? अलवत कंइ नहीं. आवी रीते बोलनारे समजवुं के योगीन्द्रमहात्मा समाधिमां अनन्त सुख वेदेछे, पण ते समये तेने इच्छा नथी माटे इच्छा होय त्यां सुख एवी व्याप्ति घटती नथी.

दृश्यजडवस्तु कदापि ईश्वरथी वनी शके नहीं. ईश्वरमां जडस्वभाव नथी. जडवस्तुनो कर्त्ता वान्याय आपनार ईश्वर नथी. हे भव्य हृदयमां अवधार.

कोइ एम कहेशे के–ईश्वरनी शक्ति अनन्तछे अने जडपदार्थनी शक्ति अल्पछे माटे ईश्वरथी सृष्टि वनेछे. आ युक्ति पण वेश नथी ते जणावेछे. ईश्वरनी शक्ति चैतन्यभावे अनन्तछे तेम जडनी शक्ति जडभावे अनन्तछे. ईश्वरना धर्म अनन्तछे जेम जडतत्त्वना धर्म पण अनन्तछे. आत्मा अने जड वे तत्त्व भिन्नधर्मीछे. जडपुद्‌गल द्रव्य साकारछे अने आत्मतत्त्व निराकारछे. प्रत्येक तत्त्व स्वस्वभावे स्वतंत्रछे: वस्तुतः कोइ द्रव्य परतंत्र नथी. प्रत्येक द्रव्यमां अनन्त अस्तिधर्म अने परनी अपेक्षाए अनन्तनास्तिधर्म रह्योछे. अस्तिधर्म अने नास्तिकधर्मनी अनन्तता षड्‌द्रव्यमां व्यापी रहीछे. अन्य द्रव्यनो कर्त्ता अन्यद्रव्य वस्तुतः नथी.

चेतनथी जो जडनी उत्पत्ति उपादानपणे थाय तो खरशृंगनी पण उत्पत्ति थाय. पण खरने शृंग थतांज नथी ते प्रमाणे ईश्वररूप चैतन्य मूर्त्तिमांथी जडवस्तु थती नथी. त्यारे ईश्वरमांथी जगत् थयुं एवं प्रलाप करवो ते अंधश्रद्धानी बुद्धि विना अन्य समजातुं नथी. स्वप्न सुखडीथी पेट भराय तो ईश्वरमांथी जडनी उत्पत्ति थाय.

आ प्रमाणे सिद्धांत वदवाथी प्रश्न थशे के अहो ज्यारे परमात्माथी जगत्‌नी उत्पत्ति थती नथी, त्यारे तेमनी अनन्त शक्ति शा

कामनी ? तेना प्रत्युत्तरमां जणावेछे के-ईश्वरनी ज्ञानादिक अनन्त शक्तियो ईश्वरमांज समायछे. रूपनी छाया रूपमां समायछे ते प्रमाणे अत्र न्याय समजवो. जडद्रव्योनी अनन्त शक्ति जडमां व्यापी रहीछे. पुद्गलद्रव्यना वर्णादिकनी शक्ति पुद्गलद्रव्यने त्यजी अन्यत्र जती नथी. पुद्गलद्रव्यनो निश्चयथी अन्यद्रव्य कर्ता शीरीते होइ शके,

आत्मद्रव्यनी अपेक्षाए पुद्गलद्रव्यनी शक्ति अल्प गणायछे. पण वस्तुतः जेम आत्मद्रव्यनी आत्मस्वरूपे अनन्ति शक्तिछे तथा पुद्गलद्रव्यनी शक्ति पण तेना स्वरूपे अनन्तछे. सापेक्षा अवबोधतां कोइपण प्रकारनी हानि आवती नथी. तालपुटविषलेशथी हस्तिना प्राणनो नाश थायछे, एक लेशमात्र तालपुटविषथी हस्तिनो प्राण नाश थाय त्यारे कहोके पुद्गलनी शक्ति केटलीछेः आत्मानी शक्ति अपेक्षाए मोटीछे तेमज पुद्गलनी शक्ति पुद्गलनी अपेक्षाए मोटीछे. आ उपरथी सिद्ध थायछे के शुद्धबुद्धपरमात्माथी सृष्टि बनी शके नहीं, माध्यस्थदृष्टिवाळा पुरुषो सहजमां तत्त्व अवबोधी शकेछे. ईश्वर सर्वज्ञ परभावरूप सृष्टिनो कर्त्ता नथी. एवी मनिशा युक्तिमतीछे.

चोराशीलक्षजीवयोनिमां जीवो परिभ्रमण करेछे. अज्ञान राग द्वेष प्रयोगे जीव संसारमां परिभ्रमण करेछे. कर्माधीन संसारमां परिभ्रमण थायछे. कर्यां कर्म प्रमाणे सुख दुःख थायछे त्यारे शामाटे हे ईश्वर तें मने दुःख आप्युं एम असद् वदवुं जोइए. अनादिकालथी जीवनी साथे कर्मनो संबंधछे. भावकर्म रागद्वेषयोगे जीव द्रव्यकर्मने ग्रहण करेछे. तेने भोगवी विखेरेछे. पञ्चकारणनी सामग्री मळे त्यारे कर्मनो नाश थायछे. कर्म नाश थतां अविचल आत्म स्वरूपनो सहेजे विकाश थायछे.

इशु, विष्णु, परमब्रह्म, परमेश्वर, मुक्तधाम ब्रह्मनी स्थिति ५.

भावमां वर्तेछे. परभावमां न्याय माटे पण प्रवर्तती नथी. सोऽहं सोऽहं पद प्राप्त कर्युं तेने हुं प्रणाम करुछुं. परमात्मपदने सोऽहंपद कहेछे. सोऽहंपदनुं ध्यान धर्याथी परमात्मपद मळेछे. जे जे जीवो कर्मनो नाश करेछे ते ते जीवो परमात्माओ थायछे. सिद्धस्थानमां एक सिद्धछे तेम अनेक सिद्ध परमात्माओछे. संपूर्ण कर्मक्षयथी मुक्तिस्थानमां सर्वे सिद्धात्माओ समानछे. ज्ञाननी अपेक्षाए व्यापकछे असंख्य प्रदेशरूप व्यक्तिनी अपेक्षाए व्याप्यछे. शंकराचार्य तथा उपनिषदोनी केटलीक अपेक्षाए आत्मानुं व्यापकपणुं जैनमत अंगीकार करेछे. तेमज रामानुजमतापेक्षाए आत्मानुं व्याप्यपणुं पण जैनमतमां समाइ जायछे. व्यक्तिनी अपेक्षाए सिद्धात्माओ भिन्नभिन्न छे अने ज्ञानादिक गुणनी अपेक्षाए एकरूप (एक) छे.

जे सिद्ध परमात्माओने रागद्वेष नथी. परभावमां रमण करता नथी. आत्माना ज्ञानादिक अनन्त गुणमां जे समये समये रम्या करेछे. एवा परमप्रभुना ध्यानथी आत्मा पण परमात्मा थायछे. ध्याता ध्येयना ध्याने स्वशुद्ध ध्येयरूप प्राप्त करेछे. परमशुद्धपरमात्माने वारंवार नमस्कार करुंछुं. परमात्माना सम्यग्ज्ञानथी अज्ञानादि दुःखनो नाश थायछे. सम्यग् ज्ञानथी सहज शुद्ध स्वरूप मय चिदानन्द समुद्रनी लहेरो प्रगटेछे. सम्यग् ज्ञान क्रियाथी मुक्ति परोक्ष नथी. अर्थात् मुक्ति प्रत्यक्षछे. मुक्तदशा जे जे अंशे थायछे ते ते अंशे मुक्तिनां सुख प्रगटेछे. केटलाक अद्वैतवादियो अद्वैतवादनुं गुरुगम यथार्थ स्वरूप न समजवाथी ब्रह्ममांथी सृष्टि उत्पन्न थायछे अने ब्रह्ममां समाइ जायछे. इत्यादि एकांतवाद स्वीकारीने भूल करेछे. जैनदर्शन अपेक्षाए अद्वैतब्रह्मवाद स्वीकारेछे पण जे नयोनी सापेक्षा विना ब्रह्म मानी भूलो साथै करेछे ते संबंधी केइक कहेवामां आवेछे.

"दोहा."

ब्रह्मथकी सृष्टि बनी, सहु छ ब्रह्म स्वरूप;
व्यापक ते सर्वत्र छे, चिदानन्द गुणरूप. २२८
मायाना बहु जोरथी, भूल्यो ब्रह्मनुं भान;
एकरूप सर्वत्र छुं, अद्वैतवादि ज्ञान. २२९
शुद्ध ब्रह्मना अंश छे, जीव अनन्ता लेख;
परमात्ममांहि ते भळे, द्वैतपणे नावि देख. २३०
अद्वैतवादि वचन छे, माने ब्रह्मनुंज्ञान;
द्वैतपणुं माने नहीं, ब्रह्मध्यान मस्तान. २३१
नहि सत्यने ढांकीये, सत्य न ढांक्युं जाय;
छाबडीए रवि ढांकतां, कदी नहीं ढंकाय. २३२
जड चेतनता भेदथी, द्वैतपणुं प्रगटाय;
कथं एक हि आतमा, सुख दुःख विघटाय. २३३
जडतारूपे जड अहो, जडनो कदा न नाश;
असत् कहो शा कारणे, ज्ञानी बहु शाबाश. २३४
जीवाजीव बे तत्त्व छे, ज्ञाने दोय जणाय;
मिथ्या एक ग्रहे सुधा, सम्यक् धर्म न थाय. २३५
ज्ञानी ज्ञानथकी ग्रहे, वस्तु सत्य स्वरूप;
द्वैतपणुं अंगीकरे, पडे न भवजल कूप. २३६
एक एव हि आतमा, भूते तेह जणाय;
जले प्रतिबिम्ब चन्द्रनुं, तद्वत् जाणो न्याय. २३७

सत्ताने अंगीकरी, माने अद्वैत एम;
संग्रहनय एकान्तथी, तरे भवोदधि केम. २३८
प्रथम विषम दृष्टान्तथी, साध्यसिद्धि शुं थाय;
प्रतिबिम्बरूपितणुं, अरूपि शुं ते पाय. २३९
प्रतिबिम्ब पुद्गलतणुं, जल चन्द्रे दृष्टान्त;
जीव अरूपी वस्तुमां, प्रतिबिम्ब नहि भ्रान्त. २४०
प्रतिबिंबथी जाणशो, प्रतिबिंबक छे भिन्न;
प्रतिबिंबकना भावथी, प्रतिबिंब छे खिन्न. २४१
प्रतिबिंबित चन्द्रनुं, भिन्नपणुं त्यां छेक;
कथं साध्यनी सिद्धि छे, छे नहीं चेतन एक. २४२
व्यापक आतम एकनुं, अंशपणुं नहीं होय;
भिन्न भिन्न जीवांशथी, आतम एक न जोय. २४३
आतम एकथी सर्वने, शर्म दुःख समकाल;
सुख दुःख आच्छादक कह्यो, द्वैतपणुं त्यां भाळ.२४४
घटाकाश उपाधिथी, ग्रह्यो गगननो भेद;
तेवी उपाधि अत्र नहीं, सुख दुःख वारक वेद.२४५
समकाले सुख दुःखनो, जीवोने प्रतिभास;
अधिक न्यून प्राप्तितणो, मळे नहीं अवकाश. २४६
मळे नहीं अवकाश तो, तेनुं कारण कोण;
भिन्न भिन्न चेतन विना, घटे नहि कंइ और. २४७

व्यक्तिथी सहु भिन्न छे, सत्ता ए सहु एक;
आत्मतत्त्व अवबोधथी, मानो एकाऽनेक. २४८

सर्वत्रज व्यापक कहो, युक्ति घटे नहिं कोइ;
सम्मतितर्के जाणशो, कहुं विचारी जोइ. २४९

सर्वत्रज व्यापक कहो, पिण्डे किम बंधाय;
देहे व्यापी जो कहो, अव्यापक पद पाय. २५०

व्यापक नहि बंधाय छे, गगन पङ्कनी पेर;
सर्वत्र सुख दुःखनी, प्राप्तिपणुं छे झेर. २५१

सर्वत्र व्यापक कहो, कदा नहीं बंधाय:
मानो तो छे अज्ञता, सद्युक्ति न जणाय. २५२

अव्यापक छे आतमा, तेमां नहीं संदेह;
व्याप्यने व्यापक बोधथी, थाशो निःसंदेह. २५३

शैलेशीकरणे करी, व्यापक आतम लोक;
असंख्य शुद्ध प्रदेशथी, जाणो भविजन थोक. २५४

अव्यापक व्यापक लहो, चेतन गुणनी खाण;
अनेकान्त अवबोधथी, पामो शिवपुर ठाण. २५५

सादि आदि भंगे करी, व्यापक चेतन जाण;
स्याद्वाद दृष्टि थकी, साचुं मनमां आण. २५६

केवलज्ञाने आतमा, व्यापक सहुमां जोय;
स्वपर प्रकाशक आतमा, प्रदीप पेठे होय. २५७

तिमिरारि प्रगटे तदा, तमनो शो छे भार;
ज्ञानदीपक उद्योतथी, रहे नहि अंधकार. २५८

अद्वैत स्वरूपी आतमा, जडथी भिन्न विचार;
द्वैतपणुं पण तेहमां, एक अनेकाधार. २५९

अक्षररूपे आतमा, अनक्षर गुणवान्;
आत्माऽसङ्ख्य प्रदेशमां, स्थिरता शुद्ध वखाण. २६०

भास्यो आपोआपमां, टळ्युं महा अज्ञान;
अपूर्व वीर्यज उल्लस्युं, यदा थयुं निज भान. २६१

जड इन्द्रियो शुं करे, तेनाथी हुं भिन्न;
जडस्वरूपे तेह छे, क्षणिक नाशी दीन. २६२

मन वाणी मारां नहीं, जडनुं छे ते काज;
तेनी संगे राचतां, नहीं रहे मुज लाज. २६३

हसुं रसुं कोनाथकी, कोनापर ममभाव;
मृगजलोपम वस्तुमां, शो ममतानो दाव. २६४

नहीं मारु जड वस्तुमां, राचुं शुं संसार;
शाथी शाने माटे में, लीधो मही अवतार. २६५

फोगट फंदामां पड्यो, जग न शर्म जणाय;
सवळे पन्थे चालतां, मनमां शुं खमचाय. २६६

नथी तनु ते तुं सदा, शरीर माटीघाट;
पींपळपानपरे खरे, चेत चेत ते माट. २६७

सहुने देखुं ज्ञानथी, सहु म्हाराथी दूर;
प्रतिबंध कोनो नहीं, सिंह इव हुं शूर. २६८

रागदोष निन्दा कथा, तेनुं भाग्युं जोर;
स्वाभिमुख थइ चेतना, प्रगट्यो अनुभव तोर. २६९

शस्त्रथी छेदाउ नहीं, नहि शस्त्रे भेदाउ ?
शत्रुमित्र सम भावना, भ्रमणा क्यांथी पाउ ? २७०

कर्मवशे सहु प्राणिया, भ्रमण करे निर्धार;
पुत्र मित्र ललनापणे, सगपणनो आचार. २७१

सगपण साचुं नहि कदी, स्वारथियो संसार;
जगमां को केनुं नहीं, संवेगे मनधार. २७२

सर्व जीव छे सिद्ध सम, निर्मल अविचल देव;
त्रिकरण योगे तेहनी, मित्रभावना सेव. २७३

द्रव्यार्थिकथी नित्य छे, कदी न होवे नाश;
असंख्यप्रदेशिव्यक्तिथी, ध्रुव स्वरूपी खास. २७४

केवलज्ञाने आतमा, व्यापक सहुमां जोय;
स्वपर प्रकाशक आतमा, प्रदीप पेठे होय. २५७

तिमिरारि प्रगटे तदा, तमनो शो छे भार;
ज्ञानदीपक उद्योतथी, रहे नहि अंधकार. २५८

अद्वैत स्वरूपी आतमा, जडथी भिन्न विचार;
द्वैतपणुं पण तेहमां. एक अनेकाधार. २५९

अक्षररूपे आतमा, अनक्षर गुणवान्;
आत्माऽसङ्ख्य प्रदेशमां, स्थिरता शुद्ध वखाण. २६०

भास्यो आपोआपमां, टळ्युं महा अज्ञान;
अपूर्व वीर्यज उल्लस्युं, यदा थयुं निज भान. २६१

जड इन्द्रियो शुं करे, तेनाथी हुं भिन्न;
जडस्वरूपे तेह छे, क्षणिक नाशी दीन. २६२

मन वाणी मारां नहीं, जडनुं छे ते काज;
तेनी संगे राचतां, नहीं रहे मुज लाज. २६३

हसुं रमुं कोनाथकी, कोनापर ममभाव;
मृगजलोपम वस्तुमां, शो ममतानो दाव. २६४

नहीं मारु जड वस्तुमां, राचुं शुं संसार;
शाथी शाने माटे में, लीधो मही अवतार. २६५

फोगट फंदामां पडयो. जग न शर्म जणाय;
सवळे पन्थे चालतां. मनमां शुं ग्मचाय. २६६

नथी तनु ने तुं सदा, शरीर माटीघाट;
पींपळपानपरे खरे. चेत चेत ते माट. २६७

सहुने देखुं ज्ञानथी. सहु म्हाराथी दूर;
प्रतिबंध कोनो नहीं, सिंह इव हुं शूर. २६८

रागदोष निन्दा कथा, तेनुं भाग्युं जोर;
स्वाभिमुख घट चेतना, प्रगट्यो अनुभव तोर. २६९

शत्रुथी छेदाउं नहीं, नहि शस्त्रे भेदाउं ?
शत्रुमित्र सम भावना, भ्रमणा क्यांथी थाउं? २७०

कर्मवशे सहु प्राणिया, भ्रमण करे निर्धार;
पुत्र मित्र ललनापणे, सगपणनो आचार. २७१

सगपण साचुं नहि कदी, स्वारथियो संसार;
जगमां को केनुं नहीं, संवेगे मनधार. २७२

सर्व जीव छे सिद्ध सम, निर्मल अविचल देव;
त्रिकरण योगे तेहनी, मित्रभावना सेव. २७३

द्रव्यार्थिकथी नित्य छे, कदी न होवे नाश;
असंख्यप्रदेशिव्यक्तिथी, ध्रुव स्वरूपी खास. २७४

पूर्वजन्म अभ्यासथी, जीव नित्यता सिद्ध;
बाल युवा वृद्धा विषे, ज्ञाता एक प्रसिद्ध. २७५

क्षणे क्षणे बदलायतो, चेतन होय अनेक;
पाप पुण्य कोने घटे, तेनो करो विवेक. २७६

क्षणिक वस्तुना ज्ञानथी, क्षणिक वाद सुजाण;
वक्ता क्षणिक नहीं थयो, नित्यरूप मन आण २७७

कोइक वस्तुनो कदी, केवल नाश न होय.
चेतन नाश कह्या थकी, अन्यावस्था जोय. २७८

अन्यावस्था को नहीं, माटे चेतन नित्य.
प्रत्यभिज्ञा सुहेतुथी, नित्यज जाणो चित्त. २७९

पर्याये पलटाय छे, आतमना पर्याय.
अनित्य माटे आतमा, अनेकान्तमतन्याय. २८०

शुभाशुभ आश्रव ग्रही, धरतो नाना देह.
शाताशाता भोगवे, नय व्यवहारे एह. २८१

पुण्य पापना नाशथी, प्रगटे निजगुण भोग.
सूर्याच्छादक अभ्रनो, टळे महासंयोग. २८२

कर्मसंग टळवा थकी, पामे जीव शिवठाण.
पुरुषोत्तम परमातमा, सिद्ध बुद्ध भगवान. २८३

अगम्य आत्मस्वभावनुं, अवलम्बन करनार.
आश्रव त्यागी संवरी, भवोदधि तरनार. २८४

जेने इच्छे योगिजन. अनन्यसुखनुं धाम.
नमुं नमुं ते आतमा, अनन्तगुण विश्राम. २८५

अवलम्बन शुभ आत्मनुं, करतां नाशे दोष,
प्रगटे अनुभव ज्योति त्यां. चेतन वीर्ये पोष. २८६

निजपद जिनपद साम्यता, भेदभावनो नाश.
पूर्ण व्यक्तिमय आतमा. राजाने कुण दास. २८७

सर्व सिद्धनी तुल्यता, जीव अनन्ता माय.
कोकोने नडता नही, अरूपपद महिमाय. २८८

विषमज्वरना जोरथी, होय अरुचि अन्न.
अभव्य आदि जीवने, आत्मरुचि नहिमन. २८९

सम्यग् ज्ञान प्रभावथी, बहिरातम पद नाश.
अन्तरात्मगुण भावना, प्रगटे शिवपुर वास. २९०

परप्रवृत्ति हेतुओ, समूल त्यां छेदाय.
अन्तर परमप्रभुपणुं. सहजे उदये आय. २९१

हुं कर्त्ता परभावनो. बुद्धि भवनुं मूल.
अन्तरात्मपद योगथी, थाय नेह निर्मूल. २९२

कोटिवर्षनुं स्वप्नपण, जागतां लय थाय.
आत्मज्ञान ज्योतथी, सहजरूप प्रगटाय. २९३

चेतनबुद्धि देहमां, जाणो देहाध्यास.
छूटे देहाध्यासतो, कर्म कलंक विनाश. २९४

कर्त्ता नहि हुं कर्मनो, भोक्ता नहि हुं तास.
शुद्धदशा प्रगट्याथकी, विघटे भवभयवास. २९५

चेतनधर्मे मोक्ष छे, तुंछे मोक्षस्वरूप;
भोगी रत्नत्रयितणो, क्षायिकशिवसुखभूप. २९६

सागरमांहि ल्हेरियो, उपजेने विणशाय;
चेतनगुण जे ज्ञान छे, ज्ञेयपणे पलटाय. २९७

शुद्ध बुद्ध निर्मल प्रभु, स्वयंज्योति गुणधाम;
चिदानन्द चेतन विभु, अनन्तगुणनुं ठाम. २९८

निश्चय अत्रज आवतां, साक्षर एक स्वरूप.
योगत्रिकने संवरी, शिवनगरी था भूप. २९९

रागादिक महावैरियो, ज्यां तेनो नहि गन्ध;
आत्मलक्ष्यवृत्ति थतां, परपरिणति थइ बंध. ३००

देहनिष्ठ पण ध्यानथी, वर्ते देहातीत;
वंदन वारंवार तास, त्रियोगे हो नित्य. ३०१

स्वद्रव्य स्वक्षेत्रथी, निजकाले निजभाव;
अस्तितत्व बहु भंगथी, निजद्रव्ये चित्त लाव. ३११

जीवादिक नवतत्वमां, प्रथमज अस्तिहिभंग;
कदी नहि जे वस्तु जग, प्रगटे नहि धरि अंग. ३१२

धर्माधर्माकाशकाल, पुद्गल पंचम जोय;
जीवद्रव्य छठुं कह्युं, अस्ति भंग अवलोय. ३१३

भूत भविष्यत् संप्रति, त्रिकाले वर्ताय;
षड्द्रव्योमां जाणिये, अस्तिभंग स्थिरताय. ३१४

समये समये अस्तिता, अनंतगुणनी जाण;
चेतनद्रव्ये वर्तती, सिद्धान्ते व्याख्यान. ३१५

द्रव्ये द्रव्ये अस्तिता, भिन्न भिन्न कहेवाय;
द्रव्यज गुण पर्यायनी, अस्तिताज निजमांय. ३१६

पुद्गलना पर्याय जे, घटपटरूपे लेख;
तदाकारछे अस्तिता, सादि सान्तथी देख. ३१७

द्रव्यार्थिक नय जाणिये, अनाद्यनंतज भंग;
पुद्गलमां व्यापी रह्यो, सादिसान्त गुण चंग. ३१८

स्यान्नास्ति बीजो कहुं, भंग अति सुखकार;
षड्द्रव्योमां व्यापियो, सापेक्षाये धार. ३१९

परद्रव्य परक्षेत्रथी, परकालज परभाव;
नास्तिता तेनी सदा, निजमां वर्ते दाव. ३२०
अहीं अपेक्षा परतणी, घटे नास्तिता आय;
परभावे षड्द्रव्यमां, नास्तित्व स्थिरताय. ३२१
परद्रव्योनी अस्तिता, तेज नास्तिता रूप;
प्रणमे निजनिज द्रव्यमां, सापेक्षाए अनुप. ३२२
पूछे पृच्छक अत्र एम, घटे न वे एक ठाम;
तमः तेज प्रतिपक्षितुं, घटे न एकज धाम ३२३
नैकस्मिन् ए सूत्रथी, रहे न वे एकत्र;
अस्ति नास्ति एकत्र नहि, भाखो सद्गुरु अत्र ३२४
सापेक्षाए सहु घटे, तथा सर्व समजाय;
पिता पुत्रत्व एकमां, वन्ने धर्म सुहाय. ३२५
चेतनतुं अस्तित्वते, परमां नास्ति स्वरूप;
परमां नास्ति नहीं रहे, विघटे वस्तु अनूप ३२६
विना अपेक्षा अस्तिता, नास्तिता नहीं जोय;
नैकस्मिन् ए सूत्रतो, स्याद्वादे अवलोय ३२७
जे समयेछे अस्तिता, नास्तिपणुं ते काल;
एकसमयमां वर्तना, षड्द्रव्योमां भाल. ३२८
अस्ति नास्ति त्रीजो कह्यो, भंग समय सिरताज
षड्द्रव्योमां व्यापियो, जिनदर्शन साम्राज्य ३२९

अस्ति शब्द उच्चारतां, समयो वहे असंख्य;
नास्ति शब्दोच्चारमां, तथा कहे भगवंत. ३३०
एकज समये अवाच्यछे, कदी न कोइ कहंत;
अवक्तव्यज भंगछे, चोथो सूत्रे लहंत ३३१
अस्तिधर्म अनन्तछेज, वाणी अगोचर थाय;
पञ्चमभंग ते उपजे, अनेकान्त शोभाय. ३३२
नास्तिधर्म अनन्तता, वस्तुमध्ये रहंत;
अवाच्य वाणीथी कह्यो, छठो भंग कहंत. ३३३
अस्तिनास्ति बे छे सदा, अवक्तव्य ते होय;
सप्तमभंगज सर्वमां, समय समय अवलोय. ३३४
गुरुगमज्ञानअवाप्तिथी, भंगज सप्त स्वरूप;
जाणी आत्मस्वभावमां, अपहरीए भवधूप. ३३५
अतिगहनछे तत्त्वबोध, विरलाजन समजंत;
सज्जन भवसागर तरे, करी कर्मनो अन्त. ३३६
सप्तभंगीछे सिद्धमां, अनन्तगुणमां जोय;
अनेकान्तनय जाणतां, शुद्धं समकित होय. ३३७
नवतत्त्व षड्द्रव्यनुं, सत्यज्ञान जो थाय;
तो जाणो ज्ञानिपणुं, सहेजे शिवपद पाय. ३३८
समकितादि मोहिनी, तेनो उपशम भाव;
क्षयोपशम क्षायिकपणे, प्रगटे समकितदाव. ३३९

निजरूप निजना भावथी, थाता गुण उद्योतः
सर्वोत्कृष्ट सम्यानता, प्रगटे निर्मल ज्योत. ३४०

इन्द्रियातिक स्पर्शन थतां, सहजे गुण प्रगटाय.
दर्शित निजस्वरूपथी, अविचलदर्शी थाय. ३४१

परमानन्द अवबोधथी, समकित प्रगटे संगः
परमानन्द थाते सदा, गुण प्रगटे निज अंग. ३४२

अस्ति चेतनद्रव्यनी, चेतनद्रव्य अनन्त
संसारीने सिद्ध होय, ज्ञानी एम वदन्त. ३४३

निरुज चेतन द्रव्य छे. कर्ता हर्ता जीवः
कर्मथकी मुकाय शिव. तेनां कारण होय. ३४४

शिष्य उवाच

नथी द्रव्य ते दृष्टिथी, स्पर्शे प्रत्ये न जायः
आत्मद्रव्यनी अस्तिता, अनुभवे न जणाय. ३४५

मानो देहज आतमा, अथवा श्वासोश्वास.
इंद्रियत्वनुं रूपछे. अन्य क्यो आभास ? ३४६

घटपट यथा जणायछे. तथा न चेतनद्रव्य;
माटे चेतन नास्तिता, मिथ्या माने भव्य. ३४७

यदि नथीजो आतमा, तपजप संयम फोकः
पुण्यपापनी कल्पना, भूले भोळा लोक. ३४८

शंका मोटी जीवनी, टाळो सद्गुरुदेव;
मतिहीन हुं जीवडुं, कापो कुमति टेव. ३४९

सद्गुरुः उवाच

उत्तांगुरुहाणि त्यजी, प्रश्नो सुयुक्ति दीप;
समजो चेतन भिन्नता, यथाऽग्नि मौक्तिक छीप. ३५०

पंचभूतथी भिन्न छे, अरूप निर्मल शुद्ध
देहे व्याप्यो जीव छे, मक्खुं उदकमां दुध. ३५१

हुं सुखी हुं दुःखी एम, बुद्धि देहनी नांय;
मन कल्पनामां कहीं, जग न चेष्टा त्यांय. ३५२

वर्द्धन शीतत्वादि गुण, पंचभूतना जोय;
चैतन्यादि त्यां नहीं, भूतमांहि अरजोय. ३५३

अरूप चेतन वस्तुथी, प्रवर्ते सदा नहिं जाण;
पुद्गलस्कंधो स्पर्शथी, प्रवर्ते सदा जाण. ३५४

आलोभान ते स्पर्शथी, सदा अरो प्रकाश;
कदि न जाणे आपथी, ते चेतन नुं वास. ३५५

ज्ञानसाधन जीव छे, पुद्गल नहीं कदाय;
नहीं तो पत्थर वस्तुमां, ज्ञानशक्ति प्रगटाय. ३५६

सर्वने सर्वशक्तिक, पंचभूत संयोग;
चैतन्यशक्ति उपजे, ते धूंक तन जोग. ३५७

भिन्न भिन्न मद्यांगमां, मदशक्ति अवभास;
भूत भूत प्रत्येकमां, ज्ञाननणो नहि वास. ३५८
बुद्धयादिक आधार जे, तेहिज चेतन पेख;
आदि शब्दथकी ग्रहो, सुख दुःख कार्योलेख. ३५९
बुद्धयादिक आश्रित जिहां, त्यां गुणपात्र जणाय;
रूपादिवत् जाणीए, चेतन सिद्धि उपाय. ३६०
गुण निराश्रय नहीं कदा, आश्रय छे घटरूप;
बुद्धयादिक आश्रय तथा, आनन्दघन चिद्रूप. ३६१

शिष्य उवाच.

बुद्धयादिक आधार तो, इन्द्रियो कहेवाय;
चेतननी शी कल्पना, करवी सद्गुरुराय. ३६२

गुरुः उवाच.

उपहत इन्द्रियो थकी, विषयस्मृति न थाय;
आश्रयनाशे स्मृतिनणी, उत्पत्ति केम थाय? ३६३
कर्णेन्द्रियना नाशथी, स्मरणतणो नहि रोद;
स्मृत्याश्रय ते आतमा, मानो सत्यज बोध. ३६४
अनुभव्युं जे इन्द्रिये, तेनो थातां नाश;
स्मृति इन्द्रियो अन्यमां, ते पण मिथ्याभास. ३६५
थातां एमज चैत्रने, यथा अनुभव जेह;
स्मृत्युत्पत्ति मैत्रने, घटे न युक्तिज तेह. ३६६

शिष्य उवाच.

भले न थावो इन्द्रियो, बुद्धि आश्रय कोइ;
बुद्धि आश्रय देह छे, कहुं विचारी जोइ. ३६७
शरीरनाशे बुद्धिनो, नाशज थातां दीठ;
भस्मीभूत शरीर तो, चेतन थाय अदीठ. ३६८

सद्‌गुरु उवाच.

बाल युवादिक भेद त्रण, तनुना एह प्रसिद्ध;
बालदेहथी भोगव्युं, स्मृति ते तेणे लीध. ३६९
तरुण तनुमां तेहनी, स्मृति कदा नहि थाय;
बालशरीर भोगव्युं, कथं युवान जणाय. ३७०
मृतक शरीरे बुद्धिनी, स्फूर्ति कथं न थाय;
मोट बुद्धयाश्रय कहो, चेतन स्मर्तां आप. ३७१

शिष्य उवाच.

बुद्धयाश्रय नहि देह तो, श्वासोश्वास जणाय;
श्वास नहीं त्यां सुख दुःख, कदा न निरख्युं जाय. ३७२
श्वासोश्वासे भिन्नता, नहि ते एक स्वरूप;
बुद्धयाश्रय तेने कहो, ए पण जडना रूप. ३७३
एकज श्वासोश्वासथी, कीधो अनुभव जेह;
अन्यश्वास सर्ता नहीं, बुद्धयाश्रय नहि एह. ३७४

उपादान कारणतणो, कदा विनाश न थाय,
आलयनो जो नाशतो, वृत्ति क्यां प्रगटाय. ३८३
आलयने ध्रुव मानीए, तो ते चेतनरूप;
मानंतां दोषज नथी, करवी समजी चूप. ३८४
आलयने प्रवृत्तिमां, मानो जो यदि भेद;
उपादान,कारणतणो, थाशे त्यां विच्छेद. ३८५
बने नहीं घट वस्तुथी, सूत्रतणा समुदाय;
कारण कार्यज भिन्नता, त्यां शुं कार्यज थाय. ३८६
चैत्रमैत्र इव भेद त्यां, कारण कार्यज भाव;
स्मृतिभंग त्यां होयछे, घटे शुं युक्ति दाव ? ३८७
क्षणिक सन्तति ज्ञानमां, कारणकार्यभेद;
मानो तो क्षणवादनो, थाशे निश्चय छेद. ३८८
उत्तरज्ञानदशा विषे, पूर्व ज्ञान जो होय.
स्थिरबुद्धि तेथी थइ, बुद्धि नाश क्यां जोय. ३८८
आलयनी जे स्थिरता, तेतो आतम मान;
बन्धमोक्ष सहु तो घटे, चेतन गुणछे ज्ञान. ३८९
पूर्वजन्मना स्मरणथी, पुनर्जन्मता सिद्ध;
पुण्य पाप फल भोगवे, चेतन नित्य प्रसिद्ध. ३९१
चेतन नित्यज होय तो, कर्म न लागे कोय;
अनित्य माटे आतमा, क्षण क्षण नाशी होय. ३९२

आ क्षणमां जे आतमा. ते क्षण विणशी जाय;
पुण्य पाप सुख दुःखनो. पछना करो शी थाय. ३९२

अन्य करेने अन्यने, पुण्य पापनो बन्धः
अन्यतणो जो मोक्षनो, ए सहु मिथ्याबंध. ३९४

को कर्त्ता भोक्ता अहो, गहुथी अवळो न्याय;
नित्य आतमा मानतां, कर्त्ता भोक्ता थाय. ३९५

अप्रसंग दूरे थतां, निर्मलरवि प्रकाश;
नित्य आतमा मानतां, होवे दोष विनाश. ३९६

जेनी संयोगे करी, उत्पत्ति नहीं थाय;
नाश होय नहि तेहनो, माटे नित्य सदाय. ३९७

अहंकृतिने क्रोधनी, केशरी फणिधरमांय;
भासे तरतमता घणी, पूर्ववासना त्यांय. ३९८

पूर्ववासना योगथी, नित्य आतमा सिद्ध;
क्षणिकचेतन बुद्धिने, देशवटो एम दीध. ३९९

आशंका शिष्य उवाच.

जीव न कर्त्ता कर्मनो, कर्मज कर्त्ता कर्म;
चेतन कर्त्ता कर्मनो, धर्म जीवनो मर्म. ४००

सदा असंगी आतमा, जलपंकजनी पेर.
कर्त्तोने भोक्तापणुं, भासे प्रकृति घेर. ४०१

शाथी ईश्वर प्रेरणा, ईश्वरनो अन्याय;
न्यायी अपराधी सहु, ईश्वर पोते थाय. ४१९

शिष्य उवाच शंका

कर्म करेछे प्राणिया, सामग्री अनुसार;
सुख दुःख ईश्वर आपनो, जीव अकर्ताधार. ४२०

गुरुः उवाच.

कृत्य करे ते भोगवे, पोते सुखने दुःख;
खावे तेह धरायछे. प्रभु न भागे भूख. ४२१
क्षेपे निजकर वन्हिमां, ज्वलतो देखे हाथ.
स्वयंहि कर्त्ता जीवछे, कथं प्रेरणा नाथ; ४२२
अवळी बुद्धियोगथी, विषभक्षणथी नाश;
प्राणीनो जाणो अहो, ईश्वर न्याय न त्रास.- ४२३
स्वयमेव ज्यां सुख दुःख, चेतन कर्म पाय;
ईश्वर प्रेरण कल्पना, सुख दुःख कर्म थाय. ४२४
सदा असंगी आतमा, निश्चय सत्ता लेख;
व्यवहारे सुख दुःखनो, कर्त्ता चेतन देख. ४२५
जीव अकर्त्ता कर्मनो, नाशे सत्य जणाय;
चेतन जाणो नयथकी, शुद्धधर्म प्रगटाय. ४२६

शिष्य शंका.

मोक्षतणी जे आस्तिता, तेतो समजी जाय;
अनन्तभवनां कर्मनो, ध्वंस न क्यारे थाय. ४३५

भिन्न भिन्न दर्शन कथे, मुक्ति अनेक उपाय;
सत्य असत्य तेमां कयुं, निर्णय चित्त न थाय. ४३६

को वेषे कइ जातिमां, कया पन्थमां मोक्ष;
निश्चय तेनो नाहि बने, तो शी करवी होंश. ४३७

भव प्रथम के मुक्तिवा, प्रथम जीव के सिद्ध;
इत्यादिक मन चिंतता, मोक्ष न होय प्रसिद्ध. ४३८

उवाच सद्गुरुः

चोपाइ.

ज्ञानक्रियाछे मोक्षोपाय, सूत्रे भाखे श्री जिनराय;
अग्निकणाथी, गंजीबळे, तथा ध्यानथी कल्मष टळे. ४३९
जेने लाग्यो जन्मथी रोग, ओषधयोगे थाय निरोग;
कीधां अनन्तभवनां कर्म, नष्ट थतां प्रगटे शिवशर्म. ४४०
अंधारु जग व्यापी जाय, थातां सूर्योदय विणसाय;
सत्य ज्ञान त्यां शोछे भार, कर्मतणो तुं हृदये धार. ४४१
ज्ञानावरणीयादिक आठ, कर्मतणोछे सूत्रे पाठ;
मुख्य मोहिनी सहुमां होय, यथा प्रजामां नृपति जोय.

मोहिनी नाशे सर्व हणाय. नृप हार्याथी प्रजा पलाय;
कर्म हण्याथी शिवसुख गेह. मत्यपंथमां शो संदेह. ४४३

मतदर्शनना असत्यराग. अंधा श्रद्धा ज्ञाने त्याग.
जातिलिंगमां माने मोक्ष. तेथीज मुक्ति होय परोक्ष. ४४४

सत्यतत्त्वनी श्रद्धा थाय, समवायिपंचज प्रगटाय;
अरूप चेतन जागे ज्योत, त्रिभुवनमां ज्ञाने उद्योत. ४४५

भवमुक्तिनी नहिंछे आदि. प्रवाहथी ते दोय अनादि;
अनेकान्त पन्थज समजाय, श्रद्धाथी सहु मळे उपाय. ४४६

केवलज्ञानी वाणी ग्रंथ, गुरुगम समजी ल्यो शिवपंथ;
एकशब्दनो भावज साच, एम कहे तीर्थंकर वाच. ४४७

जीव मोक्षादि शब्दज एक, साचो माटे करो विवेक;
जेनो संबंधि तेनो मोक्ष, जरा नहि त्यां लागे दोष. ४४८

शिष्य उवाच.

" दुहा. "

आपे परस्थानक कह्यां, करुणाथी गुरुदेव;
श्रद्धाथी में सद्दह्यां, टळी अनादि कुटेव. ४४९

आज लगी अज्ञानथी, थइ न तत्त्व प्रतीत;
नमन करुंछुं सद्गुरु, कीधो शिष्य पवित्र. ४५०

धर्मरत्न आजे ग्रह्युं, देख्युं परमनिधान;
शरण शरण म्हारुं प्रभु, कोई न तुज समान. ४५१
काल अनादिथी भम्यो, पण आव्यो नहीं अन्त;
सम्यक्तत्त्व जणावियुं, नमुं प्रभो गुणवन्त. ४५२

शिष्य उवाच शंका.

अनन्तजीवो सिद्धता, शिवमां केम समाय;
निराकरण तेनुं करो, जेथी शङ्का जाय. ४५३

उवाच गुरुः

सिद्धशिलानी उपरे, शाश्वतछे शिवठाण;
कर्म खप्याथी जीव त्यां, थावे श्री भगवान्. ४५४
एकदीपकनी ज्योतिमां, अनेकदीपकज्योत;
सिद्धअरूपी मावता, दोष न किञ्चित् द्योत. ४५५

चोपाइ.

विपयवासना विपसम खास, त्यागो बहिरातमपदवास;
शाश्वतपदनी वाञ्छा होय, तो अधिकारी धर्म जोय. ४५६
दुःखनो आत्यंतिकविनाश, मुक्ति वैशेपिकनी खास;
मनने नित्यज माने तेह, मुक्तिमां जीव साथे तेह. ४५७
बुद्ध्यादिक नवनो ज्यां नाश, मुक्तिज एवी त्यांशुंआश;
वृन्दावन जंबुक अवतार, तेथी सारो मानव धार. ४५८

वदे वेदान्ती मुक्ति स्वरूप, जागो जग व्यापक चिद्रूप;
घटेन व्यापक चेतनराय, त्यां शुं शिवनी आश रखाय४५९

माने मुक्तिज आर्य समाज, भाडे पाम्यो जीवजराज;
मुक्तिथी जीव पाछो फरे, मुक्ति एवी शुं दुःख हरे.४६०

कर्म खप्याथी नहि संसार, कथं जीव पामे अवतार;
जन्म मरण ज्यां वारंवार, शान्ति तेनी नहीं लगार.४६१

एक कहे छे मुक्ति स्वरूप, मोटो अंधारानो कूप;
जावुं जे ईश्वरनी पास, चित्त धरो ईश्वर विश्वास.४६२

विश्वासी ईश्वरना दास, मुक्तिफोजमां भळतां खास;
इशु भलो ईश्वरनो पुत्र, ते चलवे छे जगनुं सूत्र. ४६३

शरीरधारी मुक्तिज ज्यांय, जन्म मरणना फेरा त्यांय;
मुक्ति तेवीज कदी न होय, साक्षवादी ग्रहे न कोय.४६४

अंधो वनमां फरतो फेर, पण चाली पहोंचे नहि घेर;
ज्ञानचक्षु हृदये प्रगटाय, मुक्ति पन्थ त्यारे देखाय. ४६५

कोइक राता छे व्यवहार, ज्ञाने राता कोइकधार;
एकएकनुं खंडन करे, पक्षापक्षेज लडी मरे. ४६६

एकान्तनयोथी पक्षापक्ष, सत्यज माने वे नय दक्ष;
नय एकेके दर्शन थयां, सापेक्षे ज्ञानिए ग्रह्यां. ४६७

सरिताओ सागरमां भळे, जिन दर्शनमां सर्वे मळे;
दर्शनमांभजनाजिनवाच,अनेकान्त वाणी जगसाच४६८

कर्माष्टकनो थावे नाश, आविर्भावे गुणनो भास;
जन्म मरणना फेरा टळे, चेतन क्षायिक धर्मे मळे.४६९

समये समये सिद्ध अनन्त, सुख सहेजे विलसे शिवकंत;
पूर्वप्रयोगे उंचा जाय, शाश्वत शिवपुरमां विरमाय. ४७०

उर्ध्व अधःतिर्च्छा नहि जाय,क्रिया रहित माटे स्थिर थाय;
तादृक् विभुने करु प्रणाम, क्यारे पामुं सुखनुं धाम. ४७१

सादि अनंतिज स्थिति वरी, सिद्धनमुं ते भावज धरी;
केवलज्ञाने जाणे सहु, तेवुं पद प्रेमे हुं चहुं. ४७२

चेतन परमातममां भेद, व्यवहारे जोतां ए खेद;
भेदभावनो ज्यां नहि लेश,निश्चयनयथी जोतां वेश.४७३

उत्तमदृष्टि आत्मस्वरूप, वहेतां प्रगटे सुखचिद्रूप;
भणोगणो वांचो सहु ग्रन्थ, चेतनदृष्टि शिवपुर पन्थ.४७४

उत्तम दृष्टि कोइक लहे, शिवपुरमांहि सिद्धो वहे;
ज्ञानादिक गुण ल्क्षे होय, समभावे निरखे सहु कोय४७५

शत्रुमित्रमां समता भाव, शुद्धधर्मनो प्रगटे दाव;
देह छतां पण देहातीत, दशा तादृशी त्यां शुं भीत. ४७६

पड् द्रव्योमां वर्तन एम, चिंतन करतां लहिये क्षेम;
शुक्लध्यान पण तेथी होय, निश्चय शास्त्रे भाख्युं जोय४८६

पड् द्रव्योमां सर्व समाय, भाखे सूत्रे श्री जिनराय;
सूक्ष्मपणे जो थावे ज्ञान, स्वल्पभवे पामे शिव स्थान.४८७

निश्चयदृष्टि चित्ते वहे, व्यवहारे वर्ती गुण लहे;
एकान्ते चाले व्यवहार, पामे नहीं ते भवनो पार.४८८

सर्वज्ञ भाख्या नय दोय, होय न जूठो तेमां कोय;
निश्चयनो हेतु व्यवहार, कारण कार्यपणुं त्यां धार.४८९

आवश्यादिक जे व्यवहार, करीये लहिये भवजल पार;
जन मन रंजन किरिया करे, भाव विना ते भवमां फरे.४९०

भाव विना किरिया छे फोक, करीए समजी हरिये शोक;
आडुं अवळुं मनडुं फरे, धर्मक्रिया ते ज्ञानी करे. ४९१

चित्त न ठरतुं एकज ठाम, माटे किरियानुं शुं काम;
निश्चय एम न करशो कोय, उद्यम अवलंबो सुख होय४९२

निज गुण रक्षण साचो धर्म, निजगुण विध्वंसनजअधर्म;
(प्रवृत्ति धर्मे वळे, निज ऋद्धि तो निजने मळे. ४९३

क्रिया बाह्यनी चेतन करे, कर्म ग्रही भव फरतो फरे;
पाप क्रियाछे भव जंजाळ, क्रिया धर्मनी मंगलमाळ४९४

धन्य धन्य मानुं अवतार, स्वरूप किंचित् भाख्युं सार;
अकलगति तुं चेतनदेव, कर पोतानी पोते सेव. ५०४

दानी दे तुं निजगुणदान, भानी तुं दे निजगुणभान;
त्हारुं सुख छे अव्याबाध, साधनथी तुं तेने साध्य. ५०५

समतारसनो तुं भण्डार, आत्म धर्मने तुं धरनार;
नाहं नाहं तृष्णादास, नाहं नाहं पुद्गलवास. ५०६

श्री जिनवरभाषित बे धर्म, हेतु ते छे शाश्वतशर्म;
यथाशक्ति तेनो स्वीकार, करिये समजी धर्मप्रकार. ५०७

निंदो धर्मीने मा कोय, निंदानां कडवां फल होय;
श्रावक थइने तपजप करे, निंदा करतो भवमां फरे. ५०८

समजे नहि अंतरनो मर्म, टीलां टपके शानो धर्म;
शुद्धस्वरूपे निश्चय धार, धन्य धन्य तेनो अवतार. ५०९

कुलमां उपन्यो श्रावक नाम, तेथी शुं थावे निजकाम;
नाममात्रथी कार्यज सरे, धनपति भिक्षा खातो फरे. ५१०

श्रावकव्रत नहि पोते धरे, दे शीखामण साधुघरे;
गुरुनो प्रत्यनीक चंडाल, तेथी जन्म भलो शृगाल. ५११

म्हो विषम कलिकाले जोय, श्रावकनां गुणधारी कोय;
निंदक मानी मुनिथी क्लेश, तेने शुं लागे उपदेश. ५१२

भण्योगण्यो पण श्रावक कोय.गुरुथी अधिको नहि तेहोय;
मेरु सरसव समछे फेर, अंतर अजवाळुं अंधेर. ५१३

उत्तराध्ययणे तेनी साख, गुणना माटे कर अभिलाष;
द्दष्टिरागे ज्ञानोज धर्म, द्वेषे बाह्यो बांधे कर्म. ५१४

धर्मगुरुनीज आज्ञा धार, तरवानुं ते तीर्थ विचार;
तेथी पामो भवनो पार, सार सार तेछे सुखकार. ५१५

साधुव्रतनोछे अभिलाष, माने सद्गुरुनो हुं दास;
अक्षुद्रादिक गुणनुं नाम, साचुं तेनुं श्रावक नाम.५१६

पंचमहाव्रत पंचाचार, धर्मध्यानमां वर्त्ते सार;
भवभ्रमणभय आज्ञा जिन, वर्त्ते मन जेनुं निशदीन. ५१७

बाह्योपाधि विषवत् त्यजी, सहजसमाधि ज्ञाने भजी;
जेने बोध्युं आत्मस्वरूप,नमुं नमुं प्रभु गुरु श्री अनुप५१८

पार्श्वमणि संयोगे लोह, भजे कनकता तेह अमोह;
जेना बोधे टळे सदाय, गुरुनी गुरुता मानसि थाय. ५१९

एवा गुरुने सेवो भाइ, तीर्थ तीर्थ ते जग सुखदाइ;
वाणी जेनी बहु गंभीर, चेतन योगी ध्यानी धीर.५२०

धर्मगुरु मुज प्राणाधार, सदा शुद्ध तेनो उपकार;
गुरुनी सेवा भक्ति मळे,तो भव कल्मकष सहेजे टळे,५२१

पृष्ठ	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि
३१	१०	क्रिका	क्रिया
३२	१७	पुग्य	पुण्य
३६	१३	केवलज्ञान	केवलज्ञान
३८	१६	नाग	नाम
४०	२१	याय छे	थवाय छे
४२	२	आग्रि	आग्नि
४२	१७	वे	के
४३	५	जेगे	जेणे
४३	१४	तारण	तरण
४५	५	तत्त	तत्त्व
४५	१९	सुशोभीत	सुशोभित
४६	२४	क्षुद्धान्तःकरण	शुद्धान्तःकरण
५४	८	पकडी	पकडी
५५	११	पेटीः	पेटी
६०	१९	ग्रुरु	गुरु
६२	२४	सदगुरु	सद्गुरु
६४	१६	अन्तकरण	अन्तःकरण
६५	१४	धममाप्ति	धर्मप्राप्ति
६९	१४	द्रव्य	द्रव्य
६९	१९	स-ाय	समय
७०	१	द्रव्यर्थिक	द्रव्यार्थिक
७०	१३	सरखा	सरखा
७६	३	जोरि	जोर
८०	१९	पुदुगल	पुद्गल
८१	३	द्रव्ये गुणोपचार	द्रव्ये पर्यायोपचार

पृष्ठ	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि
१२०	१	ाधगता	धिगता
१२०	१०	सर्वत्रा	सर्वत्र
१२५	८	विचार	विचारे
१२५	८	तारा	तारो
१२५	१०	रा वीश	राखीश
१२६	३	किंचित्नि	किंचिन्नि
१२७	१०	तिष्ठंति	तिष्ठंति
१२७	१४	तिष्ठंति	तिष्ठंति
१२८	१७	।पृ वी	पृथ्वी
१२९	५	देश	देशे
१२९	९	धुं	थुं
१२९	१३	सर्व	सर्व
१३१	११	मनुण्पो	मनुष्यो
१३१	१८	होतु	होतुं
१३३	३	सरुवप	स्वरुप
१३७	८	कन	केश
१४०	५	मुस्केल	मुस्केल
१४०	१२	औदारिका	औदारिक
१४०	१२	तैजम	तैजस
१४०	१५	चाल्या	चाल्यो
१४१	३	शुद्दा	शुद्दा
१४१	५	विणु	वण
१४१	७	इत्तिमं	इत्तिमां
१४१	१६	जेनु	जेनुं मन
१४१	१७	नर्ना	नर्थी

पृष्ठ	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि
१६९	११	पाद्य	बाद्य
१७०	१०	विराजीग	विराजित
१७१	१८	लोक	लोक
१७१	१८	रू	रूपं
१७३	१७	हे	छे
१७३	१७	कुं	न
१७४	१०	कंरं	करं
१७४	१९	व्याध्रि	व्याधि
१७४	२१	याज्य	त्याज्य
१७५	३	हे	छे
१७५	३	कुं	न
१७६	३	वा	वा
१७६	३	छुं	०
१७८	११	श्राद्ध	श्रद्धा
१८१	७	अत्म	आत्म
१८५	१२	ध्याप	ध्यान
१८७	९	आत्म	आत्मा
१८७	१०	निष्क्रिम	निष्क्रिय
१८७	१६	,,	,,
१८७	१९	स्वरू-ा	स्वरूप
१८७	२३	निदृष्टि	निश्चयदृष्टि
१९१	१८	तृपा	तृपा
१९४	१५	दुष्प्राप्प	दुष्प्राप्य
१९५	२२	त गिर	तवंगर
१९८	६	धर्मा	धर्मी

पृष्ठ	ओळी	अशुद्धि	शुद्धि
१९८	१०	सिहलद्वीप	सिंहलद्वीप
१९९	१६	पण	पण
२००	११	त्रुं	त्रु
२०६	२५	गत	०
२०७	६	घारित्र	चारित्र
२०७	२०	कृत्तुमां	कृत्य
२०९	७	राकाइ	रोकाइ
२१०	३	राग	राग
२१०	१८	०	हे
२११	२५	शु	०
२१२	१	०	शु
२१३	१२	गिहेत्रु	गिहेत्रु
२१४	९	प्रमा-ग	प्रमाण
२१६	१६	सद्भाव	सद्भाव
२१८	४	दशनापयोग	दर्शनोपयोग
२१८	१६	नाणवा	जाणवा
२२१	१	व्याक्ति	व्यक्ति
२२२	०	मापधिन ऐतुं	अध्ययननो जैनदर्शन समावेश
२२३	१	नारितत्व	नास्तित्व
२२४	२८	एकेकवी	एकेकवी
२२९	९	बलवत्तर	बलवत्तर
२३०	१६	का	कारण
२३१	१९	देननी	देवनी
२३२	२५	जन	जिन
२३२	११	सापिने	सोंपिने

पृष्ठ	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि
२३६	११	भावने	भाव ते
२३६	१९	लारण	कारण
२३८	१	उत्पत्तो	उत्पत्ती
२४१	४	तिक्ष्ण	तीक्ष्ण
२५३	१५	येना	वेनना
२५९	५	कवलाहर	कवलाहार
२६२	१६	द्वेष ो	द्वेषने
२६३	३	स य	सत्य
२६६	७	नर्धी	नथी
२६३	१९	आयुष्य कर्म	आयुष्य कर्म
२६३	२४	तारतम्य	तारतम्यता
२६४	१	माहनीय	मोहनीय
२६४	१७	आत्मनी	आत्मानी
२७६	१०	मयान	मयाने
२७६	२५	मोक्षाभो	मोक्षार्थः
२७७	११	नपर	नगर
२७७	१४	मीवोने	जीवोने
२७८	०	धम	धर्म
२७८	४	भा	आ
२७८	८	चतुरिन्द्रि	चतुरिंद्रिय
२७८	११	पना	दना
२७८	१४	मोहना	मोह
२७८	१७	धाम	धाम
२७९	१	होरानु हुं	होराणुं हुं
२७९	१७	हू ा	हवी
२८०	१	मोर	मोर
२८०	५	र मा	राना
२८०	१५	जीर	जीव

૨૧ આત્મપ્રદીપ.
૨૨ અધ્યાત્મગીતા.
૨૩ આત્મસ્વરૂપ.
૨૪ અનુભવ પચ્ચીશી.
૨૫ પરમાત્મ દર્શન.
૨૬ પરમાત્મ જ્યોતિ.
૨૭ ગુરૂબોધ.
} અમદાવાદ જૈનશ્વેતાંબર બોર્ડિંગ નાગોરીશરાહ.

૨૮ પ્રાચીન ન્યાય ગ્રંથ ઉદ્ધાર. સંસ્કૃત સ્યાદ્વાદ મુક્તાવલી } ઝવેરી ભોગીલાલ તારાચંદ. અમદાવાદ ઘીકાંટાનીપોળ

૨૯ તત્ત્વબિંદુ (યાને સંક્ષિપ્ત સિદ્ધાંત રત્ન. } જૈન બોર્ડિંગ નાગોરીશરાહ અમદાવાદ.

૩૦ ચેતનશક્તિ ગ્રન્થ-(ભજન સંગ્રહ ત્રીજા ભાગમાં)

૩૧ વર્તમાનકાલ સુધારે:-(ભ. ત્રીજા ભાગમાં)

૩૨ પરબ્રહ્મ નિરાકરણ-(ભજન સં. ૪ થાથામાં)

૩૩ અધ્યાત્મ વચનામૃત ગ્રન્થ (ભજન સંગ્રહ ભાગ થોથા)

નહીં છપાવેલા ગ્રંથોની યાદી.

૩૪ તત્ત્વ પરીક્ષા વિચાર
૩૫ ધ્યાન વિચાર
૩૬ ગુણસાગર
૩૭ ગુરૂમાહાત્મ્ય.
૩૮ [illegible] ગાયકવાડ સરકારની આગળ આપેલું ભાષણ



મિત્રમૈત્રી-(મિત્રધર્મ).



કર્તા.

યોગનિષ્ઠ શાસ્ત્રવિશારદ જૈનાચાર્ય બુદ્ધિસાગરસૂરિજી.



વિવેચનકાર

શા. રતિલાલ મગનલાલ

શેર દલાલ, અમદાવાદ-ઝવેરીવાડો.

પ્રકાશક

અધ્યાત્મજ્ઞાનપ્રસારક મંડળ તરફથી

શા. લલ્લુભાઈ કરમચંદ દલાલ.

ચંપાગલી—મુંબાઈ.

વીર સં. ૨૪૪૩. પ્રત ૫૦૦. વિક્રમ સં. ૧૯૭૩



મૂ. ૦-૮-૦.